CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसी जन्मभूमिः शोध समीक्षा

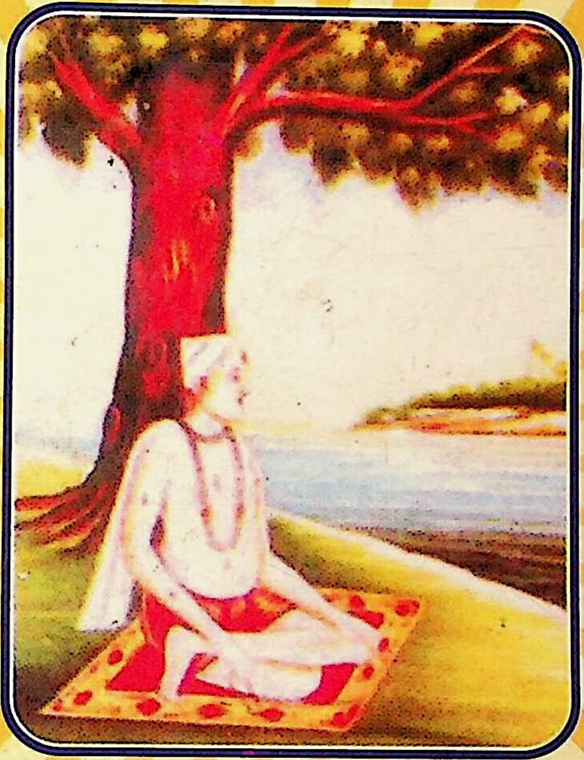

यह संत शिरोमणि तुलसी की जन्मभूमि,
यह कालजयी विश्वकवि धरा धाम।
जिसकी नैसर्गिक वसुधा से जग को,
मिलती मनः शान्ति, ऊर्जा प्रकाम।।

रामगणेश पाण्डेय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसी जन्म भूमिः
शोध समीक्षा

लेखक

राम गणेश पाण्डेय

प्रकाशक

भारती भवन प्रकाशन

रेरुवा (चित्रकूट)

सम्पर्क सूत्र

१. पं. रामाश्रय त्रिपाठी अध्यक्ष
श्री तुलसी साहित्य शोध संस्थान
पुजारी, श्री रामचरित मानस मंदिर, राजापुर जिला–चित्रकूट
मो. ९८३८९७६२९४

२. रामगणेश पाण्डेय
ग्राम–रेरुवा, पो० बरिया, (रामनगर)
जिला–चित्रकूट (उ०प्र०) २१०२०९
मो० : ९७९३२७४४०९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कापीराइट
लेखकाधीन

प्रकाशन वर्ष
लोकार्पण तुलसी जयंती
श्रावण शुक्ल सप्तमी सोमवार सम्वत् २०६० वि०
(दिनांक ४ अगस्त, २००३ ई०)
द्वितीय संस्करण २००८ ई०
तृतीय संस्करण २०११ ई०
चतुर्थ संस्करण २०१५ ई०

सहयोग राशि : १५० रुपये मात्र

मुद्रक
श्री विष्णु आर्ट प्रेस
चक (जीरो रोड बस स्टैण्ड के सामने)
इलाहाबाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकार्पण

तुलसी जयन्ती दि० ४ अगस्त २००३ई०

के शुभ अवसर पर तुलसी जन्मभूमि में

"तुलसी जन्म भूमिः शोध समीक्षा"

का

तुलसी पीठाधीश्वर

एवं

कुलाधिपति विकलांग विश्वविद्यालय

स्वामी श्री रामभद्राचार्य जी महाराज

द्वारा

लोकार्पण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृतिकार

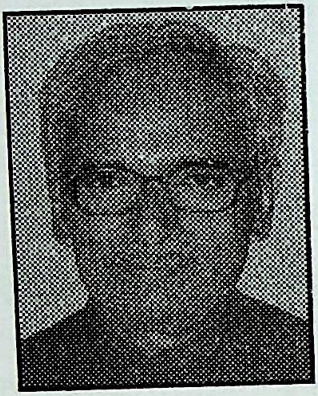

रामगणेश पाण्डेय

एम०ए० (हिन्दी), एम०ए० (संस्कृत), एम०ए० (राजनीति), साहित्यरत्न

सुपुत्र – श्री इन्द्रपाल पाण्डेय एवं श्रीमती पार्वती देवी

सुपौत्र – श्री रामखेलावन पाण्डेय एवं श्रीमती पार्वती देवी

नाती – श्री रामप्रताप गर्ग एवं श्रीमती चन्द्रकली देवी (नाना–नानी)

जन्म – कार्तिक शुक्ल नवमी सं० २००० विक्रमी, ननिहाल–हन्नाविनैका, (चित्रकूट)

निवासी – ग्राम – रेरुवा, क्षेत्र – रामनगर, जिला–चित्रकूट (उ०प्र०)

प्रारम्भिक शिक्षा –हन्नाविनैका में (कक्षा १ से ८ तक) माध्यमिक – श्री तुलसी इण्टर कालेज, राजापुर, (चित्रकूट) एवं स्नातकोत्तर शिक्षा

पत्नी – श्रीमती भारती देवी

अध्यवसाय – से० नि० प्रवक्ता, श्री तुलसी इण्टर कालेज, राजापुर (चित्रकूट)

अन्य प्रकाशित रचनायें – 'सत्यार्थी', 'मंजिल' (समग्रविकास से जुड़ी काव्य कलित समग्रक्रान्ति कथा)

अन्य अभिरुचि – समाज सेवा ('युग निर्माण अभियान'–जन जागरण जेहाद)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

१. सम्मतियाँ — १
(१) अनुशंसा - डॉ० वेदपति मिश्र, सचिव, तुलसी स्मारक समिति
(२) प्रालोचना - प्रो० अवधेश प्रसाद पाण्डेय सचिव,
म० प्र० तुलसी अकादमी भोपाल एवं निदेशक
तुलसी शोध संस्थान, चित्रकूट
(३) मंगलानुशंसा - स्वामी रामभद्राचार्य महराज तुलसी पीठाधीश्वर
एवं कुलाधिपति, विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट
२. प्राक्कथन — १०
३. तुलसी शोध समीक्षा की आधार भूमि — १८
४. शोध सम्बन्धी श्रोत — २०
५. तुलसी जीवन वृत्त — २५
६. तुलसी जन्मभूमिः शोध समीक्षा — ६०
७. तुलसी जन्मभूमि - वाह्य साक्ष्य — ६१
१. वाह्य साक्ष्य -
(१) वाह्य साहित्यिक साक्ष्य
(२) ऐतिहासिक साक्ष्य -
(i) सम्राट अकबर का माफीनामा
(ii) माफीदार तुलसीशिष्य वंशावली
(iii) माफी का परिपालन
(iv) ह्रासोन्मुख माफी
८. प्रत्यक्ष साक्ष्य — ९९
९. अन्य साक्ष्य — ११९
१०. अन्तः साक्ष्य - — १२७
(१) मानस का तापस प्रसंग
(२) गीतावली का तापसी प्रसंग
(३) जन्मभूमि और गुरुभूमि के प्रति प्रेम
(४) चित्रकूट-'सूकरखेत' वर्णन
(५) आत्मपरक उद्धरण
(६) तुलसी की भाषा में राजापुर की ग्राम्य गिरा की गहरी छाप
(७) तुलसी साहित्य में राजापुर क्षेत्र की छाप
(८) लोक जीवन, लोक व्यवहार एवं लोक संस्कृति
(९) भाषा एवं लिपि प्रकृति

Jangamwadi Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

११. मानस की पाण्डुलिपि प्रवृत्ति — १८३
(१) भाषा एवं लिपि प्रवृत्ति की तुलनात्मक समीक्षा
(२) तुलसीदास जी द्वारा लिखित पंचनामा की लिपि प्रवृत्ति
१२. लोकमान्यता — १९३
१३. राजापुर की पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि — १९५
१४. तुलसी जन्मभूमि विवाद क्यों और कैसे ? २०४
(१) 'मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकरखेत'
(२) राजापुर के 'मानस' पुजारी का षड़यंत्र और 'गजेटियर'
(३) तुलसी जन्मभूमि विवाद के जनक
(४) तुलसी की भाषा एवं लोक संस्कृति
१५. तुलसी जन्मभूमि विषयक सोरों सामग्री की विवेचना — २१८
१६. सोरों सामग्री की समीक्षा — २३२
१७. तुलसी जन्मभूमि सम्बन्धी गोंडा जनपदीय सामग्री की विवेचना — २६७
१८. गोंडा जनपदीय सामग्री की समीक्षा २७२
१९. निष्कर्ष — २८८
२०. सन्दर्भ ग्रन्थ — २९०
२१. 'गजटियर्स' (शासकीय विवरण) श्रोत — २९३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० वेदपति मिश्र (पी० सी० एस०)
पदेन सचिव,
तुलसी स्मारक समिति
राजपुर (चित्रकूट)

दिनांक : २२-१०-२००२

अनुशंसा

"तुलसी जन्म भूमि" (शोध समीक्षा) का मैंने गम्भीरता पूर्वक आद्योपान्त आलोड़न-विलोड़न किया। इस ऐतिहासिक कालजयी कृति के लेखक श्री रामगणेश पाण्डेय जी प्रतिष्ठित एवं सिद्धहस्त रचनाकार हैं। श्री पाण्डेय जी द्वारा कृत सारस्वत अनुष्ठान समाजोपयोगी होने के साथ ही साथ अनेक अनसुलझे ऐतिहासिक रहस्यों का भी प्रोद्घाटन करता है।

"तुलसी जन्म भूमिः शोध समीक्षा" ग्रन्थ में सनातन धर्म और संस्कृति के अमरपुरोधा गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्म स्थली की प्रामाणिकता की लेखक ने अनेक ऐतिहासिक, पौराणिक, विविध सद्साहित्यों के आलोक में खोजने का जहाँ एक ओर सफल प्रयास किया है, वहीं दूसरी ओर गोस्वामी तुलसीदास जी के विविध ग्रन्थों, उनकी भाषा, संस्कृति, भाषात्मक लिपि, ऐतिहासिक सनदों, फरमानों, तुलसीदास जी द्वारा लिखित पंचनामा की लिपि प्रवृत्तियों, पाण्डुलिपियों एवं सुलभ सन्दर्भ हेतु-समुपलब्ध छाया चित्रों को आधार मानकर तर्क परक एवं तथ्य परक नव नवोन्मेश-शालिनी दृष्टि को भी अंगीकार किया है। तुलसी जन्मभूमि के सम्बन्ध में उठे विवाद तथा लोक मान्यताओं का भी आलोचनात्मक दृष्टिकोण इस ग्रन्थ की समन्वयवादी दृष्टि को मुखरित करता है। श्री पाण्डेय जी ने गोस्वामी तुलसीदास जी के सोरों (एटा) में आविर्भूत होने, राजापुर (गोंडा) में जन्म लेने एवं राजापुर (चित्रकूट) की पवित्र धरती में जन्म लेने की विशद विवेचना किया है और तदुपरान्त प्रमाणों के आलोक में यह सुस्थापित एवं निगमित करने का स्तुत्य प्रयास किया है कि 'राजापुर' (चित्रकूट) ही सन्त शिरोमणि, उन गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्म भूमि रही है जहाँ - 'रामबोला' के रूप में वह अपने प्रारम्भिक जीवन में लोगों में रचे और बसे थे। जहाँ तक गोस्वामी तुलसीदास जी के कर्मभूमि का प्रश्न है, वह लोक मान्यता के अनुरूप लेखक की दृष्टि में भी विविध स्थलों में है जो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पदे-पदे इस ग्रन्थ में भी उल्लिखित है। यह ग्रन्थ तुलसी जन्म भूमि के सम्बन्ध में उठे अनेक अतार्किक वितन्डावादों पर विराम लगाता है और सप्रामाणिक जन्म भूमि की यथार्थता एवं सार्थकता की संसिद्धि करता है। श्री पाण्डेय जी द्वारा लिखित यह ऐतिहासिक शोध परक ग्रन्थ न केवल समाज के लिए उपादेय सिद्ध होगा अपितु विद्वत्जनों में भी समुत्पत्तिष्णूत्कर्ष सिद्ध होगा, ऐसा मेरा दृढ़ अभिमत है। मैं ग्रन्थ के लेखक श्री पाण्डेय जी के भावी मांगल्य की कामना करते हुए यह अपेक्षा करता हूँ कि उनका सारस्वत-अनुष्ठान, भविष्य में भी इसी प्रकार से साहित्यिक अभिवृद्धि करता रहेगा।

डॉ० वेदपति मिश्र
उपजिलाधिकारी, मऊ
जनपद-चित्रकूट
पदेन सचिव,
तुलसी स्मारक समिति
राजापुर (चित्रकूट)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मध्य प्रदेश तुलसी अकादमी
प्रो० अवधेश प्रसाद पाण्डेय
सचिव

मुल्ला रमूजी संस्कृति भवन,
तृतीय तल, बाणगंगा रोड,
भोपाल (म. प्र.) ४६२००३
दूरभाष (०७५५) ७६०६६८

प्रालोचना

काल अपराजेय है। काल के प्रवाह में सब कुछ परिवर्तित हो जाता है। बड़े-बड़े सम्राटों के राजमुकुट धूल धूसरित हो जाते है। राज प्रासाद खण्डहरों में बदल जाते हैं। समय के साथ राष्ट्रों की भौगोलिक सीमायें भी बदल जाती हैं। इस परिवर्तनशील जगत में सब क्षणभंगुर है। काल से उपराम सन्तों की सत्ता होती है, जो काल से बाधित नहीं होती अपितु वह काल की पीठ पर सवारी करती है तथा जगत को अपनी प्रेरणा से प्रभावित करती है। कवि कुल तिलक संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी इसी कालजयी सत्ता के महाकवि और विश्व कवि हैं। उनकी विश्वविश्रुत रचना रामचरित मानस भी कालजयी है। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है गोस्वामी तुलसीदास, 'मानस' तथा इस पावन रचना की प्रासंगिता बढ़ती जाती है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस के माध्यम से अपनी कठोर साधना एवं शब्द संयोजन का अमृत अपने ज्ञान के कमण्डल से पिपासु सज्जनों को एक-एक आचमनी बाँटा है।

संस्कृत साहित्य के मनीषियों ने ऐसे ग्रन्थ लिखे हैं जिनमें ज्ञान, वैराग्य की अजस्र धारा प्रवाहित है। किन्तु यह केवल वैरागियों, संन्यासियों अथवा गृह त्यागियों के लिए ही उपयोगी हैं। कुछ विद्वानों ने केवल ऐसे साहित्य की रचना की है जो मात्र गृहस्थ धर्म के परिपालन में सहायक है। किन्तु गोस्वामी तुलसीदास जी कृत 'मानस' सन्त महात्माओं के लिए ज्ञान, वैराग्य, त्याग एवं भक्ति का उपदेश देती है तो दूसरी ओर पारिवारिक सम्बन्धों को रेखांकित करते हुए गृहस्थियों के लिए एक शाश्वत आचार संहिता है। रामचरित मानस में राम के जीवन की झाँकी और कथा अंकित है। वह कहीं न कहीं प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के प्रसंगों में जुड़ जाती हैं और अपनी राम-कहानी बन जाती है।

रामचरित मानस की भाषा अत्यन्त सरल, प्राञ्जल किन्तु गूढ़तम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्थों को अपने अन्तःकरण में छिपाये रखती है। आज से करीब २५० साल पहले उत्तर प्रदेश और बिहार के मजदूरों को अंग्रेजों ने प्रलोभन देकर सुदूर मारिशस तथा ट्रिनीडाड जहाजों में भरकर ले गए थे। इन निर्धन, निरीह, प्राणियों को अपने साथ ले जाने के लिए कोई भौतिक पदार्थ नहीं थे। चना-चबेना, पंजीरी लेकर खाली पेट अपनी जन्मभूमि को कलेजे में पत्थर रखकर छोड़ते हुए विदेश चले गए। किन्तु अपने साथ वे रामचरित मानस का गुटका ले जाना न भूल पाये। फिर क्या था इसी रामचरित मानस के गुटके का पारायण, सामूहिक गायन, प्रवचन एवं कथा के माध्यम से उन्होंने भारत की संस्कृति और हिन्दी भाषा को अद्यतन जीवित रखा। इसका परिणाम यह हुआ कि आज उन देशों में भारत वंशी प्रधानमंत्री जैसे पदों को सुशोभित करते हैं और अपने अस्मिता की रक्षा करते हैं। भारत के बाहर कई देशों में हिन्दी साहित्य और संस्कृति को जीवित रखने का श्रेय इसी रामचरित मानस को है। यह रचना निर्धन की झोपड़ी से लेकर महानगरों के वातानुकूलित सभागारों में समान श्रद्धा के साथ पढ़ी और गाई जाती है। एक ओर हिन्दी भाषी क्षेत्रों का अकिंचन हलवाहा भी रामचरित मानस की चौपाइयाँ गुनगुनाता है तो दूसरी ओर भाषा, काव्य, शास्त्र एवं दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान भी इस सद्ग्रन्थ की एक-एक चौपाई पर महीनों व्याख्या करते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी से जब पूछा गया कि इस ग्रन्थ में क्या है ? उन्होंने कहा –

"एहि मह रघुपति नाम उदारा।
अति पावन पुरान श्रुति सारा।।

"नाना पुराण निगमागम" की सम्मतियों से सुशोभित यह ग्रन्थ भारत की सबसे बड़ी सांस्कृतिक सम्पदा तथा मानव जाति की सर्वोत्तम धरोहर है।

इस समय भारत की महानतम संस्कृति के ऊपर दूरदर्शन एवं अन्य संचार माध्यमों से विदेशी अपसंस्कृति का आक्रमण हो रहा है जिसके प्रभाव से नई पीढ़ी उच्छृंखलता एवं हिंसा, कुण्ठा, निराशा, निष्ठुरता की शिकार हो रही है। स्वार्थ की अन्धी दौड़ एवं आत्म हनन की प्रवृत्ति इसी पाश्चात्य अपसंस्कृति का प्रभाव है। मानव जाति के इतिहास की यह सबसे अधिक संवेदनशील, त्रासदीपूर्ण और संक्रमण की घड़ी है। समाज निराशा के गहनतम अन्धकार में डूबकर कर्त्तव्यबोध खो चुका है। स्वार्थों की अन्धी दौड़ ने मानवीय मूल्यों को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूरी तरह नकार दिया है । इस महाव्याधि का निदान और चिकित्सा रामचरित मानस एवं तुलसी का भक्ति साहित्य ही है । इसीलिए संत तुलसी एवं रामचरित मानस आज सर्वाधिक उपयोगी तथा प्रासंगिक हैं।

प्रस्तुत पुस्तक गोस्वामी तुलसीदास जी के जन्म स्थान के विवाद का सशक्त समाधान है । लेखक ने इस शोधपरक समीक्षा में प्रत्यक्ष, अन्तः तथा अन्य साक्ष्यों का सहारा लेते हुए निष्कर्ष के रूप में गोस्वामी जी के जन्म स्थान कालिन्दी के तट पर स्थित चित्रकूट जिले का राजापुर गाँव है । यमुना तटवर्ती तुलसीदास जी का जन्म कुटीर इसका साक्षी है ।

तुलसी कृत गन्थों, उनकी आंचलिक भाषा के शब्द, लिपि प्रवृत्तियाँ आज तक सुरक्षित मानस की तुलसी की हस्तलिखित पाण्डुलिपि एवं तुलसीदास जी द्वारा लिखित पन्चनामा की लिपि प्रवृति राजापुर के चतुर्दिक अंचलों में प्रचलित जनश्रुति इसके मुखर प्रमाण हैं ।

लेखक ने गोस्वामी जी के शिष्य परम्परा की वंशावली एवं माफीदारों से भी उनका राजापुर जन्म स्थान होना प्रतिपादित किया है । तुलसीदास की विश्व व्यापकता से प्रभावित होकर कुछ विद्वानों ने एटा जिला के सोरों तथा गोण्डा जिले के राजापुर को जन्मभूमि माने जाने के लिए तर्क दिए हैं । आइये, तुलसी साहित्य के पन्नों को उलटें और देखें गोस्वामी जी ने यमुना के तटवर्ती राजापुर को ही अपनी जन्मभूमि होने का संकेत दिया है । रामचरितमानस में राम वन–गमन प्रसंग में प्रभु श्रीराम, लक्ष्मण और जानकी सहित यमुना पारकर चित्रकूट अंचल में पदार्पण करते हैं तो गोस्वामी जी रामभक्ति के अनुपम भावों में समाधिस्थ हो गए और जब तीर वासी नर–नारी अपना सब काम–काज छोड़ कर दर्शनार्थ पहुँचे तो उस बीच एक तपस्वी वहाँ पहुँच गए –

"तेहि अवसर एक तापस आवा ।
तेजपुँज लघु वयस सुहावा ।
कवि अलखित गति वेष विरागी ।
मन क्रम वचन राम अनुरागी....।"

इस तापस प्रसंग से यह प्रगट है कि गोस्वामी जी की जन्मभूमि यमुना का दक्षिण तटवर्ती राजापुर ही है क्योंकि जन्मभूमि में प्रवेश करते हुए तुलसीदास प्रणतमुद्रा में प्रवेश कर गए । इससे यह भी प्रगट है कि यह तापस गोस्वामी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसीदास ही हैं अन्य कोई नहीं है । मध्य प्रदेश तुलसी अकादमी के सचिव के रूप में मैंने तुलसीदास जी के साहित्य का गहन अध्ययन एवं अनुशीलन किया । मेरे मन में एक प्रश्न अचानक उभरा कि गोस्वामी जी की दृष्टि उसी गाँव में तपस्यारत उनकी धर्मपत्नी रत्नावली की ओर क्यों नही गई ? जब वे भगवान राम को प्रणाम करने जाते हैं तो उसी गाँव में रहने वाली उस देवी को राम के दर्शन कराने क्यों नहीं ले जाते ? उत्तर तुलसी साहित्य में ही मिल गया । गीतावली के पद क्रमांक (अयोध्याकांड १९/४) में गोस्वामी जी ने स्पष्ट लिखा है –

"सखिहिं सु सिख दई, प्रेम-मगन भई,
सुरति बिसरि गई अपनी ओही ।
तुलसी रही है ठाढ़ी पाहन गढ़ी-सी काढ़ी,
कौन जानै, कहाँ ते आई, कौन की को ही ।।"

'तापस प्रसंग' लिखने वाले संत तुलसीदास के संकेत से यह जान सकते हैं कि यह देवी और कोई नहीं बल्कि रत्नावली हैं । इसे हम 'तापसी प्रसंग' की संज्ञा दे सकते हैं । 'तापस' और 'तापसी प्रसंग' से जन्मस्थान का संशय, भ्रम और विवाद पर पूर्ण विराम लग जाता है ।

लेखक ने गहन शोध करके जिस यथार्थ को प्रतिपादित किया है इसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं । यह पुस्तक तुलसी साहित्य के शोधार्थियों अध्येताओं तथा सुधी पाठकों के लिए सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसी मेरी मान्यता है ।

मैं लेखक के शोधवृत्ति, लेखकीय प्रवृत्ति और ज्ञान पिपासा के लिए शुभकामना व्यक्त करता हूँ ।

अवधेश कुमार पाण्डेय
सचिव
म. प्र. तुलसी अकादमी, म. प्र. संस्कृत अकादमी
सदस्य संस्कृत बोर्ड, म. प्र.
निदेशक, तुलसी शोध संस्थान, चित्रकूट

कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या
दीपावली, ४-११-२००२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज
तुलसी पीठाधीश्वर एवं कुलाधिपति
अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग विश्वविद्यालय

आमोदवन, चित्रकूट धाम (म.प्र.)
दि० ६-११-२००२

मंगलानुशंसा

हे राजापुर के पूत, तुम्हारी जय जय हो ।
हे रघुपति भक्ति प्रसूत तुम्हारी जय जय हो ।।
हे चित्रकूट सर-सरसिज, कविकुल गुरुवर,
हे काव्यकला कुसुमाकर, नवरस निर्भर,
हे मंगल-भाव विधूत तुम्हारी जय जय हो ।।
हे राजापुर पुरपुण्य पुरन्ध्रि-सुकृत-फल
हे न्यस्तदण्ड बुन्देलखण्ड सर-शतदल,
हे प्राचेतस् संभूत तुम्हारी जय जय हो ।।
हे भारत भाग्याकाश रसेश दिवाकर,
हुआ भूरिभाग्य तुम्हें पूज अकिन्चन गिरिधर,
हे गुणगण स्यन्दन सूत तुम्हारी जय जय हो ।।

मैंने सुस्थिर प्रज्ञा तथा सावधान चेतस्क वृत्ति से पूर्णतः केन्द्रित होकर अतन्द्रित भाव से "तुलसी जन्मभूमिः शोध समीक्षा" नामक पुस्तक का ससमीक्ष निरीक्षण किया । प्रौढ़ लेखन निष्ठात श्री तुलसीदास साहित्य सरः सुस्नात पण्डित प्रकाण्ड आयुष्मान रामगणेश जी पाण्डेय की प्रत्यग्र प्रतिभावरटा ने जिन सैद्धान्तिक वरेण्य मुक्ताओं का चयन किया है उनसे मेरी इन पर गुणगृह्यता सहजतः संग्रहीत हो गयी है । गोस्वामी जी की जन्मभूमि विषयक कुतर्क, कुकल्पना, कुमनीषित, कुपक्षों को जिस निष्कोप, कुशल, कोमल सदुक्तियों से आयुष्मान पाण्डेय जी ने निरस्त किया है, इससे समस्त सारस्वत धैरेयगण इनके पाण्डित्य को चिरकाल पर्यन्त मंगलाशासन सुमनों से विभूषित करते रहेंगे ।

प्रत्येक कृती अपने रचना समकालिक संस्कारों, भावनाओं, वातावरण, परिदृश्य, परिवेश, सामाजिकता, परिस्थितियों तथा जन्म स्थानीय भाषा से प्रभावित हुए बिना रह ही नहीं सकता, क्योंकि प्रतिबिम्बन ही बिम्ब की निष्कलंक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निर्मलता का द्योतक होता है । इस दृष्टि से भी गोस्वामी जी की कृतियों में राजापुर का समग्र पारिस्थितिक प्रतिविम्बन ही श्री हुलसी हर्ष वर्धन को निर्विवाद रूप से राजापुर का प्रसूत सिद्ध कर देता है, जैसे–'तहूँ बन्धु सम बाम' (मानस –१/२८२) 'महूँ सनेह सकोच बस' (मानस २/२६०)। 'छुहे पुरट घट सहज सुहाए' (मानस–१/३४६–६) । उद्धरणों मे 'तहूँ', 'महूँ', 'छुहे' जैसे शब्द अत्यन्त ग्रामांचलीय होने के कारण इतने अप्रचलित और विशिष्टार्थ परिचायक हैं कि जिन्हें राजापुर क्षेत्र में जन्म लिए बिना कोई अपने अभीप्सित अर्थ के द्योतनार्थ प्रयोग कर ही नहीं सकता, जैसे–'मुनि कहँ चले बिकल की नाईं' (मानस–१/१३५/५) अर्धाली में प्रयुक्त 'बिकल' शब्द अन्यत्र भले व्याकुल के अर्थ में प्रयुक्त होगा, परन्तु राजापुर (चित्रकूट) में जन्मे तुलसीदास ने वहीं के आंचलिक अर्थ को ध्यान में रखकर इसे बैकल अर्थात् 'पागल' के अर्थ में प्रयुक्त किया है । अन्यत्र 'काज' शब्द कार्य के अर्थ में समझा जाता है परन्तु राजापुर (चित्रकूट) के ग्रामों में 'काज' शब्द का विवाह अर्थ भी माना जाता है । इसी संस्कार से गोस्वामी जी ने 'काज' शब्द को विवाह के अर्थ में भी प्रस्तुत किया । नारद विश्वमोहिनी से विवाह करने को आतुर हैं, उसी बीच प्रभु का दर्शन करके उनको विवाह की सफलता पर विश्वास हो जाता है और फूट पड़ता है, राजापुर जन्मभूमि का संस्कार –

"प्रभु बिलोकि मुनि नैन–जुड़ाने, होइहि काज हृदय हरषाने"

– (मानस–१/१३१/४)

इस प्रकार के वाह्यसाक्ष्य, अन्तःसाक्ष्य तथा किंवदन्ती सम्बन्धी शताधिक सद्युक्ति मौक्तिकों से इस विद्वन्मौक्तिक–हार ने जिज्ञासु जगत को जो बहुमूल्य उपहार समर्पित किया है, एतदर्थ मैं आयुष्मान रामगणेश पाण्डेय को बहुशः मंगलानुशंसाएँ समर्पित कर रहा हूँ । गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज जोकि भविष्येतर पुराण प्रति सर्ग पर्व के अनुसार आदि कवि प्राचेतस् महर्षि बाल्मीकि जी के अभिनव मंगलावतार हैं, श्री चित्रकूट राजापुर में ही श्री हुलसी माँ के गर्भक्षीर सागर से पूर्णेन्दु के रूप मे प्रकट हुए थे, यह इतिहास सत्य अब शाश्वत सत्य के रूप में उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक समस्त वैश्विक जगत के कण–कण तथा जन–जन में सत्यापन के साथ जागृत हो चुका है । इतने पर भी यदि दुराग्रही भ्रम, प्रमाद, विप्रलिप्सा, कर्णापाटक, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा, स्वार्थ–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोलुपतादि दुर्धर्ष दोषों के कारण इस तथ्य का अपलाप करता है तो उसके प्रति इतना ही कहना समीचीन होगा कि "नोलोकोऽप्यवलोक्यते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम्" इस पुस्तक रत्न में प्रस्तुत श्री तुलसीदास जी की जन्मस्थली के रूप में राजापुर (चित्रकूट) के प्रति समुपस्थापित समर्थक सामग्री से मैं बहुत सन्तुष्ट हूँ, और आशान्वित भी हूँ कि जैसे वे सुधीजन इससे बहुत सन्तुष्ट होंगे जिन्हें मेरे जैसे समस्त तुलसी साहित्य कंठस्थ होगा। वे ही इससे नहीं संतुष्ट होंगे जिनके लिए करिया अक्षर भैंस बराबर होगा। मैं चित्रकूट राजापुर को ही श्री तुलसीदास जी की प्राकट्य स्थली मानता हूँ, विश्वास करता हूँ और प्रतिवर्ष तुलसी जयन्ती के दिन चित्रकूट - राजापुर जाकर गोस्वामी जी की अपने इष्टदेव के रूप में श्रद्धासुमनों से पूजा करता हूँ। इसके समर्थन में श्री रामगणेश पाण्डेय जी ने जो पक्ष उद्धृत किए हैं वे मेरे द्वारा परीक्षित, निरीक्षित तथा विद्वत्सम्मत और कुशल समालोचकों से समीक्षित भी हैं। इतने पर भी यदि किसी को शंका हो तो मैं उसे शास्त्रार्थ हेतु तुलसीपीठि में सानुरोध आमंत्रित करता हूँ।

इति मंगलमाशास्ते

- रामभद्राचार्य (गिरिधर)

कुलाधिपति विकलांग विश्वविद्यालय एवं श्री तुलसी पीठाधीश्वर, धर्म-चक्रवर्ती महामहोपाध्याय जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य महाराज, चित्रकूट धाम।

⌘⌘⌘⌘

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राक्कथन

''कविता करके तुलसी न लसे, कविता पा लसी तुलसी की कला''

''हरिऔध''

भारतीय संस्कृति संरक्षक रामभक्ति के मूलाधार ।
रामचरित मानस अनुपम कृति नव रस काव्यकला आगार ।।
आज विश्व के निखिल रसिक जन कर मानस में स्नान विलास ।
मुक्त कंठ से कह उठते है जय मानस जय तुलसीदास ।।

सनातन धर्म और संस्कृति के संरक्षक संत शिरोमणि कविकुल गुरु कालजयी विश्व कवि लोकनायक गोस्वामी तुलसीदासजी का जन्म ऐसे युग में हुआ था जबकि सनातन धर्म और संस्कृति पर खतरे के बादल मँडरा रहे थे । बर्बर आक्रान्ता एवं विजेता राज विस्तार के साथ ही इस्लाम के प्रचार-प्रसार में जुटे थे । राजदंड भय, आतंक, राजनीतिक और आर्थिक प्रलोभन वश लोग इस्लाम अंगीकृत कर रहे थे । तुलसी ने अपनी लम्बी आयु में अनेक राजनीतिक ऊथल-पुथल देखे थे । उनके जीवनकाल में ही अनेक राजवंशो का उत्थान-पतन हुआ था और इस संक्रमण काल में सनातन धर्म और संस्कृति पर निरन्तर आघात होते रहे । सनातन धर्म एवं संस्कृति निराश्रित हो रहे थे क्योंकि जिनपर उनकी सुरक्षा तथा समृद्धि का भार था वे स्वयं आपसी फूट के कारण आक्रान्ताओं के अधीन हो रहे थे । ऐसी परिस्थितियों में तुलसी ने यह अनुभव किया कि सनातन धर्म और संस्कृति की रक्षा समाज की एकजुटता से ही सम्भव है और इस सत्कार्य को सम्पादित करने के लिए उन्होंने विश्व प्रसिद्ध अनुपम अमर महाकाव्य 'रामचरित मानस' सहित एक दर्जन से अधिक सद्ग्रन्थों का प्रणयन किया । देश की तत्कालीन दुर्दशा तथा सामाजिक एवं धार्मिक विघटन का यथार्थ चित्रण उन्होंने रामचरित मानस के उत्तरकांड के ९७ से १०२वें दोहे तक कलि वर्णन और –

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी ।
जीविका विहीन लोग सीद्यमान, सोचबस,
कहैं एक एकन सों, कहाँ जाई, का करी ?

– कवितावली-उत्तरकाण्ड ९७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदि के अन्तर्गत किया है और इस विकट परिस्थिति से उबरने हेतु जन सामान्य को "सब भरोसतजि जो भज रामहि" के माध्यम से आत्मनिर्भर हो श्री राम के 'शक्तिशील-सौन्दर्य' समन्वित चरित्र एवं वीर रूप के अनुकरण के प्रति प्रेरित किया। तुलसी ने 'मानस' के प्रायः हर काण्ड के प्रारम्भिक श्लोकों में श्री राम को सनातन धर्म और संस्कृति के रक्षणार्थ पाणौ महासायक चारुचापं", "पाणौवाण शरासनं," "पाणौनाराच चापं" आदिरूप में चित्रित किया है और श्री राम की ही भाँति परिवार और समाज को संगठित कर धर्म एवं संस्कृति की रक्षा हेतु 'राम-भज' (रामभक्ति) का प्रेरणास्पद उपदेश दिया है। भज का अर्थ मात्र भजन करना नहीं बल्कि 'भज' का अर्थ तदनुरूप आचरण करना है। तुलसी के 'मानस' के अनेक प्रसंगों में शिव से राम की तथा राम से शिव की पूजा करा कर शैवों वैष्णवों तथा शाक्तों को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास किया है। उन्होंने कोल-किरात तथा भीलनी शबरी के प्रसंगों द्वारा दलितों, निषादराज गुह, हनुमान, सुग्रीवादि बानरों के माध्यम से पिछड़ों, तथा विभीषण, त्रिजटा आदि के प्रसंग से देशेतर सनातन संस्कृति के पोषक वर्ग को संगठित कर सनातन संस्कृति को अक्षुण्य रखने का प्रयास किया। तुलसी के इन प्रयासों के ही फलस्वरूप सनातन धर्म और संस्कृति आक्रान्ता सत्ता-संस्कृति के प्रबल प्रवाह से भी सुरक्षित रही। इस संदर्भ में सुप्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा का कथन दृष्टव्य है – "हमारा देश निराशा के गहन अंधकार में साधक, साहित्यकारों से ही आलोक पाता रहा है। जब तलवारों का पानी उतर गया शंखों का घोष विलीन हो गया, तब भी तुलसी के कमंडल का पानी नहीं सूखा.......आज भी जो समाज हमारे सामने हैं वह तुलसीदास का निर्माण है। हम पौराणिक राम को नहीं जानते, तुलसीदास के राम को जानते हैं।"

–'सत्य लोकवाणी'–मार्च १९९७

तुलसी का 'रामचरितमानस' धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि दृष्टि से दुनिया की अद्वितीय अमूल्य अमानत (धरोहर) है। अकबर बादशाह के मंत्री तथा तुलसीदास जी के समकालीन सुप्रसिद्ध कवि अब्दुल रहीम खानखाना ने 'रामचरितमानस' के विषय में कहा था –

"रामचरितमानस विमल संतनजीवन प्रान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दुवान को वेद सम जवनहिं प्रगट कुरान ।।"

प्रसिद्ध मनीषी और 'मानस' व्याख्याता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार के अनुसार– "श्री रामचरित मानस का स्थान हिन्दी साहित्य में ही नहीं संसार के साहित्य में निराला है । इसके जोड़ का ऐसा ही सर्वांग सुन्दर, उत्तम काव्यों के लक्षणों से युक्त, साहित्य के सभी रसों का आस्वादन कराने वाला, काव्य कला की दृष्टि से भी सर्वोच्च कोटि का......दूसरा ग्रन्थ हिन्दी भाषा में ही नहीं, कदाचित संसार की किसी भाषा में आजतक नहीं लिखा गया ।" तभी तो उसका 'बाइबिल' से भी अधिक विश्व की सर्वाधिक सवा सौ से भी अधिक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है ।

किसी देश में कवियों और लेखकों का कितना सम्मान होना चाहिये, इस बारे में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने कहा था कि "अगर मुझसे कोई पूछे कि ब्रिटिश साम्राज्य और शेक्सपियर में तुम्हें कौन सबसे ज्यादा प्रिय है तो मैं कहूँगा कि शेक्सपियर ! क्योंकि ऐसे महान लेखकों पर गर्व करने वाला साम्राज्य खड़ा करने में मुझे देर नहीं लगेगी ।"

गोस्वामी तुलसीदास के सम्बन्ध में अंग्रेज लेखक एडमौर जे. बाबीमीन का कथन उल्लेखनीय है –"अगर वे यूरोप अथवा अमेरिका में जन्म लेते तो विलियम शेक्सपियर से बड़ी शख्सियत माने जाते । विलियम शेक्सपियर के समकालीन रहे गोस्वामी तुलसीदास के जन्म स्थान को लेकर आज तक विवाद खड़े किये जा रहे हैं जबकि ब्रिटेन में शेक्सपियर के जन्मस्थान पर इतना बड़ा स्मारक बना है कि वहाँ हर साल पचास हजार से ज्यादा लोग जमा होकर उनकी याद करते हैं ।"

तुलसीदास ऐसे संत महाकवि ने अन्य संत कवियों की भाँति अपने जन्म स्थान का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया । वैसे तो ऐसे संत महापुरुष किसी स्थान विशेष के न होकर सार्वभौमिक और सर्वकालिक होते हैं । पर जहाँ तक उनकी जन्मभूमि के विवाद का प्रश्न है आज से लगभग एक शताब्दी पूर्व तुलसी जन्मभूमि का कोई विवाद नहीं था । यह प्रायः सर्वमान्य था कि मानसकार तुलसी राजापुर (बाँदा, वर्तमान चित्रकूट) में पैदा हुए थे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाह्य साक्ष्यों, अन्तः साक्ष्यों और शताब्दियों से चली आ रही जनमान्यताओं के आधार पर राजापुर (बाँदा, वर्तमान जिला चित्रकूट) ही उनके समकालीन सम्राट अकबर के समय से उनका सर्वमान्य जन्म स्थान माना जाता रहा है मगर उनके द्वारा जन्मभूमि का स्पष्ट उल्लेख न करने से ऐसी महान विभूति के जन्मस्थान को अपने क्षेत्र से जोड़ने की क्षेत्रवादी संकुचित स्वार्थी मनोवृत्ति और थोथे पाण्डित्य प्रदर्शन के दुराग्रह से उनके जन्म के ४१० वर्ष बाद सन् ११०८ ई० के आसपास उत्तर प्रदेश के एटा जिले के सोरों (कथित शूकर क्षेत्र) के विवाद का सूत्रपात बाँदा जिले के तत्कालीन डिप्टी कलेक्टर लाला सीताराम द्वारा राजापुर (बाँदा) की तुलसीदास जी की हस्तलिखित 'रामचरितमानस–'अयोध्याकाण्ड' की दुर्लभ पाण्डुलिपि की टीका की भूमिका में 'मानस' के दोहा ३० क –

> "मैं पुनि निजगुरु सन सुनी कथा सो सूकरखेत ।
> समझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत ।।

की सोरो पक्ष में तोड़ मरोड़ कर मनमानी अर्थ की अनर्थ व्याख्या करने और सन् १८४६ ई० में अंग्रेज–मराठा युद्ध और सन् १८४७ ई० के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में राजापुर (चित्रकूट) में तुलसी शिष्य परम्परा के माफीदारों द्वारा राजापुर यमुना घाट से अंग्रेजी सेना को उतारने में विरोध से चिढ़े ब्रिटिश अधिकारियों के दुर्भावनावश जानबूझकर घाट आदि की माफी छीनने और "फूट डालो, राज करो" नीति के चलते तुलसीदास के सोरों से यमुना किनारे जंगल में आकर राजा साधु की स्मृति में राजापुर बसाने के मनगढ़न्त जन श्रुतियों के आधार पर सन् १८७४, १८८६ के 'गजेटियर' के तथ्यहीन उल्लेख कराने के आधार पर बाँदा के तत्कालीन डिप्टी कलेक्टर लाला सीताराम के प्रभाव से सन् १९०८ ई० के आसपास ही निर्मित हो रहे 'बाँदा गजेटियर' में सोरो के संत के यमुना किनारे जंगल में आकर राजा साधु की स्मृति में राजापुर बसाने के तथ्यहीन उल्लेख कराने से हुआ जबकि राजापुर (प्राचीन नाम विक्रमपुर) तुलसीदास जी के प्रपितामह के भी पहिले से आबाद कस्बा है। फिर एटा, गोंडा आदि जिलों के 'गजेटियर' या 'सर्वे रिपोर्ट' आदि में तुलसीदास जी का कोई उल्लेख न होने से सोरों या गोंडा पक्ष स्वतः अविश्वसनीय सिद्ध हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाते हैं। 'आइने अकबरी' तथा ऐतिहासिक-पुरातात्विक तथ्यों पर आधारित अधिक विश्वसनीय 'आर्क्योलाजिकल सर्वे-रिर्पोट' भाग (२) सन् १८९१ में भी सोरों या गोंडा के पसका-राजापुर में तुलसीदास जी का कोई उल्लेख नहीं है, जबकि राजापुर (बाँदा) में तुलसीदासजी के जन्मस्थान और अकबर के समय में बने मंदिरों का उल्लेख है। सुप्रसिद्ध पुरातत्वविद सागर विश्वविद्यालय के इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो० कृष्णदन्त वाजपेयी ने "राजापुरमें पुरातत्व" में लिखा है -"गुप्तकालीन चतुर्मुख शिवलिंग, नृत्यमुद्रा में बीस भुजी गणेश प्रतिमा, यत्रतत्र विखरे बड़ी संख्या में वृहत विचित्र शिवलिंग तथा समोगरी मंदिर के ध्वंशावशेष, कुषाण कालीन तथा चन्देल कालीन मूर्तियों से राजापुर का अस्तित्व कुषाणकाल से अबतक निरन्तर अबाधरूप से चला आ रहा है।"

अस्तु, 'गजेटियर' में उल्लिखित तुलसी के सोरों से आकर राजापुर बसाने का प्रश्न ही नहीं उठता।

'मानस' – बालकाण्ड के उक्त दोहे– "मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सां सूकरखेत" के आधार पर कुछ क्षेत्रवादी संकीर्ण मनोवृत्ति के दुराग्रही लोग तुलसीदासजी की जन्मभूमि सोरों (कथित शूकर क्षेत्र) और गोंडा जिले के पसका (कथित शूकर क्षेत्र) के पास राजापुर के मानने की महती भूल कर बैठते हैं और उसी को केन्द्र बिन्दु बनाकर तोड़ मरोड़ कर अर्थ का अनर्थ कर सारी मन गढ़न्त कृत्रिम कहानी बनाये हुये हैं।

यों तो पूरे भारत देश में विभिन्न धार्मिक ग्रन्थों के आधार पर २४ और उससे भी अधिक शूकर क्षेत्रों (बाराह क्षेत्रों) का उल्लेख है। उनमें चित्रकूट का भी 'सूकर खेत' है जो राजापुर (चित्रकूट) से लगभग १२ कोस और बालक रामबोला (तुलसीदास के बचपन का नाम) की पालन स्थली हरिहरपुर से मात्र दो-ढाई कोस है। जहाँ से ६-७ साल के बालक रामबोला ने आसानी से चित्रकूट के परिक्रमा मार्ग के दूसरे मुखारविन्दु के पास सूकरखेत में पहुँचकर अपने गुरुमुख से कथा सुनी थी।

चित्रकूट में परिक्रमा मार्ग में दूसरे मुखारविन्द में भगवान वाराह मंदिर,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नरहरि आश्रम, पार्श्व में तुलसी मंदिर (छतरी) नरहरिदास की धूनी, नरहरि–समाधि, नरहरि तलैया, तुलसी–चौरा तथा तुलसीदास जी द्वारा आरोपित पीपल का पुनः प्रस्फुटित पुराना वृक्ष आज भी विद्यमान है ।

बालक रामबोला (तुलसीदास जी का बचपन का नाम) ने बालपन की अचेतावस्था में चित्रकूट स्थित इसी 'सूकरखेत' के नरहरि आश्रम में रामकथा श्रवण की थी । स्वयं तुलसीदास जी ने गीतावली' में बड़े स्पष्ट शब्दों में चित्रकूट में शूकरक्षेत्र होने का बड़ा सजीव वर्णन किया है –

"सिखर परस घन घटहिं मिलति बग पाँति सो छवि कवि बरनी ।
आदि बराह बिहरि वारिध मनो उठ्यो है दसन धरि धरनी ।।
जलयुत बिमल शिलनि झलकत नभ बन प्रतिबिंब तरंग ।
मानहु जग रचना विचित्र बिलसति बिराट अंग अंग ।।"

– 'गीतावली'–अयो० ५०–४,५

वास्तव में तुलसीदासजी को दो बार अपनी जन्मभूमि राजापुर (बाँदा, वर्तमान जनपद चित्रकूट) को छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा था । प्रथम बार अभुक्तमूल नक्षत्र में जन्म के कारण परित्यक्त बालक रामबोला को पड़ोस की चुनिया द्वारा पालनार्थ चित्रकूट के नजदीक अपनी ससुराल हरिहरपुर ले जाने पर और दूसरी बार पत्नी की क्रोध भरी मार्मिक फटकार के बाद । दो बार उन्हें यहाँ आकर रहना भी पड़ा था । प्रथम बार विवाह के पूर्व और दूसरी बार पत्नी के मृत्यु के समय वृद्धावस्था में । तीसरी बार उन्होंने स्वेच्छा से राजापुर सदैव के लिए छोड़ दिया था और काशी के अस्सीघाट पर उन्हें संवत् १६८० में अमरत्व की प्राप्ति हो गई थी । इस जाने–आने की प्रक्रिया को कतिपय लेखकों ने भ्रमवश बाहर से आकर राजापुर बसना मान लिया और राजा साधु की स्मृति में राजापुर बसाने की मनगढ़ंत कहानी गढ़ली । मगर सच तो यह है कि साधुओं का नाम राजा नहीं होता और साधू होने पर राजा का नाम भी राजा नहीं रहता । हो सकता है कि तुलसीदासजी ने अपने आराध्य राजाराम की स्मृति में सुल्ताना रजिया के नाम से चले आ रहे रजियापुर नाम को बदलकर राजापुर कर दिया हो और कालान्तर में गोस्वामी तुलसीदास जी की प्रसिद्धि तथा प्रभाव से धीरे–धीरे रजियापुर से राजापुर नाम प्रचलित हो गया हो ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस प्रकार तुलसीदास जी के जन्म के समय तक राजापुर का नाम विक्रमपुर तत्पश्चात् विक्रमपुर के उजड़ने के बाद दुबों की बहुलता एवं वर्चस्व से 'दूबन का पुरवा' और रजियापुर से राजापुर हो गया।

जन्मभूमि के प्रति स्वाभाविक लगाव से ही 'रामचरितमानस' में तापस प्रसंग के माध्यम से अपने इष्टदेव के यमुनापार कर जन्मभूमि क्षेत्र में प्रवेश करते ही उनके स्वागत में स्वयं को उपस्थित करने तथा वहाँ से चित्रकूट तक के हृदयहारी विशद वर्णन में कवि का मन विशेष रमा है। 'विनयपत्रिका' के

"जमुना ज्यों ज्यों लागी बाढ़न।
त्यों त्यों सुकृत-सुभट कलि भूपहिं निदरि लगे बहि काढ़न... ।।"
–विनय० २१

से बढ़ी यमुना तैरकर उस पार पत्नी के पास ससुराल महेवा घाट जाने की ओर संकेत है तथा हनुमान चालीसा में –"महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति नेवार सुमति के संगी।।" और "को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो।।" से विक्रमपुर (राजापुर का प्राचीन नाम) और वहाँ उनके द्वारा स्थापित सुप्रसिद्ध 'संकटमोचन हनुमान जी' की ओर संकेत है।

इसके अतिरिक्त उनकी रचनाओं में राजापुर–चित्रकूट के आसपास बोली जाने वाली जनभाषा के ठेठ देशज शब्दों का प्रचुर प्रयोग तथा घाट–हाट आदि की माफी के लिए सम्राट अकबर के समय से अंग्रेजी हुकूमत तक राजापुर में तुलसी शिष्य वंशजों को दिये गये आधा दर्जन से अधिक ऐतिहासिक दस्तावेज ही राजापुर (चित्रकूट) को तुलसी की प्रामाणित जन्मभूमि सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं।

३१ मई १९६० ई० को देश की राजधानी दिल्ली में भारतीय हिन्दी परिषद के तत्वावधान में देश भर के मान्य मूर्धन्य विद्वानों ने भी उपरोक्त तथ्यों के आधार पर राजापुर (बाँदा, वर्तमान जिला चित्रकूट) को मानसकार तुलसी की प्रामाणिक जन्म भूमि सिद्ध किया है और सोरों (एटा) के साक्ष्य संदिग्ध, तथ्यहीन, जाली, निराधार, मनगढ़ंत, कृत्रिम, कपोल कल्पित, दुराग्रहपूर्ण, भ्रामक और अविश्वसनीय सिद्ध हुए हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपरोक्त तथ्यों, प्रमाणों तथा विद्वद् गोष्ठियों के निर्णय और स्थापना के बावजूद तुलसी जन्म के करीब पौने पाँच सौ साल बाद सन् १९६८ ई० से कुछ क्षेत्रवादी संकीर्ण स्वार्थी मनोवृत्ति के दुराग्रही छपास रोगियों को 'मानस' के उक्त दोहे "मैं पुनि निज गुरु सन सुनी......" और 'सूकर खेत' की सोरों समर्थकों की तरह अपने ढंग से तोड़ मरोड़ कर मनगढ़न्त व्याख्या करके राजापुर (बाँदा, वर्तमान जिला चित्रकूट) के स्थान पर कुछ तथ्यहीन, निराधार, मनगढ़ंत, कृत्रिम, कपोल कल्पित, जाली, संदिग्ध साक्ष्यों से गोंडा जिले में घाघरा तट पर पसका (कथित शूकर क्षेत्र) से लगभग ६ किलोमीटर दूर घाघरा तट पर स्थित राजापुर को तुलसी जन्मभूमि सिद्ध करने की सुध आई है। जबकि पसका का कोई सम्बन्ध न तो बाराह भगवान से है, न ही गोंडा या किसी जिले के गजेटियर या 'सर्वे रिपोर्ट' में पसका के शूकर क्षेत्र होने या तुलसी से सम्बन्ध होने का कोई उल्लेख है। फिर भी थोथे पाण्डित्य प्रदर्शन के लोभी कुछ क्षेत्रवादी, आस्पदवादी, संकीर्ण मनोवृत्ति के स्वार्थी दुराग्रही तथाकथित विद्वान राजापुर (चित्रकूट) के पक्ष में प्रामाणिक पुष्ट प्रमाण मिलने पर भी अब भी मात्र 'सूकर खेत' को केन्द्र मानकर और तुलसी कथ्य की अपने ढंग से तोड़ मरोड़ कर मनमुखी व्याख्या करके साक्ष्य में उन ग्रन्थों को प्रामाणिक मानकर अपना राग अलाप रहे हैं, जिन्हें मान्य मूर्धन्य विद्वान अप्रामाणिक मानकर नकार चुके हैं।

प्रस्तुत पुस्तक "तुलसी जन्म भूमिः शोध समीक्षा" में तुलसी की प्रामाणिक जन्मभूमि निर्धारण में वाह्यसाक्ष्यों, अन्तःसाक्ष्यों और लोकमान्यताओं की तथ्यपरक सम्यक् समीक्षा की गई है और तुलसीदासजी की भाषा, भाषात्मक प्रवृत्ति एवं भाषात्मक लिपिप्रवृत्ति की भी सोदाहरण शोध-समीक्षा की गई है तथा तुलसी कथ्य की क्षेत्रवादी, आस्पदवादी, संकीर्ण, दुराग्रही मनोवृत्ति से तोड़-मरोड़कर मनमुखी व्याख्या करके साक्ष्य में संदिग्ध, कृत्रिम, कपोल कल्पित, जाली अविश्वसनीय, मनगढ़ंत साक्ष्य प्रस्तुत कर किये गये अनर्गल प्रलापों को सटीक, सप्रणाम उच्छिन्न कर भ्रान्तियों पर जमकर आघात किया गया है। ऐतिहासिक दस्तावेजों, फरमानों-पट्टों, पाण्डुलिपियों, छायाचित्रों तथा अन्तः साक्ष्य आदि के पुष्ट प्रमाणों ने इस कृति का और प्रभावशाली बना दिया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्त में प्रस्तुत शोध समीक्षा में जिन विद्वानों, रचनाकारों की रचनाओं से साक्ष्य साभार संकलित हैं और जिन मान्य मूर्धन्य विद्वानों ने प्रस्तुत शोध समीक्षा के सन्दर्भ में जो शुभकामनायें, सम्मतियाँ तथा समीक्षायें दी हैं, उनके प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। वे सब मेरे प्रणम्य हैं और मैं उनका अनुग्रहीत हूँ।

–रामगणेश पाण्डेय

⌘⌘⌘⌘

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसी शोध समीक्षा की आधार भूमि

कालजयी विश्व कवि कविकुल चूड़ामणि संत शिरोमणि युग पुरुष गोस्वामी तुलसीदास जी साहित्याकाश के ऐसे सूर्य हैं, जिन्होंने अपने ज्ञान आलोक से शताब्दियों से समाज में साहस, आत्म सम्मान, सत्कर्म, सदाचरण एवं सद्ज्ञान की अभिवृद्धि की है । उन्होंने जीवन एवं समाज की सभी परिस्थितियों का सम्यक अध्ययन कर लोक कल्याण की कामना से विश्व को वह अनुपम अक्षय-निधि प्रदान की है जो शताब्दियों बाद आज भी असंख्य नर-नारियों के सुख-समृद्धि, शान्ति तथा लौकिक-पारलौकिक अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त कर रही है ।

महात्मा गाँधी जी का कथन है –"यदि आप तुलसीदास की रामायण को गहराई से पढ़ें, तो शायद आप मेरी इस राय से सहमत होंगे कि संसार की आधुनिक भाषाओं के साहित्य में उसके मुकाबले में कोई दूसरी किताब नहीं ठहरती । उस एक ही ग्रन्थ ने मुझे जितनी श्रद्धा दी है, उतनी किसी दूसरी क़िताब से मुझे नहीं मिली । मेरा ख्याल है कि वह हर तरह की आलोचना और छानबीन के बाद साहित्यिक सौन्दर्य, अलंकार और धार्मिक सभी दृष्टियों से खरी उतरेगी ।"

सर्वोदयी नेता आचार्य बिनोवा भावे ने कहा था –"बुद्ध के पश्चात् तुलसी के अतिरिक्त कोई भी समाज सेवी इतना बड़ा नहीं हुआ है । लोग कहते हैं कि अकबर के समय तुलसीदास हुये, पर मैं तो कहता हूँ कि तुलसी के समय अकबर हुये । जनता राजाओं को भूल गई पर तुलसी के राम को नहीं भूली । जनता देश का थर्मामीटर है ।"

–'सत्यलोकवाणी'–६ मार्च से १३ मार्च १९९७ पृष्ठ १६

पाश्चात्य विद्वान डॉ० जी० ए० ग्रियर्सन ने तुलसी साहित्य से प्रभावित होकर लिखा है – "तुलसीदास एशिया के तीन या चार महान् लेखकों में एक हैं, उनकी रामचरित मानस उत्तर भारत में इतनी लोकप्रिय है, जितनी इंग्लैण्ड में बाइबिल भी लोकप्रिय नहीं है ।"

–'इंडियन एन्टीक्वेरी १८९३', पृष्ठ ८५

इसी प्रकार प्रसिद्ध इतिहासकार विन्सेन्ट स्मिथ ने अपने ग्रंथ "अकबर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दि ग्रेट" (द्वितीय संस्करण पृष्ठ ४१७) में लिखा है – "तुलसी का नाम आइने अकबरी अथवा पर्शियन इतिहासकारों के लेखों पर आधारित योरोपीय लेखकों के ग्रंथों में नहीं मिलेगा, फिर भी वे अपने युग के सबसे बड़े सम्राट अकबर से भी बड़े महापुरुष थे।"

तुलसी शोध–सम्बन्धी श्रोत

गोस्वामी तुलसीदास जी के जीवन–चरित्र के निर्णय में गोस्वामी तुलसीदास जी के प्रिय शिष्य बाबा वेणी माधवदास कृत 'मूल गोसाई चरित'[१] तथा दूसरे शिष्य बाबा रघुबरदास रचित 'तुलसी चरित' बड़े सहायक हैं। पर कुछ विद्वानों ने इन दोनों ग्रन्थों की प्रामाणिकता पर अनेक प्रश्न चिन्ह खड़े किये हैं। श्री रामनरेश त्रिपाठी 'मूल गोसाईं चरित' को जाली ही नहीं अपितु किसी अनाधिकारी की कृति मानते हैं। डॉ० माता प्रसाद गुप्त कतिपय ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर 'मूल गोसाईं चरित' को काल्पनिक ठहराते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कथन है –"अब तक इस ग्रन्थ का कोई अता–पता न था, पर कुछ दिन हुए सहसा यह ग्रन्थ अयोध्या में निकल पड़ा। अयोध्या में एक निपुण दल है, जो लुप्त पुस्तकों और रचनाओं को समय–समय पर प्रकट करता रहता है।"

'मूल गोसाईं चरित' और 'तुलसी चरित' की प्रामाणिकता

जहाँ तक डॉ० माता प्रसाद गुप्त द्वारा उठाये गये कतिपय ऐतिहासिक तथ्यों का प्रश्न है, इस सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि 'मूल गोसाई–चरित' के रचयिता कोई इतिहासज्ञ नहीं थे। वे एक विरक्त साधु थे। उन्होंने अपनी जानकारी के आधार पर ही इस ग्रन्थ में तिथियों तथा ऐतिहासिक तथ्यों का उल्लेख किया होगा। अस्तु उनमें कुछ तिथियों तथा ऐतिहासिक तथ्यों के सम्बन्ध में भूल हो सकती है। यह भी सम्भव है कि ग्रन्थकर्ता ने अपने गुरु के श्रद्धा, सम्मान में कुछ प्रचलित दन्तकथाओं को अपने ग्रन्थ में स्थान दिया हो, जो ऐतिहासिक कसौटी में खरी न उतरती हों, किन्तु केवल इसी आधार पर 'मूल गोसाईं चरित' को कल्पित तथा अनधिकृत ठहराना उचित न होगा।

---

१. "सोरह सै सत्तासि सित, नवमी कातिक मास।
विरच्यो यहि नित पाठ हित, वेणीमाधव दास॥"
–'मूल गोसाईं चरित' –बाबा वेणीमाधवदास पृष्ठ ५०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ विद्वान मूल गोसाई चरित में दी हुई तिथियों को त्रुटिपूर्ण कहकर उसे जाली मानते हैं, किन्तु इस सम्बन्ध में बाबू श्यामसुन्दरदास का मत है यदि 'मूलगोसाई चरित' प्रामाणिक न हो तो आश्यर्च की बात होगी। इसमें तुलसीदास जी के जीवन की जितनी तिथियाँ मिलती हैं, वे सब गणित के अनुसार ठीक उतरती हैं। जिन तिथियों की प्रामाणिकता के विषय में 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' में सन्देह प्रकट किया गया है – (भाग सात, पृष्ठ ३१५ तथा पृष्ठ ४००-४०१) वे भी पं० गोरेलाल तिवारी की गणना के अनुसार ठीक उतरती हैं – (नागरी प्रचारिणी पत्रिका; भाग ८, पृष्ठ ४०६)

सन्देह के निराकरण के लिए बाबू श्यामसुन्दरदास ने काफी खोजबीन और गणना के पश्चात् सन् १९३१ में 'गोस्वामी तुलसीदास' नाम वृहद् ग्रन्थ हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयाग से प्रकाशित कराकर 'मूल गोसाई चरित' की प्रमाणिकता विस्तार से सुदृढ़ प्रमाणों से सिद्ध की।

रामदास गौड़ के अनुसार – "मूल गोसाई चरित के कागज की लिखाई, रोशनाई आदि की परख के अनुसार मैं पूर्ण निश्चय के साथ कह सकता हूँ कि पोथी (मूल गोसाईं चरित) जाली नहीं हो सकती।"

सरस्वती भवन बनारस में गोस्वामी तुलसीदास जी की हस्तलिखित बाल्मीकीय रामायण की पोथी रखी है, जिसकी पुष्पिका में लिखा है – संवत् १६४१ समये मार्ग सुदी ७ रवौ लि० तुलसीदासेन।

उसके साथ यह भी लिखा है –

श्रीमद्येदिलशाह भूमिप सभा सम्येन्दु भूमीसुर –
श्रेणी मण्डन मण्डली धुरिद्या दानादि भाजि प्रभुः।
बाल्मीके : कृतिमुत्तमां पुररिपो : पुर्यां पुरोग : कृती।
दत्तात्रेय समाह्वयो लिपि कृते : कर्मित्वमाचीकरत्।

इस श्लोक का रहस्य और पुष्पिका के संस्कृत गद्य का भाव 'मूल गोसाईं चरित' के निम्नांकित पद्यों को पढ़ने से स्पष्ट खुल जाता है–

लिखे बाल्मीकी बहुरि इकतालिस के माहिं।
मगसिर सप्तमी खौ पाठकरन हित ताहिं।।५५।।
आदिल साही राज के भाजक दान बनेत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दन्तात्रेय सुविप्रवर आये ऋषय निकेत ।।५८।।
करि पूजा आसिष लहे माँगे पुण्य प्रसाद ।
लिखित बाल्मीकी स्व कर दिये सहित अहलाद ।।५९।।

शिवसिंह सरोज ने भी लिखा है कि "बाबा वेणी माधवदास पसका गाँव (जिला गोंडा) के निवासी थे। उन्होंने गोसाईं चरित नामक गोसाईं जी का एक वृहत् जीवन ग्रन्थ लिखा है जो अब अप्राप्त है।"

प्रसिद्ध समालोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है–"शिवसिंह सरोज में गोस्वामी जी के एक शिष्य बेनी माधवदास कृत गोसाईं चरित का उल्लेख है........"

– 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' – पृष्ठ १५०

आगे वे लिखते हैं – "यह बात अवश्य है कि गोसाईं चरित्र में जो वृत्त दिये गये हैं, वे अधिकतर वे ही हैं जो परम्परा से प्रसिद्ध चले आते हैं।"

– 'हिन्दी साहित्स का इतिहास', – पृष्ठ १५२

'मूल गोसाईं चरित' की भाँति बाबा रघुबरदास रचित 'तुलसीचरित' की कुछ तिथियों तथा घटनाओं के सम्बन्ध में मत वैभिन्न है किन्तु इस आधार पर पूरे ग्रंथ को अप्रमाणिक नहीं कहा जा सकता है; क्योंकि अनेक तिथियाँ तथा घटनायें जन श्रुतियों तथा परम्पराओं से जुड़ी होती हैं। विशेषतः उस परिस्थिति में जब तिथिवार क्रमिक घटनाओं के लिखने का प्रचलन नहीं था।

बाबा वेणीमाधवदास और बाबा रघुबरदास की भेंट तुलसीदास जी से होना विद्वानों द्वारा संवत् १६०० और १६०९ के मध्य निर्धारित हो चुका है, अतः इनकी प्रमाणिकता में सन्देह नहीं रह गया है। निहित स्वार्थ दिगभ्रान्त दुराग्रहियों द्वारा यह मान लेना कि ये ग्रंथ अप्रामाणिक हैं अथवा इनमें मनगढ़ंत गाथायें लिखी हैं–यह कहना कितना हास्यास्पद है। भला शिष्य सन्त महात्मा को क्या पड़ी है कि वे झूठ लिखेंगे ? ऐसा कहना उन महात्माओं के प्रति अन्याय है, सन्तजनों के प्रति अवमानना और उपेक्षा है। यह कदापि मानवोचित नहीं कहा जा सकता। ऐसा तो निहित स्वार्थी, दुराग्रही, पूर्वाग्रही क्षेत्रीयता की विकृत मानसिकता और थोथे पाण्डित्य प्रदर्शन के लोभी ही कह सकते हैं।

इन दोनों ग्रन्थों के वर्णन में अनेक घटना वैभिन्न होते हुये भी दोनों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्मभूमि के विषय में एक ही मत के हैं; दोनों ही राजापुर (चित्रकूट) को तुलसी जन्मभूमि मानते हैं। उनके द्वारा वर्णित तुलसी जीवनवृत्त सम्बन्धी तथ्य वही हैं, जो परम्परा से प्रसिद्ध चले आ रहे हैं।

पाश्चात्य विद्वानों के शोध कार्य :- तुलसी के प्रतिभा से प्रभावित होकर अनेक पाश्चात्य विद्वानों ने तुलसी साहित्य का अध्ययन करके उनके जीवन तथा काव्य के अनेक पक्ष उजागर किये हैं। सर्वप्रथम एच. एच. विल्सन ने १८३१ ई० में 'एशियाटिक रिसर्च सोसायटी आफ इण्डिया' पत्रिका भाग १८ में प्रकाशित अपने निबन्ध 'रिलीजियस सेक्ट्स आफ दि हिन्दूज' में जनश्रुतियों के आधार पर तुलसी के जीवन सम्बन्धी कुछ तथ्य प्रस्तुत कर उनके जन्म, जाति, पत्नी प्रेम, गृह त्याग, तीर्थ भ्रमण, हनुमान दर्शन, सम्राट के कोप से मुक्ति आदि पर प्रकाश डाला है। विल्सन के बाद १८३९ ई० में प्रसिद्ध फ्रेंच विद्वान दतासी का "इस्त्वार-द-लितरेच्यूर ऐं दुई ए-हिन्दुस्तानी" नामक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ, जिसमें विल्सन द्वारा दिये गये तथ्यों की पुष्टि की गई है और तुलसी के पिता का नाम आत्माराम पन्त तथा पत्नी का नाम ममता देवी बताया गया है। तुलसी साहित्य के तीसरे पाश्चात्य विद्वान एफ. एस. ग्राउज ने सन् १८७६ में रामचरित मानस का अंग्रेजी अनुवाद "रामायन आफ तुलसीदास" किया है और उसकी भूमिका में तुलसी जीवन पर पूर्व विद्वानों की अपेक्षा कुछ अधिक प्रामाणिकता से प्रकाश डाला है। उन्होंने रामचरित मानस की काव्यगत विशेषताओं, पात्रों के चरित्र संगठन, काव्य शिल्प तथा भाषानुगत सम्पन्नता का भी उल्लेख किया है।

ग्राउज के पश्चात् डॉ० ग्रियर्सन ने तुलसी सम्बन्धी शोधकार्य में महत्वपूर्ण योगदान किया है। उन्होंने १८८९ ई० में प्रकाशित अपने ग्रन्थ "दि वर्नाक्यूलर लिटरेचर आफ हिन्दुस्तान" १८९३ ई० "इण्डियन एन्टीक्वेरी" में प्रकाशित अपने निबन्ध 'नोट्स आन तुलसीदास' तथा १९०३ ई० में 'एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल' में प्रकाशित अपने एक अन्य लेख 'तुलसीदास-पोइट एण्ड रिलीजियस रिफार्मर' में तुलसी सम्बन्धी सामग्री का वैज्ञानिक विवेचन कर तुलसी के व्यक्तित्व तथा उनकी काव्य प्रतिभा पर प्रकाश डालते हुए, यह प्रतिपादित किया है कि तुलसी केवल एक धर्म सुधारक ही नहीं अपितु वह एक उच्चकोटि के कवि थे।

ग्रियर्सन के पश्चात एडविन ग्रीब्ज ने १८९९ ई० में नागरी प्रचारिणी-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्रिका में प्रकाशित अपने एक लेख में लिखा है कि तुलसीदास संवत् १५५४–५५ में राजापुर (बांदा, अब चित्रकूट जनपद) में पैदा हुए थे। उनके बचपन का नाम रामबोला था। उनके पिता आत्माराम, माता हुलसी तथा गुरु नरहरि थे। एडविन ग्रीब्ज ने तुलसी की काव्य प्रतिभा तथा शिल्प–क्षमता की बड़ी प्रशंसा की है। एडविन ग्रीब्ज के पश्चात् टेसीटेरी ने १९११ ई० में "इत रामचरितमानस रामायणे" शीर्षक अपने निबन्ध में रामचरित मानस तथा बाल्मीकीय रामायण का तुलनात्मक अध्ययन करते हुये यह प्रतिपादित किया है कि तुलसी का काव्य शिल्प बाल्मीकी के काव्य शिल्प से अधिक प्रौढ़ तथा प्राञ्जल है। टेसीटेरी के बाद जे० ई० कारपेण्टर ने अपने ग्रन्थ 'थियोलाजी आफ तुलसीदास' में तुलसी के आध्यात्मिक तथा धार्मिक विचारों की विवेचना की है। कारपेण्टर के पाश्चात् के. ई. ने अपने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' में यह दिखलाया है कि रामचरित मानस का मूल श्रोत बाल्मीकीय रामायण नहीं अपितु आध्यात्म–रामायण है। उन्होंने रामचरित मानस को उत्कृष्टतम् काव्यों में शीर्षस्थ माना है। डॉ० कामिल बुल्के ने १९५० ई० में प्रकाशित अपने शोध प्रबन्ध 'रामकथा' में तुलसीदास के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर प्रकाश डालते हुये यह माना है कि रामचरित मानस में अध्यात्म रामायण का अधिक प्रभाव है। १९५२ ई० में डगलस पी० हिल ने "दि होली लेक ऑफ दि ऐक्ट्स आफ राम" शीर्षक अपने ग्रन्थ में तुलसी के धार्मिक तथा आध्यात्मिक विचारों की विवेचना की है। १९५२ में ही रूसी विद्वान बारान्निकोव ने रामचरितमानस का रूसी भाषा में पद्यानुवाद किया है। उन्होंने तुलसी के दार्शनिक, आध्यात्मिक तथा कला पक्ष का विश्लेषण भी किया है।

इस प्रकार पाश्चात्य विद्वानों के प्रयासों के फलस्वरूप तुलसी के जन्म स्थान, तुलसी के नाम, उनकी बाल्यावस्था तथा उनके माता–पिता, पत्नी तथा गुरु आदि एवं उनकी रचनाओं के सम्बन्ध में खोजबीन प्रारम्भ हुई। इस दिशा में भारतीय विद्वानों का भी योगदान कम महत्वपूर्ण नहीं है। उन्होंने भी तुलसी के जीवन वृत्त तथा उनके काव्य के विविध पक्षों का विद्वतापूर्ण विश्लेषण कर तुलसी सम्बन्धी खोज को नई दिशा दी है। इस क्रम में अनेक मौलिक ग्रन्थ तथा शोध प्रबन्ध प्रकाशित हो चुके हैं।

⌘⌘⌘⌘

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'रामचरित मानस' प्रणेता
गोस्वामी तुलसीदास जी का जीवन वृत्त

प्रस्तुत शोधग्रन्थ में संत शिरोमणि कविकुलगुरु कालजयी विश्वकवि गोस्वामी तुलसीदास जी के जन्मभूमि विषयक अद्यावधि किये गये शोधों की सम्यक् समीक्षोपरान्त अकाट्य तथ्यों, तर्कों, पुष्ट प्रमाणों द्वारा विश्वमान्य प्रामाणिक जन्मभूमि की विशद् शोध समीक्षा की गई है। परन्तु उसके पूर्व हम विश्व विश्रुत कालजयी अनुपम महाकाव्य 'रामचरितमानस' प्रणेता महाकवि संतशिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी के जीवन वृत के विविध पक्षों पर समीक्षात्मक संक्षिप्त प्रकाश डालेंगे –

जन्मतिथि :– तुलसी ने अपने वृहद् साहित्य में अपनी जन्मतिथि के सम्बन्ध में कुछ भी स्पष्टसंकेत नहीं किया है। अनेक विद्वान इस विषय पर अपने–अपने मत प्रस्तुत करते हैं –

(१) 'मूलगोसाईंचरित' के रचनाकार तुलसी शिष्य बाबा वेणीमाधवदास तुलसी जन्म सम्वत् १५५४ विक्रमी मानते हैं –

पन्द्रह सै चउवन विषै, कालिन्दी के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी धरेउ शरीर ।।२।।

– 'मूल गोसाईंचरति' पृष्ठ ३६

(२) विक्रम सम्वत् १९५७ में प्रकाशित 'मानस मयंक' में पं० शिवलाल जी पाठक गोस्वामी तुलसीदास जी के जन्म संवत् को इस प्रकार स्पष्ट करते हैं –

"मन ऊपर शर जानिये शर पर दीन्हें एक।
तुलसी प्रकटे रामवत् राम जानकी टेक ।।"१३५।।

इस दोहे के अनुसार तुलसीदास जी का जन्म सम्वत् १५५४ विक्रमी है – मन=१, शर=५, शर=५ – पर दीन्हें १=४ अर्थात् संवत् १५५४ वि०।

(३) गीताप्रेस गोरखपुर, नवल किशोर प्रेस लखनऊ, वेंकटेश्वर प्रेस मुम्बई आदि प्रमुख प्रेसों से प्रकाशित रामचरितमानस आदि में सम्वत् १५५४ विक्रमी की ही पुष्टि की है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(४) 'रामचरितमानस' के सुप्रसिद्ध टीकाकार श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार ने गोस्वामी जी का जन्म सावन शुक्ला सप्तमी संवत् १५५४ वि० अभुक्त मूल नक्षत्र में माना है।

(५) 'तुलसी स्मृति सन्दर्भ' के मनीषी रचनाकार स्वामी रामानन्द सरस्वती के अनुसार गोस्वामी तुलसीदासजी का जन्म सावन शुक्ला सप्तमी संवत् १५५४ वि० को हुआ था -

इत्थं चादि कविस्तु वेदशरवाणेन्दौ शके वैक्रमे,
जातः श्री हुलसी सुतश्च तुलसीदासोऽत्र राजापुरे।
कालिन्द्यास्तटगे सुविप्रकुलजो मासे शुभे श्रावणे,
सप्तम्यां सित पक्षके च मकरे लग्ने गुरौ सप्तमे ।।८।।

"तुलसी स्मृति सन्दर्भः", पृष्ठ ३

(इस प्रकार आदि कवि (बाल्मीकि जी) वैक्रम संवत् १५५४ में श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन यमुना जी के तट पर स्थित राजापुर ग्राम में उत्तम ब्राह्मण कुल में माता हुलसी के गर्भ से उत्पन्न हुए। इनका जन्म मकर लग्न में सप्तम स्थान (कर्क राशि) में गुरु सायंकाल में हुआ था।)

(६) हिन्दुस्तानी एकेडमी के सदस्य तथा बोर्ड आफ स्टडीज इन माडर्न इण्डियन लैंग्वेज आगरा यूनीवर्सिटी के कन्वीनर पं० अयोध्यानाथ शर्मा ने स्वसम्पादित पुस्तक 'हिन्दी मुक्तावली' की चौथी लड़ी के अन्तर्गत "महाकवि तुलसीदास" शीर्षक में उनका जन्म संवत् १५५४ ही निश्चित किया है।

(७) आचार्य रामचन्द्रशुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' पं० महादेव पाण्डेय ने 'तुलसीदास' और डॉ० विश्वम्भर दयाल अवस्थी ने 'रामचरित मानस' में महाकाव्यत्व भक्ति और दर्शन' में तुलसी जन्म संवत् १५५४ वि० सही ठहराया है।

(८) संत नारायण भक्तमाली ने 'गोस्वामी तुलसीदास' (नाटक) में गोस्वामी जी का जन्म संवत् १५५४ वि० अशुभ अभुक्तमूल नक्षत्र में मानते हुए लिखा है -

"पुत्र जन्म उत्सव एक दिशि, दूजी ओर भयभारी।
उपज्यो अशुभ अभुक्त मूल में बालक अनिष्टकारी।।"

- "गोस्वामी तुलसीदास" पृष्ठ ३३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(९) शिवसिंह सेंगर के मत से गोस्वामी जी संवत् १५८३ में उत्पन्न हुए थे।[१]

१- 'शिवसिंह सरोज-शिवसिंह सेंगर, पृष्ठ ७०१

(१०) डॉ० रामकृष्णगोपाल भंडारकर के अनुसार गोस्वामी जी संवत् १५८९ में उत्पन्न हुये थे।[२]

(११) सन्त तुलसी साहिब ने अपने काव्य ग्रन्थ 'घट रामायण' में कहा है कि मैं अपने पूर्व जन्म में तुलसीदास के रूप में चित्रकूट से दशकोस की दूरी पर स्थित यमुना नदी के किनारे बसे राजपुर में संवत् १५८९ की भाद्रपद शुक्ल एकादशी मंगलवार को उत्पन्न हुआ था।[३]

(१२) सुप्रसिद्ध रामायणी पं० राम गुलामी द्विवेदी संवत् १५८९ मानते हैं।

(१३) डॉ० सरजार्ज ग्रियर्सन ने भी संवत् १५८९ स्वीकार किया है।

(१४) डॉ० विल्सन और फ्रेंच विद्वान द तासी के अनुसार गोस्वामी जी का जन्म संवत् १६०० के आसपास हुआ था।

(१५) 'गौतम चन्द्रिका' के रचनाकार कृष्णदत्त मिश्र ने भी तुलसी का जन्म १६०० विक्रमी माना है।

(१६) अविनाश राय कृत 'तुलसी प्रकाश' के अनुसार तुलसी का जन्म संवत् १५६८ वि० में श्रावण शुक्ल सप्तमी शुक्रवार, विशाखा नक्षत्र में हुआ था।

उपरोक्त विश्लेषण से सुस्पष्ट है कि अधिकांश विद्वानों और बहु प्रचलित मान्यतानुसार गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म संवत् १५५४ की श्रावण शुक्ला सप्तमी को हुआ था। परन्तु बहु प्रचलित इस मान्यता के विरूद्ध कतिपय विद्वानों ने निम्नांकित तर्क प्रस्तुत किये हैं :-

---

१. 'शिव सिंह सरोज' – शिवसिंह सेंगर – पृष्ठ ७०९

२. 'वैष्णव, शैव और अन्य धार्मिक मत''–डॉ० रामकृष्णगोपाल भंडारकर–पृष्ठ ८५

३. राजापुर जमुना के तीरा। जहँ तुलसी का भया सरीरा॥
विधि बुन्देल खण्ड वोहि देसा। चित्रकोट बीच दस कोसा॥
संवत पन्द्रह सै नवासी। भादौ सुदी मंगल एकादसी॥
भया जनम सोइ कहौं बुझाई। बाल बुद्धि सुधि बुधि दरसाई॥

–घट रामायण – द्वितीय भाग, पृष्ठ १८६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१) कवि का जन्म संवत् १५५४ में मानने पर कवि का सम्पूर्ण जीवनकाल १२६ वर्ष होता है, जो असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।

(२) कवि का जन्म संवत् १५५४ में मानने पर रामचरित मानस की रचना (संवत् १६३१) के समय कवि की अवस्था ७७ वर्ष तथा काशीराज संग्रहालय में सुरक्षित पंचनामा (संवत् १६६९) के समय उनकी अवस्था ११५ वर्ष की ठहरती है जो साधारणतया असम्भव प्रतीत होती है। अत; इन विद्वानों को संवत् १५५४ में गोस्वामी जी के उत्पन्न होने का मत स्वीकार्य नहीं है।[१]

इस विषय में डॉ० श्याम सुन्दरदास और डॉ० पीताम्बर दत्त बडथ्वाल हिन्दुस्तानी एकेडेमी से प्रकाशित 'गोस्वामी तुलसीदास' नामक ग्रन्थ के पृष्ठ ३१ पर लिखते हैं –

"यह बात अवश्य है कि १५५४ गोस्वामी जी का जन्म संवत् मानने से उनकी आयु १२६ वर्ष हो जाती है। जिस पर बहुत से लोगों को विश्वास करने की प्रवृत्ति न होगी। परन्तु आजकल भी समाचार पत्रों में सवा सौ–डेढ़ सौ वर्ष तक की अवस्था वालों के समाचार छपते रहते हैं। तब एक संयमी योगी के १२६ वर्ष की आयु पर क्यों अविश्वास किया जाय ?"

(२) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य के इतिहास' के पृष्ठ १५२ में लिखा है –

"बाबा बेनी माधवदास जी की पुस्तक में तो श्रावण शुक्ला सप्तमी तिथि भी दी हुई है। पर इस संवत् को ग्रहण करने से तुलसीदास जी की आयु १२६ वर्ष आती है। जो पुनीत आचरण के महात्माओं के लिए असम्भव नहीं कही जा सकती।"

(३) रामचरित मानस की रचना गोस्वामी तुलसीदासजी ने करीब ७७ वर्ष की अवस्था में किया है, यह निरा सत्य है। इसके साक्षी उन्हीं के वाक्य हैं –

"भरेउ सुमानस सुथिर थिराना। सुखद सीत रुचि <u>चारु चिराना</u>।"

–'रामचरितमानस'–बालकाण्ड ३५/५ –

इस चौपाई से स्पष्ट ध्वनि निकलती है कि रामचरितमानस परिपक्वावस्था

---

१. 'गोस्वामी तुलसीदास–व्यक्तित्वः दर्शनः साहित्य' –डॉ० रामदत्त भारद्वाज, पृष्ठ १६९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में लिखी गई है ।

(४) आज पर्यावरण प्रदूषण के इस युग में भी अपवाद स्वरूप कुछ लोग सौ-सवासौ वर्ष के उम्र के पाये जाते हैं तो आज से पाँच सौ साल पहले गोस्वामी तुलसीदासजी ऐसे विरक्त साधक संत का १२६ वर्षों तक जीवित रहना कोई असम्भव बात नहीं है ।

(५) लोकमत भी संवत् १५५४ को तुलसी जन्म संवत् मानता आ रहा है और प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ला सप्तमी को तुलसी जयन्ती का आयोजन करता आ रहा है ।

(६) भारत सरकार एवं प्रान्तीय सरकारों ने संवत् २०५४ में गोस्वामी तुलसीदासजी की जन्म पंचशती का आयोजन कर इस लोकमत पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगा दी है ।

अतएव संवत् १५५४ की श्रावण शुक्ल सप्तमी को ही गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्मतिथि स्वीकार करना सर्वथा न्याय संगत है ।

माता-पिता :- जनश्रुति के अनुसार गोस्वामी तुलसीदासजी के पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था । माता के नाम की पुष्टि कवि के इस कथन से हो जाती है –

"रामहि प्रिय पावन तुलसी सी । तुलसीदास हित हिय हुलसी सी ।।"

– 'मानस' – बाल० ३० (ख)।।६

पिता आत्माराम के नाम की ओर भी सम्भवतः कवि का यह कथन संकेतित करता है – "***आतम*** अनुभव सुख सुप्रकासा । तब भव मूल भेद भ्रम नासा ।।"

– 'मानस' – ७/११७ (घ)/१

गोस्वामी तुलसीदास जी के समकालीन कवि रहीम के एक दोहे से भी तुलसीदासजी की माता के *'हुलसी'* नाम होने का समर्थन हो जाता है–

"सुरतिय नर तिय नागतिय, यह चाहत सब कोय ।
गोद लिए हुलसी फिरै, तुलसी सो सुत होय ।।"

"तुलसी स्मृति सन्दर्भः" के रचनाकार स्वामी रामानन्द सरस्वती ने तुलसीदास जी के माता-पिता के नाम का उल्लेख करते हुए लिखा है –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"जातः श्री हुलसी सुतश्च तुलसीदासोऽत्र राजापुरे ।।८।।"

"आत्माराम बुधौ गुरुश्च वसतां राजोपमानामिह ।।२२।।"

नारायणदास भक्तमाली ने अपने 'गोस्वामी तुलसीदास' नाटक में स्वयं तुलसीदास जी द्वारा कहलाया है –

"हुलसी देवी मातु मम, पिता आत्माराम ।
श्री राजापुर ग्राम को, तुलसी करत प्रणाम ।।"

–'गोस्वामी तुलसीदास'–पृष्ठ ८६

कवि दयानन्द जड़िया 'अबोध' के 'तुलसी' प्रबन्ध काव्य में –

"तुलसी जन्म उदार, आत्माराम पिताश्री ।
माता हुलसी देवि, बनी कवि की माता श्री ।।" –'तुलसी' –पृष्ठ ९

मूल नाम :– जनश्रुति के अनुसार पैदा होने के बाद रामनाम बोलने से उनका नाम रामबोला पड़ गया । स्वयं तुलसी ने अपने प्रारम्भिक इस नाम का उल्लेख किया है –

(१) "राम को गुलाम, नाम 'रामबोला' राख्यौ राम ।"

–विनयपत्रिका ७६/१

(२) "रामबोला नामु, हौं गुलामु राम साहि को ।" –कवितावली ७/१००

बाद में उनका नाम तुलसी हुआ, जो उनके विरक्त हो जाने के पश्चात् तुलसीदास के रूप में प्रचलित हो गया –

(१) "नाम तुलसी, पै भोंड़ों भाँगते, कहायो दासु ।" –कवितावली ७/१३

(२) "केहि गिनती मह, गिनती जस बन घास ।
राम जपत भए, तुलसी तुलसीदास ।।" –बरवै रामायण ७/५९

(३) "जो सुमिरत भयो भाँग ते, तुलसी तुलसीदास ।।" 'मानस' १/२६

जाति – गोस्वामी तुलसीदास जी के जाति के सम्बन्ध में निम्नांकित मत है –

(१) तुलसी शिष्य बाबा वेणी माधवदास कृत 'मूल गोसाई चरित' के अनुसार –

"सरवार सुदेस के विप्र बड़े । शुचि गोत पराशर टेक कड़े ।।
शुभ थान पतेजि रहे पुरखे । तेहिते कुल नाम पड्यो झुरखे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यमुना तट दूबन को पुरवा । बसते सब जातिन को कुरवा ।।
सुकृती सतपात्र सुधी सुखिया । रजियापुर राजगुरु मुखिया ।।"१।।२,३

(२) गोस्वामी तुलसीदासजी के दूसरे शिष्य बाबा रघुबरदास कृत 'तुलसीचरित' के अनुसार–

"सरयू के उत्तर बसत मंजु देश सरवार ।
राज मझबली जानिए, कसेवा ग्राम उदार ।।"
"परसुराम परपिता हमारे, राजापुर सुख भवन सुधारे ।।"

(३) मनीषी महात्मा रामानन्द सरस्वती की रचना "तुलसी स्मृति सन्दर्भ" के अनुसार –

आयाता हि पुरा द्विजाश्च सरयू पारात्पत्यौंजाऽभिधात्
ग्रामादत्र पराशरस्य कुलजाःख्याता द्विवेदी इति ।
तेषां वंश परम्परा सुविदिता राजापुरे शोभना,
आत्माराम बुधो गुरुश्च वसतां राजोपमानामिह ।।२२।।

(सरयूपार पतौंजा से पहिले आये हुए जिनका पराशर गोत्र था और द्विवेदी उपाधि थी । उनकी वंश परम्परा राजापुर में प्रसिद्ध थी । उसी कुल में आत्माराम नाम के विद्वान हुए, जो राजश्रीयुक्त, राजापुर में रहने वाले श्रीमानों के गुरु थे, इसीसे राजगुरु कहे जाते थे ।।२२।।)

(४) परम्परागत जनश्रुति के अनुसार भी गोस्वामी जी पत्योंजा के दुबे थे –

"तुलसी पराशर गोत, दूबे पतिऔंजा के ।"

(५) डॉ० श्यामसुन्दर दास के अनुसार तुलसीदास जी सरयूपारीण ब्राह्मण थे ।[१]

(६) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार वे सरयूपारीण (सरवरिया) ब्राह्मण थे ।[२]

(७) डॉ० रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर ने भी उनको सरयूपारीण ब्राह्मण

१– "गोस्वामी तुलसीदास"– डॉ० श्यामसुन्दरदास, पृष्ठ २३
२– "हिन्दी साहित्य का इतिहास" – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ ८५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माना है ।[१]

(८) पाश्चात्य लेखक एडम्योर जे० बेबीन्यू के अनुसार –

"Popular tradition again holds that Tulsidas was a Dube of the pārāsara gotra of the Sarayūpārina Brahmans...."

–"Love of God and Social Duty in the Ram Charit Manas", page 15

(अन्य प्रसिद्ध परम्परानुसार तुलसीदास पराशर गोत्र के सरयूपारी दुबे ब्राह्मण थे..........)

(९) डॉ० विश्वम्भर दयाल अवस्थी ने भी तुलसीदास जी को सरयूपारीण द्विवेदी ब्राह्मण माना है ।[२]

(१०) श्री गोवर्द्धनदास त्रिपाठी ने भी गोस्वामी जी को सरयूपारीण ब्राह्मण उल्लिखित किया है ।[३]

(११) डॉ० अयोध्याप्रसाद पाण्डेय ने तुलसीदास जी को सरयूपारीण दुबे ब्राह्मण माना है ।[४]

(१२) डॉ० भगीरथ मिश्र का मत है कि तुलसी ने विनय पत्रिका में गजराज को व्यंग्य में 'वाजपेयी' और 'दीक्षित' कहकर अपने कान्यकुब्ज ब्राह्मण होने का प्रमाण उपस्थित कर दिया है । सरयूपारीण और सनाढ्य ब्राह्मणों में वाजपेयी और दीक्षित ब्राह्मण नहीं होते हैं –

"कौन धौं सोमजाजी अजामिल अधम, कौन गजराज धौंबाजपेयी ।"

–विनयपत्रिका १०६/३

"गजु धौं कौन दिछित जाके सुमिरत तौ सुनाम वाहन तजि धाये ।"

–विनयपत्रिका २४०/२

स्पष्ट है, उपरोक्त उद्धरणों को प्रसंगेतर तुलसीदास जी को कान्यकुब्ज से जोंड़ना असंगत और हास्यास्पद प्रयास है ।

(१३) सन्त तुलसी साहिब का मत है कि मैं पिछले जन्म में राजापुर जिला

१– "वैष्णव, शैव और अन्य धार्मिक मत"–डॉ० रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर, पृष्ठ८५

२– "रामचरितमानस में महाकाव्यत्व, भक्ति और दर्शन" –डॉ० विश्वम्भर दयाल अवस्थी, डी०लिट्, पृष्ठ ३१

३– "तुलसीदास और राजापुर"–श्री गोवर्द्धन दास त्रिपाठी, पृष्ठ ६८–६९

४– "तुलसी–विमर्श" डॉ० अयोध्या प्रसाद पाण्डेय, पृष्ठ १६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाँदा में तुलसीदास के रूप में कान्यकुब्ज ब्राह्मण के घर में उत्पन्न हुआ था –

"राजापुर जमुना के तीरा। जहँ तुलसी का भया सरीरा ।।
विधि बुन्देलखण्ड वोहिंदेसा। चित्रकोट बीच दस कोसा ।।
संवत् पन्द्रह सै नवासी। भादौं सुदी मंगल एकादसी ।।
भया जनम सो कहौं बुझाई। बाल बुद्धि सुधि बुधि दरसाई ।।
ज्ञानहीन रस रंग संग माता। कानकुब्ज बांभन मोरी जाता ।।"

– 'घटरामायण' – द्वितीय भाग – पृष्ठ १८६

तुलसी साहिब के उपरोक्त कथन से स्पष्ट है कि पूर्व जन्म में गोस्वामी तुलसीदास के रूप में अपनी जन्म भूमि राजापुर (चित्रकूट) स्वीकारते हैं और अपने को कान्यकुब्ज ब्राह्मण बतलाते हैं जबकि इस क्षेत्र में कान्यकुब्ज नहीं अपितु सरयूपारीण ब्राह्मणों का पहिले से ही बाहुल्य एवं वर्चस्व है।

(१४) मिश्र बन्धुओं के अनुसार राजापुर (बाँदा) तथा उसके आस-पास सरयूपारीण ब्राह्मणों की बस्ती नहीं है। अतएव यही सिद्ध होता है कि गोस्वामी जी कानकुब्ज द्विवेदी ब्राह्मण थे।[१]

किन्तु मिश्र बन्धुओं का यह कथन सत्य नहीं है कि राजापुर (बाँदा) तथा उसके आस-पास सरयूपारीण ब्राह्मणों की बस्ती नहीं हैं। वस्तुतः राजापुर (बाँदा, वर्तमान चित्रकूट जनपद) तथा उसके आस-पास सरयूपारीण ब्राह्मणों की ही संख्या अधिक है।

(१५) पं० रामनरेश त्रिपाठी के मत से गोस्वामी तुलसीदास शुक्ल गोत्रीय सनाढ्य ब्राह्मण थे। त्रिपाठी जी का मत है कि 'विनय पत्रिका' के निम्नांकित पद में स्वयं कवि ने अपने को 'सुकुल' (शुक्ल) कहा है –

राम सनेही सों तैं न सनेह कियो।
अगम जो अमरनिहूँ, सो तन तोहिं दियो ।।
दियो सुकुल जनम, सरीर सुन्दर, हेतु जो फल चारि को।
जो पाइ पंडित परम पद, पावत पुरारि-मुरारि को ।।
यह भरत खण्ड समीप सुरसरि थल भलो संगति भली।

१– "हिन्दी नवरत्न" – मिश्र बन्धु, पृष्ठ ९,१०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेरी कुमति कायर ! कलप बल्ली चहति है विषफल फली ।।

–'विनय पत्रिका' – १३५/१

मेरे मत से त्रिपाठी जी का यह मत सत्य नहीं है । 'विनय पत्रिका' के उपर्युक्त पद में कवि का आशय यह है कि भरत खण्ड में, जहाँ गंगा प्रवाहित होती है, देवताओं के लिए भी दुर्लभ मानव योनि में सुन्दर कुल में जन्म धारण कर जीव यदि अपने कल्याण के लिए उपाय नहीं करता है और भगवान की भक्ति नहीं करता है, तो उसका मानव–योनि में जन्म धारण करना व्यर्थ है । कवि ने 'कवितावली' के पद में भी इसी प्रकार के विचार व्यक्त किये हैं –

भलि भारत भूमि, भले कुल जन्मु, समाजु सरीरु भलो लहिकै ।
जो भजै भगवानु सयान सोई, तुलसी हठ–चातक ज्यों गहिकै ।।

– 'कवितावली' ७/३३

अतः तुलसीदास जी को शुक्ल जाति का ब्राह्मण बतलाना न्यायसंगत नहीं हैं ।

उपर्युक्त विवेचन से तथा सभी तथ्यों पर सम्यक् विचार करने के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि तुलसीदास जी सरयूपारीण द्विवेदी ब्राह्मण थे ।[१]

जन्मकाल में ग्रहयोग एवं पालन–पोषण :–

तुलसी शिष्य बाबा वेणी माधवदास कृत 'मूल गोसाई चरित' तथा बाबा रघुबरदास कृत 'तुलसीचरित' के अनुसार गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म अभुक्त मूल नक्षत्र में हुआ था, इसी से उनके माता–पिता ने उनका परित्याग कर दिया था और माता की मृत्यु हो जाने से उनका पालन चुनिया ने अपनी ससुराल हरिहरपुर (चित्रकूट के पास) लाकर किया था –

"हुलसी प्रिय दासि सों लागि कहै । सखि प्राण पखेरू उड़ान चहै ।।४।।१
अबहीं शिशु लै गवनहु हरिपुर । बसते जहँ तोरेउ सास–ससुर ।।४।।२
तहँ जाइबि पालबि मोर लला । हरिजू करिहैं सखि तोर भला ।।४।।२

१– Atmaram Dube and Hulsi were very religius and belonged to the "Saryooparin Brahamin sect. ....the parents of the great saint Tulsidas."
–Goswami Tulsidas (A biography) –R. S. Pankhania, Page 12

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नहिं तो ध्रुव जानहु मोरे मुये । शिशु फेंकि पँवारहिंगे भकुये ।।४।।३
सखि जान न पावै कोउ बतिया । चलि जाइहु मग रतियां रतियां ।।४।।४

(२) गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने माता-पिता के द्वारा अपने परित्यक्त किये जाने का अनेक बार उल्लेख किया है –

"जननि-जनक तज्यो जनमि ।" – विनय पत्रिका – २२७/२

"तनु जन्यो कुटिल कीट ज्यों, तज्यो मातु-पिता हूँ ।"
विनयपत्रिका–२७५/२

"मातु-पिता जग जाइ तज्यो, बिधिहूँ न लिखो कछु भाल-भलाई ।"
–कवितावली ७/५७

"भयो परितापु पापु जननी जनक को ।" –कवितावली ७/७३

(३) 'रामचरित मानस' के सुप्रसिद्ध टीकाकार हनुमान प्रसाद पोद्दार और अन्य विद्वानों तथा जनश्रुति के अनुसार गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म सावन शुक्ल सप्तमी १५५४ वि० में अभुक्त मूल नक्षत्र में हुआ था । इसलिए उनके माता-पिता की मृत्यु भी हो गई और जन्मते ही उनका परित्याग कर दिया गया था ।

(४) स्वामी रामानन्द सरस्वती ने 'तुलसी स्मृति सन्दर्भः' में इस सन्दर्भ में लिखा है –

बाल त्यागपरे जने च जनके माता हि खेद गता,
दास्यै बाल समर्पणं कृतवती रात्रो रुजा स्वर्गता ।
दासी च श्वसुरालये हरिपुरे श्री चित्रकूटान्तिके,
नीत्वा पालन तत्परा कति समैः सर्पेण दंष्ट्रा मृता ।।१०।।

(इस प्रकार बालक को त्यागने के लिए पिता तथा अन्य लोग तत्पर हुए, इससे उनकी माता को बड़ा खेद हुआ और उनकी माता अपनी दासी को बालक सौंप कर रात्रि में भीषण बीमार होकर दिवंगत हो गई । वह दासी श्री चित्रकूट के समीप अपने ससुराल हरिपुर (हरिहरपुर) में ले गई । कुछ वर्षों तक पालन के पश्चात् एक दिन उस दासी को सर्प ने काट लिया, वह भी मर गई)।।१०।।)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(५) 'गोस्वामी तुलसीदास (जीवनी)' के लेखक श्री आर० एस० पंखानिया ने लिखा है –

"....Chunia took the baby and left for Hariharpur at her in-laws late in to the night, (The village is situated about four to five miles from Chitrakut)"

–Goswami Tulsidasji (A biography) – Rohit S. Pankhania, page 23

(चुनिया नवजात शिशु (रामबोला) को लेकर हरिहरपुर अपने ससुराल देर रात्रि पहुँची (हरिहरपुर गाँव चित्रकूट से लगभग चार–पाँच मील पर स्थित है।)

(६) डॉ० रामकृष्ण गोपाल भंडारकर का मत है कि गो० तुलसीदास का जन्म मूल नक्षत्र में हुआ था। इसलिए उनके माता–पिता ने उनका परित्याग कर दिया था।[१]

(७) कुछ विद्वानों के अनुसार उपर्युक्त कथनों का आधार ज्योतिष का प्रमुख ग्रन्थ 'मुहूर्त चिन्तामणि' के 'जातं शिशु परित्यजेद' सिद्धान्त है। किन्तु उनके अनुसार तुलसी के पूर्व एवं पश्चात् अनेक शिशु अभुक्त मूल में पैदा हुए हैं पर किसी के भी माता–पिता ने इस प्रकार नवजात शिशु का परित्याग नहीं किया है, फिर तुलसी का ही परित्याग क्यों ? जबकि 'मुहूर्त चिन्तामणि' में अभुक्त मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाले शिशु के लिए यह विकल्प भी है –"जातं शिशुं परित्यजेद् वा पितास्याष्ट समा न पश्येत्।"

'अभुक्त मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाले शिशु में कुछ विशेषतायें भी होती है – वह दीर्घायु होता है, अपना तथा परिवार का नाम रोशन करता है, सेना का सेनापति भी बन सकता है।' (सी० जे० कृष्णस्वामी कृत 'इण्डियन एस्ट्रोलाजी', पृष्ठ १४१) तुलसी के पिता आत्माराम स्वंय एक ज्योतिषी थे अस्तु नवजात शिशु में ऐसी संभावित विशेषताओं के होते हुये उसका परित्याग क्यों करेंगे ?

वस्तुतः प्रसव काल में प्रिय पत्नी के हृदय विदारक मृत्यु से पं० आत्माराम घोर हताशा–निराशा में डूब गये और इसका कारण अभुक्त मूल में जन्मे शिशु को समझकर उसके परित्याग का निर्णय लिया। आठ वर्ष तक अभुक्त मूल में जन्मे बच्चे को पिता के न देखने के विधान के पहिले ही

१– "वैष्णव शैव और अन्य धार्मिक मत" – डॉ० रामकृष्ण गोपाल भंडारकर. पृष्ठ ८५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आक्रान्ता पठानों से सामना करते हुये पं० आत्माराम शहीद हो गये। इस ओर संकेत करते हुये सुप्रसिद्ध इतिहासविद उपन्यासकार आचार्य सोहनलाल रामरंग ने अपने वृहद् उपन्यास "युग पुरुष तुलसी" में उल्लिखित किया है–

"......माता जन्म देकर चली गई। पिता, सुना कि वे भी पठानों के आक्रमण में समाप्त हो गये। कोई माता-पिता का परिचित भी बचा कि नहीं ?" इसी ऊहापोह में धीरे-धीरे राजापुर आ ही गया।......"

–"युग पुरुष तुलसी" –प्रथम खण्ड – अनुच्छेद २ पृष्ठ १४

संत नारायणदास भक्तमाली के प्रसिद्ध नाटक "गोस्वामी तुलसीदास" में स्वयं तुलसीदास कहते हैं–

"कहें 'रामबोला' सब मुझको मातु पिता मम नाहिं।
राजापुर है जन्मभूमि, अब भटकत हरिपुर माँहिं।।
माता-पिता दिवंगत भे, तब पाली पोसी चुनिया।
ऐसो दुर्दिन आयो मेरो, वह भी तजि गई दुनिया।।"

– "गोस्वामी तुलसीदास" –पृष्ठ ६२

बाल्यावस्था में कष्टभोग :-

परित्यक्त अनाथ शिशु को पड़ोस की निर्धन निःसन्तान चुनिया अपनी ससुराल हरिपुर (हरिहरपुर) ले गई जो चित्रकूट के कामदगिरि परिक्रमा की परिधि के ४-५ मील के अंदर ही स्थिति है। कामदगिरि परिक्रमा में 'सूकरखेत' में बाबा नरहरिदास जी का आश्रम है, जहाँ बालक रामबोला अपनी धाय माँ चुनिया के साथ परिक्रमा में जाया करता था। पर दुर्भाग्य ने यहाँ भी साथ नहीं छोड़ा, जब बालक रामबोला साढ़े पाँच वर्ष का था, चुनिया की भी मृत्यु हो गई। सारा भार चुनिया के पति पर आ पड़ा मगर दुर्भाग्य से उसकी भी असामयिक मृत्यु हो गई। बेचारा रामबोला अनाथ हो गया और दाने-दाने को मोहताज दर-दर भटकने लगा जिसका मार्मिक चित्रण कवि तुलसी ने अपनी रचनाओं में किया है–

(१) "मातु पिता जग जाइ तज्यो,
विधिहूँ न लिखी कछु भाल-भलाई।" –कवितावली ७/५७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२) "जननी जनक तज्यो जनमि,
करम बिनु विधिहु सृज्यो अवडेरे।" – विनयपत्रिका, २२७/२

(३) "खाओ खोंची माँगि मैं।" – विनयपत्रिका, ३३/४

(४) "द्वार-द्वार दीनता कही, काढ़ि रद परि पाहूँ।" – विनयपत्रिका २७५/१

(५) "कहा न कियो, कहाँ न गयो, सीस काहि न नायो?"
– विनयपत्रिका २७६/१

(६) "हा हा करि दीनता कही द्वार द्वार बारबार।" –विनयपत्रिका २७६/२

(७) "नीच निरादर भाजन कादर कूकर टूकन लागि ललाई।"
– कवितवली ७/५७

(८) "चाटत रह्यो स्वान पातरि ज्यों, कबहूँ न पेट भर्यो।"
– विनयपत्रिका २२६

(९) "बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो,
राम नाम लेत माँगि खात टूक टाक हौं।" – हनुमानबाहुक, ४०

(१०) "असन-बसन-हीन, विषम विषाद लीन।" – हनुमानबाहुक, ४१

(११) "घर घर माँगे टूक पुनि, भूपति पूजे पाय।
जे तुलसी तब राम बिनु, ते अब राम सहाय।।" –दोहावली, १०९

(१२) "जाति के, सुजाति के, कुजाति के, पेटागि बस,
खाये टूक सबके, विदित बात दुनी सो।" – कवितावली, ७/७२

गुरु :-

गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपने महाकाव्य 'रामचरितमानस' के बालकाण्ड के आरम्भ में मंगलाचरण के पश्चात् पाँचवे सोरठे में अपने गुरु को नररूप में साक्षात् हरि बतलाया है –

"बन्दउँ गुरुपद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि।
महामोह तम पुंज, जासु बचन रबि कर निकर।।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसके अनुसार 'गुरु को मनुष्य के रूप में हरि' मानकर उसे सूकर खेत का अधिष्ठाता मान लिया गया है और हर सूकर खेत में गुरु नरहरि आश्रम मान लिया गया है जिससे भ्रमात्मक स्थिति उत्पन्न हो गई है। किन्तु इस सोरठे की मूल उद्भावना तुलसी की नहीं है। यह 'जाबालि-संहिता' के निम्नांकित श्लोक का हिन्दी रूपान्तर है -

"वन्दे गुरु पदाब्जं यो नर रूप स्वयं हरिः।
यद्वाक्यं सूर्योदयस्तमो नश्यति साम्प्रतम्।।"

ऐसी स्थिति में 'जाबालि संहिता' के रचनाकार को तुलसी के गुरू से क्या प्रयोजन जो उनकी स्तुति करते?

परम्परागत जनश्रुति के अनुसार तुलसीदासजी के गुरु संत नरहरिदास जी थे। विद्वानों ने उपरोक्त सोरठे में प्रयुक्त 'नररूप हरि' से नरहरि का भाव ग्रहण कर उनके गुरु का नाम 'नरहरिदास' बतलाया है -

(१) गोस्वामी तुलसीदास जी के निकटस्थ प्रिय शिष्य शूकर क्षेत्र-पसका (जिला गोंडा) निवासी बाबा वेणीमाधवदास जी द्वारा संवत् १६८७ में रचित 'मूल गोसाईं चरित' में रामशैल (चित्रकूट) निवासी संत नरहरिदास जी को तुलसीदास जी का गुरु कहा गया है -

"प्रिय शिष्य अनन्तानन्द हते। नरहरियानन्द सुनाम छते।
बसैं रामशैल कुटी करिकै। तल्लीन दशा अति प्रिय हरि कै।"

-'मूल गोसाईं चरित' -६।।३, ४ पृष्ठ ३७

(२) तुलसीदास जी के गुरुभाई श्री रघुनाथदास जी ने गुरुभाई श्री कूबा जी के साथ श्री तुलसीदास जी के गुरु के विषय में लिखा है -

"द्वितिये नरहरिदास के भये जो तुलसीदास।
रामायण शुचि ग्रन्थ रचि जग में कियो प्रकास।।"

-'श्री रामचरित विमर्श' -श्रीकान्त शरण जी, पृष्ठ २७

(३) महन्त श्री युगल प्रियाशरण कृत 'रसिक प्रकाश भक्तमाल' के टीकाकार श्री वासुदेव दास (उक्त ग्रन्थकार के शिष्य) ने संवत् १८१९ में मूल २१वें पद्य की टीका कवि० १०४ में लिखा है -

"तिन्ह के विमल नरहरिदास रस रास जिनके विदित कूबा केवल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आधार हैं ।

कूबाजी के छोटे गुरुभाई श्री गोसाईं जिन रामायण गाथा गाई महिमा अपार है ।।"

–'श्री तुलसीचरित विमर्श'–श्री श्रीकान्तशरण जी, पृष्ठ २८

बालपन की अबोध अवस्था में तुलसी ने 'निज गुरु सन सुनीं कथा सो सूकरखेत' में सुनने का उल्लेख 'रामचरित मानस'–बालकाण्ड में किया है, जिससे तथाकथित शूकर क्षेत्रों (वाराहक्षेत्रों) से जुड़े कतिपय क्षेत्रवादी संकीर्ण मनोवृत्ति वाले लोगों की निम्नांकित दोहे की अपने-अपने ढंग से तोड़ मरोड़ कर व्याख्या करने से तुलसी जन्म भूमि विवाद की पृष्ठभूमि बनी–

"मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकर खेत ।
समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत ।।"

– 'रामचरितमानस' – बालकाण्ड, दोहा ३०क

इस सम्बन्ध में स्पष्ट करना है कि धर्मप्राण भारत में निम्नांकित दो दर्जन से भी अधिक स्थान ऐसे हैं जो शूकरक्षेत्र (वाराह क्षेत्र) के रूप में विख्यात हैं:–

(१) राजस्थान में बिरही कलाँ (२) पिंडरावन में (३) बद्रीनाथ धाम में (४) गोंडा जनपदीय सरयू – घाघरा के संगम पसका में (५) नेपाल राज्य के विराट नगर के पास (६) सोरों जिला एटा में (७) दक्षिण में महानदी या सुवर्ण मुखी के उत्तर भाग में (८) पाप नाशिनी नर्मदा नदी के तट पर जहाँ नदी का नाम ही शूकरा पड़ गया है (९) मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर जनपद के ब्रह्माण तीर्थ में (१०) सुमेरगिरि में (११) हिमवान में (१२) चित्रकूट धाम में (१३) विन्ध्याचल में (१४) गन्धमादन (१५) शालिग्राम में (१६) मंदराचल (१७) माल्यवान में (१८) परिपालक (१९) महेन्द्र (२०) मलय (२१) सह्य (२२) सिंहाचल (२३) मेरु पर्वत में (२४) रैवत में ।

इन सूकर खेतों का उल्लेख स्कन्द पुराण के वाराह खण्ड व अन्य धार्मिक ग्रन्थों में मिलता है । इन सूकर खेतों की मान्यता वाराहावतार से नहीं, अपितु वाराह मूर्तियों की स्थापना तथा वाराह मंदिरों के निर्माण से है । भारतीय नरेश जब राज्य प्राप्ति अथवा विदेशी सत्ता से युद्ध करने हेतु प्रस्थान करते थे, तब विजय कामना से विजय और शौर्य के प्रतीक पृथ्वी उद्धारक वाराह भगवान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

की मूर्ति स्थापित करते अथवा मंदिर का निर्माण करवाते थे, इसीकारण देश में इतने सूकरखेत हैं । बाद में सूकरखेत धर्मस्थल के रूप में मान्य हो गये । अग्नि पुराण के अनुसार वाराह मंदिर के निर्माण अथवा वाराह मूर्ति की स्थापना से राज्य प्राप्ति होती है और मनुष्य भव सागर को पारकर परमगति प्राप्त करता है । (अग्नि पुराण, अध्याय-४९ श्लोक २ व ३)

भविष्य पुराण (अध्याय १९४) के अनुसार वाराह मूर्तियों की स्थापना पवित्र तीर्थों, पुरियों, नदियों के तट, वनों पर्वतों में करने की मान्यता है, इसी कारण वाराह मंदिर अथवा मूर्तियाँ इन्हीं स्थानों में पाई जाती हैं । सोरों, गोंडा चित्रकूट आदि के सूकरखेत इसी श्रेणी के सूकरखेत हैं ।

सूकरखेत को लेकर साहित्य जगत में दो वर्ग बन गये हैं । एक वर्ग सूकरखेत के आधार पर एटा जनपदीय सोरों को तुलसी जन्म भूमि होने की मान्यता देता है, जबकि दूसरा वर्ग गोंडा जनपदीय राजापुर को तुलसी जन्मभूमि मानता है, किन्तु सोरों तथा गोंडा को ही यह मान्यता क्यों ? चित्रकूटीय सूकरखेत के राजापुर को क्यों नहीं, जबकि उसके तुलसी जन्मभूमि होने के अकाट्य ठोस तथा प्रामाणिक प्रमाण हैं –

१. यदि तुलसी जन्मभूमि तथा गुरुद्वारा होने की मान्यता 'सूकरखेत' पर ही है तो चित्रकूट जनपदीय राजापुर के निकट चित्रकूट के 'सूकरखेत' के सम्बन्ध में तो स्वयं तुलसीदास जी ने 'गीतावली' के अयोध्याकाण्ड के ५०वें पद में वर्षा कालीन चित्रकूट पर्वत की उपमा वाराहावतार के समय पृथ्वी सहित जल से प्रकट होते हुये वाराह भगवान से की है –

''सिरवर परसि घन घटहि मिलति बक-पाँति
सो छबि कवि बरनी ।
आदि वराह विहरि वारिध, मनो
उठ्यो है दसन धरि धरनी ।।
जलयुत बिमल शिलनि झलकत नभ,
वन प्रतिबिंब तरंग ।
मानहु जग रचना विचित्र,
बिलसति बिराट अंग अंग ।।''

–'गीतावली' अयोध्याकाण्ड ५०–४, ५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२. तुलसी दास जी के निकटस्थ प्रिय शिष्य पसका (जिला - गोंडा) निवासी बाबा वेणी माधवदास जी द्वारा संवत् १६८७ वि० में विरचित "मूल गोसाई चरित" के अनुसार रामशैल (चित्रकूट) स्थित, स्वामी नरहरिदास जी तुलसीदास जी के प्रारम्भिक गुरु थे। वे ही १३-१४ वर्ष की अवस्था में तुलसीदास को उच्च शिक्षा हेतु काशी में आचार्य प्रवर शेष सनातन को सौंप वहाँ कुछ दिन रह पुनः चित्रकूट लौट आये -

कछु दिन रहिगे यति प्रवर, पढ़न लग्यो बटु भास।
चित्रकूट कहँ तब गये, लखि सब भाँति सुपास।।
बटु पन्द्रह वर्ष तहाँ रहिकै।।
पढ़ि शास्त्र सबै महिकै गहिकै।।१३।

- 'मूल गोसाईं चरित'-बाबा वेणीमाधव दास

३. इस सम्बन्ध में एक बात और विशेषरूप से उल्लेखनीय है कि चित्रकूट स्थित सूकर खेत, जिसका उल्लेख २४ शूकर क्षेत्रों में है, भगवान कामदनाथ की परिक्रमा में दूसरे मुखार बिन्द के पास है। यहाँ शूकर भगवान की शूकर मुखाकृति एक प्रसिद्ध प्राचीन प्रतिमा है। इसके पास ही नरहरिदासजी का स्थान मंदिर, धूनी, समाधी, नरहरि तलैया, नरहरि शिष्य तुलसी मंदिर, मंदिर के पीछे तुलसीदास जी द्वारा लगाया पीपल का पेड़, तुलसी चौरा तथा यहाँ से ४-५ मील दूरी पर हरिहरपुर गांव जहां पर धाय माँ चुनिया ने राजापुर से परित्यक्त बालक रामबोला (तुलसी) का पालन-पोषण किया, यहाँ विद्यमान हैं; जिससे सुनिश्चित है कि तुलसीदासजी की गुरुभूमि (गुरुद्वारा) चित्रकूटधाम स्थित श्री कामता नाथ जी की परिक्रमा में दूसरे मुखार बिन्द के इसी स्थान पर है, अन्यत्र और कहीं नहीं। ५-६ वर्ष का बालक रामबोला (तुलसी) धाय माँ चुनिया के मृत्यु के बाद अनाथ होने पर - "बारे ते ललात बिललात द्वार-द्वार दीन" की भेंट यहीं गुरु नरहरिदास जी से हुई। अनाथ सनाथ हुआ और यहीं चित्रकूट धाम के इस पवित्र 'सूकर खेत' में गुरु नरहरिदास जी ने उनका तुलसी नामकरण कर प्रारम्भिक शिक्षा दी और यहीं बालपन की अचेतावस्था में गुरु से रामकथा सुनी, जिसकी ओर संकेत करते हुए उन्होंने स्वयं कहा है -

"मैं पुनि निज गुरु सन सुनी, कथा सो सूकरखेत।
समुझी नहिं तसि बालपन, तब अति रहेउँ अचेत।।"

'मानस'-बालकाण्ड ३० क

माता-पिताहीन तथा आश्रय विहीन ५-६ वर्ष का अनाथ बालक हरिहरपुर से ४-५ मील दूर कुछ कुछ पूर्व परिचित चित्रकूट धाम ऐसे स्थान पर तो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आसानी से पहुँच सकता था किन्तु आवागमन के साधन विहीन उस युग में इतना छोटा अनाथ बालक भला इतनी दूर सोरों (एटा) या पसका (गोंडा) पैदल कैसे पहुँच सकता था ? ऐसी स्थिति में सोरों और गोंडा में गुरुद्वारा की कपोल कल्पना मिथ्या प्रलाप मात्र है ।

४. 'गोस्वामी तुलसीदास' के रचयिता नारायणदास भक्तमाली ने भी चित्रकूट के सूकर खेत में स्थित नरहरिदास आश्रम को तुलसीदासजी के गुरु द्वारा होने का उल्लेख किया है –

(१) "शिष्य अनन्तानन्द के, हरि प्रिय नरहरिदास ।
चित्रकूट में रम रहे, कामद गिरि तटवास ।।"

'–गोस्वामी तुलसीदास' पृष्ठ ५९

(२) "शेष सनातन की कृपा, तुलसी भें विद्वान ।
चित्रकूट गुरु दरश हित, हर्षित किये पयान ।।"

–'गोस्वामी तुलसीदास'–पृष्ठ ८४

५. "गोस्वामी तुलसीदास (जीवनी)" के विद्वान जीवनी लेखक श्री आर० एस० पंखानिया के अनुसार –

"Often, Chunia would go to Chitrakut for the holi Parikrama of the Kamadgiri hill. Rambola would always accompany her on such travels, they both visited the ashram of Baba Nar Haridas ji where they would spend hours engaging in religious talk". –"Goswami Tulsidas (A biography)"– R.S. Pankhaniya. –Page 25

६. 'तुलसी चरित' के विद्वान लेखक पं० महादेव पाण्डेय, 'तुलसीदास और राजापुर' के लेखक श्री गोवर्द्धनदास त्रिपाठी, 'रामचरित मानस में महाकाव्यत्व, भक्ति और दर्शन' के विद्वान लेखक डॉ० विश्वम्भर दयाल अवस्थी डी० लिट् आदि विद्वानों ने चित्रकूट धाम स्थिति 'सूकर खेत' में स्थित 'नरहरि आश्रम' को ही तुलसीदास जी का गुरुद्वारा माना है ।

७. तुलसीदास जी का चित्रकूट में चिर निवास उसके प्रति इतनी श्रद्धा, आकर्षण और लगाव तथा अपनी रचनाओं में उसका विशद वर्णन भी चित्रकूट के गुरुभूमि और राजापुर (चित्रकूट) के जन्मभूमि होने का भावनात्मक संकेत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है। जब कि सोरों या पसका (गोंडा) के प्रति कहीं किन्चित मात्र भी नहीं है।

उपरोक्त समीक्षात्मक विश्लेषण से सुस्पष्ट है कि चित्रकूट स्थित 'सूकरखेत' का नरहरि आश्रम ही गोस्वामी तुलसीदास जी की गुरुभूमि- (गुरुद्वारा) है। सोरों या पसका (गोंडा) में तुलसी गुरुद्वारा की कपोल कल्पना निराधार, मनगढ़न्त, मिथ्या प्रलाप मात्र है। बाद में तुलसीदास जी ने व्याकरण, वेद-वेदांग, ज्योतिष, दर्शन आदि की उच्च शिक्षा काशी में विद्वद्वरेण्य गुरु शेष सनातन के गुरुकुल में १५-१६ वर्षों तक रहकर प्राप्त की, फिर राजापुर लौट आये।[१]

विवाह - १५-१६ वर्षों तक काशी में शिक्षा प्राप्त करने के बाद प्रकाण्ड पण्डित होकर तुलसी अपने जन्म-भूमि की याद कर राजापुर (चित्रकूट) आये और अपने पैतृक निवास में रहकर कथावाचन-प्रवचन कर जीविकोपार्जन करने लगे। तुलसी एक सफल कथावाचक थे। उनकी कथा में एक सम्मोहन था, जिसके सुनने के लिये दूर-दूर से लोग आते थे। इनके पाण्डित्य एवं व्यक्तित्व से प्रभावित होकर राजापुर के उस पार यमुना के किनारे स्थित महेवा (जिला-इलगहाबाद, वर्तमान में कौशाम्बी जिला) निवासी पण्डित दीनबन्धु पाठक ने अपनी विदुषी कन्या रत्नावली का विवाह जेठ शुदी त्रयोदशी संवत् १५८३ वि० को तुलसीदास जी से कर दिया।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'रामचरितमानस' में सम्भवतः अपने ससुर दीनबन्धु पाठक की ओर भी संकेत करते हुए कहा है-

"गुरु पितु मातु महेश भवानी। प्रनवउँ *दीनबन्धु* दिनदानी।।
सेवक स्वामी सखा सिय पी के। हित निरुपधि सब विधि तुलसी के।।

-'मानस'-बाल० १४ छ ।।२

(१) तुलसीदास जी के निकटस्थ प्रिय शिष्य पसका (जिला-गोंडा) निवासी बाबा वेणीमाधवदास जी ने लिखा है :-

"पन्द्रह सै पार तिरासी विषै। शुभ जेठ सुदी गुरु तेरस पै।।
अधिराति लगै जु फिरी भँवरी। दुलहा दुलही की पड़ी पँवरी।।१५।।३

-'मूल गोसाईं चरित' -बाबा वेणीमाधवदास

---

१. "हिन्दी साहित्य का इतिहास" -आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ १२४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२) गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'रामचरित मानस' - बालकाण्ड में अपनी पत्नी रत्नावली की ओर भी सम्भवतः संकेत करते हुये लिखा है -

"नाम निरूपम नाम जतन तें। सोउ प्रगतट जिमि मोल रतन तें।।"

- 'मानस' बाल० २२/४

(३) सन् १९०९ ई० में प्रकाशित बाँदा जिले के 'गजेटियर' में भी तुलसीदास जी का विवाह राजापुर के पास यमुना के उस पार महेवा (जिला-इलाहाबाद) में उल्लिखित है -

Local tradition says that Tulsidas became acquainted with Rajapur through his having married into a Brahman family in Mahewa, tahsil Sirathu, district Allahabad". - "District Gazetters.....Banda-1909" Page 285-286

(४) स्वामी रामानन्द सरस्वती ने 'तुलसी स्मृति संदर्भः' में तुलसीदास जी के विवाह के सन्दर्भ में उल्लेख करते हुए लिखा है -

"व्यासोऽयं तुलसीति राजगुरुतो जातो महान् पण्डितः,
इत्येवं विदिते कुलीन सरयूपारीण एको द्विजः।
भरद्वाज कुलाद्भवो दुहितर स्वांदीनबन्धुर्ददौ,
त्र्यंष्टेष्विन्दुसमे त्रयदश तिथौ ज्येष्ठि सिते त्विज्यके।।"२३।।

(यह तुलसीदास नाम के कथावाचक व्यास बड़े विद्वान उन्हीं राजगुरु के पुत्र हैं, यह प्रसिद्धि होने पर भारद्वाज गोत्री दीनबन्धु पाठक ने अपनी कन्या का विवाह विक्रम संवत् १५८३ ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी गुरुवार को श्री तुलसीदास जी के साथ कर दिया ।।२३।।)

(५) "पूत राजापुर का,
बिटिया महेवाघाट की।
विश्व की थाती बने,
बस राम ही पतवार थी।।"

- 'रत्नावली' खण्डकाव्य - जयगोपाल मिश्र फतेहपुरी, अष्टसर्ग-३पृष्ठ ३४

(६) "यमुना के उस पार बसे,
लघु ग्राम महेवा के वासी।
श्री दीनबन्धु पाठक ने निज,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्या ब्याही थी रत्ना सी ।।"

–"एक रात तुलसी की; एक बात रत्ना की"–श्री गोविन्द प्रकाश श्रीवास्तव, पृष्ठ १४

(७) सुप्रसिद्ध उपन्यासकार अमृतलाल नागर के सुप्रसिद्ध उपन्यास "मानस का हंस"' का उद्धरण देखिये – "जब से विक्रमपुर की पैंठ में उन्होंने तुलसीदास की कथा सुनी थी तभी से वे उन्हें अपना जमाता बनाने के लिए लालायित हो चुके थे ।.......यह दूरी भी केवल नदी के दो तटों की ही है । इतनी पास में ऐसा योग्य जमाई मिले तो समझो घर ही में है ।"

–"मानस का हंस"–अनुच्छेद २२, पृष्ठ १९९–२००

(८) "(दृश्य दूसरा महेवा गाँव का)(जमुना किनारा)"

–"रामलीला बिहार"–नर्मदाशरण, पृष्ठ १८

'तुलसीः तब तो हम स्वयं भाग्यशाली हैं, रत्ना के समान विद्वान गृहणी प्राप्तकर कौन धन्य नहीं होगा ।"

–"रामलीला–बिहार"–नर्मदाशरण, दृश्य दूसरा, पृष्ठ २३

(९) सुप्रसिद्ध उपन्यासकार रांगेय राघव के उपन्यास "रत्ना की बात" की तरह रामगोपाल भावुक (ग्वालियर) ने भी अपने उपन्यास "रत्नावली" में यमुना के एक किनारे राजापुर को तुलसीदास जी की जन्मभूमि और दूसरे किनारे महेवा को ससुराल उल्लिखित किया है –

"यमुना के एक किनारे पर राजापुर है, दूसरे किनारे पर है महेवा गाँव । ..... पंडित दीनबन्धु पाठक प्रतिदिन इसी घाट से राजापुर आते–जाते रहते थे ।"

–'रत्नावली' अनु० २ पृष्ठ ८

(१०) परम्परागत जनश्रुति एवं लोकमान्यतानुसार श्री तुलसीदासजी का विवाह राजापुर के सम्मुख यमुना के दूसरे तट पर स्थित महेवा गाँव के निवासी पण्डित दीनबन्धु पाठक की कन्या रत्नावली के साथ हुआ था ।

(११) एडम्योर जे० बेबीन्यू के अनुसार –

"According to a wide spread tradition, much of which is based on the Bhakt Mala, Tulsīdās was married to the daughter of Dinabandhu Pathak called Ratnāwalī."

–"Love of God and Social Duty in the Rāmcharitmānas." Page 15

(एक लोक प्रचलित लोकमान्यतानुसार जो प्रायः 'भक्तमाल' पर आधारित है,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसीदास का विवाह दीनबन्धु पाठक की पुत्री रत्नावली के साथ हुआ था।)

(१२) "Goswami Tulsidas ji" (A biography) के लेखक Rohit S.Pankhania के अनुसार –

"Dinbandhu once again crossed the river from Maheva into Rajapur. He approached Tulsidad and put his proposal for his daughter to Him."

–'Goswami Tulsidas ji (A biography)' Page 57.

पत्नी प्रेम :– तुलसीदास जी रत्नावली से असीम प्रेम करते थे। रात–दिन पत्नी प्रेम में डूबे रहते –

(१) "दिन राति सदा रँग राते रहैं। सुख पाते रहैं ललचाते रहैं।।
शरवर्ष पुरस्मर चाय चये। पल ज्यों रस केलि में बीत गये।।
नहिं जान दें आपु न जायँ कहीं। पल एक प्रिया बिनु चैन नहीं।।"

–तुलसी शिष्य बाबा वेणीमाधवदास विरचित
"मूल गोसांई चरित"–१६।।२,३ पृष्ठ ३८

(२) पत्नी के मायके महेवा जाने पर प्रेमान्ध तुलसी पत्नी से मिलने भादौं की अंधेरी रात में यमुना पार करने के लिये कूद पड़ते हैं, जिसकी ओर संकेत करते हुए उन्होंने कहा है –

जमुना ज्यों ज्यों लागी बाढ़न।
त्यों त्यों सुकृत सुभट कलि भूपहिं निदरि लगे बहि काढ़न।।
ज्यों ज्यों जल मलीन त्यों त्यों जमगन मुख मलीन है आढ़न।
तुलसीदास जगदघ जवास ज्यों अनघमेघ लागे डाढ़न।।"

–'विनयपत्रिका'–२१

(३) पत्नी के प्रति उनकी असीम अनुरक्ति देखिये :–

"रत्ने ! तुम मेरी सब कुछ हो, मेरा सर्वस्व तुम्हारा है।
निश्छल मन से तुमने सचमुच, अपना सुख मुझ पर वारा है।।
प्रेयस–श्रेयस आधार तुम्हीं; ऐसा अनुराग जगाया है।
निशा–तिमिर सब भाग गया, जब राग विहाग सुनाया है।।"

–'एक रात तुलसी की: एक बात रत्ना की' – श्री गोविन्द प्रकाश श्रीवास्तव,
प्रथम सर्ग, पृष्ठ १८

"वह बोले बैठो प्रिय रत्ने, मैं आज पूर्ण श्रृंगार करूँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम्हें सामने बैठाकर, फिर कुछ तुमसे मनुहार करूँ ।।''

× × × ×

कैसे श्रृंगार करूँ रूपसि, सुन्दरता तेरी है अनूप ।
टकटकी लगाकर देख रहा, नभ से शशि तेरा दिव्य रूप ।।''

–"एक रात तुलसी की : एक बात रत्ना की"–श्री गोविन्द प्रकाश श्रीवास्तव,
तृतीय सर्ग, पृष्ठ ५१

वैराग्य :- तुलसी शिष्य बाबा वेणी माधवदास कृत 'मूल गोसाईं चरित' के अनुसार तुलसीदास जी नित्य की भाँति राजापुर से ४–५ कोस दक्षिण नाँदी गाँव स्थित हनुमान जी की सिद्धमूर्ति के दर्शन–पूजन को गये हुये थे, तभी रत्नावली के माँ की मरणासन्न दशा बताकर उनका भाई उन्हें मायके लिवा गया –

''सह बन्धु गई चुपके सो सती । वरषासन ग्राम हते जु पती ।।''१६।।४

बरषासन = वृषासन ग्राम अर्थात् नाँदी ग्राम (ब्लाक एवं थाना पहाड़ी के सन्निकट जिला–चित्रकूट)

इस सन्दर्भ में तुलसीदास जी के समकालीन भक्त कवि नाभादास जी विरचित भक्तमाल' की श्री प्रियादास जी कृत' 'भक्तिरस बोधिनी टीका' पृष्ठ१३० में उल्लेख है –

''तिया सों सनेह बिन पूँछे पिता गेह गई, भूलि सुधि देह भजे वाही ठौर आये हैं ।
वधू अति लाज भई रिस सों निकसि गई, प्रीति राम नहीं तन हाड़ चाम छाये हैं ।।'' – (पृष्ठ १३०)

इसी सन्दर्भ में उल्लेख करते हुये स्वामी रामानन्द सरस्वती ने "तुलसी स्मृति सन्दर्भः" में लिखा है –

''पत्यां श्री तुलसी विमोहित मना गाढ़ानुरक्ति गतः,
नान्दी ग्राममयाद्यदा स हनुमन्त स्वर्चितुं श्यालकः ।
नीत्वा स्वां भगिनी गतास्त्वति जनैर्ज्ञात्वैव नक्तं तदा,
सद्योऽगाधतरां नदीमतरगदागत्य स्त्रियं दृष्टवान् ।।''२४।।

(तुलसीदास अपनी स्त्री में विशेष अनुरक्त थे । एक समय जब वे नान्दी ग्राम में हनुमान जी की पूजा करने के लिये गये तब उनके साले ने आकर अपनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहन को अपने घर ले गया। आने पर लोगों से यह ज्ञात होने पर तुरन्त रात्रि में ही अथाह यमुना नदी को तैर कर अपनी स्त्री को देखा ।।२४।।)

रात्रि में जान हथेली में रखकर बढ़ी यमुना तैरकर भीगे वस्त्रों में नैहर में मोहान्ध पति को देखकर लोकलज्जा और ग्लानिवश पत्नी के मुख से क्रोधावेश में निकल गया –

"लाज न लागत आपको, दौरे आयेहु साथ।
धिक् - धिक् ऐसे प्रेम को, कहा कहौं मैं नाथ ।।
अस्थि चर्ममयदेह मम, तामे जैसी प्रीति।
तैसी जो श्री राम मँह, होत न तो भव-भीति ।।"[१]

तुलसी शिष्य बाबा वेणीमाधवदास कृत 'मूल गोसाईं चरित' के शब्दों में–
"हाड़ मास की देह मम, ता पर जितनी प्रीति।
तिसु आधो जो राम प्रति, अवसि मिटिहि भवभीति ।। १७।।"

गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी स्वीकार किया है –
"करे एक रघुनाथ संग, बाँध जटा सिर केस।
हम तो चाखा प्रेम रस, पतिनी के उपदेस ।।"

–"तुलसी सतसई"– "मानस का हंस" अनुच्छेद २८, पृष्ठ २४८ पर उदधृत

पंडित कृष्ण कुमार मुखोपाध्याय रचित "तुलसीदास" (नाटक) में इस अवसर पर तुलसी के शब्द –

"रत्नावली ! तुम्हारे निकट मैं चिर कृतज्ञ रहूँगा, तुम मेरी यथार्थ सह धर्मिणी हो, देवी, मेरे ज्ञानचक्षु तुमने खोल दिये हैं......।"

– "तुलसीदास" प्रथम अंक–दशम दृश्य, पृष्ठ ३८

कहते हैं कि रत्नावली के तारक नामक एक पुत्र पैदा हुआ था जो कुछ वर्ष बाद दिवंगत हो गया था। एक बार रत्नावली ने तुलसीदास जी के पास जाकर प्रार्थना की थी कि मुझे भी शरण में रख लें। मैं भी आपके साथ रहकर भगवान का भजन और आपकी सेवा करूँगी। गोस्वामी जी रत्नावली को अपने साथ रखने को तैयार नहीं हुए तो पत्नी ने उपालम्भ देते हुए कहा कि –

"खरिया खरी कपूर सब, उचित न पिय तिय त्याग।
कै खरिया मोहि मेलिकै, बिमल बिवेक बिराग।"

–"दोहावली", २५५

---

१. "हिन्दी साहित्य का इतिहास"– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पर उद्धृत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोस्वामी उपाधि :- शूकर क्षेत्र (जिला गोंडा) और उसके आस-पास के क्षेत्र में यह प्रचलित है कि तुलसीदास जी गोंडा जिले में निवास करने वाली गोसाईं नामक ब्राह्मण-उपजाति के थे। इसीलिए उन्हें गोस्वामी तुलसीदास कहा जाता है। किन्तु ऐसी बात नहीं है, वस्तुतः तुलसीदास जी के नाम के पूर्व प्रयुक्त होने वाला 'गोस्वामी' शब्द जाति का द्यौतक नहीं है; अपितु वह एक आदरार्थक उपाधि का द्योतक है। गोस्वामी बल्लभाचार्य तथा गोस्वामी बिट्ठलनाथ आदि आदरणीय वैष्णव महात्माओं के नाम के पूर्व भी यही आदरार्थक 'गोस्वामी' उपाधि जुड़ी हुई है।

डॉ० सूर्य प्रसाद दीक्षित के मत से 'गोस्वामी तुलसीदास गोसाईं जाति के नहीं थे। गोस्वामी तो उनका पद था।'[१]

तुलसीदास जी की रचनाओं में इस सम्बन्ध में जानकारी के कुछ सूत्र उपलब्ध होते हैं। अन्तः साक्ष्य से ज्ञात होता है कि तुलसीदास जी ने एक ऐसे सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण की थी अथवा एक ऐसे मठ में प्रवेश किया था, जिसका प्रधान गोस्वामी कहलाता था। गोस्वामी जी ने अपने गोस्वामी बनने पर "हनुमान बाहुक" में पश्चाताप व्यक्त किया है -

तुलसी गोसाईं भयो, भोड़े दिन भूलि गयो,
ताको फल पावत निदान परिपाक हौं। – 'हनुमान बाहुक'-४०

नीच एहि बीच पति पाइ भरूहाइगो,
बिहाइ प्रभु -भजन बचन मन काय को। –'हनुमान बाहुक'-४१

डॉ० माता प्रसाद गुप्त का मत है कि काशी के लोलार्क कुण्ड पर संवत् १७९७ तक एक मठ विद्यमान था। 'न्याय सिद्धान्त मंजरी' की पुष्पिका में इस मठ का उल्लेख हुआ है।[२] काशी के लोलार्क मोहल्ले में स्थित 'स्थान तुलसीदास' से जो बाद में 'तुलसीदास स्थान' के नाम से प्रसिद्ध हुआ, उससे पूर्वोक्त मठ का ऐक्य सम्भव है। इस मठ के महन्तों की उपाधि गोसाईं

---

१. "तुलसी जन्मभूमि" -डॉ० सूर्य प्रसाद दीक्षित, पृष्ठ २९

२. संवत् १६९७ वैशाष सुदी पूर्णिमा लिखितम्। लोलार्क तुलसीदास मठे जयकृष्णदास शुभम्।"

–'तुलसीदास'–डॉ० माता प्रसाद गुप्त–पृष्ठ १९५ पर उद्धृत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(गोस्वामी) थी। महात्मा तुलसीदास के काशी में प्रसिद्धि के कुछ समय पश्चात् उन्हें इस मठ के महन्त पद पर प्रतिष्ठित कर दिया गया था और वे 'गोस्वामी' उपाधि से विभूषित हो गये थे।[१]

सम्मान :- गोस्वामी तुलसीदास जी के व्यक्तित्व और कृतित्व से जीवन के उत्तरार्द्ध में समाज में विशेष सम्मान प्राप्त हुआ था। उन्होंने अपने काव्यों में इस तथ्य का उल्लेख किया है।[२] तुलसी कालीन प्रसिद्ध भक्तकवि सन्त नाभादास के 'भक्तमाल' से इस बात की जानकारी प्राप्त होती है कि उनके समय में ही तुलसीदास जी को ऋषि बाल्मीकि का अवतार माना जाता था।[३]

काशी के तुलसीकालीन प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वद्वरेण्य आचार्य मधुसूदन सरस्वती ने गोस्वामी तुलसीदास जी को काशी रूपी कानन में स्थित पवित्र तुलसी का एक ऐसा पौधा बतलाया है, जिनकी कवितारूपी मंजरी में साक्षात् भगवान श्री राम रूपी भ्रमर सदैव गुंजार करते रहते हैं -

---

१. 'तुलसीदास'-डॉ० माता प्रसाद गुप्त-पृष्ठ १९४-१९८ 'तुलसीदास काव्य मीमांसा'-डॉ० उदयभान सिंह-पृष्ठ २०६

२. (१) केहि गिनती मह, गिनती जस बन घास।
राम जपत भये, तुलसी तुलसीदास ।। - 'बरवै रामायण'७/५९

(२) नाम राम को कल्पतरु कलि कल्यान निवास।
जो सुमिरत भयो भाँग ते, तुलसी तुलसीदास ।। -'मानस'-बालकाण्ड, २६

(३) घर घर माँगे टूक पुनि भूपति पूजे पाय।
वे तुलसी तब राम बिनु ते अब राम सहाय ।। - 'दोहावली', १०९

(४) राम नाम को प्रभाउ पाउ महिमा प्रताप,
तुलसी सो जग मनियत महामुनी सों - कवितावली ७/७२

(५) हौं तो सदा खर को असवार, तिहारोइ नामु गयंद चढ़ायो। - 'कवितावली, ७/६०

३. "त्रेता काव्य निबन्धकरी शतकोटि रामायण।
इक अक्षर उद्धरै ब्रह्म हत्यादि परायण।
अब भक्तन सुखदेन बहुरि लीला विस्तारी।
राम चरण रस मत्त रहत निशि दिन ब्रतधारी ।।
संसार अपार के पारको, सुगम रूप नवका दयो।
कलि कुटिल जीव-निस्तार हित, बाल्मीकि तुलसी भयो ।।"

'भक्तमाल' - नाभादास, छप्पय २९, पृष्ठ १३०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"आनन्द कानने ह्यस्मिन् तुलसी-जङ्गमस्तरुः ।
कविता-मञ्जरी यस्य राम-भ्रमर भूषिता ।।"

सम्राट अकबर के मंत्री तथा तुलसीदासजी के समकालीन सुप्रसिद्ध कवि रहीम ने तुलसीकृत 'रामचरित मानस' महात्म में लिखा –

"'रामचरित मानस'' विमल संतन जीवन प्रान ।
हिन्दुवान को वेद सम यवनहिं प्रगट कुरान ।।"

समाज और संत समाज में तुलसीदास जी की सुप्रसिद्धि एवं सम्मान चरम पर थी तभी तो सुप्रसिद्ध संत कवियित्री मीराबाई ने गोस्वामी तुलसीदास जी से मार्ग दर्शन हेतु लिखा था–

"स्वस्ति श्री तुलसी गुन भूषन, दूषन-हरन गुसाईं ।
बारहिं बार प्रनाम करौं अब हरउ सोक समुदाई ।।
घर के सजन हमारे जेते, सबनि उपाधि बढ़ाई ।
साधु संग अरु भजन करत मोहिं देत कलेस सहाई ।।
× × ×
मेरे मात-पिता के सम हो हरि भक्तन सुख दाई ।
हमकों कहा उचित करिबो है, सो लिखिए समुझाई ।।"

उत्तर में गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा था –

"जाके प्रिय न राम बैदेही ।
तजिये ताहि कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही ।।
तज्यो पिता प्रह्लाद, विभीषण बन्धु, भरत महतारी ।
बलि गुरु तज्यो, कंत ब्रज बनितनि, भये मुद मंगलकारी ।।
नाते नेह राम के मनियत सुहृद सुसेब्य जहाँ लौं ।
अंजन कहा आँख जेहि फूटै बहुतक कहा कहालौं ।।
तुलसी सो सब भाँति परम हित, पूज्य प्रान ते प्यारो ।
जासों होइ सनेह रामपद, एतो मतो हमारो ।।"

– विनय पत्रिका, पद १७४

विरोध :- काशी के शैव-शाक्त और पोंगापंथी पंडित तुलसी के बढ़ते प्रभाव और प्रसिद्धि से चिढ़ कर साम्प्रदायिक विद्वेष के कारण प्रारम्भ से ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनका विरोध करते रहे। 'रामचरित मानस' की लोकप्रियता से भयभीत होकर वे उसे चुराने और नष्ट कर देने का प्रयास करते रहे तथा उन्हें तरह-तरह से परेशान करते रहे। गोस्वामी जी ने अपने काव्यों में इस तथ्य का उल्लेख किया है -

(१) गाँव बसत वामदेव, मैं कबहुँ न निहोरे।
आधि भौतिक बाधा भई, ते किंकर तोरे।।
बेगि बोलि बलि बरजिए, करतूत कठोरे। -'विनयपत्रिका' ८/३,४

(२) करमठ कठमलिया कहैं, ग्यानी ग्यान बिहीन। -'दोहावली'-९९

(३) धूत कहौ अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जुलहा कहौ कोऊ।
काहू की बेटी सों बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगार न सोऊ।।
तुलसी सरनाम गुलामु है रामको, जाको रूचै सो कहै कछु कोऊ।
माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबो को एकु न दैबे को दोऊ।।

- 'कवितावली' - ७/१०६

ब्याधि :- गोस्वामी तुलसीदास को वृद्धावस्था में अनेक व्याधियों से जूझना पड़ा था। संवत् १६६४ के लगभग उनकी बाहु में बात-व्याधि की असहनीय पीड़ा उत्पन्न हो गयी थी,[१] जिसके निवारण हेतु ही उन्होंने 'हनुमान बाहुक' नामक काव्य की रचना की थी। किन्तु उनकी यह बाहु-पीड़ा अन्त तक शान्त नहीं हुई। अन्त में सम्पूर्ण शरीर में पीड़ा उत्पन्न हो गई थी।[२] जीवन के अन्तिम समय में उनके शरीर में बरतोड़ के फोड़े निकल आये थे -

"तातें तनु पोषियत घोर बरतोर मिस,
फूटि फूटि निकसत लोन राम राय को।" -'हनुमान बाहुक'-४१

---

१. (१) बाँहपीर महावीर बेगि ही निबारिये - हनुमान बाहुक-२०
(२) आपने ही पाप तें, त्रिताप ते कि सापते तें,
बढ़ी है बाँह बेदन कही न सहि जाति है। -'हनुमान बाहुक' - ३०
(३) बाहु बिटप सुख बिहँग थलु, लगी कुपीर कुआगि।
रामकृपा जल सींचिए बेगि दीन हित लागि।। -दोहावली - २३६

२. (१) पॉय पीर पेट पीर बाँह पीर मुँह पीर, जरजर सकल सरीर पीर भई है।
-'हनुमान बाहुक'-३८
(२) 'हौं हूँ रहों मौन ही, बयो सो जानि लुनिये।' - हनुमान बाहुक'-४४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये फोड़े शायद अन्त तक ठीक नहीं हुए ।[१] यह असम्भव नहीं है कि इन्हीं फोड़ों के कारण ही अन्त में उनका प्राणान्त हो गया हो ।[२]

रचनायें :- गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा विरचित निम्नांकित १२ प्रामाणिक ग्रन्थ माने जाते हैं, जिनका भाषा के आधार पर विद्वानों ने इस प्रकार से विभाजन किया है –

अवधी ग्रन्थ :-रामचरित मानस, रामलला नहछू, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल तथा रामाज्ञा प्रश्न ।

ब्रजभाषा ग्रन्थ :- श्री कृष्ण गीतावली, गीतावली, कवितावली, दोहावली, वैराग्य संदीपनी तथा विनय पत्रिका ।

उपरोक्त प्रामाणिक ग्रन्थों के अलावा 'हनुमान चालीसा' और 'हनुमान बाहुक' भी तुलसीकृत रचनायें मानी जाती हैं –

१. हनुमान चालीसा :- मानसरोवर–कैलाश, बदरीनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, तुंगनाथ के तीर्थाटन के बाद हरिद्वार कुम्भ पर्व पर ब्रह्मकुण्ड में तुलसी के भाव समाधिस्थ अवस्था में श्री हनुमान चालीसा का अवतरण और कई संतों द्वारा लिपिबद्ध किया जाना । इसकी भाषा अवधी है । दोहा–चौपाई छन्द हैं । इसमें ४० चौपाइयाँ और २ दोहे हैं ।

२. पार्वती मंगल :- "जय संवत् फागुन सुदी पांचै गुरु छिव अस्विनी बिरचेव मंगल सुनि सुख छिन छिन ।।"

"मिथिला में रचना किये, नहछू मंगल दोय ।
पुनि प्रांचे मंत्रित किये, सुख पावे सब लोय ।।"९४।।

–'मूल गोसाईं चरित'–बाबा वेणीमाधवदास

'पार्वती मंगल' में शिव–पार्वती विवाह और उसके पूर्व पार्वती तपस्या का वर्णन है । इसमें बीस–बीस मात्राओं की दो–दो पंक्तियों के आठ सोहर छन्दों के पश्चात् अट्ठाइस मात्रा का चार–चार पंक्तियों का एक हरगीतिका छन्द

---

१. मारिये तौ अनायास, कारीबास खासफल
ज्याइये तौ कृपा करि निरुज सरीर हौं ।। – 'कवितावली' – ७/१६६

२. "तुलसीदास" – डॉ० माता प्रसाद गुप्त – पृष्ठ १९२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस प्रकार १४८ सोहर छन्द और १६ हरिगीतिका छन्द मिलाकर कुल १६४ मंगल छन्द हैं । इसकी भाषा अवधी है –

"विनइ गुरुहि गुनिगनहि गिरिहि गन गाथहि ।
हृदयँ आनि सियाराम धरे धनु भाथहि ।।
गावहुँ गौरि–गिरीस बिबाहु सुहावन ।
पाप नसावन, पावन, मुनि मन–भावन ।।"

३. जानकी मंगल :– 'पार्वती मंगल' के बाद इसी पद्धति से श्री राम–जानकी विवाह 'श्री जानकी मंगल' लिखा गया । दोनों ग्रन्थों में मंगल विवाह के अर्थ में है । जानकी मंगल की कथा 'मानस' कथा से दो–तीन स्थलों पर भिन्न है इसमें सीता जन्म एवं विवाह का वर्णन अवधी भाषा में २१६ छन्दों में है जिनमें १९२ हंस गति और २४ हरिगीतिका छन्द हैं ।

४. रामलला नहछू :– मुंडन, यज्ञोपवीत, तेल चढ़ाने आदि के उत्सवों के लिए 'हो' शब्द के लय के साथ अवधी भाषा में २० सोहर छन्दों की अत्यन्त लघु रचना है –

"आदि सारदा गनपति गौरि मनाइय हो ।
रामलला कर नहछू गाइ सुनाइय हो ।।"

५. रामाज्ञा प्रश्न :– गोस्वामी तुलसीदास ने अपने मित्र पं० गंगाराम ज्योतिषी के लिए ४९–४९ दोहों के सात सर्गों में अर्थात कुल ३४३ दोहों में अवधी भाषा में लिखा गया ज्योतिष ग्रन्थ है । इसमें शकुन विचारने की पद्धति भी दी हुई है ।

६. श्री संकट मोचन हनुमानाष्टक :– काशी जी में श्री संकटमोचन हनुमान मंदिर में संकट मोचन हनुमान की प्रतिमा स्थापनोत्सव पर रचित अष्टक, जो 'हनुमान चालीसा' में संग्रहीत हैं । भाषा अवधी है –

"बाल समै रबि भक्षि लियो तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को यहु संकट काहु सों जात न टारो ।।.....
.....यह अष्टक हनुमान को, विरचित तुलसीदास ।।"

७. श्री रामचरितमानस :–

संवत सोरह सै एकतीसा । करउँ कथा हरिपद धरि सीसा ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नौमी भौमवार मधुमासा । अवधपुरी यह चरित प्रकासा ।।

–'मानस'–बाल ३३/२,३

अवधी भाषा में रचित गोस्वामी तुलसीदास जी की यह विश्व प्रसिद्ध सर्वोत्कृष्ट रचना है । यह सात काण्डों में दोहा–चौपाई आदि छन्दों में श्री रामचरित के माध्यम से वर्णित आदर्श मानव जीवन की आदर्श आचार संहिता है, जिसका समापन २ वर्ष ७ माह २६ दिन में श्री राम विवाह के पावन पर्व पर मार्गशीर्ष (अगहन) शुक्ला पंचमी संवत् १६३३ वि० में काशी जी में हुआ । इसमें कुल १०७४ दोहे हैं ।

८. दोहावली :-

मिथिला ते काशी गये, चालिस संवत् लाग ।
दोहावली संग्रह किये, सहित बिमल अनुराग ।।५४।।

–'मूल गोसाईं चरित' –बाबा वेणीमाधवदास

यह संवत् १६४० वि० में अवधी और ब्रजभाषा में ५७३ मुक्तक दोहों में नीति, धर्म सम्बन्धी संकलन है । इसमें कुछ सोरठों का भी संग्रह है । इन दोहों को जीवनानुभव और जीवन संदेश का काव्य भी कहा जा सकता है । इसमें ८५ दोहे 'मानस' से ३५ दोहे रामाज्ञा प्रश्न से, २ दोहे वैराग्य संदीपनी से तथा कुछ रामसतसई से हैं –

"घर कीन्हें घर जात है, घर छाँड़े घर जाइ ।
तुलसी घर बन बीच ही, राम प्रेमपुर छाइ ।।"

–दोहावली, २५६

९. गीतावली :-

"जब सोरह सै बसु बीस चढ्यो । पद जोरि सबै शुचि ग्रंथ गढ्यो ।
तिसु रामगितावलि नाम धर्‌यो । अरु कृष्ण गितावलि रांचि सर्‌यो ।।"३२।।३

"मूल गोसाईं चरित"–बाबा वेणीमाधवदास

यह सात काण्डों में विभाजित गीतों (पदों) का संग्रह है । पदों में राम–चरित का इतना विस्तृत वर्णन दुर्लभ है । यह ब्रज भाषा में है और सभी पद रागों में हैं । अनेक प्रसंगों का विस्तार है, अनेक संक्षिप्त हैं । इसमें अनेक नयी उद्भावनायें हैं । इसमें ३२८ छन्द या गीत हैं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१०. कृष्णगीतावली :- संवत् १६६४ वि० में विरचित ब्रजभाषा में ६१ पदों में श्रीकृष्ण चरित का वर्णन है। अनेक पद सूरदास जी के समानान्तर जान पड़ते हैं। इसमें ३२ पद कृष्णजी के बाललीला, रासलीला, २७ पद उद्धव-गोपी संवाद और २ पद द्रोपदी चीर हरण से सम्बन्धित हैं।

११. कवितावली :- कवितावली को कवित्त रामायण भी कहते हैं। इसकी भाषा ब्रज है। इसके छन्द कविन्त, सवैया, घनाक्षरी और छप्पय हैं। रामकथा का यह ग्रंथ सात काण्डों में विभाजित है। इसमें अनेक प्रसंग 'मानस' से भिन्न हैं। संवत् १६६५ से १६७१ वि० के मध्य रचित इस ग्रन्थ में ३२५ छन्द हैं जिनमें से १८३ छन्द उत्तरकाण्ड में हैं।

१२. बरवै रामायण :- संवत् १६६९ में रचित इस ग्रन्थ में ६९ बरवै छन्दों में संक्षिप्त रामकथा का सात काण्डों में वर्णन है। यह एक संक्षिप्त रामायण है। यह मनौवैज्ञानिक आधार पर लिखा जान पड़ता है। इसकी भाषा अवधी है।

१३. वैराग्य संदीपनी :- संवत् १६६९ में रचित यह एक प्रकार का दार्शनिक ग्रंथ है। इसमें बासठ छन्दों में ज्ञान-वैराग्य सम्बन्धी ४६ दोहे २ सोरठे और १२ चौपाइयाँ हैं। जिनमें महात्माओं के लक्षण और सदाचरण के विषय में बताया गया है। भाषा ब्रज भाषा है -

"राम बाम दिसि जानकी, लखन दाहिनी ओर।
ध्यान सकल कल्यान कर, सुरतरु तुलसी तोर।।
अज अद्वैत अनाम, अलख रूप गुन रहित जो।
मायापति सोइ राम, दास हेतु नरतनु धरेउ।।"

१४. हनुमान बाहुक :-

"बाहुपीर ब्याकुल भये, बाहुक रचे सुधीर।
पुनि विराग संदीपनी, रामाज्ञा शकुनीर।।९५।।

-"मूल गोसाईं चरति" -बाबा वेधीमाधवदास

हनुमान बाहुक में तुलसीदास जी की बाहु पीड़ा की अभिव्यक्ति है और संकट मोचन हनुमान जी से पीड़ा निवारण की प्रार्थना की गई है। इसके पाठ का पीड़ा निवारक महत्व है। इसकी भी भाषा ब्रजभाषा है। इसमें कुल ४४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छन्दों में २ छप्पय, १ झुलना, ५ सवैया और ३६ घनाक्षरी छन्द हैं।

१५. विनय पत्रिका :- 'विनयपत्रिका' रामचरितमानस के बाद तुलसी की एक उत्कृष्ट रचना है। यह आकार और प्रकार दोनों में विशिष्ट है। विनय पत्रिका में तुलसीदासजी सभी देवताओं की प्रार्थना कर राम भक्ति की याचना कर राम दरबार में अपनी विनय पत्रिका आवेदित करते हैं। इसमें विनय सम्बन्धी २७९ पद हैं। यह ग्रंथ दर्शन, पांडित्य, स्तोत्र, शैली आदि के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। भाषा साहित्यिक ब्रजभाषा है।

१६. तुलसी सतसई :- कुछ विद्वान इसको तुलसीदास जी की रचना नहीं मानते। इसमें सात सर्गों में ७४७ दोहे, दोहावली और रामाज्ञा प्रश्न के समान हैं। प्रथम सर्ग भक्ति, द्वितीय उपासना, तृतीय रामभजन, चतुर्थ आत्मा, पंचम-कर्म, छठाँ ज्ञान और सातवाँ सर्ग राजनीति से सम्बन्धित हैं। इसकी भाषा अवधी और ब्रज मिश्रित है।

देहावसान

देहावसान तिथि :- गोस्वामी तुलसीदास जी की मृत्यु के सम्बन्ध में निम्नांकित दो मत प्रचलित हैं –

(१) एक जनश्रुति के अनुसार गोस्वामी जी की मृत्यु संवत् १६८० में श्रावण शुक्ल सप्तमी को हुई थी –

'संवत् सोरह सै असी, असी गंग के तीर।
सावन शुक्ला सत्तमी, तुलसी तज्यो सरीर।।

–डॉ० माता प्रसाद गुप्त–"तुलसीदास"–पृष्ठ १९३ पर उद्धृत

संत तुलसी साहिब ने भी इसी तिथि का उल्लेख किया है –

सम्मत सोलह सै असी, नदी बरुन के तीर।
सावन सुक्ला सत्तमी, तुलसी तज्यो सरीर।।

–"घटरामायण"–द्वितीय भाग–संत तुलसी साहिब, पृष्ठ १८८

(२) बाबा वेणीमाधव दास ने 'मूल गोसाईं चरित' में कहा है कि गोस्वामी जी की मृत्यु संवत् १६८० की श्रावण कृष्ण तृतीया शनिवार को हुई थी –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामचन्द्र जस बरनि कै, भयो चहत अब मौन ।
तुलसी के मुख दीजिये, अबहीं तुलसी सोन ।।११८।।
संवत् सोरह सै असी, असी गंग के तीर ।
श्रावण श्यामा तीज शनि, तुलसी तज्यो शरीर ।।११९।।

–'मूल गोसाईं चरित'–बाबा वेणीमाधवदास

उपर्युक्त सावन शुक्ल सप्तमी के निधन तिथि के समर्थन में जनश्रुति तथा संत तुलसी साहिब का आत्मोल्लेख है, तो श्रावण कृष्ण तृतीया का समर्थन इस बात से होता है कि गोस्वामी जी के घनिष्ठ मित्र राय टोडरमल के वंशज इसीतिथि को गोस्वामी जी की वार्षिक श्राद्ध का आयोजन करते हैं। किन्तु गणना करने पर यह तिथि शुद्ध नहीं प्रतीत होती है क्योंकि संवत् १६८० की श्रावण कृष्ण तृतीया को शनिवार नहीं शुक्रवार था।[१]

इस सम्बन्ध में मेरा मत है कि गोस्वामी जी की निधन तिथि पर उनके परम घनिष्ठ मित्र राय टोडरमल के वंशजों द्वारा श्रावण कृष्ण तृतीया को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए। गोस्वामी तुलसीदास जी के यों तो अनेक सन्त, महन्त, राजा, महाराजा, नवाब, गृहस्थ प्रेमी थे किन्तु काशी के जमीन्दार राय टोडरमल से सम्भवतः उनका अधिक स्नेह था, तभी तों"कीन्हें प्राकृत जनगुन गाना। सिर धुनि गिरा लगत पछिताना ।।" –'मानस' बालकाण्ड १०।।४ – सिद्धान्त मानने वाले तुलसी ने मित्र टोडर की मृत्यु पर इस प्रकार अपने उद्गार प्रकट किये थे –

"चार गाँव को ठाकुरो मन को महामहीप ।
तुलसी या कलिकाल में अथये टोडर दीप ।।
तुलसी राम सनेह को सिर पर भारी भारु ।
टोडर काँधा नहि दियो सब कहि रहै उतारु ।।
रामधाम टोडर गये तुलसी भये असोच ।
जियबो मीत पुनीत बिनु यहै जानि संकोच ।।"

इतना ही नहीं टोडर की मृत्यु के बाद टोडर के पुत्रों का संवत् १६६९ में परस्पर सम्पत्ति का बँटवारा हुआ था जिसमें गोस्वामी तुलसीदास प्रमुख

---

१. "गोस्वामी तुलसीदास – व्यक्तित्व: दर्शन: साहित्य"– डॉ० रामदत्त भारद्वाज, पृष्ठ १७३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंच थे। पंचनामें में गोस्वामी जी के लिखे हुये दो श्लोक और एक दोहा है जो काशी नरेश जी के संग्रहालय में अब तक सुरक्षित है।

लगता है श्रावण कृष्ण तृतीया के साथ शनिवार को भ्रमवश जोड़ दिया गया है। इस सम्बन्ध में डॉ० उदयभान सिंह का भी यही मत है।[१] गौतम चन्द्रिकाकार ने भी इसीतिथि को स्वीकार किया है।[२]

राजापुर (चित्रकूट) में तुलसी शिष्य वंशज 'तुलसी जन्म कुटीर' (तुलसी मन्दिर) और 'मानस मंदिर' के पुजारी पितरपक्ष में तृतीया को प्रतिवर्ष तुलसीदास जी को पिंडदान-तपर्ण श्राद्ध करते आ रहे हैं।

अस्तु उपर्युक्त प्रबल प्रमाणों से सिद्ध होता है कि संवत् १६८० वि० की श्रावण कृष्ण तृतीया को गोस्वामी तुलसीदास जी की निधन तिथि स्वीकार करना सर्वथा न्यायोचित है।

तुलसी जन्मभूमिः शोध समीक्षा

गोस्वामी तुलसीदास जी के समकालीन सम्राट अकबर के शासनकाल से अंग्रेजी शासन तथा देश की आजादी के बाद भी शासकों, विद्वानों और जनसामान्य की मान्यता रही है कि तुलसीदास जी का जन्म चित्रकूट के पास यमुना तटवर्ती राजापुर (प्राचीन नाम विक्रमपुर, दुबन का पुरवा, रजियापुर) में हुआ था। इधर कुछ समय से क्षेत्रीयता की संकीर्ण मानसिकता से ग्रसित तथा कथित कुछ विद्वानों का कहना है कि वह उत्तर प्रदेश के एटा जिले के सोरों नामक स्थान में पैदा हुए थे। अब एक मत और प्रस्तुत हुआ है कि वे उत्तर प्रदेश में चित्रकूट के पास राजापुर में नहीं, गोंडा जिले के राजापुर में उत्पन्न हुए थे। तो आइये तुलसीदास जी का जन्म कहाँ और कब हुआ था, एतद् सम्बन्धी अद्यावधि किये गये शोधों, तथ्यों, तर्कों, साक्ष्यों और प्रमाणों का मन्थन कर निष्पक्ष निष्कर्षामृत निकालें।

---

१. "तुलसी-काव्य-मीमांसा"-डॉ० उदयभान सिंह, पृष्ठ १७६

२. "संवत् सोलह सै एकासी। तुलसी बरषी असी प्रकासी।
सावन कृष्ण तिजि तिथि पाई। यह गौतम-चन्द्रिका पुराई॥"
—नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ६० अंक १ संवत् २०१२, पृष्ठ ३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसी जन्मभूमि विवाद की पृष्ठभूमि क्षेत्रवाद, आस्पदवाद तथा थोथे पाण्डित्य प्रदर्शन की संकीर्ण मनोवृत्ति से परिविद्ध स्वार्थान्ध दिग्भ्रमित स्वेच्छाचारियों की कृत्रिमता से परिपूरित कपोल कल्पित उद्भावना पर आधारित है। इस प्रकार की क्षेत्रवादी, आस्पदवादी मनोवृत्ति की उद्भावना की उद्भूति ने तुलसी जीवनवृत्त के परिप्रेक्ष्य में अनेक कृत्रिम एवं कल्पना प्रसूत ग्रन्थों को आविष्कृत किया है, जैसे अष्ट सखामृत, चौरासी वैष्णवन की वार्ता, दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता, भक्तमाल, दोहा रत्नावली, रत्नावली चरित, तुलसी प्रकाश, गोस्वामी तुलसीदास आदि। परन्तु क्षेत्रवादी आस्पदवादी संकीर्ण मनोवृत्ति और दुराग्रह से ग्रसित इन कृत्रिम, कपोल कल्पित तथ्यहीन, निराधार, मनगढ़न्त, जाली, संदिग्ध, अविश्वसनीय ग्रन्थों को सुप्रसिद्ध मूर्धन्य एवं अधिकारी विद्वानों ने अप्रमाणिक, अविश्वसनीय और भ्रामक माना है। क्योंकि शोधात्मक दृष्टि से यह ग्रन्थ अन्तः साक्ष्य, वाह्य साक्ष्य, भाषागत साक्ष्य एवं लोकमान्यता के पुष्ट प्रमाणों के प्रतिकूल मन गढ़न्त, जाली, संदिग्ध प्रमाणों से परिपूरित, ऐतिहासिक व्यतिक्रमों तथा जनश्रुतियों के कपोल कल्पित स्वरूप का दिग्दर्शन कराते हैं फिर भी क्षेत्रवाद, आस्पदवाद एवं थोथे पाण्डित्य प्रदर्शन की संकुचित स्वार्थान्ध मनोवृत्ति से परिविद्ध कतिपय क्षेत्रवादी, दुराग्रही, दिग्भ्रमित तथा कथित विद्वान तुलसी जन्मभूमि के सर्वमान्य सनातन सत्य को स्वीकार करने में अपनी साहित्यिक एवं पाण्डित्य पराजय की अनुभूति करते हैं और अब भी इन ग्रन्थों के कल्पना प्रसूत, कपोल कल्पित कथानकों के आधार पर मनगढ़न्त अर्थ का अनर्थ कर यह प्रमाणित करने में प्रयत्नशील हैं कि येनकेन प्रकारेन उनके मनगढ़न्त मिथ्या, भ्रामक प्रचार–प्रसार पर साहित्य जगत बुद्धिजीवी एवं जनसामान्य उनके मनानुकूल तुलसी जीवनवृत्त के कृत्रिम, कपोल कल्पित कथानक को स्वीकार कर लें !

इस संदर्भ में सत्यान्वेषण के लिए बाह्य साक्ष्य, अन्तः साक्ष्य, पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक साक्ष्य तथा लोक मान्यता के निम्नांकित प्रमाण दृष्टव्य हैं –

तुलसी जन्मभूमिः – बाह्य साक्ष्य

बाह्य साहित्यिक साक्ष्य

"हुलसी सुतं मानव धर्म रूपं परमात्मतत्वस्य घने निमग्नं ।
रत्नापतिं राजापुर ग्राम रत्नं पितामहं श्री तुलसीं नमामि ।।"

प्रायः सभी प्राचीन साहित्यकारों ने गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म स्थान बाँदा (अब चित्रकूट में) जनपद के राजापुर को ही स्वीकार किया है। लगभग पाँच सौ से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अधिक वर्षों से गोस्वामी तुलसीदासजी के जन्म स्थान के रूप में राजापुर जिला बाँदा (वर्तमान जिला चित्रकूट) का ही उल्लेख होता आ रहा है। तुलसीदास जी के जीवनी को लेकर जो वाह्य साहित्यिक साक्ष्य मिलते हैं, उनमें तुलसीदासजी के शिष्य बाबा वेणी माधवदास के 'मूल गोसाईं चरित' 'रघुबरदास के' 'तुलसीचरित', 'भवानीदास के 'गोसाईं चरित' रघुबीर सिंह के 'तुलसीचरित', दास्यान्यदास के 'तुलसी चरित' तथा 'गोसाईं चंरित' तुलसी साहिब के घटरामायण, –भक्तनाभादास के 'भक्तमाल', इस पर प्रियादास की टीका 'भक्तिरस बोधिनी', नागरीदास के 'पद प्रसंगमाला', कृष्णदत्त मिश्र के 'गौतम चन्द्रिका', महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के 'तुलसीदास' महादेव पाण्डेय रचित 'तुलसी चरित', स्वामी रामानन्द सरस्वती रचित 'तुलसीस्मृति सन्दर्भः' तुलसी पीठाधीश्वर स्वामी राम भद्राचार्य जी रचित 'मानस' में तापस प्रसंग' डॉ० विश्वम्भर दयाल अवस्थी रचित 'रामचरितमानस में महाकाव्यत्व, भक्ति और दर्शन', डॉ० अयोध्या प्रसाद पाण्डेय रचित 'तुलसी–विमर्श' के नाम प्रमुख हैं। इनमें रांगेयराघव की 'रत्ना की बात', अमृतलाल नागर का 'मानस का हंस', रामगोपाल भावुक की 'रत्नावली' तथा आचार्य सोहन लाल रामरंग के 'युग पुरुष तुलसी' आदि को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

१. मूल गोसाईं चरित :– गोस्वामी तुलसीदास जी के निकटस्थ शिष्य बाबा वेणी माधवदास जी (जन्म स्थान पसका, जिला–गोंडा) ने संवत् १६८७ विक्रमी में सर्वप्रथम गोस्वामी तुलसीदास जी की जीवनी 'मूल गोसाईं–चरित' लिखी –

"सोरह सै सन्तासि सित, नवमी कातिक मास।
विरच्यो यहि नित पाठ हित, वेणी माधवदास।"

–'मूल गोसाईचरित'–१२१ पृष्ठ५०

बाबा वेणीमाधवदास जी ने 'मूल गोसाईं चरित' में गोस्वामी तुलसीदासजी के विषय में लिखा है –

सरवार सुदेस के विप्र बड़े। शुचि गोत पराशर टेक कड़े।।
शुभ थान पतेजि रहे पुरखे। तेहिते कुल नाम पड्यो झुरखे।।
यमुना तट दूबन का पुरवा। बसते सब जातिन को कुरवा।।
सुकृती सतपात्र सुधी सुखिया। रजियापुर राजगुरु मुखिया।।१।।

२, ३ पृष्ठ ३६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोहा – पन्द्रह सै चउवन विषै, कालिन्दी के तीर ।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी धरेउ शरीर ।।२।। पृष्ठ ३६

इससे तुलसी जन्मतिथि और जन्मवर्ष, कुल गोत्र ही नहीं स्पष्ट हो जाते हैं अपितु तुलसी जन्मभूमि यमुना तट पर दूबन का पुरवा–रजियापुर अर्थात् राजापुर को स्पष्टरूप से उल्लिखित किया है । ऐसा ज्ञात होता है कि उस समय यह दूबन का पुरवा या रजियापुर कहा जाता था । सम्भवतः उस समय तक गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रजियापुर से राजापुर नामकरण इतना जनप्रचलित न रहा हो । राजापुर (प्राचीन नाम विक्रमपुर जिला बाँदा, वर्तमान जिला चित्रकूट) में दुबों का बाहुल्य एवं वर्चस्व होने से इसे 'दूबन का पुरवा' कहना उपयुक्त ही है । यहाँ रूपौलिया दुबे, तिलौरहा दुबे, किलौनिहा दुबे, बेलौहाँ दुबे, बड़गइयाँ दुबे, गुर्दबान दुबे, भरद्वाज दुबों का बाहुल्य एवं वर्चस्व रहा है । इनमें अधिकांश का मुख्य व्यवसाय पौरोहित्य कार्य रहा है । यहाँ कर्मकाण्ड की हस्तलिखित सैकड़ों प्राचीन पाण्डुलिपियाँ दुबे लोगों की लिखी हुई हैं जिनमें राजापुर का प्राचीन नाम विक्रमपुर मिलता है ।

यहाँ यह विशेष उल्लेखनीय है कि गोस्वामी तुलसीदास जी के निकटस्थ प्रिय शिष्य 'मूल गोसाईं चरित' के रचयिता बाबा वेणीमाधवदास जी का जन्म स्थान पसका–शूकर क्षेत्र, जिला गोंडा था,[1] अगर गोंडा समर्थकों के अनुसार राजापुर (जिला–गोंडा) गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्मस्थान होता तो बाबा वेणीमाधवदास यमुना तटीय राजापुर (चित्रकूट) को गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्मस्थान क्यों लिखते ? इससे स्पष्ट है कि राजापुर (चित्रकूट) ही गोस्वामी तुलसीदास जी का सर्वमान्य जन्मस्थान है ।

२. बाबा रघुबरदास जी कृत 'तुलसी चरित' :– 'मूल गोसाईं चरित' की भाँति गोस्वामी तुलसीदास जी के शिष्य बाबा रघुबरदास जी कृत 'तुलसीचरित' से भी राजापुर (चित्रकूट) में तुलसी जन्मभूमि होने की पुष्टि होती

---

1. "One or two Gonda worthis have attained, some major of literary fame. Bani Madho Das of Paska was a disciple and Companion of Tulsidas, whose life - history he wrote in the form of poem entitled 'The Goswami Charit.'- District Gazetteers of Gonda"-Vol.XILV.

"मानस पीयूष"–वालकाण्ड १/३० की टीका में पृष्ठ ४४४ पर उद्धृत ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है। इस ग्रन्थ के अनुसार तुलसीदास जी के परपिता सरयूपार निवासी पंडित परसुराम चित्रकूट तीर्थ यात्रा में आये थे, वहाँ उन्हें स्वप्न में हनुमान जी ने राजापुर जाकर वहाँ निवास करने हेतु आदेशित किया और उन्होंने चित्रकूट नरेश से आज्ञा लेकर यमुना किनारे राजापुर में अपना निवास स्थान बनाया –

परसुराम परपिता हमारे, राजापुर सुखभवन सुधारे।
प्रथम तीर्थ यात्रा मँह आये, चित्रकूट लखि अति सुख पाये।।
परसुराम सोये सुख पाई, तहँ मारुत सुत स्वप्न दिखाई।
बसहु जाइ राजापुर ग्रामा, उन्तरभाग सुभूमिललामा।।
तुम्हरे चौथ पीढ़िका एका, तप समूह मुनि जन्म विवेका।
बहु सन्माने भूप तहँ कहि द्विज मूल निवास।।
सरयू के उत्तर बसत मंजु देश सरवार।
राज मझबली जानिए, कसेवा ग्राम उदार।।
चित्रकूट प्रभु आज्ञा पावा, प्रगट स्वप्न बहुविधि दरसावा।
भूप मानि के चलेहु रजाई, राजापुर निवास की ताँई।।

–'तुलसी चरित'–बाबा रघुबरदास

परसुराम के चौथी पीढ़ी में तुलसीदास जी का जन्म हुआ था –

"तुम्हरे चौथि पीढ़िका एका, तप समूह मुनि जन्म दिवेका।"

३. भक्ति विलास :– संवत् १६३१ में जन्मे तुलसी कालीन संत कवि मलूकदास जी जो कड़ा (तहसील सिराथू जिला–इलाहाबाद, वर्तमान जिला–कौशाम्बी) निवासी थे, उन्होंने 'संत विरुदावली' और 'भक्ति विलास' में गोस्वामी तुलसीदास की जन्मभूमि राजापुर (बाँदा, वर्तमान जिला चित्रकूट) लिखी है, जो मलूकदास जी के घर गाँव से १२ कोस है। मलूकदास एक बनिया के नौकर थे। कम्बल बेंचने जाते, राजापुर में यमुना नहाते, संकटमोचन हनुमान जी के दर्शन करते और गोस्वामी जी की रामायण सुनते थे।

४. घटरामायण :– गोस्वामी तुलसीदास के जन्मस्थान के प्रसंग में हाथरस के सन्त तुलसी साहिब (संवत् १८२०–१९००) का कथन विशेष रूप से दृष्टव्य है। क्योंकि जब वह यह कहते हैं कि मैं पिछले जन्म में राजापुर (चित्रकूट) में पैदा हुआ था, तब उन्होंने इस बात का विशेष प्रयास किया होगा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि वह अपने काव्य 'घटरामायण' में गोस्वामी तुलसीदास जी का यथा सम्भव प्रामाणिक जीवन-वृत्त प्रस्तुत करें क्योंकि उस जीवन वृत्त के असत्य सिद्ध होने पर उनका अपने पूर्व जन्म में तुलसीदास के रूप में उत्पन्न होने का वृत्त कल्पित और असत्य सिद्ध होता और उन्हें अविश्वसनीय माना जाता। इसके अतिरिक्त उनके जन्म स्थान हाथरस से सोरों (एटा) तथा राजापुर (गोंडा) अत्यन्त निकट हैं और राजापुर (चित्रकूट) अत्यन्त दूर है। अगर सोरों (एटा) नथा राजापुर (गोंडा) में तुलसी जन्मस्थान होता तो वह राजापुर (चित्रकूट) को तुलसी जन्मभूमि क्यों लिखते ? वस्तुतः उस समय गोस्वामी तुलसीदासजी के जन्मस्थान के सम्बन्ध में कोई विवाद ही नहीं था। सोरों विवाद तो लाला सीताराम के सन् १९०८ ई० (सवंत् १९६५ वि०) में प्रकाशित सोरों विषयक लेख और राजापुर (गोंडा) विवाद तो सन् १९६८ ई० से प्रारम्भ हुआ है। अतः जब वह 'घटरामायण' की निम्नांकित पंक्तियों में राजापुर (चित्रकूट) को गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्मस्थान बतलाते हैं, तब सोरों (एटा) राजापुर (गोंडा) आदि के जन्म स्थान विवाद स्वतः तथ्यहीन, निराधार, मनगढ़न्त, कपोल कल्पित और दुराग्रहपूर्ण सिद्ध हो जाते हैं –

"अब मैं अपनी आदि बताऊँ। अपनी बिथा आदि गति गाऊँ ।।
जग व्योहार जगत जग राही। तब उपजा विधि कहा बुझाई ।।
राजापुर जमुना के तीरा। जहँ तुलसी का भया सरीरा ।।
विधि बुन्देलखण्ड वोहि देसा। चित्रकोट बीच दस कोसा ।।"

–घटरामायण, भाग २ पृष्ठ १८६

५. लक्ष्मणदास :– यह राजापुर (चित्रकूट) के १८वीं शती के प्रसिद्ध भक्त कवि छीतूदास के शिष्य थे। राजापुर में छीतूदास के नाम से एक धर्मशाला थी, जहाँ आगन्तुक साधु सन्तों के भोजन विश्राम की व्यवस्था लक्ष्मणदास की देख-रेख में की जाती थी। लक्ष्मणदास एक अच्छे भक्तकवि थे। राजापुर के सम्बन्ध में उनकी निम्नांकित रचना बहु चर्चित है –

यमुना किनारे मंजु मंडी है राजापुर,
सन्त गुणवन्त रहैं भूमि है सदाई की ।
जाके क्षेत्र माहीं अनेक नामी होत आये हैं,
महावीर स्वामी बात राखैं यह ठांई की ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऐ हो, रघुनाथदास, लछमनदास साँची कहैं,
यहाँ न चलै, चुगुल चोर चाँईं की ।
सूधो सत्संग करौ नहिन मान भंग होय,
राजापुर बस्ती यह पुरी है गोसाईं की ।।

६. मंगलदीन उपाध्याय :- यह सम्राट अकबर प्रदत्त तुलसी की माफी के माफीदार तथा राजापुर के १८वीं शदी के अच्छे कवि थे । इन्होंने भक्तिपूर्ण तथा श्रृंगारिक दोनों प्रकार की रचनायें की थीं । तत्कालीन प्रथा के अनुसार इन्होंने 'नायिका भेद' तथा 'ऋतु-पचासा' नामक ग्रन्थों की भी रचना की है । 'ऋतु पचासा' के एक पद में कवि आत्म-परिचय देते हैं -

श्री गोस्वामी तुलसीदास विदित जग,
राम-जस सानी काव्य रुचिर बनायो है ।।
मानत प्रमाण सब पंडित चतुर नर,
प्रभुता अनेक देश देशन में छायो है ।।
ताके शिष्य वंश में जनम मेरो भयो,
मंगल प्रसाद नाम परम सोहायो है ।।
बाँदा जिले में ग्राम राजापुर जान लीजै,
आँनन्द-मगन तहाँ हरि गुन गायो है ।।

७. गणेश प्रसाद :- गणेश प्रसाद का जन्म राजापुर (चित्रकूट) के एक सम्पन्न स्वर्णकार परिवार में हुआ था । यह राम भक्त तथा भक्तानुरागी थे और प्रतिदिन तुलसी द्वारा राजापुर में स्थापित संकटमोचन हनुमानजी का दर्शन करते थे । वर्ष में कुछ दिनों यह चित्रकूट में भी निवास करते थे । यह एक अच्छे कवि थे । 'चित्रकूट महात्म' तथा 'ऋतु पचासा' इनकी प्रकाशित रचनायें हैं । जिनका प्रकाशन १९५९ विक्रमी में हुआ था । इन प्रकाशित रचनाओं के अतिरिक्त इनकी अनेक अप्रकाशित रचनायें भी उपलब्ध हैं ।

''चित्रकूट महात्म'' में राजापुर वर्णन दृष्टव्य है -
बाँदा जिले में ग्राम राजापुर जाहिरात,
संकट हरन तहाँ आसुग कुमार हैं ।
धाम सिरी तुलसी गोसाईं की पुरी है दिव्य,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मञ्जन को जमुना समीप बहै धार है ।
तीरथ मुकाम चित्रकूट हुँ को फाटक है,
तहाँ संत साधुन की महिमा अपार है ।

८. बल्देवदास :- बल्देवदास जी का जन्म राजापुर (चित्रकूट) के सन्निकट खटवारा (कायस्थवाहा) ग्राम में आश्विन शुक्ल ४ सम्वत् १९०८ वि० (१८५१ ई०) में हुआ था । ये आशुकवि थे । "कायस्थ वंशावली' के अतिरिक्त वर्ण रामायण, अनुभव रामायण, भागवत, हनुमत हाँक, राजापुर महात्म इनकी प्रकाशित तथा अन्य अप्रकाशित चालीस रचनायें हैं जो सभी सरस और भक्ति प्रधान हैं ।

बल्देवदास कृत 'कानूनगो कायस्थ वंशावली' के अनुसार गोस्वामी तुलसीदास जी के समय में कायस्थवाडा (खटवारा) निवासी कायस्थकुल भूषण श्री श्याम सुन्दर दास जी सम्राट अकबर के कानूनगो तथा तुलसीदास जी के शिष्य थे –

"सुनहु वंश अब श्याम सुन्दर के, कानूनगो रहे अकबर के ।
रहे तासु गुरु तुलसीदासा, रामायण जिन्ह कीन्ह प्रकासा ।।"

कविवर बल्देवदासजी ने "राजापुर–महात्म" में लिखा है –

"राजापुर यमुना कगार अगार रह्यो,
वहि उत्तर के पार सोह रही ससुरारी है ।
प्यारी रत्नावली और पिता को नाम आत्माराम,
हुलसी तुलसी की महतारी है ।।"

तुलसीदास जी की जन्मभूमि की प्रशंसा करते हुए कविवर बल्देवदास ने लिखा है –

"धन्य दिवस लग्नघड़ी, धन्य ग्राम राजापुर ।
धन्य मातु हुलसी, जिन्ह तुलसी को जायो है ।।
लायो जिन्ह सुरपुर ते, रामयश–सुरसरिं को ।
रामचरित मानस कहँ जग में प्रगटायो है ।।"

× × × ×

"दास बलदेव सत्यदेव से न कीन्हें नेह,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काह नरलोक में मनुष्य देह पाये से ।
देखे जो न राजापुर तुलसी की जन्मभूमि,
काह और देश सबै भूमि घूमि आये से ।
रामकथा को जिनबिरचो,
तेहि अक्षर को नहिं देखन आवे ।
रामकथाकर्ता जन्म स्थल,
को न बिलोकन के हित धावे ।।''

९. बघेल वंशावतंस महाराजाधिराज रीवाँ नरेश रघुराज सिंह जूदेव ने श्री नाभादास जी विरचित 'भक्तमाल' की श्री प्रियादासजी कृत टीका का आधार स्वरूप सन्दर्भ देते हुये लिखा है –

''राजापुर जमुना के तीरा ।
तहाँ बसै तुलसी मति धीरा ।।
पंडित सकल शास्त्र विज्ञाता ।
विद्या में विश्वास अघाता ।।''

१०. सरयू प्रसाद शर्मा ने अपने 'तुलसीचरितामृत' में राजापुर (चित्रकूट) को तुलसीदास जी का जन्म स्थान माना है –

''रामायण के निर्माणक का भयो जन्म शुभ ठामा ।
अहै सुशोभित तटहिं भानुजा, राजापुर जेहि नामा ।।
बाँदा प्रान्तहिं मध्य जानिये, भूसुर सरयूपारी ।
पाराशर गोत्रीय द्विवेदी, विप्र श्रेष्ठ अतिभारी ।।
आत्माराम पिता को नामा, माता नाम हुलसी ।
जिनकी कुक्षी से पैदा भें, नर पुंगव गुण रासी ।।''

११. महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने भी अपनो कृति 'तुलसीदास' में गोस्वामी तुलसीदासजी की जन्म भूमि राजापुर (चित्रकूट) का स्पष्ट उल्लेख किया है –

''नीली उस यमुना के तट पर,
राजापुर का नागरिक मुखर ।
सोचा कवि ने मानस तरंग,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह भारत संस्कृति पर सभंग ।।

× × × ×

इस अनिल वाह के पार प्रखर
किरणों का वह ज्योतिर्मय घर ।।"

१२. "तुलसी स्मृति सन्दर्भ" :- विद्वद् वरेण्य स्वामी रामानन्द सरस्वती ने अपनी सुप्रसिद्ध कृति 'तुलसी स्मृति सन्दर्भ' में राजापुर (चित्रकूट) को गोस्वामी तुलसीदास जी की पावन जन्मस्थली माना है –

इत्थं चादिकविस्तु वेद शर वाणेन्दौ शके वैक्रमे,
जातः श्री हुलसी सुतश्च तुलसीदासोऽत्र राजापुरे ।
कालिन्द्यास्तटगे सुविप्रकुलजो मासे शुभे श्रावणे ।,
सप्तम्यां सित पक्षके च मकरे लग्ने गुरौ सप्तमे ।।८।।

–'तुलसी स्मृति सन्दर्भः' पृष्ठ ३

(इस प्रकार आदिकवि (बाल्मीकि जी) वैक्रम संवत् १५५४ में श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन यमुना जी के तट पर स्थित राजापुर ग्राम में उत्तम ब्राह्मण कुल में माता हुलसी के गर्भ से उत्पन्न हुए। इनका जन्म मकर लग्न में सप्तम स्थान (कर्क राशि) में गुरु सायंकाल में हुआ था।)

१३. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुज कविवर सियारामशरण गुप्त ने भी राजापुर (चित्रकूट) को तुलसी जन्मभूमि माना है–

"बैठ एक निर्जन कुटीर में कालिन्दी के तट पर,
भक्ति तत्व लिख गये असंख्यक मनुजों के हृत्पट पर ।
हे निस्पृह, निज मातृभूमि का प्रेम तुम्हें भी भाया,
अपने छोटे से उसपुर को राजापुर कहलाया ।।"

१४. डॉ० प्रतीक मिश्र के अनुसार –

"जिसने जगाया जनमानस में राम को है,
वह कवि धन्य, धन्य कवि जन्मधाम है ।
राम को प्रणाम, रामभक्त को प्रणाम,
रामभक्त जन्म भूमि राजापुर को प्रणाम है ।।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१५. "रत्नावली" खण्डकाव्य – महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला' के प्रिय शिष्य पंडित जयगोपाल मिश्र फतेहपुरी ने अपने खण्डकाव्य 'रत्नावली' में राजापुर महात्म का वर्णन करते हुए कहा है –

"जमुना के कगार के ऊपर,
नैसर्गिक वसुधा है भूपर ।
अकर्मण्य सहसा तर जाता,
जिस धरती की मिट्टी छूकर ।।"

– रत्नावली खण्डकाव्य – पृष्ठ ७५

"पूत राजापुर का, बिटिया महेवा घाट की ।
विश्व की थाती बने, बस राम ही पतवार थी ।।"

– रत्नावली खण्डकाव्य – जयगोपाल मिश्र फतेहपुरी, पृष्ठ ३४

१६. "एक रात तुलसी की : एक बात रत्ना की" –

खण्डकाव्य के रचयिता श्री गोविन्द प्रकाश श्रीवास्तव जी के अनुसार –

"यमुना के तट पर बसी हुई,
राजापुर नगरी पुण्यधाम ।
जन्मे थे कभी वहीं तुलसी,
मुख से निकला शुभ राम-राम ।।"

हुलसी की पावन कोख धन्य,
प्रकटा था आत्माराम पुण्य ।
सुत मिला "रामबोला" अनुपम,
पर विधि-विधान कुछ और अन्य ।।"

–'एक रात तुलसी की : एक बात रत्ना की", पृष्ठ ७

१७. "तुलसी" प्रबन्धकाव्य के रचयिता लखनऊ के प्रसिद्ध कवि दयानन्द जड़िया 'अबोध' के अनुसार –

"सम्बत पन्द्रह सौ रहा, चौवन अति सुख सार ।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी जन्म उदार ।।
तुलसी जन्म उदार, आत्माराम पिताश्री ।
माता हुलसी देवि, बनी कवि की माता श्री ।।
राजापुर शुचि ग्राम, जिला बाँदा अति उन्नत ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युग-युग रहे 'अबोध' याद आता यह सम्बत् ।।२।।''

तुलसी -प्रबन्धकाव्य, पृष्ठ ९

१८. "हुलसी पुत्र तुलसी" रचयिता ललितेश मिश्र के अनुसार- 'परिचय' शीर्षक में -

''राजापुर ग्राम जन्म भूमि को पवित्र करि-'हुलसी' की कोख बीच जन्म लियो तुलसी ।।

मानस से मानस की कीरति सुनाइबो को - भारत की भूमि बीच जन्म लियो तुलसी ।।

-"हुलसी पुत्र तुलसी" -पृष्ठ ९

१९. पाश्चात्य लेखक एडम्योर जे० बेबीन्यू के अनुसार-

"According to a popular tradition, Tulsīdad was born at Rājāpur in the Bāndā district.......

Popular tradition again holds that Tulsīdas was a Dube of the pārāsara gotra of the sarayū pārīna Brāhamans According to the Bhakt – Sindhu, a modern poem, his father, Ātmā Rām Dube is said to have been the headman of a village on the Jamuna river in the Banda district. The poem adds that his mother's name was Hulsī."

–"Love of God and social duty in the Ram Charit Manas."
–Edmour J. Babineau, Page 14-15.

(एक प्रसिद्ध परम्परानुसार तुलसीदास बाँदा जिले के राजापुर में पैदा हुये थे ।.......

अन्य प्रसिद्ध परम्परानुसार तुलसीदास पराशर गोत्र के सरयूपारी दुबे ब्राह्मण थे । 'भक्त-सिन्धु'- एक आधुनिक कविता के अनुसार उनके पिता आत्माराम दुबे बाँदा जिले के यमुना नदी तटीय राजापुर के प्रमुख व्यक्ति कहे जाते थे । उनकी माता का नाम हुलसी था ।)

२०. 'गोस्वामी तुलसीदास जी (जीवनी)' के सुप्रसिद्ध लेखक आर० एस० पंखानिया के अनुसार -

"In the district of Banda near Prayag on the Northern Indian state of Uttar Pradesh, there is a village name of Rajapur, which is situated on the bank of the sacred

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

River Yamuna, Rajapur occupies the place in history as the birth place of this great saint,..................According to some old literature, the original name for Rajapur was Vikrampur."

- "Goswami Tulsidas" (A biography)-
Rohit S. Pankhania, Page 12

(उत्तरी भारत के राज्य उत्तर प्रदेश में प्रयाग के पास बाँदा जिले में राजापुर नाम का एक गाँव पवित्र यमुना के किनारे स्थित है। राजापुर इतिहास में महान सन्त (तुलसीदास जी) की जन्मभूमि जाना जाता है।....... कुछ प्राचीन साहित्य के अनुसार राजापुर का प्रारम्भिक नाम विक्रमपुर था।)

२१. "शिवसिंह सरोज" के लेखक शिव सिंह सेंगर[१] (उन्नाव निवासी) और मिश्र बन्धुओं[२] का मत है कि तुलसीदास जी का जन्म बाँदा जिले के राजापुर नामक ग्राम में हुआ था, यह सरबरिया ब्राह्मण थे।

२२. रांगेय राघव रचित उपन्यास "रत्ना की बात" और सुप्रसिद्ध उपन्यासकार अमृत लाल नागर के सुप्रसिद्ध उपन्यास "मानस का हंस" में राजापुर (तत्कालीन नाम विक्रमपुर) को ही तुलसी जन्म भूमि माना है। "मानस का हंस" का उद्धरण देखिये -

"कहाँ से पधारना हुआ महाराज ?"

"कई वर्षों से तीर्थाटन पर था भाई। पहले काशी में रहा और इस समय सोरों से आ रहा हूँ। बीच में अयोध्या - सूकर खेत आदि के भी दर्शन किए।"

"चित्रकूट जाने के लिए इधर आना हुआ है ?"

"हाँ, चित्रकूट के दर्शन का प्रलोभन तो है ही, पर विशेषरूप से मैं अपनी जन्मभूमि के दर्शन करने आया हूँ।"

"आपकी जन्मभूमि कहाँ है महराज ?"

"यहीं, विक्रमपुर गाँव में।"

राजा भगत चलते-चलते थम गए और चकित दृष्टि से देखकर कहा- "यहाँ ?"

---

१. "शिव सिंह सरोज" शिव सिंह सेंगर, पृष्ठ ७०९
२. "मिश्र बन्धु - विनोद" मिश्र बन्धु, - पृष्ठ १७४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हाँ भाई, पर जन्मते ही यह स्थान मुझसे छूट गया था।"

"आपके पिता का क्या नाम था ?"

"पंडित आत्माराम।"

"अरे तो आप ही हैं जो मूल नक्षत्र में जन्मे रहे ?"

"आपने ठीक पहचाना।"

"..........पुराना विक्रमपुर गाँव तो हमारे-तुम्हारे जलम के बखत ही उजड़ गया था।......"

× × × ×

"मेरा नाम तुलसी है, पर गाँव का नाम राजापुर होगा। तुम इस गाँव की आत्मा के रूप में ही मुझे मिले हो।"

-"मानस का हंस"-अनुच्छेद २१ पृष्ठ १८६

२३. राम गोपाल भावुक के मध्य प्रदेश तुलसी अकादेमी प्रकाशन "रत्नावली" उपन्यास में तुलसी पत्नी रत्नावली के सन्दर्भ में निम्नांकित उल्लेख भी दृष्टव्य है -

"राजापुर गाँव यमुना किनारे पर बसा है और रत्नावली का घर यमुना के किनारे पर। घर का मुँह यमुना की तरफ खुलता है। घर से निकलते ही दिखता है यमुना का प्रवाह।"

-"रत्नावली" -अनुच्छेद-ग्यारह, पृष्ठ ४५

२४. आचार्य सोहन लाल रामरंग का सुप्रसिद्ध उपन्यास "युग पुरुष तुलसी" भी इस सन्दर्भ में दृष्टव्य है -

"तुलसी के मन में बहुत आया कि पहले काशी चलूँ। फिर आयोध्या चलूँ। अब राजापुर में कौन होगा ? कौन पहचानेगा ? कौन मिलेगा ? कैसे मिलेगा ? किन्तु इन समस्त अनुत्तरित प्रश्नों का उत्तर दिया राजापुर की ओर अनायास बढ़ते हुए उन चरणों ने जिन्हें जन्मभूमि की अनदेखी प्रीति प्रसवनी गुहार करती हुई, मनुहार करती हुई, टेर-टेर कर अपने अंक में दुलारने को बुला रही थी।"

-"युग पुरुष तुलसी"-प्रथम खण्ड, अनुच्छेद १, पृष्ठ १३

"..........माता जन्म देकर चली गई। पिता, सुना वे भी पठानों के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आक्रमण में समाप्त हो गये । कोई माता–पिता का परिचित भी बचा कि नहीं ?" इसी उहापोह में धीरे–धीरे राजापुर आ ही गया । ......वे धीरे–धीरे राजापुर में प्रविष्ट होकर यमुना तट पर आ पहुँचे । यमुना का दर्शन होते ही उन्होंने साष्टांग दण्डवत् की । प्रणाम करने पर जो रज अंगों पर लगी, वह उन्हें एक दिव्य अंगराग लगी । यमुना का कल–कल निनाद करता हुआ जल माता की छाती का छलकता हुआ दूध ही लगा ।"

"–युग पुरुष तुलसी" प्रथम खण्ड अनुच्छेद १ पृष्ठ १४

"श्रीमन् ! क्या आपका जन्म राजापुर में हुआ ?"
तुलसीदास ने सहज भाव से कह दिया, "जी महाराज ।"

–"युग पुरुष तुलसी" –द्वितीय खण्ड, अनुच्छेद ३७ पृष्ठ ६५२

२५. संत नारायणदास भक्तमाली विरचित नाटक "गोस्वामी तुलसीदास" में तुलसी जन्मभूमि राजापुर ही उल्लिखित है –

राजापुर की धरा धन्य, तब जन्मभूमि कहला करके ।
माँ हुलसी की कोख धन्य, तव जननी का पद पाकर के ।।

–"गोस्वामी तुलसीदास" (नाटक) पृष्ठ१६७

२६. पंडित कृष्ण कुमार मुखोपाध्याय कृत नाटक "तुलसीदास" भी इस सन्दर्भ में दृष्टव्य है –

"(बाँदा जिले के अन्तर्गत राजापुर गाँव में आत्माराम द्विवेदी की कुटिया । लड़का गोद में लिए हुये हुलसी, आत्माराम और लक्ष्मी)"

–"तुलसीदास" (नाटक) – प्रथम अंक, प्रथम दृश्य, पृष्ठ ११

२७. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल[१], डॉ० श्याम सुन्दर दास[२], डा० अयोध्या प्रसाद पाण्डेय[३], गोवर्द्धनदास त्रिपाठी[४] डॉ० विश्वम्भर दयाल अवस्थी[५] आदि विद्वान राजापुर (चित्रकूट) को ही तुलसी जन्मभूमि मानते हैं ।

---

१. "हिन्दी साहित्य का इतिहास"–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ १२८
२. "गोस्वामी तुलसीदास" –डॉ० श्याम सुन्दरदास, पृष्ठ २०
३. "राजापुर तुलसी कै गाथा"–डॉ० अयोध्या प्रसाद पाण्डेय, पृष्ठ २५, "तुलसी विमर्श"
४. "तुलसीदास और राजापुर" –श्री गोवर्द्धनदास त्रिपाठी, पृष्ठ ६८–६९
५. "रामचरित मानस में महाकाव्यत्व, भक्ति और दर्शन" –डॉ० विश्वम्भर दयाल अवस्थी डी० लिट् , पृष्ठ २८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२८. 'गोस्वामी तुलसीदास का जीवन चरित' रचयित्री रानी कमल कुँवरि देवजू (रियासत सरीला, जिला हमीरपुर) ने दोहे – चौपाईयों में रजित पुस्तक में राजापुर (बाँदा) को तुलसी जन्मस्थली बताया है।

उपरोक्त बाह्य साहित्यिक साक्ष्यों से सिद्ध होता है कि राजापुर (चित्रकूट) की पुण्य भूमि को ही यह गौरव प्राप्त है कि उसने अपनी 'मारव' माटी से विश्व का ऐसा अनुपम रत्न उत्पन्न किया जिसके दिव्य प्रकाश में सम्पूर्ण मानवता एवं मानव संस्कृति जगमगा उठी और धन्य हो गई।

ऐतिहासिक साक्ष्य

सम्राट अकबर प्रदत्त राजापुर हाट-घाट आदि की माफी :-

गोस्वामी तुलसीदास एक युग प्रवर्तक कवि थे, जिन्होंने अपनी ज्ञान गरिमा से अगणित नर-नारियों के सुख-शान्ति एवं अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त किया था। वह एक उच्चकोटि के संत थे, जिनके दर्शन आशीर्वाद हेतु सम्राट अकबर के दरबारी नरेश तक उनके पास आते रहते थे। सम्राट के दरबारी कवि अब्दुल रहीन खानखाना से तुलसी का मित्रवत् व्यवहार था, जिनके माध्यम से तुलसीदास जी का सम्राट से परिचय हो गया था। संत शिरोमणि कविवर गोस्वामी तुलसीदास जी की प्रसिद्धि से प्रभावित होकर सम्राट अकबर ने उन्हें आदरपूर्वक राजधानी आने को आमंत्रित किया और जब शहंशाह ने उन्हें अपना मनसबदार बनाकर सम्मान देने की इच्छा प्रकट की तब गोस्वामी तुलसीदास ने कहा-

"हम चाकर रघुबीर के पटौ लिखौ दरबार।
अब तुलसी का होयगो नर के मनसबदार।।"

एक बार पूर्वी प्रदेश की यमुना जलमार्ग यात्रा से सम्राट अकबर राजापुर पधार कर तुलसी के व्यक्तित्व – कृतित्व और धर्मचर्चा से प्रभावित होकर आवान माह की २५वीं तारीख सन् ३ इलाही[१] (सन् १५८५ई०) में तुलसीदास जी के नकारने पर भी ९६ बीघा जमीन, राजापुर घाट-हाट, कलारी (मद्यकर) सायर आदि की माफी प्रदान की थी, जिसका उपयोग उनके उत्तराधिकारी शिष्य वंशज आज भी किसी न किसी रूप में कर रहे हैं। सम्राट का माफीनामा इस

---

१. इलाही सन् सम्राट अकबर ने सन् १५८२ ई० में चलाया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकार था – "ठाकुरों की जमींदारी से ९६ बीघे जमींदारी बाजार में वणिकों से कर तथा यमुना नदी को विक्रमपुर घाट (राजापुर का तत्कालीन नाम विक्रमपुर) से पार करने वालों से कर वसूल करने का अधिकार संत शिरोमणि तथा उनके वंश–परम्परा को दिया जाता है।"

(सम्राट अकबर द्वारा प्रदत्त फरफान का फारसी से हिन्दी अनुवाद)

इसी ऐतिहासिक घटना का उल्लेख स्वामी रामानन्द सरस्वती ने 'तुलसी स्मृति सन्दर्भ' में इस प्रकार किया है –

आग्रा–नौपथगे यदा त्वकबरः सम्राट च राजापुरे,
नौकाया अवतीर्य तं परिचितं द्रष्टुं जगामान्तिकम्।
आघ्रायात्र सुपक्वमन्नमति सौरम्भेण युक्तं शुभं,
चास्वाद्यामृत तुल्यमद्भुतं ससन्तोषमाप्तो नृपः ।।१२४।।

इष्टं दातुमना यदाऽभवदयं नैच्छन्मुनिः किञ्चन,
ष्ठासीच्च तदा स नौस्थिति भुवंशिष्याय तस्याऽददात्।
बीघाषण्वति भुवो गणपतेर्वंशाय सम्राट ददौ,
गत्वाऽऽग्रां निजमात्मज स तु जहाँगीर समाज्ञापयत् ।।१२५।।

–'तुलसी स्मृति संदर्भः' –पृष्ठ ४३

(एक बार सम्राट अकबर आगरा से नाव मार्ग द्वारा जाते समय मार्ग में यमुना तटवर्ती राजापुर में नाव से उतरकर सुपरिचित महात्मा तुलसीदास जी का दर्शन करने के लिये उनके समीप गये, वहाँ सुन्दर पका हुआ अत्यन्त सुगन्धित अन्न (खिचड़ी) तथा अमृत तुल्य अपूर्व रसवाला अन्न खाकर अत्यन्त सन्तुष्ट हुये ।।१२४।।

अकबर ने अभीष्ट वस्तु देना चाहा पर तुलसीदास जी ने कुछ नहीं लेना चाहा। तब सम्राट ने जहाँ पर नाव ठहरी थी उस घाट के साथ ९६ बीघे भूमि तुलसीदास जी के शिष्य गणपति को दिया और आगरा जाकर गणपति के वंश को वह भूमि देने के लिये अपने पुत्र जहाँगीर को सूचित किया ।।१२५।।)

इस सम्बन्ध का राजपूत शैली में लगभग ४०० वर्ष पुराना ताम्रपत्र चित्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजापुर में 'मानस मंदिर के पुजारी के पास सुरक्षित है जिसमें सम्राट अकबर स्वयं राजापुर पधारकर महात्मा तुलसीदास जी के दर्शन लाभ प्राप्त कर रहे हैं। इस चित्र में सम्राट द्वारा तुलसीदास जी को माफी देते हुये दिखाया गया है।

(देखिये ताम्रपत्र चित्र - पृष्ठ ९०)

जाहिर है कि इस प्रकार घाट-हाट एवं कृषि भूमि किसी भी व्यक्ति को उसके मूल निवास या जन्म स्थान पर ही दी जाती है, ताकि वह और उसके उत्तराधिकारीउसकी उचित प्रबन्ध व्यवस्था कर समुचित लाभ उठा सकें।

संत तुलसीदास जी द्वारा इस मुआफी का उपयोग न करने तथा उनके कोई वंशज न होने से उसका उपयोग गोस्वामी जी के राजापुर निवासी प्रथम शिष्य श्री गनपतराम तथा उनके वंशजों ने किया। राजापुर निवासी प्रथम शिष्य श्री गनपतराम से लेकर उनकी ग्यारहवी पीढ़ी के वंशज 'तुलसी जन्मकुटीर' (तुलसी मन्दिर) और 'मानस मन्दिर' के वर्तमान पुजारियों के पास सम्राट अकबर का गोस्वामी तुलसीदासजी को दिया हुआ हाटघाट का उक्त माफीनामा तथा बाद के शासकों द्वारा उसको जारी रखने के फरमान, पट्टे, अदालती कार्यवाई के कागजात, उपलब्ध हैं। माफी की भूमि ९६ बीघे ६ विश्वा है, जो सन् १९१४ में राजापुर मझगवाँ के नक्शे में टूटी खत से प्रदर्शित है। इसी भूमि में तुलसीदासजी का मंदिर-तुलसी जन्मकुटीर ७४६ नम्बर के मकान के रूप में उर्दू में अंकित है। इसी मंदिर के स्थान पर पहले तुलसीदास जी का पैतृक कच्चा घर था, जहाँ तुलसीदासजी पैदा हुये थे।

तुलसी शिष्य परम्परा के माफीदारों को अंग्रेजी शासन में घाट की माफी पहिले मऊ तहसील से और बाद में जिला परिषद बाँदा से ६८४ रुपये वार्षिक सन् १९७२ ई० तक बराबर मिलती चली आई है। जिनकी रसीदें माफीदारों के पास उपलब्ध हैं। हाट की माफी वे स्वयं वसूल करते थे। अब घाट सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिकार में आ गया है। माफीदारों ने आपसी विवाद-विद्वेष के चलते आज तक कोई दावा नहीं प्रस्तुत किया है।

गोस्वामी तुलसीदासजी की राजापुर (चित्रकूट) की उक्त शिष्यवंशावली इस प्रकार है -

सूपाध्याय कुलो द्विजो गणपतिः कुष्ठी हि तत्रत्यकः ।।१२२।।
धूनी भस्म विलेपनेन तुलसीदासस्य नीरोगितां,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राप्तो भक्ति पुरस्सरं स विधिना दीक्षां च जग्रह वै ।
शिष्यः स प्रथमोऽभवद् गणपतिः सर्वाधिकारे मतः,
अस्थासीत् सह शिष्य भक्त-सुजनैः ससेवितोऽभूद्य ।।१२३।।

– "तुलसी स्मृति सन्दर्भः" – स्वामी रामानन्द सरस्वती

(वहाँ सुन्दर उपाध्याय कुल के ब्राह्मण गणपति नाम के थे, वे कुष्ठी कवि थे। वे श्री तुलसीदास जी की धूनी की भस्म लगाने से निरोग हो गये। अनन्तर गणपति उपाध्याय ने भक्तिपूर्वक विधिवत् दीक्षा ले लिया। वह श्री तुलसीदास के प्रथम शिष्य सब अधिकार में माने गये। इस प्रकार भक्त तथा शिष्य और सज्जनों से सेवित होते हुए तुलसीदास जी रहने लगे। १२२,१२३।।)

जातः पञ्चमराम नामक सुतौ या माधवात् तत्सुतौ,
जातो यो हनुमानयेन्दुरिति तौ ताभ्यां क्रमात् पुत्रकौ ।
आद्यात् भैरवदीन इन्दुतनयो लक्ष्मी प्रसादोऽभवत्,
जातौ भैरवदीनतस्तनय – विश्रामोऽथ तस्यात्मजः ।।१४८।।

मुन्नीलाल इत्यैह तस्य भगनीजो ब्रह्मदत्तोऽभवत्,
तद्दायेऽधिकृतश्च तस्य तनयो रामाश्रयः साम्प्रतम् ।
आसीच्चैवमथेन्दुराम तनयत् लक्ष्मीप्रसादात् पुन –
र्जातश्चात्र हि सूर्यदीन इति यश्चुक्कू प्रसाद स्ततः ।।१४९।।
अन्ये चापि तदीय शिष्य कुलजा दायाधिकारे मता –
स्तिष्ठन्तीह वहिश्च जन्म पुरतो रामावतारादयः ।
सूपाध्याय कुलस्य यो गणपतेरेवं क्रमः साम्प्रतं,
श्री राजापुर मध्यगे सुयमुना तीरेऽधुना शोभते ।।१५०।।

– "तुलसी स्मृति सन्दर्भः" – स्वामी रामानन्द सरस्वती

(माधवराम के पंचमराम नामक पुत्र हुए। उनके दो पुत्र – हनुमान और इन्द्र हुए, उनमें ज्येष्ठ हनुमान से भैरवदीन नामक पुत्र हुये, दूसरे इन्दु से लक्ष्मी प्रसाद हुये। भैरवदीन के विश्राम नामक पुत्र हुये, विश्राम के पुत्र मुन्नीलाल हुये। मुन्नीलाल के पालक पुत्र ब्रह्मदत्त (भानजे) अधिकारी हुये। ब्रह्मदत्त के पुत्र रामाश्रय इस समय वर्तमान हैं। इन्दुराम के पुत्र लक्ष्मी प्रसाद और लक्ष्मी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसाद से सूर्यदीन हुये और सूर्यदीन के चुक्कू प्रसाद हुये। इस प्रकार और भी रामावतार आदि राजापुर तथा बाहर विद्यमान हैं। यह मुख्य शिष्य गणपति के वंशज यमुना तटवर्ती राजापुर में सुशोभित हैं। (।।१४८, १४९, १५०।।)

तुलसी शिष्य वंशावली राजापुर, (चित्रकूट)

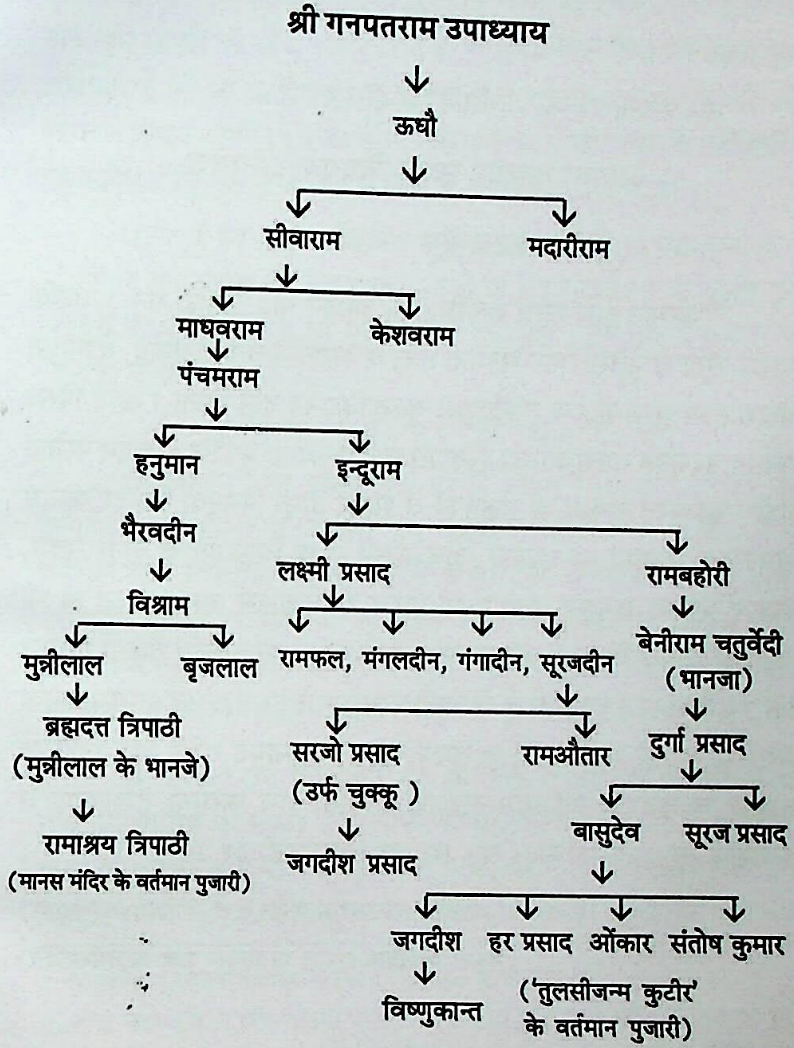

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिस प्रकार तुलसी की कीर्तिलता पल्लवित हुई वैसी उनकी वंश परम्परा न चली। तुलसी के शिष्य उत्तराधिकारी गनपत के समय तक इस माफी की वसूली समुचित रूप से होती रही, किन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात् राज्य के कर्मचारी तथा राजापुर के कुछ निवासी माफी की वसूली में बाधा डालकर स्वयं वसूली करने लगे। इस पर गनपत के पुत्र ऊधो ने तत्कालीन दिल्ली सम्राट के दरबार में स्वयं उपस्थित होकर उक्त अधिकारियों आदि के विरुद्ध एक प्रार्थना पत्र देकर न्याय की याचना की।

उस प्रार्थना पत्र की प्रतिलिपि निम्नलिखित है –

अकबर कालीन साक्ष्य विषयक दस्तावेज

(दुर्लभ साक्ष्य सं० १ देखें – पृष्ठ ९१)

"फरमान अज़ करार वतारीख २५ आवान माहे, इलाही सन् ३, आंकि साहबे सूबा व मुतसद्दियान महमात हाल व इस्तकबाल इलाहाबाद, बइनायत बादशाहाना मुस्तमाल व उम्मीदवार कुस्ताविदानन दनि विला। ऊधो पिसर गनपत बदरगाह वाला आमदा इस्तगास व दाद ख्वाही वूद कि हुक्काम परगना गहोरा बइल्लत ज़कात व मोहतर्फा व सायर अमूर ममनुवा कि दर जनीय मुमालिक महरुसा माफ अस्त, अज सकने मौजा विक्रमपुर व दीगर मुर्दम, सकना परगना मजकूर मुबलग मी गीरन्द व मुजाहिम अहवाल आं हां मी करोवद वा यदि कि व तहकीकत मामला वा रसीदा वर तक़दीर वकू न गुज़ारन कि हेच कश अज हुक्काम व अम्माल परगना मज़कूर बइल्लत अमूर मुमनुवा माराहिम आं हां सूदो तलब व तमय राहिसाबे नुमायद दरीन वाव निहायत ताकीद व कदगन आफियम लाजिम दानिस्ता अज फरमूबा तखल्लुफ व इनहेराफ नूरन्द तारीख सदर माह मजकूर सन् इलाही ३१।।"

(–ख्वाजा कादिर शुदा रसद्दुक जमीर बन्दे बादशाह आलमगीर)

(नकल मुताबिक असल मा कबूल शाह आलमखादिम)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह प्रार्थना पत्र अरबी लिपि में है, इसका हिन्दी अनुवाद निम्नलिखित है –

राजाज्ञा दिनांक २५ आवान माह सन् ३ इलाही[1] बनाम गत व वर्तमान पदाधिकारी सूबा इलाहाबाद, विदित हो कि जिन पर सम्राट की नेक निगाह हुई है, वह ऊधो पुत्र गनपत बादशाह के दरबार में उपस्थित हुआ और गुजारिश की कि माफी में प्रदत्त मोहतर्फा, सायर आदि कर जो सम्राट की ओर से माफ है, उनकी (माफी की) वसूली में परगना गहोरा[2] के अधिकारी व विक्रमपुर के लोग तथा परगने के अन्य कर्मचारी बाधा डालते हैं और धन वसूल करते हैं। अतः इस मामले की जाँच भाग्य पर न छोड़ी जाय। परगने के अधिकारियों व कर्मचारियों को जो बातें मना कर दी गई हैं वे उनका उल्लंघन न करें और लोभवश हिसाब न मांगें। इस बाबत आप जो मुनासिब समझें परगना के अधिकारियों को आदेश दें कि आपने जो आदेश किये हैं, वे उनकी उपेक्षा न करें।

सम्राट ने इस प्रार्थना पत्र पर समुचित जाँच कराने के पश्चात् माफी के परिपालन का आदेश कर दिया था। ऊधौ के पुत्र मदारीराम के समय पुनः गड़बड़ हुई और गुजारिश पर पुनः आदेश हुआ था। तब तक विक्रमपुर का नाम भी राजापुर हो गया था –

दुर्लभ साक्ष्य सं० २ (देखें पृष्ठ – ९३)

"आमिलान हाल इस्तकबाल परगनै गहोरा सिरकार कालींजर सूबे इलाहाबाद के कौमाइ पं० मदारी राम गोसाईं तुलसीदास जी के वंश में का मह़सूल साइर व तिहबाजारी वा कलारी वा गुजर श्री जमुना जी राजापुर अमलै पर बमूजब सनद बादशाही वा सूबेदारान वा राजा बुंदेलखण्ड कदीम मुकर्रर सिरकार मैं हाल है, सो हसब मुआयन के अमल सो मुजतहिम न हूजै हर साल नई सनद पा गयो। ता० २१ शाबान सन् १२।"

इस राजाज्ञा द्वारा इलाहाबाद सूबे के सरकार कालींजर के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को सम्राट प्रदत्त माफी की वसूली के अधिकारों में हस्तक्षेप न करने को आदेशित किया गया है। किन्तु कालान्तर में मुगल साम्राज्य के छिन्न-भिन्न होने तथा पन्ना के स्वतन्त्र राज्य घोषित होने पर भी तत्कालीन पन्ना नरेशों

---

१. इलाही सन् सम्राट अकबर ने सन् १५८२ ई० में चलाया था।

२. बाँदा जनपद के उत्तरी-पश्चिमी परगने को सिहोरा तथा पूर्वी-दक्षिणी भाग को गहोरा परगना कहा जाता था, जिसका उल्लेख यहाँ के राजस्व विभाग के अभिलेखों में मिलता है। बाँदा जनपद के विभाजन के पश्चात् अब गहोरा परगना चित्रकूट जनपद में आ गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने भी सम्राट अकबर प्रदत्त तुलसी की माफी को यथावत बनाये रखा, जैसा कि उनके द्वारा दिये गये आदेशों तथा सनदों से स्पष्ट है ।

वाणाङ्गाङ्ग विधौ हि वैक्रम शके प्रामाण्य पत्रं हि यत्,
पञ्चीकृत्य ददौ पुरा तु स जहाँगीरो मृतोऽभूद्यदा ।
भूम्यादौ च पुनः कुराज पुरुषा आदातु मैच्छँस्तदा,
पौत्रः शिष्य वरस्य यो गणपतेर्ज्येष्ठः शिवारामकः ।।१४४।।
राज्ञो हिन्दुपतेः सकाशमगमत् पन्ना विभागस्य सा,
प्राग्दत्ते विषये प्रमाप्य विधिना भूयो लिखित्वा नृपः ।
नेत्रेन्द्वष्ट विधौ हि वैक्रमशके षष्ट्यां च माघे सिते,
आज्ञापत्रमदात् ततः सपणका भूमिः सुलब्धांऽभवत् ।।१४५।।

–"तुलसी स्मृति सन्दर्भः" –स्वामी रामानन्द सरस्वती

(वैक्रम संवत् १६६५ (सन् १६०८ ई०) में जहाँगीर ने तुलसीदास जी के शिष्य वंश के अधिकार में भूमि, घाट, हाट की रजिस्ट्री करके सनद व कब्जा दिया । जहाँगीर के मरने पर दुष्ट राजकर्मचारियों ने भूमि छीनना चाहा । गणपति उपाध्याय के ज्येष्ठ पौत्र श्री शिवाराम उपाध्याय ने संवत् १८१२ विक्रमी माघ शुक्ल षष्ठी को पन्ना नरेश श्री हिन्दूपति से पुनः भूमि, घाट, हाट पर अधिकार करके प्रमाण पत्र प्राप्त किया ।।१४४–१४५।।)

बुन्देलखण्ड में महाराज छत्रसाल की मृत्यु के पश्चात् पन्ना राज्य में गृह–कलह प्रारम्भ हो गई थी । बुन्देलखण्ड के इतिहास में महाराज अमान सिंह तथा हिन्दूपति का काल गृहकलह का युग था, जिसका अनुचित लाभ उठाकर तत्कालीन राज्य कर्मचारियों ने तुलसी की माफी की वसूली में केवल बाधा ही नहीं डाली, अपितु उसे समाप्त करने की योजना भी बना डाली थी । राज्य कर्मचारियों की इस योजना से आहत माफीदार सीवाराम उपाध्याय ने तत्कालीन पन्ना नरेश से फरियाद की । उन्होंने सम्यक् जाँचोपरांत सनद जारी करने के आदेश दिये, किन्तु जांच पूर्ण न होने के कारण पन्ना नरेश के दीवान (मंत्री) हिन्दूपति ने जाँच पूरी होने की अवधि तक का पट्टा, माफीदार सीवाराम के हक में कर दिया था । जिसकी प्रतिलिपि निम्नलिखित है –

दुर्लभ साक्ष्य सं० ३ (देखें पृष्ठ - ९४)

"श्री महाराज मोमांर श्री दिवान हिन्दूपति जू देव येते पं० श्री सीवाराम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को पटौ कर दयौ। आगे के पटेपर हुकुम आपर मौजे विक्रमपुर, में जो कछु साविक दस्तूर पाइ आये होइ सो हमेसा पाऔ जाहु हुकुम हजूर माह सुदि ६ सुक्र संवतु १८१२ मुकामि मसौनी।"

माफीदार सीवाराम उपाध्याय के प्रार्थना पत्र पर जाँच पूरी होने पर अगले वर्ष स्वयं महाराज अमान सिंह जू देव ने माफी की सनद जारी की थी

दुर्लभ साक्ष्य सं० ४ (देखें पृष्ठ - ९५)

"श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा अमान सिंह जू देव येते पं० श्री उपाध्वा सीवाराम को सनधि कर दई जी आपर मौजे मझिगवाँ मैं कस्बा राजापुर बसतु है, सु आगै तैये उहां की राह रकम हाट फैट कौ पाई आऐ होइ सु पाऔ जाइ पुरानी सनधि वर हुकुम हाल कोऊ आमिलु मैमार जिमीदार मुजाहिम न होइ, हुकुम हजूर पौष सुदि १५ संवतु १८१३ मु० लुटवारौ।"

दिवान हिन्दूपति महाराजाधिराज महाराज अमान सिंह के भाई थे। वे बड़े महत्वाकांक्षी थे और पन्ना राज्य के स्वयं राजा बनना चाहते थे। अतः उनमें तथा महाराज अमान सिंह में पन्ना राज्य के लिये गृहयुद्ध छिड़ गया। महाराज अमान सिंह युद्ध में पराजित हुये और हिन्दूपति ने विजयी होकर पन्ना राज्य की बागडोर संभाली। महाराज हिन्दूपति जू देव ने अमान सिंह द्वारा दिये गये अनेक पूर्व-निर्णयों को नकार दिया था। ऐसी परिस्थिति में माफीदार सीवाराम ने यह उचित समझा कि वह अपनी राजापुर माफी की सनद जिसे पूर्व महाराजा अमान सिंह जू देव ने नवीनीकृत की थी, से तत्कालीन वर्तमान महाराजा हिन्दूपति जू देव से नवीनीकृत करा लें, जिससे बाद में राज्य कर्मचारी संकट न खड़े कर सकें। माफीदार सीवाराम अपने प्रयासों में सफल हुये और उनकी सनद को महाराज हिन्दूपति जू देव ने परना नामक स्थान में फागुन सुदी ३ सन् १८१३ विक्रमी में नवीनीकृत कर दी।

दुर्लभ साक्ष्य सं० ५ (देखें पृष्ठ - ९६)

"श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा हिन्दूपति जू देव येते पं० श्री उपाध्या सीवाराम को सनधि करि दइी पुरानी सनधि पर हुकुम आपर कसबा राजापुर मौ आगे ए उहाँ की राह रकम हाट फैट मै पाइ आए हौइ सो बहाल है हर हमेस पाऔ जाइ कोऊ आमिल मैमार जिमीदार मुजाहिम न होइ। हुकुम हुजूर फागुन सुदि ३ संवत् १८१३ मुकाम परना।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमान सिंह तथा हिन्दूपति जू देव का युग गृह–कलह तथा उथल–पुथल का युग था। सिंहासनासीन होने पर हिन्दूपति जू देव ने राज्य को सुदृढ़ किया तथा अनेक महलों तथा किले का निर्माण किया। उसी समय नई भूमि व्यवस्था नीति लागू करने के फलस्वरूप सम्वत् १८१३ वि० (सन् १७५६ में) विक्रमपुर का नाम परिवर्तित करके राजापुर कर दिया गया। वहाँ का नागरिक क्षेत्र राजापुर कहलाता है और कृषि–योग्य भूमि मँझगवाँ नाम से जानी जाती है। यह व्यवस्था आज भी लागू है।

उपरोक्त विशद् विश्लेषण से स्पष्ट है कि निहित स्वार्थी विकृत मानसिकता के दिग् भ्रमित तथाकथित कुछ विद्वानों ने अपनी विकृत मानसिकता की पूर्ति के लिए इसकी प्राचीनता पर जो प्रश्न चिन्ह लगायें हैं वे पूर्णतया भ्रामक और मिथ्या हैं। राजापुर की प्राचीनता के विरूद्ध उनके द्वारा प्रस्तुत तर्क बिल्कुल मनगढंत, निराधार और असत्य हैं तथा राजापुर को विश्व विश्रुत गोस्वामी तुलसीदास जी के विश्वमान्य जन्मभूमि के गौरव से वंचित करने की साजिश का निन्दनीय कुत्सित प्रयास है।

ह्रासोन्मुख माफी – बुन्देलों के पश्चात् इस प्रदेश में मरहठों का शासन हुआ और उनसे युद्ध करने के लिये समय–समय पर ब्रिटिश फौजें राजापुर होते हुये झाँसी, बाँदा, कर्वी आदि के क्षेत्रों में जाती थीं। राजापुर के माफीदार मरहठों के समर्थक थे। अस्तु वे ब्रिटिश फौजों को राजापुर घाट से यमुना पार करने में व्यवधान उपस्थित करते थे। ऐसी ही एक परिस्थिति ३१ जनवरी १८४६ ई० में उपस्थित हुई और माफीदारों ने अंग्रेजी फौज तथा उनका सामान राजापुर घाट से उतारने को मना कर दिया। माफीदारों के इस व्यवहार से एन० डब्ल्यू० पी० के रेजीमेन्ट कमिश्नर बड़े पशोपेश में पड़े। अन्त में रेजीमेन्ट कमिश्नर ने राजापुर घाट से दो मील पूर्व स्थित शाहपुर ग्राम के घाट से ब्रिटिश फौज तथा सामान को यमुना नदी पार कराने की व्यवस्था की, जिसकी पुष्टि रेजीमेन्ट कमिश्नर द्वारा मल्लाहों हो दिये गये प्रमाण पत्र से होती है। उस प्रमाण पत्र की प्रतिलिपि निम्नलिखित है –

दुर्लभ साक्ष्य सं० ६ (देखें पृष्ठ - ९७)

"Certified that on crossing the Jamuna I platfirmed and without delay boat were employed from the morning of 31st January till evening of 1st February incessantly and the

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

boatmen rendered every assitance in crossferying the baggage of the regiment."

Camp Shahpur
2nd Feb., 1846

(Sd) illegible
Regiment Commissioner
N.W.P.

(प्रमाणित किया जाता है कि यमुना पार करने के लिये मैंने प्लेटफार्म बनवाया और बिना विलम्ब किये ३१ जनवरी के प्रातःकाल से पहिली फरवरी के सायंकल तक लगातार नावों का प्रयोग किया गया और मल्लाहों ने रेजीमेन्ट के सामान को नदी पार कराने में हर प्रकार की मदद की ।)

कैम्प शाहपुर
२ फरवरी, १८४६

ह० (अपठित)
रेजीमेन्ट कमिश्नर,
एन०डब्ल्यू०पी०

जब शाहपुर घाट से ब्रिटिश रेजीमेन्ट के सामान को यमुना पार उतारने की सूचना राजापुर के माफीदारों को मिली, तब वे बड़े क्रुद्ध हुए और उन्होंने सामान उतारने वाले मल्लाहों को बहुत प्रताड़ित किया, क्योंकि उन्हें यह सह्य न था कि उनकी ही माफी की भूमि में निवास करने वाले मल्लाह उनके हितैषी मरहठों के शत्रु अंग्रेजों की रेजीमेन्ट के फौजी सामान को यमुना पार कराने में उनकी (अंग्रेजों की) मदद करें । मल्लाहों ने इलाहाबाद जाकर अपनी करुण कहानी इलाहाबाद के तत्कालीन कमिश्नर मि० लाउदर को सुनाई । कमिश्नर ने बाँदा के कलेक्टर को लिखा कि वह मल्लाहों की शिकायतों की जाँच कराकर उचित व्यवस्था सुनिश्चित करें । कलेक्टर बाँदा ने जाँच के पश्चात् शिकायतों को सही पाकर अपनी आख्या कमिश्नर को भेज दिया । कमिश्नर ने आदेश किया कि बाँदा के कलेक्टर राजापुर–घाट पर कब्जा करके घाट की वसूली की आय ब्राह्मण माफीदारों को दे दें । कमिश्नर ने अपने इस प्रस्ताव/आदेश को स्वीकृति हेतु लेफ्टिनेण्ट गवर्नर के पास आगरा भेज दिया । गवर्नर ने कमिश्नर के प्रस्ताव को स्वीकृत करके तदनुसार कार्यवाही हेतु कलेक्टर बाँदा को पत्र द्वारा सूचित कर दिया –

दुर्लभ साक्ष्य सं० ७ (देखें पृष्ठ – ९८)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

From :

J. Thormton Esquire
Secretary of Government in the
North Western Provinces

To,

R. Lowther Esquire
Commissioner of Allahabad Division
Dt. Agra, 2nd September, 1846

Sir,

In reply to your letter No. 56 dated the 17th ultimo I am directed to inform you that the Hon'ble Lieutenant Governor approves of your having instructed the magistrate of Banda to hold Ghat at Rajapore ferry Kham and authorizes the payment of the net collection to the Brahmin Mafidars monthly. The origional enclosures of your letter are returned, copies having been kept for the record.

I have the.......
H. J. Thormton
Secretary to Govt. N.W.P.

(अर्थात्- उत्तरी पश्चिमी प्रदेश के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर के सेक्रेट्री श्री जे० थार्मटन दिनांक २ सितम्बर १८४६ को कमिश्नर इलाहाबाद मि० आर० लाउदर को लिखते हैं कि ले० गवर्नर ने बाँदा के मजिस्ट्रेट को दिये गये आदेश को स्वीकृत करते हैं कि वे राजापुर घाट पर अधिकार करके उसकी वसूली की मासिक आय प्रतिमाह राजापुर के ब्राह्मण माफीदारों को भुगतान किया करें।)

यहाँ यह दृष्टव्य है कि प्रशासनिक दृष्टि से ही माफीदारों से घाट का अधिकार छीना गया था, क्योंकि उस अशान्ति काल में इलाहाबाद में राजापुर के यमुना घाट से बुन्दलेखण्ड क्षेत्र के युद्धों के लिये सैनिक तथा युद्ध सामग्री भेजी जाती थी माफीदार घाट की आमदनी के अतिरिक्त तहबाजारी, सायर की आमदनी, कलारी (मद्यकर) आदि की वसूली पूर्ववत् करते थे। माफीदारों ने घाट की वसूली में अपने अधिकारों के प्रति बड़े प्रयास किये थे, किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली और उन्हें राजापुर घाट की मासिक वसूली की आय से ही संतुष्ट होना पड़ा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १८५७ के विद्रोह से राजापुर भी अछूता न रहा। बाँदा जनपद में सर्वप्रथम विद्रोह की चिनगारी तहसील मुख्यालय मऊ में भड़की। इलाहाबाद की सेन्ट्रल जेल से फरार कुछ विद्रोही राजापुर होते हुये मऊ पहुँचे थे। राजापुर में माफीदार भी विद्रोहियों में सम्मिलित हो गये थे। मऊ पहुँचकर इन विद्रोहियों तथा माफीदारों ने मिलकर मऊ तहसील का खजाना लूट लिया और तहसीलदार को अपनी जान बचाकर भागना पड़ा। उसी समय रानी लक्ष्मीबाई ने झाँसी में विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को दबाने के लिये जब इलाहाबाद से ब्रिटिश सेना भेजी गई, तब माफीदारों ने राजापुर घाट से सेना यमुना पार करने में पुनः अड़चन डाली। माफीदारों के इस व्यवहार से ब्रिटिश अधिकारी बड़े असंतुष्ट थे अस्तु विद्रोह शान्त होने पर ब्रिटिश सरकार ने राजापुर घाट की आधी मासिक आय जुर्माना - स्वरूप जब्त कर ली। माफीदारों को अब घाट की मासिक आय का अर्द्धभाग ही मिलने लगा। माफीदारों ने इस शासनादेश पर आपत्ति की। तत्कालीन माफीदारान, बृजलाल, गंगादीन आदि ने गवर्नर को प्रार्थना पत्र दिया, बड़ी दौड़-धूप व वकीलों का भी सहारा लिया किन्तु परिणाम विपरीत ही रहा और उनका यह प्रार्थना पत्र २ अप्रैल सन् १८८० को गवर्नर के आदेश द्वारा निरस्त कर दिया गया। सम्बन्धित आदेश की प्रतिलिपि निम्नलिखित प्रकार से है-

(दुर्लभ साक्ष्य सं० ८)

(SEAL) Government of India
No. 971 of 1880
General Department of N. W. P. and Oudh.
Dated Camp., Lucknow, the 2nd April, 1880

OFFICE-MEMO

Read a petition from Brijlal, Gangadin and others of Rajapur, Pargana Chhibon, District Banda. Prayer for the payment of half of the..........preceeds of the ferry at Rajapur in Banda District.

............have..........commissioner. He informs that ....petition has been rejected.

Sd. (Il legible)
Junior Secretary to the Government
N.W.P. and Oudh.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस प्रकार अपने प्रयासों में असफल हो जाने के कारण माफीदारों को राजापुर घाट की मासिक आय के अर्द्धभाग से ही सन्तुष्ट होना पड़ा, क्योंकि इसके अतिरिक्त उनके पास कोई अन्य चारा भी न था, पर यह स्थिति भी बहुत दिनों तक न रही । माफीदारों को परिस्थितिवश और भी दबना पड़ा । उनमें आपस में भी फूट का बीजारोपण हो चुका था । सामूहिक वसूली के बटवारे में भी विवाद होते रहते थे । राज्य कर्मचारियों पर भी वे अधिक वसूली करने तथा कम वसूली दिखाने का आरोप लगाते रहते थे, जिससे राज्य कर्मचारी भी उनसे असन्तुष्ट थे इस प्रकार आरोपों तथा प्रत्यारोपों से तंग आकर तत्कालीन शासन से तीन वर्ष की मासिक वसूली का औसत निकाल कर उसका अर्द्धभाग ६८४ रुपये वार्षिक निश्चित कर दिया और यह आय उन्हें तहसील मऊ से, फिर कुछ दिनों बाद जिला परिषद बाँदा से मिलने लगी । जिला परिषद घाट के ठेके की नीलामी करके ठेकेदारों के माध्यम से वसूली करना प्रारम्भ किया । इस प्रक्रिया से राजापुर घाट से जिला परिषद की आय तो बढ़ गई किन्तु माफीदार ६८४ रुपये वार्षिक ही पाते रहे । उदाहरणार्थ १९०९ ई० के बाँदा गजेटियर के अनुसार राजापुर घाट की आय २६०० रुपये थी । बाद में घाट की नीलामी में ठेकेदारों में प्रतिद्वन्दता हो जाने पर घाट की आय २५-३० हजार रूपये वार्षिक होने लगी, लेकिन माफीदार ६८४ रुपये वार्षिक ही पाते रहे । जब से राजापुर घाट में पी० डबल्यू० डी० द्वारा पैन्टून ब्रिज का निर्माण करा दिया जाता है तथा वर्षा ऋतु में यमुना में स्टीमर की व्यवस्था कर दी गई है, जिसके फलस्वरुप पी० डब्ल्यू० डी० विभाग को लाखों रुपये की आमदनी होती है किन्तु विडम्बना यह है कि अब माफीदारों को पी० डब्ल्यू० डी० विभाग द्वारा कुछ भी नहीं मिलता है । जिला परिषद का यह कथन है कि अब घाट की वसूली उसके द्वारा नहीं होती है, अस्तु माफीदारों को वसूली के सम्बन्ध में ६८४ रु० वार्षिक देने का प्रश्न ही नहीं उठता । पी० डब्ल्यू० डी० विभाग का कहना है उनके साथ माफीदारों को कुछ भाग देने का अनुबन्ध ही नहीं हुआ है । अस्तु माफीदारों की घाट की वसूली में से कुछ भाग देने का सवाल ही नहीं । इस प्रकार राजापुर घाट की माफी एक प्रकार से समाप्त प्राय है । अब तो राजापुर में यमुना में पुल बन गया है ।

राजापुर घाट की माफी की क्रमिक समाप्ति की भाँति, जमींदारी विनाश एवं भूमि सुधार अधिनियम लागू होने के पश्चात् सायर की आमदनी भी समाप्त हो गई । शासन द्वारा शराब आदि का ठेका होने के कारण मद्यकर की वसूली भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समाप्त हो गई है। पहले जहाँ हाट (बाजार) लगती थी, जहाँ माफीदारों को वसूली का अधिकार था, वहाँ की बाजार भी टूट गई है और अब अन्यत्र बाजार लगती है, जहाँ टाउन एरिया तहबजारी वसूल करती है। इस प्रकार मुगलकाल में बुन्देलों के शासनकाल में तथा ब्रिटिश युग में सम्राट अकबर प्रदत्त माफी का उपयोग माफीदार करते रहे किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् यह सब समाप्त हो गया और माफीदारों को कुछ प्रतिकर भी नहीं प्राप्त हुआ। माफीदारों ने सन् १८५७ के विद्रोह में तथा उसके पूर्व भी अंग्रेजों से मुठभेंड की थी। उन्होंने अंग्रेजी फौजों को यमुना पार उतारने में अवरोध उत्पन्न किया और स्वयं १८५७ के विद्रोह में सक्रिय भाग लिया तथा तहसील मऊ के खजाने के लूटमार में भी सम्मिलित हुये, पर उसके बदले में उन्हें कुछ भी नहीं मिला और वर्तमान शासन में उनकी माफी भी बिना किसी प्रतिकर के समाप्त हो गई जो स्वयं में एक विडम्बना है।

⌘⌘⌘⌘

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

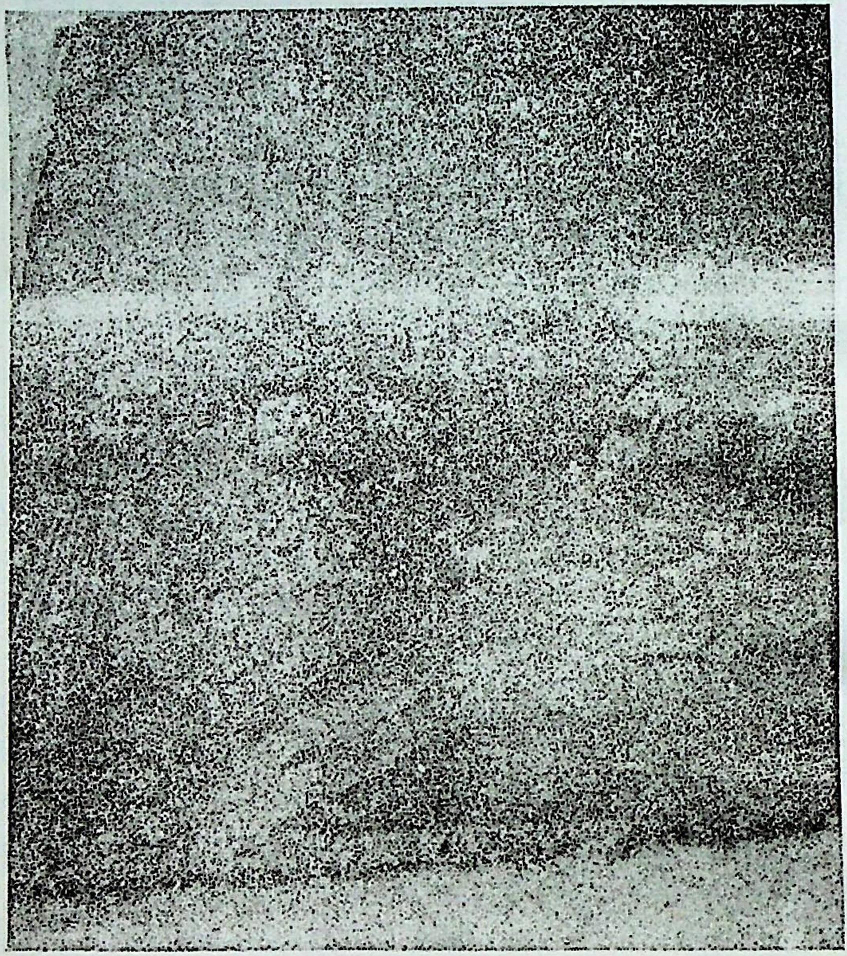

सम्राट अकबर स्वयं राजापुर (बाँदा) पधार कर महात्मा तुलसीदास जी के दर्शन लाभ प्राप्त कर रहे हैं। यह ताम्रपत्र लगभग ४०० वर्ष पुराना है और रामचरितमानस मन्दिर के पुजारी के पास उपलब्ध है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसी जन्म स्थली राजापुर (दुर्लभ साक्ष्य सं० १)

فرمان از قرار تاریخ ۱۵ ماه الهی سنه ۳ [illegible] لله صاحب صوبه

پادشاهیه مستقبل

ومتصدیان مهمات حال و استقبال اله آباد دیوانیات

بدرگاه والا امده

وامیدوار گشته براخ [illegible]

गनपत' पिसर झपो

المستغاثه وداد خواهی نمود که حکام پرگنه کهون بعلت کوه وجنگل محصور

از سکنه موقع [illegible] معاف است

وسایر امور ممنوعه که در جمیع ممالک محروسه [illegible]

ودیگر مردم سکنه پرگنه مذکور مبلغی میگیرند ومزاحم احوال انها میگردند لکن از حکام

بحقیقت [illegible] برتقدیر وقوع نگذارند که [illegible]

وعمال پرگنه مذکور بعلت امور ممنوعه مزاحم انها شوند وطلب وطمع

[illegible] نماید دراین باب نهایت تاکید وقدغن [illegible] لازم دانسته

امیر

از نوشته تخلف وانحراف نورزند تاریخ صدر [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसी जन्म स्थली राजापुर (दुर्लभ साक्ष्य सं० १) (पृष्ठ भाग)

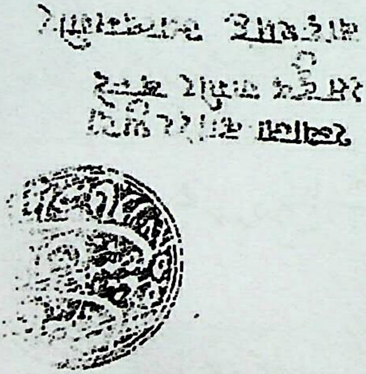

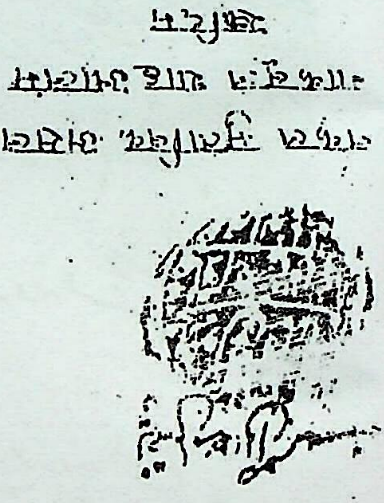

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसी जन्म स्थली राजापुर (दुर्लभ साक्ष्य सं० २)

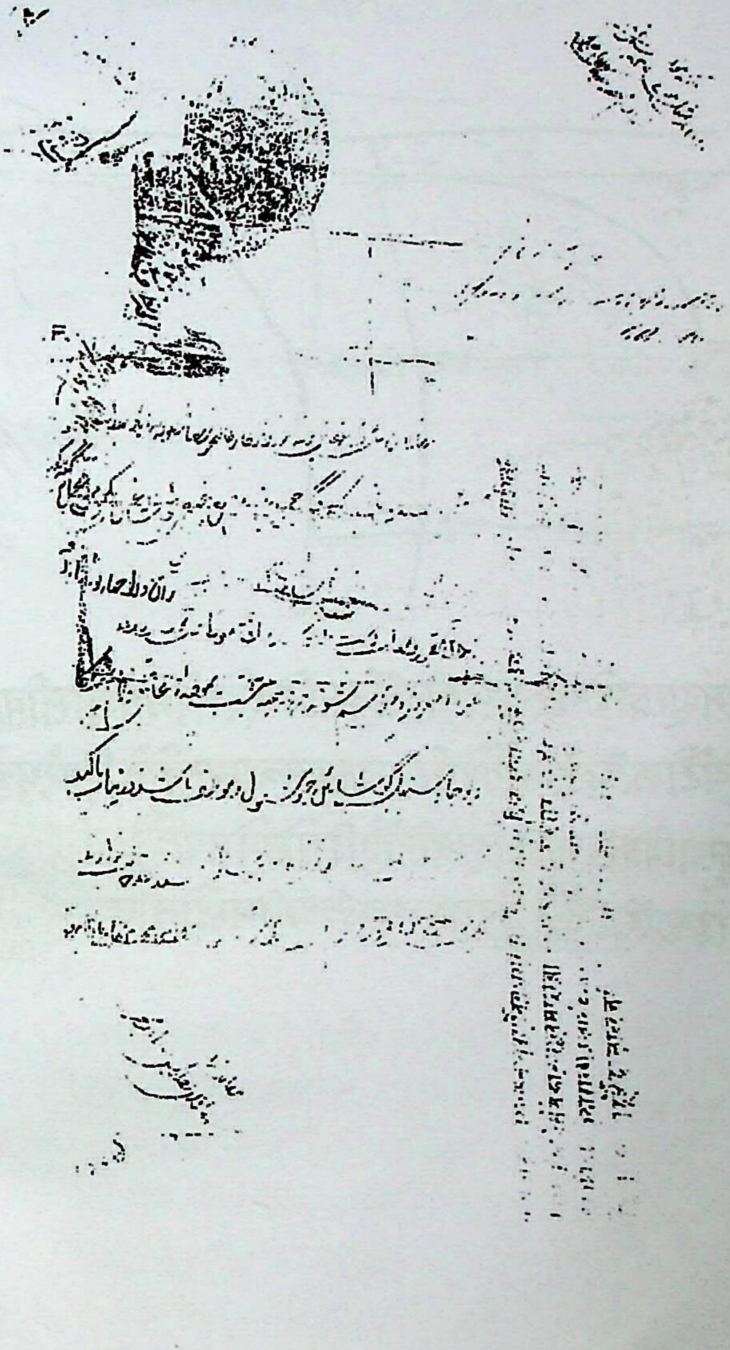

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसी जन्म स्थली राजापुर (दुर्लभ साक्ष्य सं० ३)

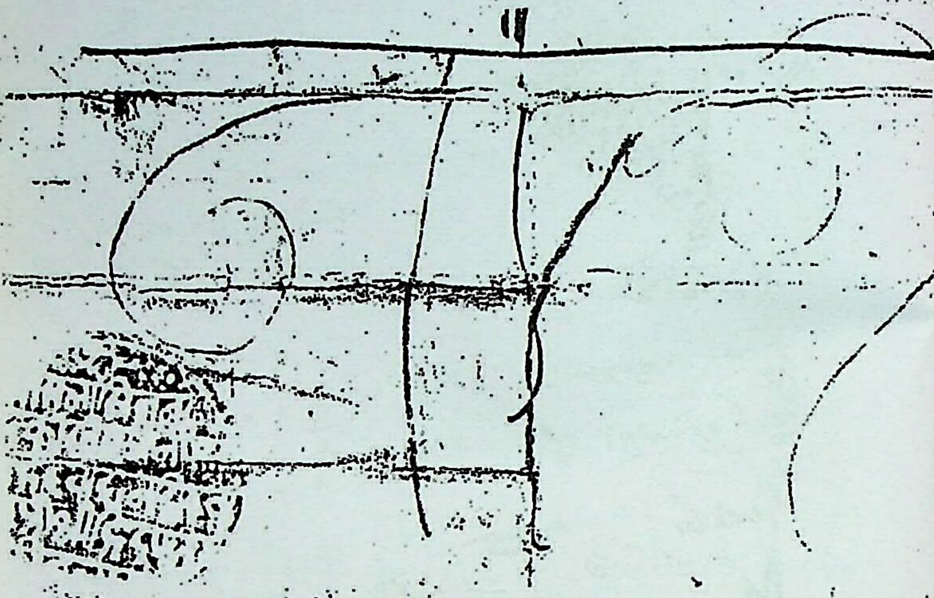

॥श्रीमहाराजसेमांरव्यादिआनहिंदूपतिजूदेवपेनेपंश्रीसीतारा
॥ओयेटोकरिदपीआगेउपरेवरहुकुमआपरसेजेविप्ररेपुतुमेंआ
॥कबूसाविउदलररवाइआपेहोइसोइमेसपार्वेजाउ
॥रमाइछदि [illegible] तुरुरुनउमांउमसोनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसी जन्म स्थली राजापुर (दुर्लभ साक्ष्य सं० ४)

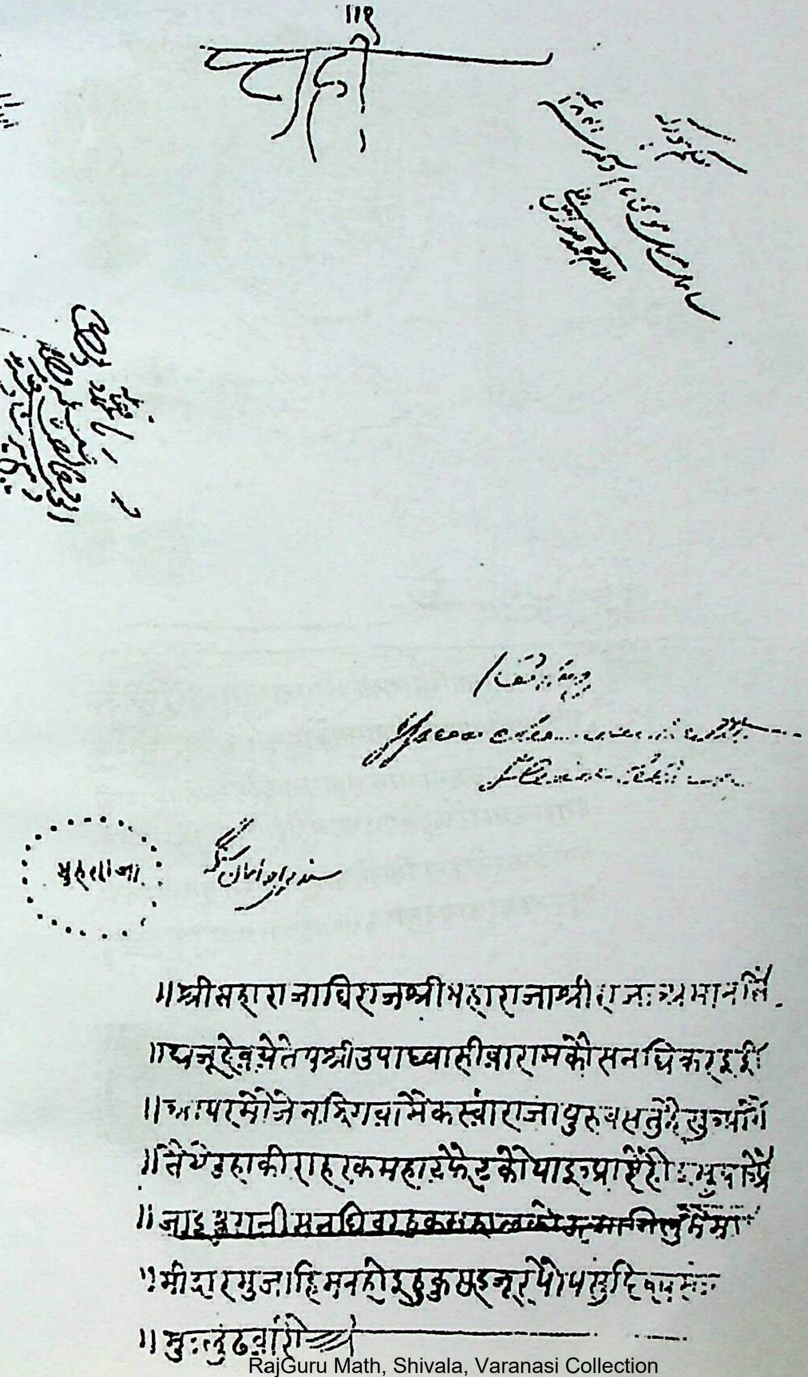

॥श्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा [illegible]
॥[illegible] देव ऐसे तपश्री उपाध्या हीराराम को सनद लिख दई
॥आपर मौजे [illegible] में कस्बा राजापुर बसतु है [illegible]
॥तिन्हें [illegible] की राह एक महाल फेर को पाइ [illegible]
॥जाइ [illegible]
॥[illegible] मनहो [illegible] पौष सुदि [illegible]
॥मुकाम [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसी जन्म स्थली राजापुर (दुर्लभ साक्ष्य सं० ५)

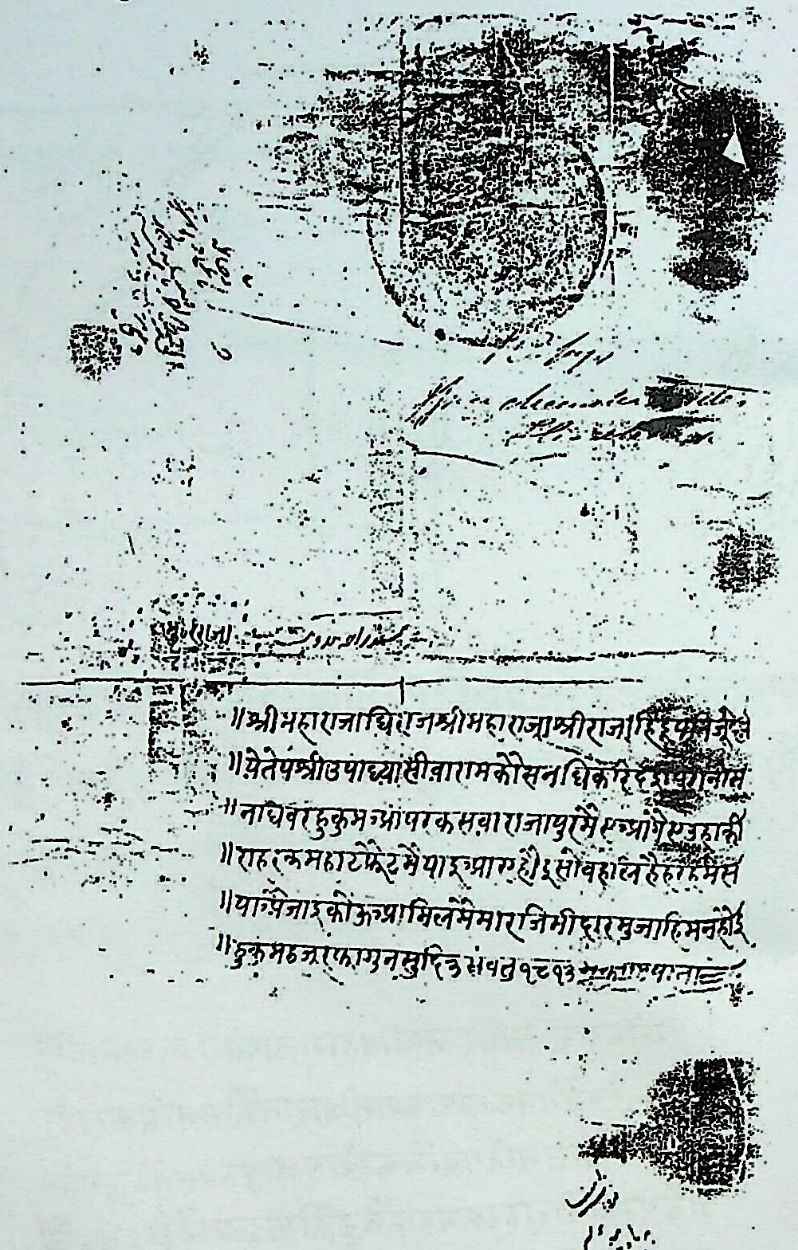

॥श्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाहिंदूपतजूदे
॥ऐतेपत्रश्रीउपाध्यासीतारामकोसनदिकरिदईराजापुरनास
॥नाघिवरहुकुमआपरकसवाराजापुरमेंएकआगेएउहाकी
॥राहरूमहाटफेरमेंपाइआगहीदसोवहालहैहममेस
॥यासेजाइकोउआमिलमेंमाराजिभीहारमुजाहिमनहोई
॥हुकुमकत्रफागुनसुदि संवत १८१३ [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसी जन्म स्थली राजापुर (दुर्लभ साक्ष्य सं० ५ का पृष्ठ भाग)

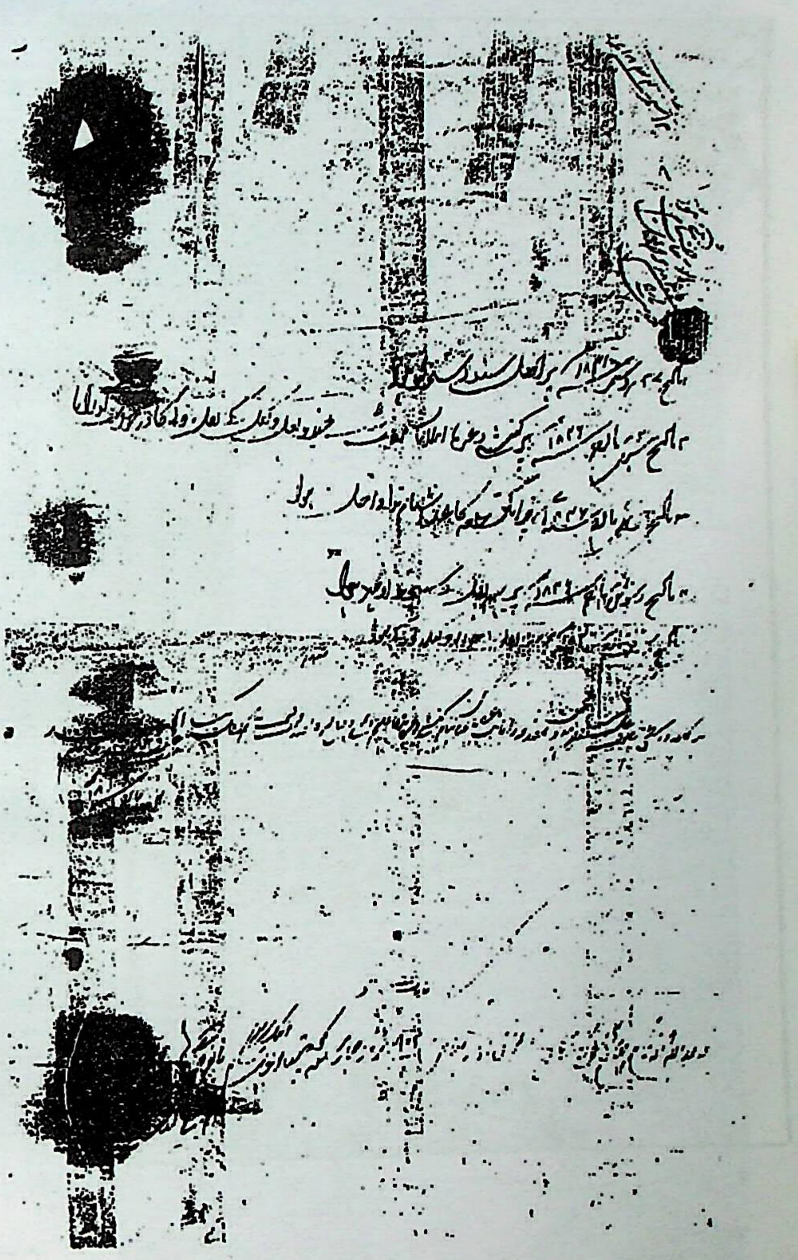

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

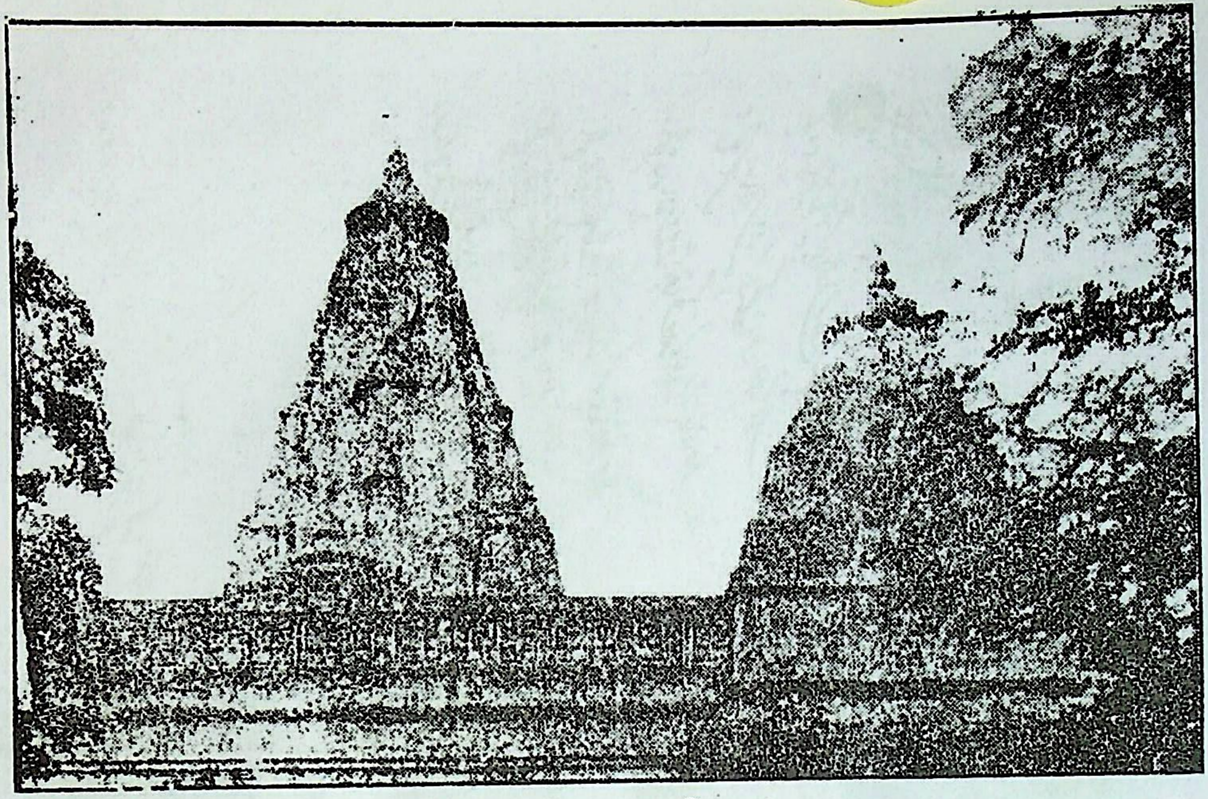

तुलसी स्मारक मंदिर राजापुर (चित्रकूट)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसी जन्म स्थली राजापुर (दुर्लभ साक्ष्य सं० ६)

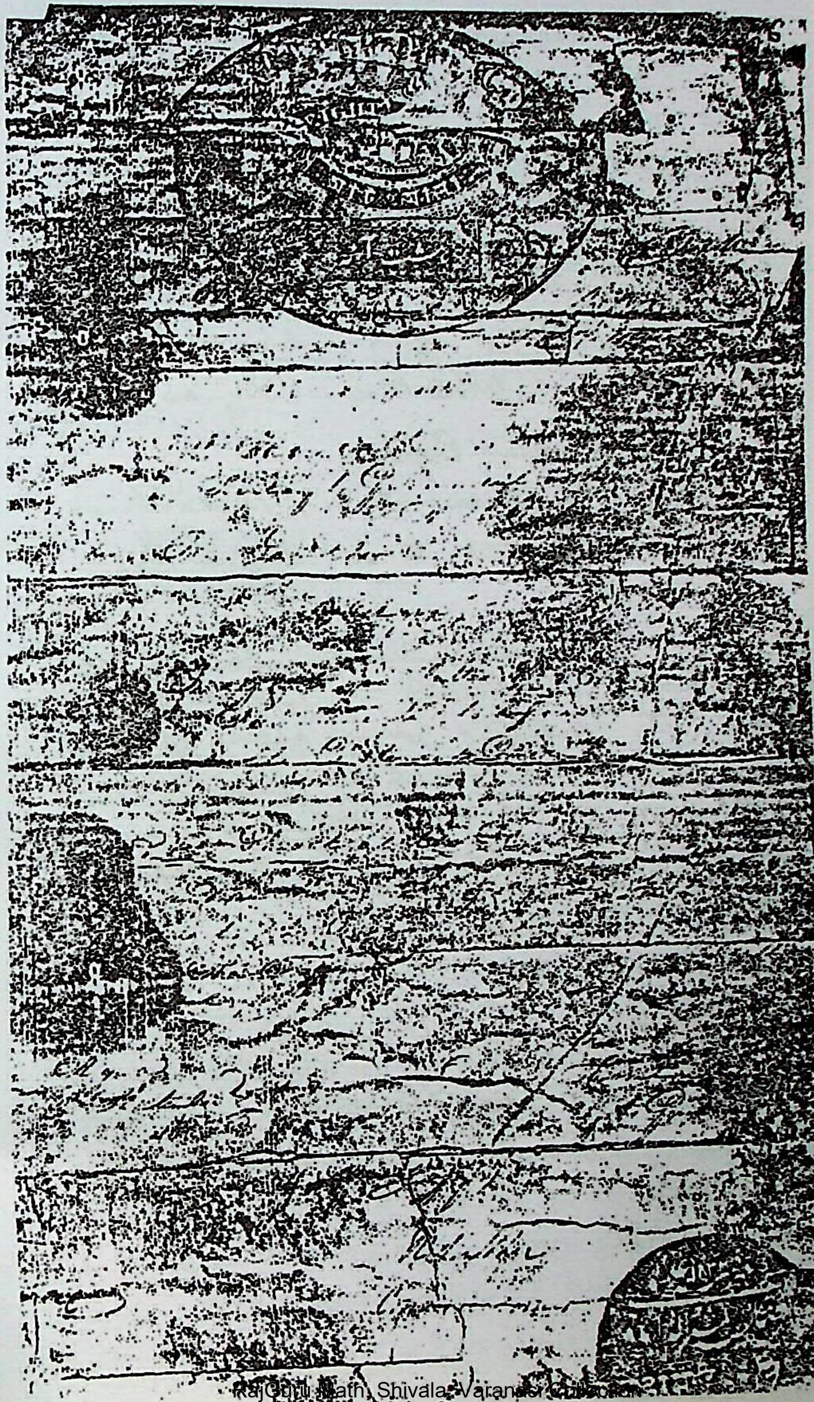

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसी जन्म स्थली राजापुर (दुर्लभ साक्ष्य सं० ७)

True Copy

[illegible]

[illegible]

J. Thomason Esquire
Secretary to Government of the
North Western Provinces

To
R. [illegible] Esquire
Commissioner of the Allahabad Division
Dated Agra the 2 September 1845.

[illegible]

Sir,

In reply to your letter No. 56 dated the [illegible] ultimo, I am directed to inform you, that the Hon'ble the Lieutenant Governor approves of your having instructed the Magistrate of Banda to hold the [illegible] Rajapore, [illegible] and to continue the payment of the [illegible] collections to the Brahmin Mafeedars monthly.

The original enclosures of your letter are returned. Copies having been kept for record.

I have the honor to be
[illegible] J. Thomason
Secretary to Government N.W.P.

Agra
The 2 September
1846.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रत्यक्ष साक्ष्य

(१) तुलसीदास जी ने राजापुर (बाँदा, अब चित्रकूट जनपद) में यमुना के दक्षिणी कगार पर स्थित जिस पैतृक घर में जन्म लिया था वह सन् १९०७-०८ ई० से परिवर्तित रूप में 'तुलसी जन्म कुटीर' (तुलसी मन्दिर) के नाम से विख्यात आज भी विद्यमान है, जिसके दर्शनार्थ देश-विदेश के पर्यटक आते रहते हैं और भव्य तुलसीघाट तथा यमुना की श्यामल अनुपम अवर्णनीय छटा में इसकी नैसर्गिक शोभा देखकर कृतकृत्य होते हैं। (देखिये चित्र १ पृष्ठ-११०)

"जमुना के कगार के ऊपर,
नैसर्गिक वसुधा है भूपर।
अकर्मण्य सहसा तर जाता,
जिस धरती की मिट्टी छूकर ।।"

-'रत्नावली'-जयगोपाल मिश्र फतेहपुरी, पृष्ठ ७५

इस प्रकार सदियों से राजापुर (चित्रकूट) में तुलसीदास जी के जन्मस्थान की जनमान्यता मूल में बिना सत्यता के चल ही नहीं सकती।

(२) हरिहरपुर गाँव जहाँ जन्मभूमि राजापुर से परित्यक्त बालक रामबोला (तुलसीदासजी का बचपन का नाम) का पालन-पोषण हुआ था, वहाँ से ४-५ मील में तुलसी गुरुभूमि शूकर क्षेत्र-चित्रकूट परिक्रमा मार्ग में शूकर मुखाकृत दूसरे मुखार बिन्द में वाराह मंदिर, गुरु नरहरि आश्रम, नरहरि मंदिर, नरहरि धूनी, नरहरि तलैया, तुलसी मंदिर एवं पीपल का वह वृक्ष आज भी विद्यमान है जो तुलसीदास जी द्वारा लगाया हुआ प्रसिद्ध है। उस क्षेत्र के बुजुर्ग बताते हैं कि यह वृक्ष कई बार सूख चुका है किन्तु किसी चमत्कार से पुनः प्रस्फुटित होकर आज भी हरा-भरा खड़ा हुआ है। उसके चारों ओर एक-चबूतरा भी बना हुआ है जो आज भी 'तुलसी चौरा' के नाम से प्रसिद्ध है, जिस पर बैठकर बाबा नरहरिदासजी तथा तुलसीदासजी प्रवचन और कथाश्रवण किया करते थे। (देखिये चित्र २, ३, ४, ५, ६, ७, ८ पृष्ठ १११-११३)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(३) राजापुर (चित्रकूट) में यमुना कगार पर स्थित 'तुलसी जन्म कुटीर' के ठीक उत्तर यमुना उस पार किनारे स्थित महेवा, (इलाहाबाद, वर्तमान कौशाम्बी जनपद) जो तुलसीदास जी की ससुराल प्रसिद्ध है, जहाँ उफनती भदईं यमुना पार कर पहुँचने पर पत्नी रत्नावली की फटकार से तुलसी को वैराग्य हुआ तथा राजापुर से १५ मील पूरब यमुना किनारे ननिहाल तारी, (चित्रकूट) की भी स्थिति अन्यत्र न होना, राजापुर (चित्रकूट) को तुलसी जन्मभूमि सिद्ध करने के लिए ठोस साक्ष्य हैं। राजापुर या कहीं सोरों या शूकर क्षेत्र हो सकते हैं परन्तु उसके सामने यमुना के दूसरे किनारे पर किसी अन्य महेवा की स्थिति नहीं है। यह विशिष्ट भौगोलिक स्थिति भी राजापुर (चित्रकूट) को ही गोस्वामी तुलसीदास की जन्मभूमि सिद्ध करती है –

"पूत राजापुर का, बिटिया महेवा घाट की।
विश्व की थाती बने, बस राम ही पतवार थी ।।"

–'रत्नावली 'खण्डकाव्य–जयगोपाल मिश्र पृष्ठ ३४

"यमुना के उस पार बसे, लघु ग्राम महेवा के वासी।
श्री दीनबन्धु पाठक ने निज, कन्या ब्याही थी रत्ना सी ।।"

–' एक रात तुलसी की, एक बात रत्ना की' –श्री गोविन्द प्रकाश श्रीवास्तव, पृष्ठ १४

(४) महेवा (इलाहाबाद, वर्तमान कौशाम्बी जनपद) में तुलसीदास जी की पत्नी रत्नावली के मायके का खंडहर 'रत्नावली चबूतरा' के नाम से आज भी विद्यमान है।

(५) राजापुर से चार–पाँच कोस दक्षिण नाँदी (चित्रकूट जनपद) के हनुमान जी की प्रसिद्ध प्रतिमा आज भी विद्यमान है, जिनकी पूजा करने तुलसीदास जी प्रतिदिन जाया करते और वहाँ से लौटकर भोजन प्रसाद पाते थे, ऐसी जनश्रुति एवं लोकमान्यता आज भी प्रसिद्ध है।

(६) राजापुर (चित्रकूट) में तुलसीदास जी द्वारा स्थापित संकटमोचन हनुमान जी की प्रसिद्ध सिद्धमूर्ति है (दृष्टव्य चित्र ९, १०) जहाँ हर मंगलवार, शनिवार और पूर्णमासी को तथा हर वर्ष जेठ और अगहन के पूरे महीने में मेला लगता है जिसमें दूर–दूर से भारी संख्या में श्रद्धालु आते हैं और 'तुलसी जन्म

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: MoE-IKS Grant-2

कुटीर', मानस मंदिर' में तुलसी हस्तलिखित 'रामचरित मानस' –'अयोध्याकाण्ड' तथा 'तुलसी स्मारक' के भी दर्शन करते हैं ।

(७) 'तुलसी जन्म कुटीर' के पास ही 'मानस मंदिर' में गोस्वामी तुलसीदास जी की हस्तलिपि में 'रामचरित मानस' – 'अयोध्याकाण्ड' की दुर्लभ पाण्डुलिपि सन् १९४८ ई० में तत्कालीन शिक्षा मंत्री डॉ० सम्पूर्णानन्द द्वारा प्रदत्त लोहे की छोटी तिजोरी में सुरक्षित 'मानस मंदिर' के पुजारी जी के संरक्षण में रखी हुई है । उसके सम्बन्ध में यह घटना प्रसिद्ध है कि सम्वत् १६८० वि० में काशी में तुलसीदास जी के देहावसान के बाद उनकी हस्तलिखित 'रामचरित मानस' काशी में उनके मित्र टोडरमल के यहाँ से उनकी जन्मभूमि राजापुर, (चित्रकूट) में उनके पैत्रक निवास में उनके राजापुर निवासी प्रथम शिष्य पं० गनपतराम द्वारा लाई गई – (देखिये चित्र १३ पृष्ठ ११६)

''दत्तः श्री गुरुणा हि रामचरित ग्रन्थः स्व हस्ताङ्कितः,
आनीयाऽत्र गुरोर्गृहे सुनिहितो रामादि देवालये ।
मूर्तिः श्री तुलसी गुरा–जनि भुवो भागे प्रतिष्ठापिता,
राज्ञा दन्त समस्त–सम्पदाधिकारोरक्षितस्तेन वै ।।१३८।।

–'तुलसी स्मृति सन्दर्भः'–स्वामी रामानन्द सरस्वती

(श्री गणपति उपाध्याय ने गुरुजी के हाथ से लिखित श्री रामचरित मानस ग्रन्थ जिसे गुरुजी ने दिया था– उसे राजापुर में गुरुजी के घर के रामादि देवताओं के मन्दिर में सुरक्षित रखा । गुरु श्री तुलसीदास के जन्म स्थल में तुलसीदास की पाषाण प्रतिमा स्थापित किया तथा राजा (सम्राट) द्वारा दी हुई सम्पूर्ण सम्पत्ति के अधिकार को सुरक्षित रखा ।१३८।।)

कालान्तर में मानस की उस पोथी की पूजा के लिए माफीदार शिष्य वंशजों में आपसी कलह के कारण एक बाहरी पुजारी रखा गया था । एक दिन पुजारी की नीयत खराब हो गई वह 'मानस' चुराकर भागा । पता लगने पर लोगों ने उसका पीछा किया तथा कालाकांकर के पास गंगा पार करते हुये उसे ललकारा । पुजारी ने डर कर पोथी गंगा में फेंक दी । कालाकांकर नरेश श्री हनुमन्त सिंह ने पता लगते ही मल्लाहों से जाल डलवाकर ग्रन्थ निकलवा लिया । उसके ऊपर–नीचे के पृष्ठ गल गये थे । बीच में होने से सम्पूर्ण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अयोध्या काण्ड के १७० पन्ने ही सुरक्षित बचे थे । कालाकांकर नरेश ने उसे वापस काशी नरेश के पास भेजवा दिये काशी नरेश श्री ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह ने 'मानस' की शेष इस अयोध्याकाण्ड की हस्तलिखित पाण्डुलिपि के १७० पन्नों के चारों ओर गोट लगवा कर एक ऐसे जरी के कपड़े में वेष्ठित कराकर राजापुर, (चित्रकूट) भेजा जिनमें उनके गुरु काष्ठजिह्वा स्वामी का बनाया हुआ पद अंकित है –

"असरन के सरन सुख एक तुलसी के चरन हैं ।
राम भक्ति दायक और ज्ञानमान हरन हैं ।
भाषा में रामचरित किये ललित बरन हैं ।
अगम अरथ सुगम कियो पढ़त बरन-बरन हैं ।
देवऋषि आदि कवि वेद रूप धरन हैं ।
इनके बस रामसिया-लखन तारन-तरन हैं ।।"

पाण्डुलिपि में पानी के धब्बे और सुधार के चिन्ह बने हुये हैं ।

विद्वानों ने इसके कागज को तुलसी कालीन और लिपि को तुलसी की हस्तलिपि माना है । गोस्वामी तुलसीदास जी का प्रामाणिक हस्तलेख काशीनरेश के संग्रहालय में सुरक्षित है । यह हस्तलेख तुलसीदास जी के मित्र टोडरमल के पुत्रों के बँटवारे के पंचनामा में है । उस अभिलेख के अक्षरों के खत एवं मोड़ राजापुर की 'मानस' प्रति के अक्षरों से मेल खाते हैं ।

राजापुर (चित्रकूट) में सुरक्षित 'रामचरित मानस' –अयोध्याकाण्ड पाण्डुलिपि की निम्नांकित विशेषतायें हैं –

"(अ) इस प्रति में करीब ११"× ५" आकार के १७० पन्ने हैं और प्रत्येक पृष्ठ में मिली-जुली ७ पंक्तियाँ हैं ।

(ब) अयोध्याकाण्ड की इस हस्तलिखित प्रति में 'श्री गणेशाय नमः' । 'श्री जानकी वल्लभो विजयते' लिखा हुआ है ।

(स) इसके पश्चात् मंगलाचरण के तीन श्लोक लिखे हुये हैं । इस प्रति के मंगलाचरण के प्रथम श्लोक में 'यस्यांके पाठहै; 'वामांगे' नहीं ।

(द) इस प्रति में प्रसिद्ध 'तापस-प्रसंग' का उल्लेख हुआ है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

(य) इस प्रति में कुछ अक्षरों के प्रचलित रूप में भी अन्तर पाया जाता है–

अक्षरों का आधुनिक रूप	उक्त हस्तलिखित प्रति में प्रयुक्त अक्षरों का रूप
अ	
ऊ	
ऐ	
ख	
घ	
ज	
झ	
ण	
ब	
व	
य	
र	
रू	
हु	
क्ष	

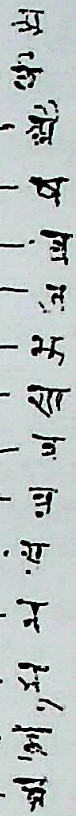

(८) तुलसीदास जी के राजापुर निवासी प्रथम शिष्य गनपतराम के वंशज आज भी 'तुलसी जन्म कुटीर' (तुलसी मंदिर) और 'मानस मंदिर' में पुजारी चले आ रहे हैं। (देखिये चित्र १४ पृष्ठ–११६)

(९) 'तुलसी जन्म कुटीर' के प्रसूति कक्ष में तुलसीदास जी की यमुना से मिली २ फुट ऊँची काले पत्थर की दुर्लभ प्राचीन प्रतिमा जिसका कि 'गजेटियर' में भी उल्लेख है, तुलसी जन्मभूमि विवाद से बहुत पहले से स्थापित है। मंदिर के प्रवेश द्वार के सामने प्रमुख कक्ष में तुलसीदास जी के परम आराध्य भगवान राम–सीता–लक्ष्मण की भव्य मूर्तियाँ, उनके पार्श्व कक्ष में भगवान शिव विराजमान हैं। (देखिये चित्र ११, १२ पृष्ठ–११५)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१०) भगवान राम, सीता और लक्ष्मण के वनगमन में राजापुर के पास यमुना पार करने से रामघाट, गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा यमुना कगार पर संकट मोचन हनुमान जी की मूर्ति प्रतिष्ठित होने से उस घाट को हनुमानघाट तथा 'तुलसी जन्म कुटीर' (तुलसी मंदिर) के यमुना घाट को शदियों से तुलसीघाट के नाम से जाना जाता रहा है।

(११) तथ्यपूर्ण वाह्य साक्ष्यों, ऐतिहासिक दस्तावेजों, फरमानों, अन्तः साक्ष्यों के पुष्ट प्रमाणों तथा सदियों से चली आ रही लोकमान्यताओं को मानते हुये ही सन् १८४६ ई० में तत्कालीन अंग्रेजी सरकार ने 'तुलसी जन्म कुटीर' में संगमरमर का एक मेमोरियल' लगवाया था जो अब उपलब्ध नहीं है। सन् १९०६ ई० में कर्वी के ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट के० एन० नाक्स अंग्रेज आई० सी० एस०, इलाहाबाद के कमिश्नर मिस्टर ब्राउनिंग के साथ राजापुर में यमुना कगार पर स्थित तुलसी के जन्म स्थल को देखने आये और तुलसीदास जी का जर्जर कच्चा मकान उनकी हस्तलिखित रामायण और मुवाफी की सनदें देखकर अतीव प्रभावित हुये तथा उनके जर्जर मकान के जीर्णोद्वार के लिये सात सौ रुपये प्रदान किये। राजापुर के तत्कालीन तुलसी भक्त पोस्टमास्टर आगरा के पास जारखी ग्राम निवासी रेवती लाल श्रीवास्तव ने देश-विदेश के तुलसी भक्तों से चन्दा करके सन् १९०७-'०८ में जीर्णशीर्ण तुलसी के पैतृक निवास के स्थान पर 'तुलसी जन्म कुटीर' (तुलसी मंदिर) का निर्माण कराया। इसके प्रवेश द्वार के बाईं ओर बरामदे में देश-विदेश के दानदाताओं की सूची भी संगमरमर पट्टिका पर अंकित मंदिर के दीवाल में लगी है। मंदिर के प्रवेश द्वार के दायीं ओर अंग्रेजी में लिखी संगमरमर की पट्टिका दीवाल में लगी है जो उ० प्र० सरकार के आदेश से तत्कालीन जिला मजिस्ट्रेट बाँदा ने लगवायी थी। इस प्रकार से राजापुर का ही नहीं अपितु विश्व की अमानत 'तुलसी जन्म कुटीर' जिसके अन्दर तुलसीदास जी के प्रसव कक्ष की कच्ची दीवारें मंदिर के ईंटो के बीच आज भी सुरक्षित हैं, श्रद्धालुओं को श्रद्धा और भक्ति से पूर्ण करते हुये नूतन भव्य रूप में तुलसी की पावन अमर स्मृति और यश गाथा को दिग्-दिगन्त तक फैला रहा है।

(१२) सन् १९१२ म मिस्टर जे० वी० म्योर साहब ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट कर्वी इस स्थान की आध्यात्मिक नैसर्गिकता से प्रभावित होकर इसके सुरक्षा एवं उत्थान के लिए श्री तुलसी स्मारक कमेटी बनवाई और सन् १९१६ में कर्वी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के तत्कालीन ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट (बाद में यू० पी० सरकार के प्रधान एडवाइजर) श्री पन्नालाल आई० सी० एस० ने सितम्बर माह में गोस्वामी तुलसीदास जी के मन्दिर के पार्श्व में गोस्वामी जी की स्मृति में "श्री तुलसी स्मारक संस्कृत पाठशाला" खोली जो गवर्नमेन्ट से रजिस्टर्ड है और संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से सम्बद्ध शास्त्री-आचार्य तक संस्कृत शिक्षा का केन्द्र है जिसमें श्री तुलसी पुस्तकालय भी है जिसे सरकार से आर्थिक तथा पुस्तकों की सहायता मिलती है।

(१३) तुलसी मंदिर (तुलसी जन्म कुटीर) यमुना के दक्षिणी कगार पर स्थित है। प्रतिवर्ष वर्षा-बाढ़ से कगार के कटने से मंदिर को क्षति पहुँचने से बचाने के लिए सन् १९१६ ई० में रीवाँ नरेश महाराज वेङ्कटरमण सिंह राजापुर पधारे तथा मन्दिर की सुरक्षा के लिए कमेटी बनाई और कुछ धन भी संग्रह किया। फलत; कटान से सुरक्षा के लिए मंदिर से पश्चिम तीन पक्की दीवारें बनवाई गईं जो यमुना के कटान से अब गिर गई हैं।

(१४) सन् १९२० में मिस्टर के० एन० नाक्स कलेक्टर इलाहाबाद के साथ महराज बराँव राघवप्रसादसिंह जी पधारे थे जिसमें ११७१ रुपये का चन्दा हुआ, २०० रुपये राजा साहब ने स्वयं दिया था।

(१५) सन् १९२७ में बाँदा के कलेक्टर मिस्टर सी० के० देसाई ने तुलसी जन्म गृह के सम्मुख प्रवाहित यमुना की प्राकृतिक-अलौकिक शोभा देखकर इतने अभिभूत हुए कि उन्होंने तुलसी मंदिर की सुरक्षा के लिए तुलसी घाट पक्का बनवाने के लिए १८०००/- एकत्रित किए जो इम्पीरियल बैंक, इलाहाबाद में जमा किये गये थे। घाट में लाखों रुपये का खर्च देखकर सन् १९३६ में श्री तुलसी पुस्तकालय खोला जिका उद्घाटन डॉ० पन्नालाल आई० सी० एस० कमिश्नर झाँसी (बाद में प्रधान एडवाइजर यू० पी० सरकार) के हाथों हुआ। शेष १४०००/- श्री तुलसी स्मारक संस्कृत पाठशाला, राजापुर को दे दिये।

(१६) सन् १९३९ में इलाहाबाद में हुये हिन्दी साहित्य सम्मेलन में राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ० गंगानाथ झा, राय राजा डॉ० श्याम बिहारी मिश्र की मौजूदगी में तुलसी स्मारक समिति का गठन कर राजापुर (बाँदा) में भव्य तुलसी स्मारक भवन बनवाने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का निर्णय लिया गया।

(१७) सन् १९४६ में हिन्दी साहित्य परिषद की बाँदा शाखा स्थापित की गई जिसके प्रथम अध्यक्ष महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला बनाये गये। जब निराला जी राजापुर पधारे और 'तुलसी जन्म कुटीर' (तुलसी मन्दिर) के सम्मुख यमुना के कगार पर खड़े हुये तथा यमुना की नील-निर्मल शोभा को देखा तो उनका कवि हृदय इतना भावुक हो उठा और उनका सुप्रसिद्ध गीत स्फुरित हो उठा –

"नीली उस यमुना के तट पर
राजापुर का नागरिक मुखर
सोचा कवि ने मानस तरंग
वह भारत संस्कृति पर अभंग
× × × ×
इस अनिल वाह के पार प्रखर
किरणों का वह ज्योतिर्मय घर।"

(१८) सन् १९४८ में ३६ भाषाओं के विद्वान एवं इतिहासविज्ञ महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन की अगुवाई में ६० साहित्यकारों व पत्रकारों का दल राजापुर आया और यहाँ के पुरातात्विक-ऐतिहासिक, साहित्यिक साक्ष्यों, तथ्यों, प्रमाणों का अवलोकन-अनुशीलन कर इसे ही तुलसी जन्मभूमि प्रमाणित किया।

(१९) गोरखपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ० बी०एन० झा ने ८० हजार रुपये विद्यार्थियों से तथा सेठ घनश्याम बिड़ला के पुत्र कृष्ण कुमार बिड़ला ने एक लाख रुपयों से अधिक की धनराशि व्यापारियों से राजापुर (बाँदा) में तुलसी स्मारक भवन के निर्माण के लिये एकत्रित किया था।

(२०) सन् १९५२ ई० में सर्वोदयी नेता आचार्य विनोवा भावे गोस्वामी तुलसीदास की जन्मभूमि राजापुर (बाँदा) पधारे और सायंकाल प्रार्थना सभा में भाषण देते हुए कहा–

"मुझे तुलसी के जन्म स्थान में आने पर बहुत प्रसन्नता हुई है। मैंने तुलसीदास से सम्बन्धित सभी स्थानों को देखा। गोस्वामी जी की मूर्ति देखी और 'रामचरित मानस' की वह प्रति भी देखी जो जनश्रुति के अनुसार गोस्वामी जी ने अपने कर कमलों द्वारा लिखी है। सारा स्थान देखकर मेरे चित्त पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अच्छा असर पड़ा है। .... तुलसीदास का घाट बनना चाहिए।"

–"सत्य लोकवाणी" –मार्च १९९७ पृष्ठ १६

(२१) सन् १९५२ ई० में सुप्रसिद्ध कवियित्री महादेवी वर्मा राजापुर पधारीं। तुलसी जन्मस्थली और उसके सामने यमुना की मनोरम अलौकिक छटा देखकर वे अत्यन्त भावुक हो गई थीं। उन्होंने उक्त अवसर पर अपने जो विचार व्यक्त किये थे उसका एक अंश निम्नवत् था –

" मैं आज किसी साहित्यिक गोष्ठी की अध्यक्ष –पीठ अथवा किसी सभामंच के सभापति के आसान में विराजमान होने के लिए नहीं अपितु इस महान और अति प्राचीन स्थान को महाकवि तुलसी की जन्मभूमि के साथ–साथ एक सच्चा साहित्यिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक तीर्थस्थान मानकर इसके दर्शन कर अपने को गौरवान्वित करने आई हूँ। इस ग्राम की धूलि को जिसमें उस संत कवि के पद रज के कण समाए हुए हैं, उन्हें पूर्ण हार्दिक श्रद्धा के साथ प्रणाम करने आई हूँ।"

राजापुर से जाने के पश्चात् दिल्ली में महादेवी जी के भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू से मिलकर तुलसी जन्मभूमि में 'तुलसी जन्म कुटीर' को यमुना के कटाव से सुरक्षा के आग्रह पर प्रधानमंत्री जी ने तत्काल उ० प्र० सरकार को त्वरित कार्यवाई के लिए निर्देशित किया था और उसी वर्ष भारत के प्रधानमंत्री पंडित नेहरू के निर्देश पर उ० प्र० सरकार ने सिंचाई विभाग के माध्यम से 'तुलसी जन्म कुटीर' की सुरक्षा के लिए बजट सुनिश्चित किया।

(२२) १५ अप्रैल सन् १९५५ ई० को गोस्वामी तुलसीदास के प्रति श्रद्धा रखने वाले देश के मूर्धन्य विद्वानों, राजनेताओं एवं समाज सेवियों ने अखिल भारतीय तुलसी स्मारक समिति के गठन का ऐतिहासिक निर्णय लिया। समिति के प्रथम अध्यक्ष पं० गोविन्द वल्लभ पन्त तत्कालीन गृहमंत्री भारत सरकार, उपाध्यक्ष डॉ० सम्पूर्णानन्द जी मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश सरकार, मंत्री श्री चतुर्भुज शर्मा उपमंत्री राजस्व उ० प्र० रहे। यहाँ यह विशेष उल्लेखनीय है कि उस समिति में देश–प्रदेश के चुने हुये विद्वान, 'मानस' प्रेमी तथा तुलसी भक्त सदस्य बनाये गये थे। सोरों (एटा) निवासी पं० यशोधर शास्त्री भी उक्त समिति के सदस्य बनाये गये थे तथा समिति में सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव के आधार पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजापुर (बाँदा) में भव्य तुलसी स्मारक के निर्माण का निर्णय लिया गया था।

(२३) सुप्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा के प्रयासों से उ० प्र० के तत्कालीन मुख्यमंत्री ने सन् १९५६ ई० में राजापुर (बाँदा) में तुलसी स्मारक भवन के निर्माण की घोषणा की।

(२४) यमुना के कगार पर स्थित 'तुलसी जन्म कुटीर' (तुलसी मंदिर) और 'मानस मंदिर' को यमुना के कटान से सुरक्षा के लिये सन् १९५७–'५८ में उत्तर प्रदेश सरकार ने लाखों की लागत से भव्य तुलसीघाट का निर्माण कराया जो आज भी उपरोक्त मंदिरों का ही नहीं अपितु आधे राजापुर नगर की सुरक्षा का प्रहरी बना खड़ा है। वर्तमान में भी इसकी सुरक्षा, मरम्मत और सुन्दरीकरण उ० प्र० सरकार द्वारा की जा रही है। (देखिये चित्र सं० १ पृष्ठ–११०)

(२५) सन् १९५७ ई० में भारी हर्षोल्लास के बीच उत्तर प्रदेश सरकार के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री चन्द्रभान गुप्त ने 'तुलसी स्मारक भवन' का शिलान्यास किया और सन् १९६०–'६१ तक लाखों की लागत से ५० एकड़ के परिसर में सरकार द्वारा भव्य 'तुलसी स्मारक' का निर्माण हुआ; जिसमें भव्य मंदिर में गोस्वामी तुलसीदास जी की संगमरमर की भव्य प्रतिमा स्थापित है। (देखिये चित्र सं० १५, १६, १७ पृष्ठ–११७–११८)

इसमें वर्षों चैत नवरात्रि में 'तुलसी मेला' का भव्य आयोजन होता रहा है, जिसमें सजी–धजी विभिन्न दुकानों के साथ सरकार के विभिन्न विभागों की विकास प्रदर्शनियाँ, कथा–प्रवचन, कवि सम्मेलन तथा अन्यान्य रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल–तमाशे, सरकस आदि देखने दूर–दूर से दर्शक भारी संख्या में आते रहे हैं। वर्तमान में तुलसी जयन्ती का वृहद भव्य आयोजन, कथा–प्रवचन एवं सामूहिक धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक आयोजन यहाँ आयोजित होते रहते हैं।

(२६) सन् १९६२–'६३ में सेठ गोविन्दराम बाँगड़, कलकत्ता द्वारा 'मानस मंदिर' का निर्माण हुआ, जिसमें विश्व की अनुपम अमानत गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा हस्त लिखित 'रामचिरत मानस'–अयोध्याकाण्ड' की पाण्डुलिपि सन् १९४८ ई० में तत्कालीन शिक्षा मंत्री उ० प्र० डॉ० सम्पूर्णानन्द द्वारा प्रदत्त मजबूत लोहे की छोटी तिजोरी में राजापुर के तुलसी शिष्य परम्परा के ११वीं पीढ़ी के वर्तमान पुजारी श्री रामाश्रय त्रिपाठी जी के संरक्षकत्त्व में सुरक्षित है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिसके दर्शनार्थ देश-विदेश के जिज्ञासु पर्यटक, विद्वान कवि-साहित्यकार शोधार्थी भारी संख्या में आते रहते हैं। (देखिये चित्र सं० १३, १४ पृष्ठ-११६)

(२७) तुलसी जन्मभूमि के भावनात्मक आकर्षण से आकृष्ट होकर ही सुप्रसिद्ध कथा वाचक संत मुरारी बापू ने राजापुर में कई बार 'नवाह्न' मानस कथा-प्रवचन और वृहद् नवाह्न भण्डारे का भव्य आयोजन किया और आयोजन समय में निज निवास के लिये सन् १९९० में 'तुलसी जन्म कुटीर' के पूर्वी पार्श्व में भव्य 'कैलास आश्रम' निर्मित करवाया जो तुलसी घाट की भव्यता में चार चाँद लगाता है। (देखिये चित्र सं० १८ पृष्ठ-११८)

(२८) सन् १९९१ से संत मुरारी बापू द्वारा 'तुलसी जन्म कुटीर' व 'तुलसी स्मारक संस्कृत महाविद्यालय' तथा 'कैलास आश्रम' के पार्श्व में सीताराम ट्रस्ट (गुजरात) के माध्यम से साधु-सन्तों, असहायों, आगन्तुकों के लिये 'तुलसी जन्म कुटीर' और 'मानस मंदिर' में भोग-प्रसाद के बाद अनवरत भंडारा चलाया जा रहा है और प्रभात फेरी, मानस पाठ तथा भजन कीर्तन, प्रवचन का आयोजन भी चलता रहता है।

(२९) विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न प्रज्ञाचक्षु तुलसी पीठाधीश्वर जगत गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज कुलाधिपति अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट अपने संकल्पनानुसार प्रायः प्रतिवर्ष तुलसी जयन्ती को तुलसी जन्मभूमि में पधारकर संतशिरोमणि कवि कुल गुरु गोस्वामी तुलसीदास जी को श्रद्धा सुमन अर्पित कर पाण्डित्यपूर्ण प्रवचनामृत से कृतकृत्य करते हैं।

(३०) शासन द्वारा तुलसी चौक राजापुर (चित्रकूट) में स्थापित गोस्वामी तुलसीदास जी की संगमरमर की प्रतिमा। 'तुलसी जन्म कुटीर' 'मानस मंदिर' एवं 'तुलसी स्मारक' का सुन्दरीकरण।

(३१) नवम्बर २००६ से 'मानस मंदिर' में 'मेंहदीपुर बाला जी (राजस्थान) मानव कल्याण मण्डल' द्वारा 'तुलसी साहित्य शोध संस्थान' पुस्तकालय एवं वाचनालय संचालित है जिससे काफी लोग लाभान्वित हो रहे हैं।

(३२) संवत् १६३१ वि० में विश्वकवि संतशिरोमणि गो० तुलसीदास जी हस्त-लिखित विश्व की अनुपम अमानत 'रामचरितमानस'-'अयोध्याकाण्ड' की यहाँ अवशेष जीर्णशीर्ण पाण्डुलिपि को सन् १९८० में कानपुर के लाला रामशंकर बहीवाले "धर्मार्थ ट्रस्ट" ने प्रत्येक पन्ने को प्लास्टिक कवर से सुरक्षित कराया। सन् २००४ में भारतीय पुरातत्व विभाग ने प्रत्येक पन्ने को जापानी टिसूपेपर से सुरक्षित कर दिया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

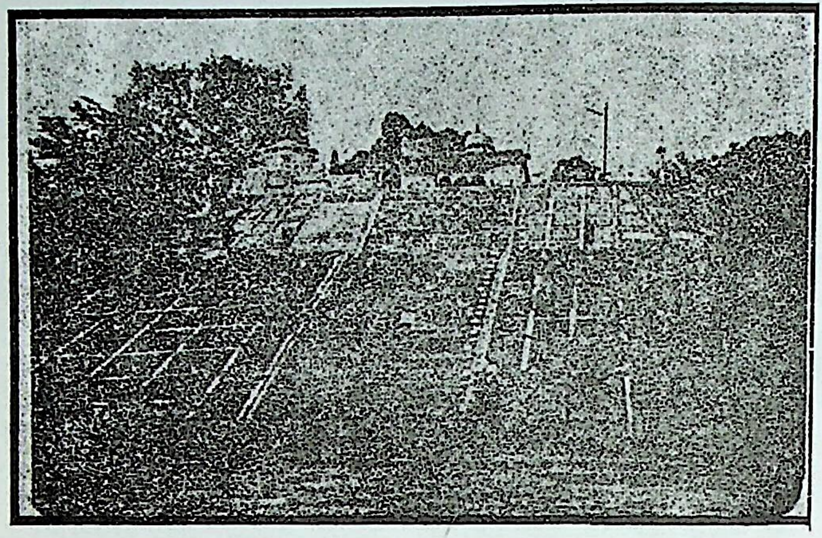

(१) तुलसी जन्म कुटीर राजापुर (चित्रकूट) विहंगम दृश्य बगल में संत मुरारी बापू का आश्रम

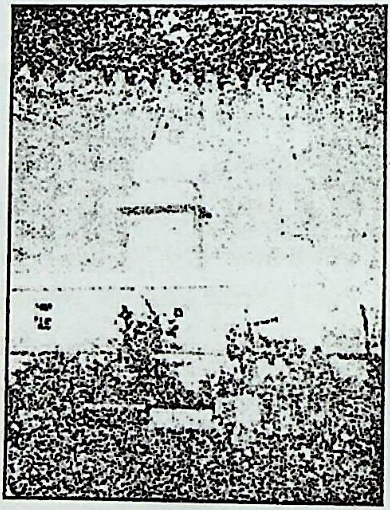

तुलसी मन्दिर राजापुर (चित्रकूट)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शूकर खेत, चित्रकूट

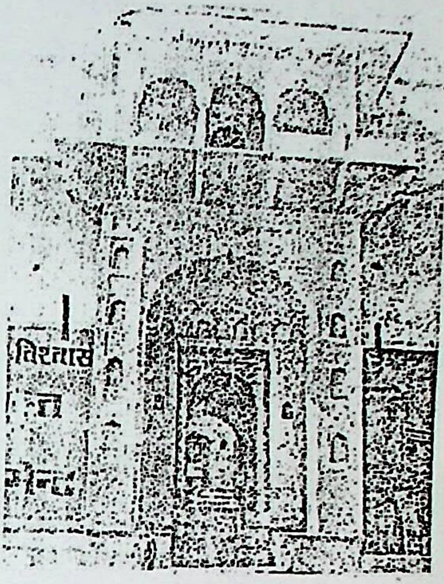

(२) तुलसीदास व नरहरिदासजी की प्रतिमा आश्रम में (बायें)
नरहरिदास जी का आश्रम का मुख्य भाग (दायें)

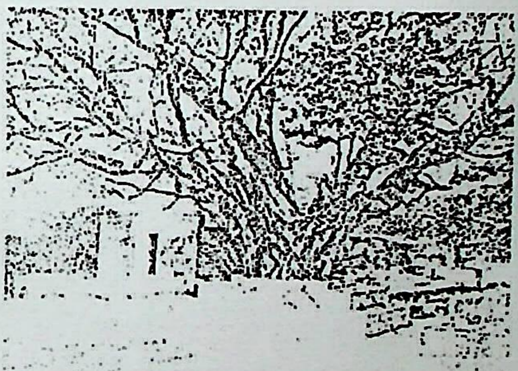

(३) तुलसी चौरा पर तुलसीदासजी की प्रतिमा (बायें)
तुलसीदासजी द्वारा लगाया गया पीपल का वृक्ष (दायें)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

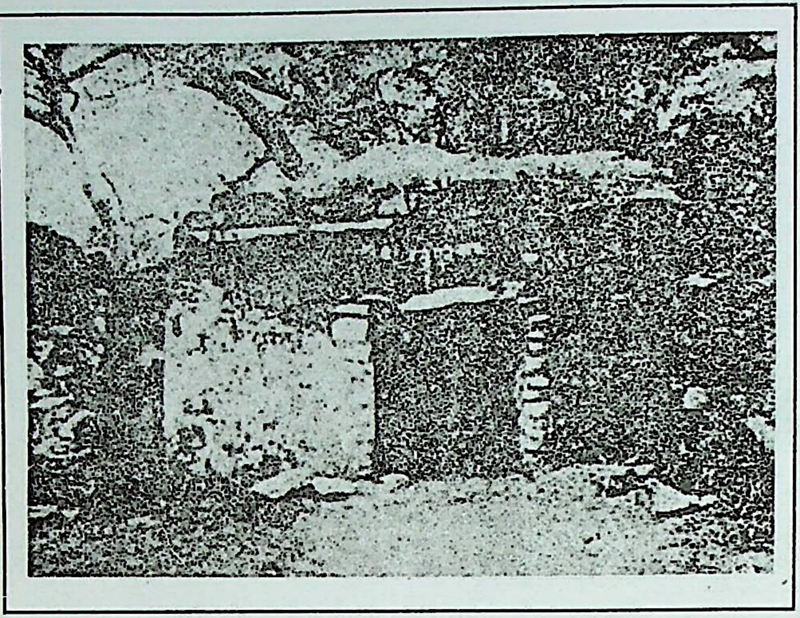

(४) नरहरि कुटि चित्रकूट पर्वत के ऊपर

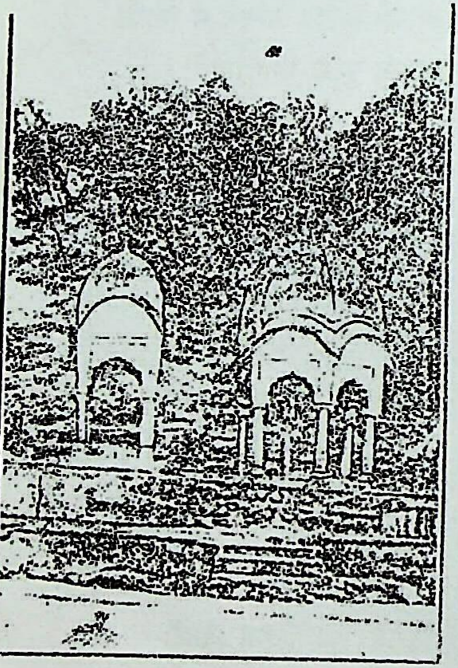

(५) स्वामी नरहरिदास जी की धूनि
शूकर क्षेत्र चित्रकूट

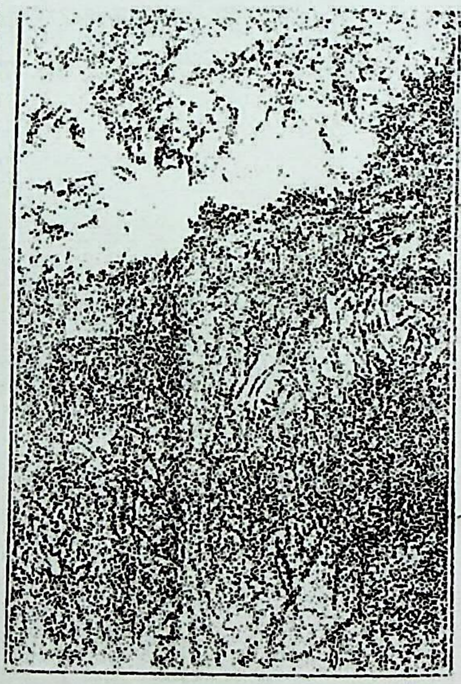

(६) स्वामी नरहरिदास जी की समाधि
शूकर क्षेत्र चित्रकूट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

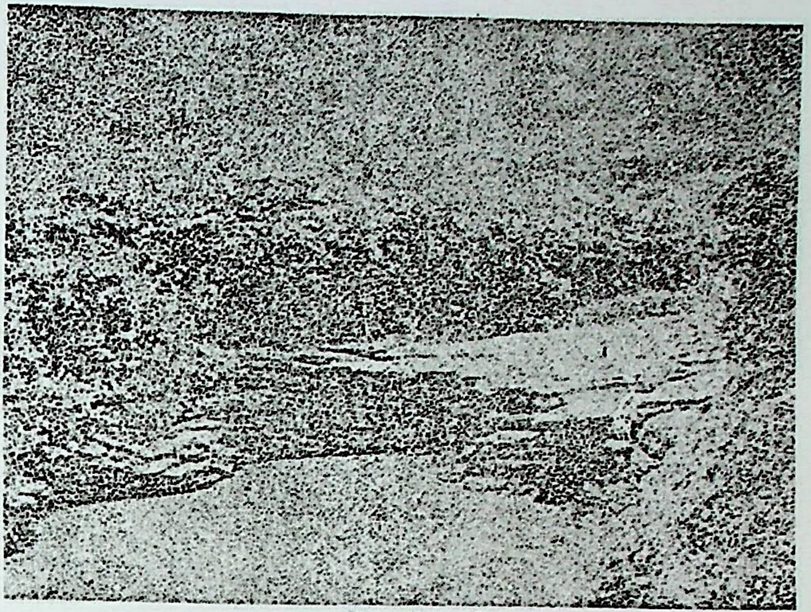

(७) नरहरि तलैया, चित्रकूट

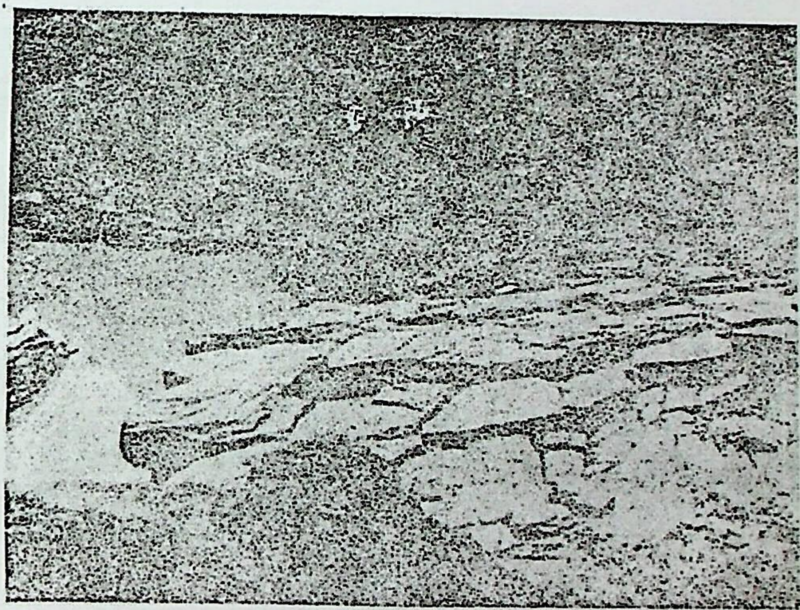

(८) नरहरि आश्रम हवन कुन्ड (वृम्ह) कुन्ड चित्रकूट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

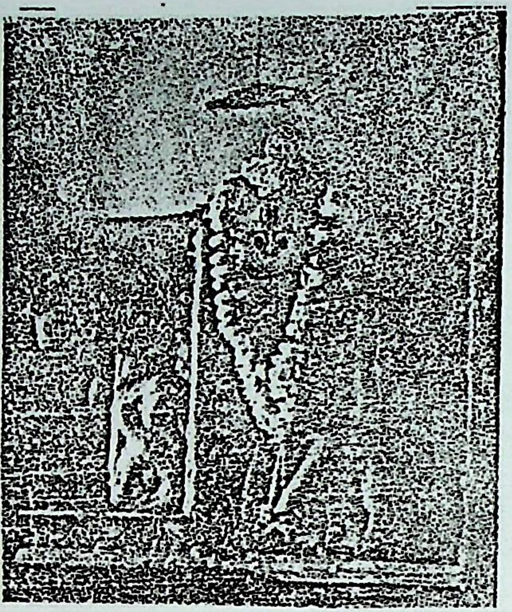

(९) श्री संकट मोचन हनुमान जी की मूर्ति, राजापुर

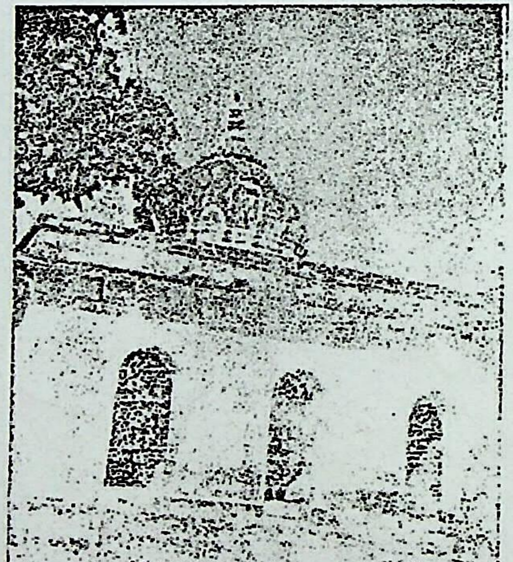

(१०) मन्दिर संकट मोचन, राजापुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

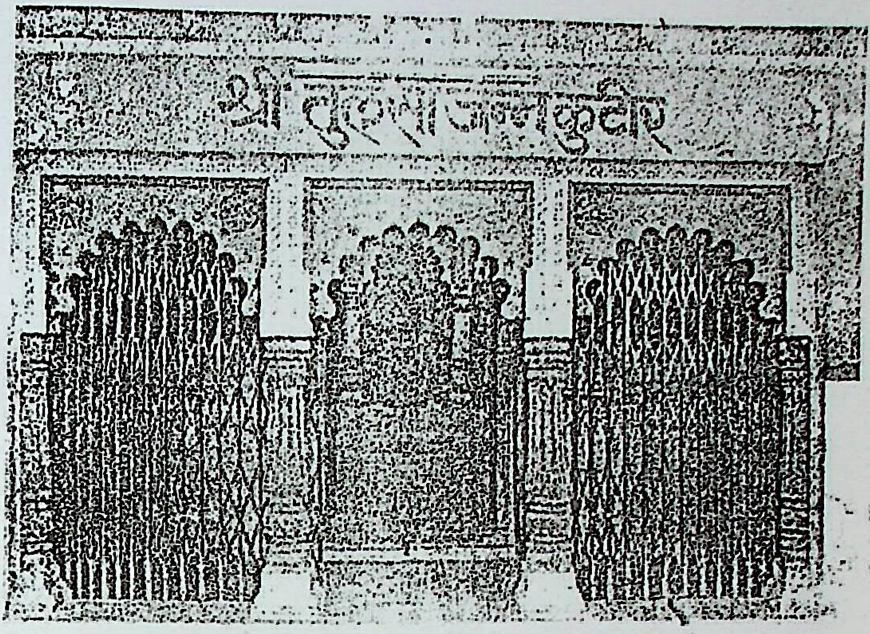

(११) तुलसी जन्मकुटीर राजापुर

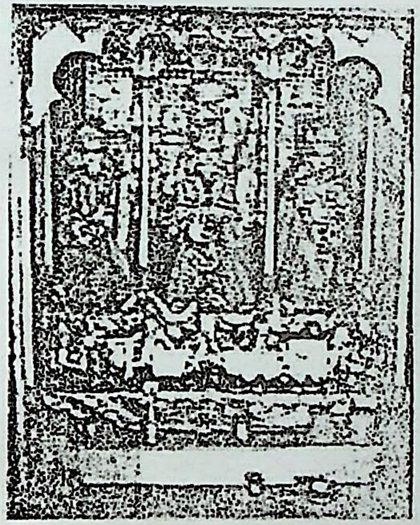

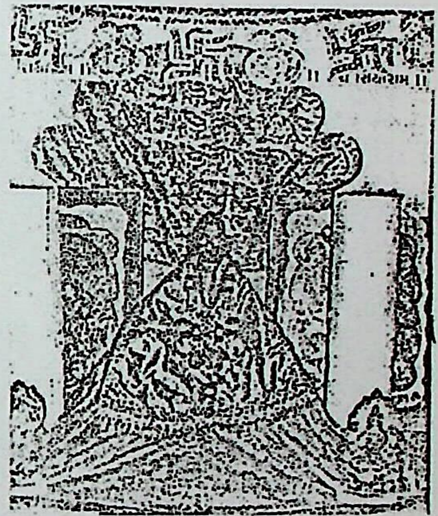

(१२) राम, लक्ष्मण एवं सीता "तुलसी जन्मकुटीर" में (बायें)
तुलसीदासजी की प्रतिमा "तुलसी जन्मकुटीर" में (दायें)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

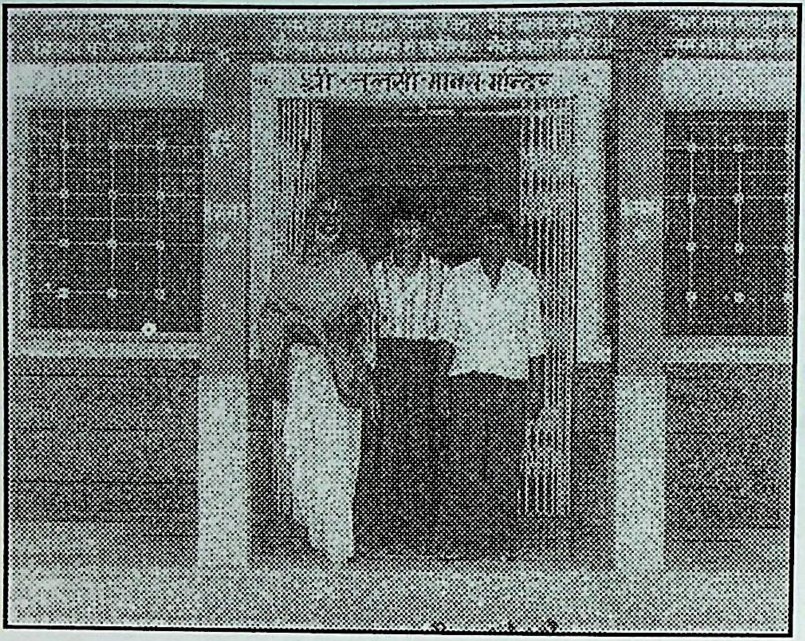

(१३) 'मानस मंदिर' राजापुर (चित्रकूट)

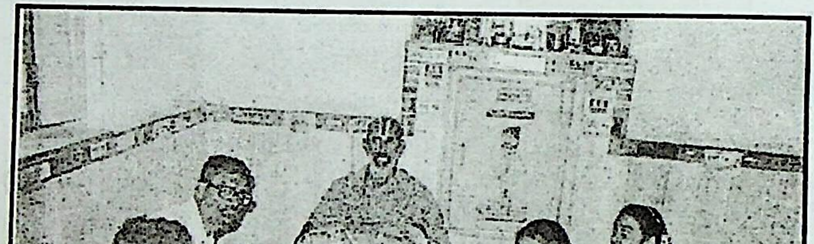

(१४) 'मानस मंदिर' राजापुर (चित्रकूट) में तुलसी हस्तलिखित 'अयोध्याकाण्ड' का दर्शन कराते पुजारी जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

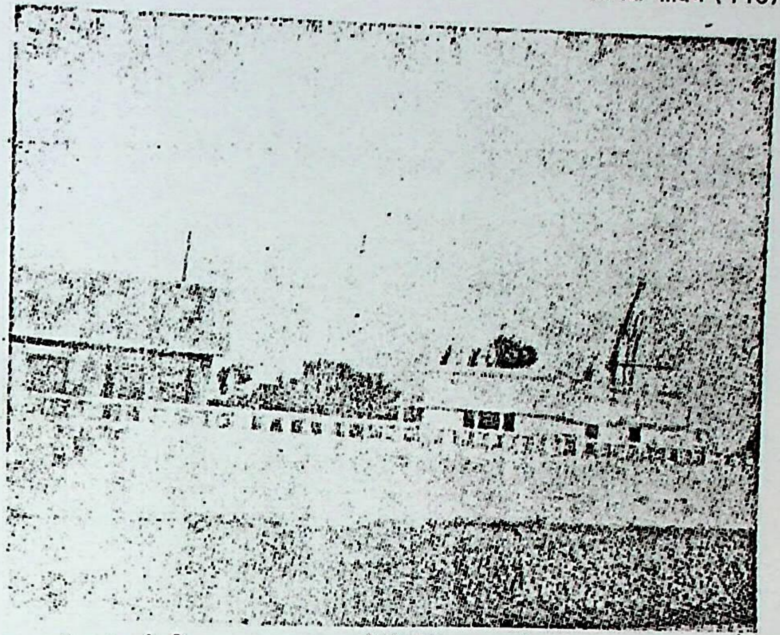

(१५) प्रदेशीय सरकार द्वारा विनिर्मित तुलसी स्मारक परिसर राजापुर, (चित्रकूट)

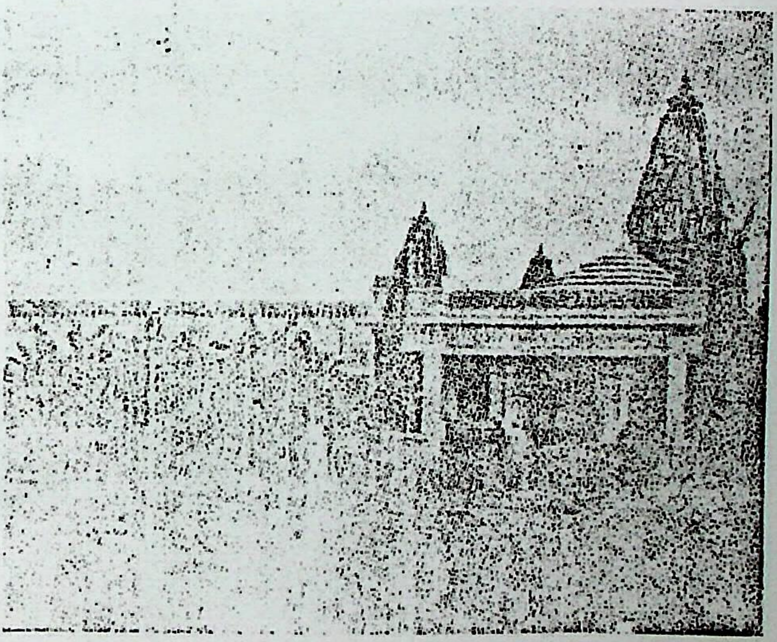

(१६) तुलसी स्मारक राजापुर, (चित्रकूट)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

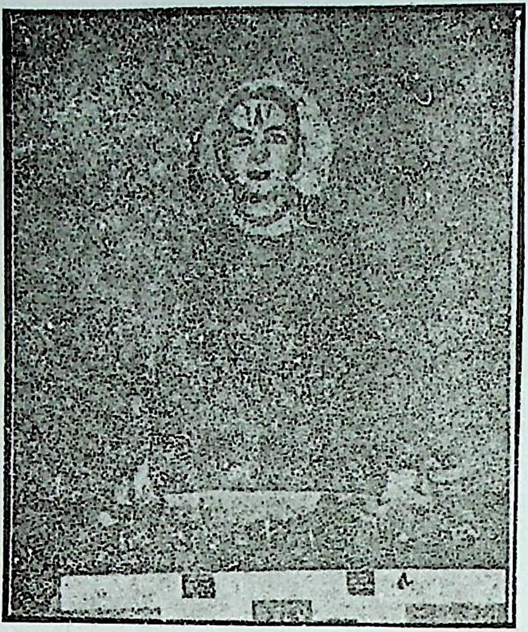

(१७) तुलसी स्मारक राजापुर, (चित्रकूट) में स्थापित गोस्वामी तुलसीदास जी की संगमरमर की मूर्ति

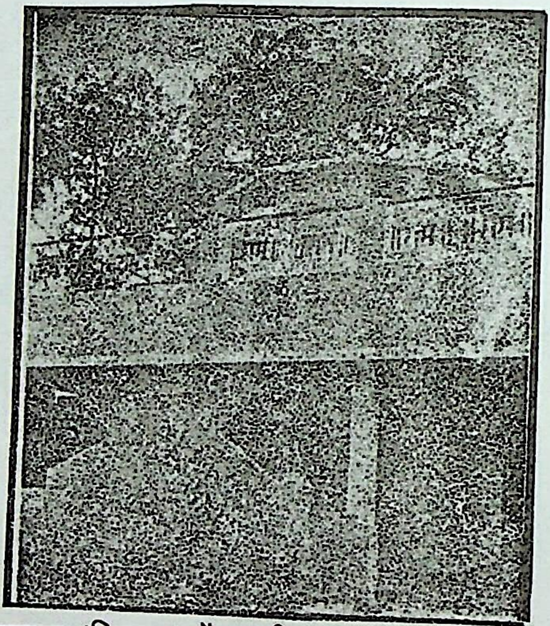

(१८) राजापुर (चित्रकूट) में तुलसी जन्म कुटीर के बगल में संत श्री मुरारी बापू जी का आश्रम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्य साक्ष्य

(१) सम्राट अकबर से लेकर औरंगजेब पर्यन्त मुगल सम्राटों द्वारा प्रदत्त माफीनामा और फरमानों से ज्ञात होता है कि उस समय राजापुर का नाम विक्रमपुर था । सर्व प्रथम शाबान सन् १२ (१७१९ ई०) के फरमान में राजापुर[१] तथा संवत् १८१३ विक्रमी (सन् १७५६ ई०) में पन्ना नरेश महाराजा अमान सिंह जू देव की माफी बहाली की राजाज्ञा में इसका नाम मौजा मझगवाँ में राजापुर कस्बा उल्लिखित है ।[२] सम्भवतः कृषि योग्य क्षेत्र के मध्य भू भाग को मझगवाँ और उसके अन्तर्गत कस्बा को राजापुर कहा गया ।

(२) तुलसी जन्मभूमि विवाद के बहुत पहिले सन् १८३१ ई० में अंग्रेज विद्वान एच० एच० विल्सन तथा सन् १८३९ ई० में फ्रेंच विद्वान गार्सांद तासी ने तुलसी जन्मभूमि बाँदा जिले में चित्रकूट के पास हाजीपुर जो वस्तुतः राजापुर ही है, माना था । हाजीपुर चित्रकूट के समीप है । इसका उल्लेख सर्वप्रथम विल्सन महोदय ने किसी जनश्रुति के आधार पर किया था । इसके पश्चात गार्सा द तासी ने कदाचित योरोपियन होने के नाते विल्सन महोदय को प्रमाणिक मानकर इस सम्बन्ध में खोज आदि करना व्यर्थ समझ कर हाजीपुर को ही गोस्वामी तुलसीदास का जन्मस्थान मान लिया । सम्भव है जन्मभूमि राजापुर (चित्रकूट) से जन्मते ही परित्यक्त शिशु रामबोला (तुलसी) की पालन स्थली हरिपुर (हरिपुर) (चित्रकूट के निकटस्थ तुलसी की धाय माँ चुनिया की ससुराल) को हाजीपुर समझ लिया हो ।

---

१. "आमिलान हाल इस्तकवाल परगनै गहोरा सिरकार कालींजर सूबे इलाहाबाद के कौभाई पं० मदारीराम गोसाईं तुलसीदास जी के वंश में का महसूल साइर वतिहबाजारी वा कलारी वा गुजर श्री जमुना जी राजापुर अमलै पर बमूजब सनद बादशाही वा सूबेदारान वा राजा बुन्देलखण्ड कदीम मुकर्रर...।"

– ता० २१ शाबान सन् १२ (सन् १७१९ ई०) बमुकाम बाँदा ।

२. "श्री महाराजधिराज श्री महाराज अमांन सिंह जू देव येते पं० श्री उपध्वा सीवाराम कौ सनिध कर दइ आपर मौजे मझिगवाँ में कस्बा राजापुर बसतु है सो आगे ये उहा की राह रकम हाट फैट कौ पाइआए होई सु पाव जाइ । .....हुकुम हुजूर पौष सुदि १५ संवतु १८१३ मु० लुटवारो ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(३) प्रसिद्ध विद्वान सर जार्ज आर्थर, जार्ज ग्रियर्सन, एफ० एस० ग्राउज, फादर कामिलबुल्के, ई० पी० चेलिशेव आदि विदेशी विद्वानों ने तुलसी जन्मभूमि राजापुर (बाँदा) माना है।

(४) श्री सेतसागर यंत्रालय कलकत्ता से सम्वत १९०१ वि० (सन् १८४४ ई०) में प्रकाशित संवत १९३३ वि० (सन् १८७६ ई०) में लीथो प्रिंटिंग प्रेस में प्रकाशित, सवंत १९४६ वि० (सन् १८८९ ई०) में निर्णय सागर प्रेस मुम्बई और सन् १९०० ई० से पहले सेठ खेमराज द्वारा मुम्बई प्रेस तथा वेंकटेश्वर प्रेस मुम्बई, नवल किशोर प्रेस लखनऊ से प्रकाशित और संवत् १९९६ वि० (सन् १९३९ ई०) से 'रामचरित मानस' की करोड़ों प्रतियाँ प्रकाशित करने वाला देश विदेश में प्रसिद्ध गीता प्रेस गोरखपुर तथा अन्यान्य प्रेसों ने भी राजापुर (बाँदा) में गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म सावन शुक्ला सप्तमी संवत् १५५४ विक्रमी माना है।

(५) 'गजेटियर्स' की अपेक्षा अधिक प्रामाणिक माने जाने वाले पुरातात्विक अभिलेख 'आर्क्योलाजिकल-सर्वे आफ इण्डिया' भाग (२) सन् १८९१ के पृष्ठ १५४ में बाँदा जिले के राजापुर में तुलसी जन्म स्थान और वहाँ अकबर के समय में बने मन्दिरों का उल्लेख है।[१] किन्तु इसी रिपोर्ट में सोरों या गोंडा के वर्णन में तुलसीदास जी का कोई उल्लेख नहीं है।

(६) राजापुर क्षेत्र में आज भीं यह जन मान्यता है कि तुलसीदास पत्नी रत्नावली के मार्मिक वचनों से विरागी होने के बहुत वर्षों बाद जब नाव से राजापुर यमुना घाट उतर रहे थे तब नाव में राजापुर के एक उदंड ठाकुर कुम्हार, बारी और वेश्या ने गोस्वामी जी की हँसी उड़ाई जिससे क्रुद्ध होकर उन्होंने श्राप दिया कि राजापुर में ठाकुर, कुम्हार, बारी और वेश्या सरसब्ज नहीं हो सकेंगे और जब तक राजापुर में श्री राम मंदिर नहीं बन जाता, पक्के मकान नहीं सहेंगे। तब से राजापुर बस्ती में ठाकुर, कुम्हार, बारी, वेश्या बसने से

---

1. "Manjhgawan or Rajapur, town in tahsil Mau on the right bank of the Jamuna, 10 miles N. W. of Tahsil and 50 miles E. of Banda, the residence of Hindu poet Tulsidas, passessor several temples built in time of Akbar of which that dedicated to some rare is the most important."

–"Archealogical Survay of India," voe II 1891, page 154

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डरते रहे और तुलसी जन्म स्थली में श्री राम मंदिर बनने तक पक्के मकान नहीं बने । आज भी ठाकुर, कुम्हार, बारी और वेश्यायें यहाँ बसने से डरते हैं । आज भी इतने बड़े कस्बे के लिए मिट्टी के बर्तनादि की आपूर्ति आस–पास के गाँवों के कुम्हार करते हैं ।

(७) राजापुर और उसके आस–पास के गाँवों में शदियों से प्रतिवर्ष सावन शुक्ला सप्तमी को तुलसी–जयन्ती में तुलसी जन्मोत्सव बड़े धूमधाम से मनाने की परम्परा चली आ रही है, जिसमें जन्मस्थली सम्बन्धी सारी अवधारणायें सजीव हो उठती हैं । इस दिन इस उपलक्ष्य में राजापुर तथा आसपास के क्षेत्र में पकवान बनते हैं, पूजा होती है । इस प्रकार की परम्परायें बिना मूल में सत्यता के चल ही नहीं सकती ।

(८) पितृ पक्ष में प्रतिवर्ष राजापुर में तुलसी शिष्य परम्परा के वंशज पीढ़ी दर पीढ़ी से अपने पुरखों की तरह ही गोस्वामी तुलसीदास जी को पिंडदान–तर्पण करते आ रहे हैं । यहाँ ऐसी परम्परा का चला आना कोई सामान्य बात नहीं है ।

(९) राजापुर में शादी–सुदिन बधाई पूजन में गुरुवार या सोमवर को ग्राम देवी तथा ग्राम देवता पूजन के साथ सभी वर्ग के लोगों में 'तुलसी जन्म–कुटीर' में पूजन की परम्परा सदियों से चली आ रही है ।

(१०) सन् १९१४ बन्दोबस्त में राजापुर - मझगवाँ के नक्शे में तुलसीदास जी का पैतृक निवास ७४६ आबादी नम्बर में 'तुलसी मंदिर' उर्दू में अंकित है ।

(११) राजापुर में 'मानस मंदिर' में सुरक्षित तुलसीदास जी की हस्त लिखित 'रामचरित मानस' के अवशिष्टांश 'अयोध्याकाण्ड' की भाषा लिपि प्रवृत्ति अकबर के माफीनामा में चर्चित 'गहोरा' क्षेत्र की तत्कालीन भाषा लिपि प्रवृत्ति से साम्य रखती है ।

(१२) अकबर बादशाह के हाट के माफीनामा के आधार पर राजापुर बाजार में आने वाले गल्ले आदि पर अभी तक गोस्वामी तुलसीदास जी के नाम पर खोंची निकाली जाती रही है ।

(१३) देश–विदेश में प्राथमिक विद्यालयों से विश्वविद्यालयों तक गोस्वामी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसीदास के जीवन परिचय में सैकड़ों सालों से उनका प्रामाणिक जन्म स्थान राजापुर (बाँदा) ही सर्वमान्य रहा है।

(१४) ३६ भाषाओं के विद्वान महापंडित राहुल सांकृत्यायन और सुप्रसिद्ध इतिहास एवं पुरातत्व विद प्रोफेसर कृष्णदत्त वाजपेयी ने राजापुर में प्राप्त कुषाणकालीन गुप्तकालीन तथा चन्देलकालीन मूर्तियों से राजापुर का अस्तित्व कुषाणकाल से मानते हुये उसे ही तुलसी जन्म भूमि माना है।

(१५) "तुलसीदास जी की जन्मभूमि राजापुर थी, इसमें संशय नहीं।"

–३६ भाषाओं के मर्मज्ञ श्री सिद्धेश्वर जी डी० फिल (आक्सफोर्ड) डी० लिट् (कैम्ब्रिज) सिद्धाश्रम ऋषीकेश।

(१६) "गोस्वामी तुलसीदास राजापुर के ही निवासी थे और वहीं उनका जन्म हुआ था, इसमें सन्देह नहीं।"

–हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के भू० पू० महामंत्री, साप्ताहिक 'देशदूत' के सम्पादक एवं साहित्यकार पं० ज्योति प्रसाद मिश्र 'निर्मल'

(१७) "तीन सौ वर्षों से प्राचीन लेखों एवं जनश्रुतियों के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्मभूमि लोग राजापुर को ही मानते आ रहे हैं।"

–हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के भू० पू० प्रधानमंत्री पं० जगन्नाथ शुक्ल

(१८) "यह एक प्रसिद्ध परम्परा है कि गोस्वामी तुलसीदास बाँदा जिले के राजापुर के निवासी थे।....इसमें सन्देह नहीं है कि राजापुर की प्रसिद्धि एक मात्र गोस्वामी जी के जन्मभूमि होने के कारण ही हुई है।"

–साहित्य महारथी पं० देवीदत्त जी शुक्ल सम्पादक, 'सरस्वती' प्रयाग

(१९) "सत्य बात यह है कि तुलसीदास की जन्म भूमि राजापुर ही थी, यह तथ्य उनकी भाषा से स्वतः प्रकट हो जाता है।

–डॉ० किशोरी लाल सेवा निवृत्त प्राध्यापक, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

(२०) "तुलसीदास जी सरबरिया ब्राह्मण थे और उनकी जन्मभूमि राजापुर ही है। इसमें किसी प्रकार का संदेह या तर्क करना तो बेकार है।"

–परमहंस श्री अवधबिहारीदास जी महाराज

(२१) सन् १९५२ में सर्वोदयी संत आचार्य विनोवा भावे के तुलसी जन्मभूमि राजापुर में 'तुलसी जन्म कुटीर' में सायंकालीन प्रार्थना सभा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विचार –"मुझे तुलसी के जन्मस्थान में आने पर बहुत प्रसन्नता हुई है ।...... महात्मा बुद्ध के पश्चात् तुलसी के अतिरिक्त कोई भी समाजसेवी इतना बड़ा नहीं हुआ है । लोग कहते हैं कि अकबर के समय तुलसीदास हुए पर मैं कहता हूँ कि तुलसी के सयम अकबर हुये ।"

(२२) सुप्रसिद्ध शीर्षस्थ समीक्षक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, पं० चन्द्रबली पाण्डेय, शिव सिंह सेंगर, मिश्रबन्धु, पं० रामगुलाम द्विवेदी, बाबू श्याम सुन्दरदास, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० नगेन्द्र, डॉ० उदय नारायण तिवारी, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पं० विजयानन्द, डॉ० राम कुमार वर्मा, डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, डॉ० माता प्रसाद गुप्त, डॉ० गोवर्द्धन शुक्ल, पं० रामबहोरी शुक्ल, डॉ० लक्ष्मीनारायण दुबे, डॉ० चक्रधर नलिन, डॉ० अयोध्या प्रसाद पाण्डेय, डॉ० सत्यनारायण पाण्डेय, डॉ० विश्वम्भर दयाल अवस्थी, शम्भुनाथ टण्डन, डॉ० भगवती प्रसाद सिंह, आचार्य महादेव पाण्डेय, स्वामी रामानन्द सरस्वती, गोवर्द्धन दास त्रिपाठी आदि मूर्धन्य विद्वानों ने राजापुर (बाँदा, वर्तमान चित्रकूट जनपद) को तुलसी जन्मभूमि माना है ।

(२३) महात्मा गाँधी, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन, मूर्धन्य मनीषी हनुमान प्रसाद पोद्दार, आचार्य विनोवा भावे, पं० मदन मोहन मालवीय, पं० बनारसी दास चतुर्वेदी, डॉ० गंगानाथ झा, डॉ० बी० एन० झा, रामवृक्ष बेनीपुरी, संत करपात्री जी, देवरहा बाबा, विन्दु जी, शेषजी, आमटे बाबा, जय गुरुदेव, नाना जी देशमुख, सुप्रसिद्ध कथावाचक संत मुरारी बापू, तुलसी पीठाधीश्वर स्वामी रामभद्राचार्य जी आदि मनीषियों ने राजापुर (बाँदा, वर्तमान चित्रकूट जनपद) को तुलसी जन्म स्थान माना है ।

(२४) राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, सियाराम शरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, रामधारी सिंह दिनकर, सुमित्रा नन्दन पन्त, महादेवी वर्मा, सोहनलाल द्विवेदी, अज्ञेय, केदारनाथ अग्रवाल, जयगोपाल मिश्र फतेहपुरी तथा अन्यान्य कवि–साहित्यकारों ने राजापुर (बाँदा, वर्तमान जिला–चित्रकूट) को तुलसी जन्मभूमि माना है ।)

(२५) भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू, प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी, उ० प्र. के प्रथम मुख्यमंत्री तथा भारत सरकार के गृहमंत्री पं० गोविन्दवल्लभ पंत, डॉ० सम्पूर्णानन्द,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के० एम० मुंशी, डॉ० कैलाश नाथ काटजू, कमलापति त्रिपाठी, वी० वी० गिरि, चौधरी चरण सिंह, डॉ० राम मनोहर लोहिया, चन्द्रभान गुप्त, हेमवती नन्दन बहुगुणा, मोरार जी देसाई, अटल बिहारी वाजपेयी, काशी नरेश विभूति नारायण एवं उनके पूर्वज, रीवाँ नरेश, के० के० बिड़ला, घनश्याम दास बिड़ला, पदुमपति सिंहानिया जैसी विभूतियों ने राजापुर को तुलसी जन्म स्थान माना है ।

(२६) भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था – "श्री गोस्वामी तुलसीदास का स्मारक बनाने का प्रयत्न स्तुत्य है ।.....मुझे आशा है यह गोस्वामी जी के योग्य होगा ।......"

– 'सत्यलोकवाणी", ६ मार्च से १३ मार्च सन् १९९७, पृष्ठ ३

(२७) "......यह दुख की बात है कि बाँदा जिले के राजापुर नामक ग्राम में जहाँ महाकवि का जन्म हुआ था, अब तक वहाँ उनका कोई योग्य स्मारक नहीं बन पाया है । सरकार निकट भव्शिय में इसका प्रयास करेगी ।"

– पं० गोविन्द बल्लभ पन्त, प्रथम मुख्यमंत्री उ० प्र० सरकार –
"सत्यलोकवाणी"–६ मार्च से १३ मार्च १९९७, पृष्ठ ३

(२८) भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू ने कहा था – "कभी न कभी राजापुर आने की विशेष इच्छा है ।"

– 'सत्यलोकवाणी' – ६ मार्च से १३ मार्च १९९७, पृष्ठ ३

(२९) "तुलसी स्मारक समिति राजापुर' के प्रथम अध्यक्ष पं० गोविन्द वल्लभ पंत प्रथम मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश सरकार एवं तत्कालीन गृहमंत्री भारत सरकार रहे, उनके बाद उ० प्र० के मुख्यमंत्री डॉ० सम्पूर्णानन्द जी, तत्पश्चात् कमलापति त्रिपाठी, उनके बाद के० सी० पन्त जैसी विभूतियों ने अध्यक्ष पद की शोभा बढ़ाई है । वर्तमान में इसके पदेन अध्यक्ष जिलाधिकारी चित्रकूट तथा पदेन सचिव उपजिलाधिकारी मऊ अब राजापुर, (चित्रकूट) होते हैं ।

(३०) राजापुर में प्रामणित तुलसी जन्मभूमि की ऐतिहासिकता को मान्यता देते हुये ही मूर्धन्य मनीषी भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसादजी, प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू, उत्तर प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री एवं तत्कालीन केन्द्रीय गृहमंत्री पं० गोविन्द वल्लभ पन्त, डॉ० सम्पूर्णानन्द मुख्य मंत्री उ० प्र० सरकार, तत्कालीन शिक्षा एवं सिंचाई मंत्री पं० कमलापति त्रिपाठी आदि के सौजन्य से भारत सरकार तथा उ० प्र० सरकार के संयुक्त तत्वावधान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में विश्व धरोहर "तुलसी जन्म कुटीर" (तुलसी मंदिर) और 'मानस मंदिर' की यमुना कटान से सुरक्षा के लिए सन् १९५७–'५८ ई० में लाखों की लागत से भव्य तुलसीघाट का निर्माण कराया गया जिससे यमुना कटान से आधे राजापुर कस्बे की सुरक्षा भी सुनिश्चित हो गई है।

(३१) भारत सरकार एवं उ० प्र० सरकार के सौजन्य से राजापुर (चित्रकूट) में सन् १९५७ ई० में 'तुलसी स्मारक' का शिलान्यास उ० प्र० के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री चन्द्रभान गुप्त द्वारा हुआ और सन् १९६०–६१ ई० तक ५० एकड़ के परिसर में करोड़ों की लागत से भव्य 'तुलसी स्मारक' का निर्माण कस्बे के दक्षिणी छोर पर हुआ, जिसमें भव्य मंदिर में गोस्वामी तुलसीदास जी की संगमरमर की भव्य प्रतिमा स्थापित है। जिसके विशाल सभाकक्ष तथा विशाल प्रांगण में कथा–प्रवचन एवं सार्वजनिक सभाओं का आयोजन होता रहता है।

(३२) राजापुर (चित्रकूट) में गोस्वामी तुलसीदास जी की पावन स्मृति में उनके नाम पर श्री तुलसी स्मारक संस्कृत महाविद्यालय, श्री तुलसी इण्टर कालेज तथा तुलसीदास जी एवं रत्नावली के नाम से जुड़े विद्यालय विभिन्न दुकानें, प्रतिष्ठान, सड़क, मार्ग, चौक आदि हैं।

(३३) मध्य प्रदेश शासन ने भी राजापुर (बाँदा, वर्तमान जिला चित्रकूट) को तुलसी जन्मस्थली की मान्यता दी है। इसीलिए राज्य सरकार की मध्य प्रदेश तुलसी अकादमी ने सन् १९८८–'८९ में लोकयात्रा अनुष्ठान का शुभारम्भ तुलसी की जन्मभूमि राजापुर (बाँदा) से किया था। इसमें साहित्यकार, विद्वान, पुरातत्वविद तथा चिकित्सक सम्मिलित हुये थे।

(३४) सुप्रसिद्ध साहित्यकार कवि 'अज्ञेय' ने भी 'जय–जानकी जीवन यात्रा' के अन्तर्गत नेपाल में जनकपुरी से लेकर चित्रकूट तक की यात्रा तुलसी जन्मभूमि राजापुर होते हुये की थी।

(३५) मानस मर्मज्ञ सुप्रसिद्ध कथा वाचक पं० रामकिंकर उपाध्याय जी का तुलसी जन्मभूमि सम्बन्धी कथन भी दृष्टव्य है -- "मेरी दृष्टि में तो तुलसीदास जी का जन्म चित्रकूट में हुआ। वैसे गोस्वामी जी की जन्मभूमि के रूप में राजापुर (चित्रकूट) प्रसिद्ध है। लेकिन गोस्वामी जी ने अपने ग्रन्थों में कहीं भी राजापुर को अपनी जन्मभूमि के रूप में स्मरण नहीं किया, केवल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनश्रुतियों के आधार पर यह माना जाता है कि तुलसीदास जी की जन्मभूमि राजापुर है।" –"रामकथा मन्दाकिनी", पृष्ठ २५।

(३६) सुप्रसिद्ध कथावाचक एवं तुलसी भक्त संत मुरारीबापू का राजापुर में 'तुलसी जन्म कुटीर' से पूर्व पार्श्व में यमुना कगार पर तुलसीघाट पर निर्मित भव्य 'कैलास आश्रम' (संत कुटीर), नित्य मानस पाठ, हवन, भण्डारा तथा राजापुर में नवाह्न रामकथा आयोजनों में कई बार उनके यह उद्गार–"तो ये राजापुरी दर्शन देने वाला सद्ग्रन्थ, सद्गुरु इस भूमि ने दिया है। इसलिये मैं और कुछ नहीं कहता, मैं इस भूमि को बार–बार प्रणाम करता हूँ।" –राजापुर (चित्रकूट) में तुलसी जन्मभूमि को प्रतिपादित करते हैं।

(३७) सन् १९९६ में श्री मोतीलाल बोरा राज्यपाल उत्तर प्रदेश द्वारा राजापुर (चित्रकूट) तुलसी स्मारक में 'तुलसी शोध संस्थान' के लिए २५ लाख रुपये की प्रथम किश्त की घोषणा तुलसी जन्मभूमि की मान्यता की परिपुष्टि करता है।

(३८) तुलसी जन्मभूमि राजापुर (चित्रकूट) में कालजयी विश्वकवि संतशिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी की विश्व प्रसिद्ध कालजयी अनुपम अमर कृति 'रामचरित मानस' की संवत् २०३१ विक्रमी में 'मानस–चतुश्शती' समारोह का भव्य आयोजन और संवत् २०५४ विक्रमी में 'तुलसी पंचशती' समारोह का वर्षभर चलने वाला भव्य आयोजन तुलसी जयन्ती के शुभ अवसर पर नौ दिवसीय मानस पाठ, प्रभातफेरी, भव्य झाँकियों, कथा–प्रवचन, गोष्ठियों, कवि सम्मेलनों तथा अन्यान्य रंगारंग कार्यक्रमों के साथ बड़े ही धूमधाम से प्रारम्भ हुआ जिसमें अपार जनसमूह के साथ देश के कोने–कोने से साधु–संतों, मानस मर्मज्ञ मनीषियों, कवि–साहित्यकारों, तुलसी साहित्य शोधकों, कलाकारों एवं राजनेताओं ने बड़ी संख्या में पधारकर विश्वरत्न संत शिरोमणि कविकुल गुरु को भावभीनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं। कुछ विदेशी पर्यटकों ने भी पधार कर श्रद्धा सुमन अर्पित किये। इससे तुलसी जन्मभूमि राजापुर (चित्रकूट) के प्रति लोक मानस में शदियों से परिव्याप्त लोक आस्था परिलक्षित हुई है।

⌘⌘⌘⌘

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्तः साक्ष्य (अन्तरंग साक्ष्य)

भक्तकालीन संतकवियों की यह परम्परा रही है कि उन्होंने स्वयं अपने जीवन परिचय के विषय में स्पष्ट कुछ भी नहीं कहा है, फिर भी उनकी रचनाओं में जाने–अनजाने अपने क्षेत्र, स्थान की महिमा का वर्णन, अपने क्षेत्रीय भाषा–बोली के शब्दों का प्रचुर प्रयोग तथा क्षेत्रीय आचार–व्यवहार–संस्कृति का वर्णन किसी न किसी ढंग से अवश्य समाविष्ट रहता है । उनकी रचनाओं में अन्तर्निहित इन साक्ष्यों को अन्तः साक्ष्य या अन्तरंग साक्ष्य कहते हैं । 'तुलसी चरित' के विद्वान लेखक पं० महादेव पाण्डेय के शब्दों में –"किसी कवि या लेखक के अज्ञात जीवन वृत्तान्त जानने में प्रधानतः दो बातें सम्मुख आती हैं, एक तो कवि की कृति में उसकी प्राकृत भाषा अवश्य रहती है । दूसरे उसके ग्रन्थों में अपने क्षेत्र के प्रचलित आचरणों और स्थान महिमा का वर्णन किसी न किसी ढंग से अवश्य समाविष्ट रहता है ।" –'तुलसी चरित' –पं० महादेव पाण्डेय, पृष्ठ १३

आगे वे लिखते हैं –"गोस्वामी जी के सभी वर्ण्य विषयों में चित्रकूट वर्णन अनोखा और रहस्यपूर्ण है । मातृभूमि की भूरि भक्ति से भरा हुआ यह वर्णन और तापस प्रकरण (जिसका उल्लेख आचार्य शुक्ल जी ने अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में और चन्द्रबली पाण्डेय एम० ए०, रामदास गौड़, विजयानन्द त्रिपाठी आदि रामायण के मर्मज्ञों ने कल्याण के कई अंकों में बड़े मार्मिक और रहस्यपूर्ण ढंग से किया है ।) स्पष्ट बतलाते हैं कि तुलसीदास जी की जन्मभूमि चित्रकूट प्रान्त है ।"

–"तुलसी चरित" – पं० महादेव पाण्डेय, पृष्ठ १४

गोस्वामी तुलसीदास जी की रचनाओं में निम्नांकित अन्तरंग साक्ष्य इस सन्दर्भ में दृष्टव्य हैं –

१. 'मानस' का "तापस प्रसंग:"

जन्मभूमि और गुरुद्वारा ('निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकर खेत') होने से ही तुलसीदास जी का राजापुर–चित्रकूट क्षेत्र से स्वाभाविक लगाव उनकी रचनाओं में परिलक्षित है । भगवान श्री राम, भगवती सीता और लक्ष्मण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के साथ वनवास में जाते हुए जब यमुना पार करते हैं तो कवि अत्यन्त भावावेश में दिखाई देता है । तुलसी के विश्व विख्यात अनुपम महाकाव्य 'रामचरित मानस' के अयोध्याकाण्ड के दोहा १०९ के आगे 'तापस प्रसंग' तुलसी की जन्मभूमि के सर्वाधिक सबल अन्तः साक्ष्य के रूप में माना जाता है– विदा किए बटु विनय करि, फिरे पाइ मन काम ।
उतरि नहाए जमुन जल, जो सरीर सम स्याम ।।

– रामचरित मानस –अयोध्या १०९

सुनत तीरवासी नर नारी । धाए निज निज काज बिसारी ।। -१०९।। १
सुनि सविषाद सकल पछिताहीं । रानी राय कीन्ह भल नाहीं ।।१०९।।३
तेहिं अवसर एक तापस आवा । तेज पुंज लघु वयस सुहावा ।।
कवि अलखित गति वेष विरागी । मन क्रम वचन राम अनुरागी ।।१०९।।४
दोहा – सजल नयन तन पुलकि निज इष्टदेव पहिचानि ।
परेउ दंड इव धरनि तल दसा न जाइ बरवानि ।।

–'मानस' –अयो० ११०

बहुरि लखन पायन्ह सोइ लागा । लीन्ह उठाइ उमगि अनुरागा ।।
पुनि सिय चरन धूरि धरि सीसा । जननि जानि सिसु दीन्हि असीसा ।।११०।।२
कीन्ह निषाद दंडवत तेहीं । मिलेउ मुदित लखि राम सनेही ।।
पियत नयन पुट रूप पियूषा । मुदित सुअसनु पाइ जिमि भूखा ।।११०।।३

इसके पश्चात् कवि इस प्रसंग को बीच में ही छोड़ कर फिर तटवासी नर नारियों के विषाद का वर्णन करते हुए कहते हैं –"ते पितु मातु कहहु सखि कैसे । जिन्ह पठये वन बालक ऐसे ।।"–११०/४ तापस का अकस्मात् उपस्थित होना तथा उसका वहाँ से विदा न होकर अपने आराध्य के ध्यान में मग्न हो जाना और उसको इसी अवस्था में छोड़कर गोस्वामी जी के द्वारा पुनः पिछला प्रसंग प्रारम्भ कर दिया जाना, अयोध्याकाण्ड में एक गम्भीर प्रसंग को अस्पष्ट बने रहने देना सामान्य बात नहीं है । राजापुर (चित्रकूट) में "मानस मंदिर" में सुरक्षित 'रामचरितमानस'–'अयोध्याकाण्ड' की गोस्वमी तुलसीदास जी की हस्तलिखित पाण्डुलिपि में तथा प्रायः सभी प्राचीन हस्तलिखित एवं मुद्रित प्रतियों में इस प्रसंग के उपलब्ध होने से इसे प्रक्षिप्त भी नहीं माना जा सकता है । राजापुर जिला चित्रकूट में उपलब्ध रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड की हस्तलिखित प्रति का वह पृष्ठ; जिसमें "तापस प्रसंग" का उल्लेख हुआ है –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

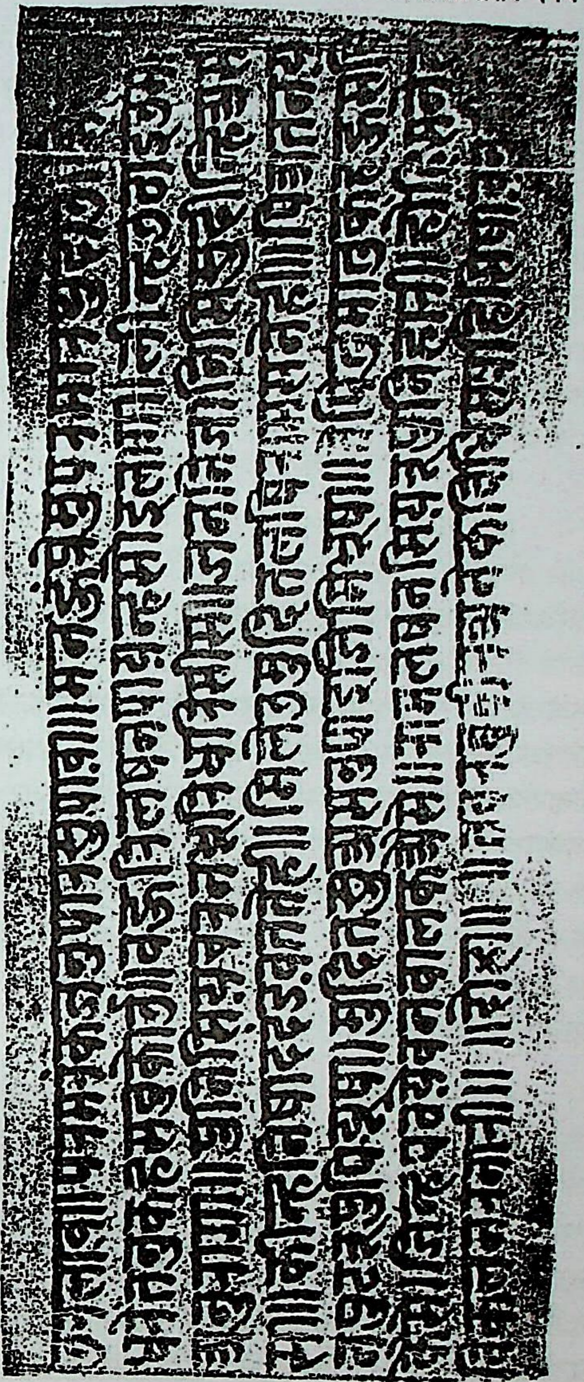

राजापुर जिला-चित्रकूट में उपलब्ध रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड की तुलसी हस्तलिखित प्रति का वह पृष्ठ, जिसमें "तापस-प्रसंग" का उल्लेख हुआ है –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस्तु यह निर्विवाद सत्य है कि यह तापस "कवि अलखित गति वेष विरागी" और कोई नहीं गोस्वामी तुलसीदास ही थे । इस सन्दर्भ में सुप्रसिद्ध समालोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कथन दृष्टव्य है –

"प्रयाग से चित्रकूट जाते हुए राम जहाँ यमुना पार करते हैं वहाँ एक तापस यकायक आ जाता है । इस ढंग से कवि ने अपने को ही तापस रूप में राम के पास पहुँचाया है और ठीक उसी प्रदेश में जहाँ के वे निवासी थे, अर्थात् राजापुर (जिला बाँदा) के पास । सबका सारांश यह है कि तुलसीदास का जन्मस्थान जो राजापुर (जिला बाँदा) प्रसिद्ध चला आता है, वही ठीक है ।"

– 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' –आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ १२८

कुछ विद्वान रामचरित मानस में वर्णित तापस प्रसंग को क्षेपक मानते हैं और अपने मत की पुष्टि में उनका मानना है कि श्रीराम के यमुना पार उतरते ही तीरवासीजन उनके वन गमन प्रसंग की जानकारी प्राप्तकर विषादयुक्त वार्तालाप करते हैं तभी अनावश्यक रूप से तापस प्रसंग जोड़ दिया जाता है – तापस आता है, प्रभु श्री राम को प्रणाम करता है, वे उसे छाती से लगाते हैं । तापस सीताजी तथा लक्ष्मण जी को भी प्रणाम करता है–निषादराज भी तापस को प्रणाम करते हैं । यह समस्त वर्णन एक दोहा तथा चार चौपाइयों में "सुनि सविषाद सकल पछिताहीं....." तथा "ते पितु मातु कहहु सखि कैसे" के मध्य समाप्त हो जाता है । इस प्रकार तथा कथित अपूर्ण प्रसंग के मध्य एक दूसरी कथा जोड़ देना, कुछ विद्वान इसे अनुपयुक्त समझते हुये तापस प्रसंग को क्षेपक मानते हैं । उनका यह भी कथन है कि इस प्रकार का गठजोड़ प्रसंग, तुलसी साहित्य में अन्यत्र कहीं नहीं है ।

यद्यपि तापस प्रसंग के पक्ष तथा विपक्ष में बहुत कुछ लिखा जा चुका है किन्तु इस प्रसंग को अनावश्यक तथा अनापेक्षित मानना तुलसी के प्रति सर्वथा अन्याय होगा, क्योंकि जिस प्रकार रामचरित मानस की आत्मा अयोध्याकांड है, उसी प्रकार अयोध्याकाण्ड की आत्मा यह तापस प्रसंग है । यह प्रसंग तो तुलसी की समस्त साधना का प्रतिफल है । उनके आराध्य इष्टदेव श्री राम उनके गृह ग्राम (यमुना तटवर्ती राजापुर) स्वयं पधार रहे हैं और यदि वह उनके दर्शनार्थ वहाँ न उपस्थित होते तब तो उनकी साधना ही अधूरी रह जाती । अस्तु उस काल तथा उस स्थान पर उनकी उपस्थिति तो अनिवार्य ही है । कवि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की कल्पना तथा भावना है कि यदि वे त्रेता युग में रहे होते तो वह स्वयं साक्षात् श्रीरामादि के दर्शन कर कृतार्थ हो गये होते। वे भी यमुना तीर वासियों की भाँति अपने इष्टदेव का दर्शन लाभ प्राप्त करते। अस्तु श्री राम के यमुना तीर पहुँचने पर तुलसी स्वयं भावनावश भावस्थ वहाँ पहुँचते हैं।

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार अमृतलाल नागर ने भी अपने सुप्रसिद्ध उपन्यास 'मानस का हंस' में तापस प्रसंग को उद्घाटित करते हुए कहा है –"…..तापस के वेश में तुलसीदास स्वयं अपनी ही कल्पना कर रहे थे। तुलसीदास इस तरह से तन्मय होकर सियाराम के शुभागमन का दर्शन कर रहे थे कि जैसे उनके सामने यह दृश्य प्रत्यक्ष हो और न देख पाने वालों के हित में वे उसे बखान कर रहे हों।" – 'मानस का हंस' पृष्ठ १८९

गोस्वामी तुलसीदास जी की विनयपात्रिका की निम्नांकित पंक्ति –

"तुलसी तोसों राम सौं, कछु नई न जान-पहिचानि"–विनयपत्रिका १९३/९ में अभिव्यक्त भावना के अनुसार वह विश्वास करते थे कि मेरे जन्मक्षेत्र में होकर जब मेरे इष्टदेव श्री राम, माता सीता और लक्ष्मण के साथ चित्रकूट गये होंगे, तब उनके स्वागत हेतु मैं उस जन्म में अवश्य ही वहाँ उपस्थित रहा हूँगा अथवा श्रीरामजी की कथा गोस्वामी जी के लिए शाश्वत सनातन सजीव थी। अतएव वे श्री राम की वनयात्रा का प्रसंग लिखते समय तन्मय हो गये और अपने जन्मस्थान में अपने प्रभु के पधारने का प्रसंग आने पर भावसमाधिस्थ वे भी भावनारूप में ग्रामवासियों के बीच पहुँचकर भगवान श्री राम के स्वागत और दर्शनानन्द की अनुभूति में ध्यान मग्न हो गये। इस सन्दर्भ में गोस्वामी तुलसीदास जी के सुप्रसिद्ध जीवनी लेखक आर० एस० पंखानिया का निम्नांकित कथन दृष्टव्य है –

"Tulsidas was so immersed in to the Katha that when Lord Ram arrived at the Yamuna, it remind Tulsidas of his own birth place, Rajapur, which is on the bank of the river Yamuna, when he says that the people ran to receive Lord Ram, Tulsidas too felt that if he had been born then, he too could have run to receive Lord Ram and receive his blessings"

–'Goswami Tulsidas ji (A biography)'–R.S. Rankhania, Page 130

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर प्रश्न उठता है कि कवि तापस रूप में ही क्यों ? कवि ग्रामवासियों तथा स्वयं अपने रूप में क्यों नहीं पहुँचता ? वहाँ उस काल में वह यमुनातीर वासियों से अनजान होता है और कहीं वे उसी का ही परिचय पूँछने लगते । अस्तु इस झमेले से बचने के लिये कवि तापस रूप में वहाँ पहुँचता है । समाज में तापस का एक विशिष्ट स्थान होता है और तुलसी ने न जाने कितने जन्मों तक प्रभु श्रीराम के सानिध्य प्राप्त करने हेतु तापस के रूप में साधना की होगी । अस्तु तुलसी तापस वेशी अपने आराध्यदेव के समक्ष तापस रूप में ही पहुँचते हैं और तीरवासियों की वार्ता के मध्य ही उन्हें प्रभु के दर्शन हो जाते हैं । यहाँ यह मानना है कि तापस ने यमुना तीरवासियों की वार्ता में व्यवधान डालकर प्रभु से साक्षात्कार किया, उचित नहीं है जब कि तीरवासी जन प्रभु के वनगमन का समाचार जानकर परस्पर वार्ता करते हुए विषाद कर रहे थे और प्रभु श्रीराम से उनकी कोई वार्ता नहीं हो रही थी, तब तापस को सुयोग मिला और जब तापस मिलन समाप्त हो गया, तब तक तीरवासियों की विषाद वार्ता भी समाप्त हो गई । तीरवासी नारियाँ आपस में वार्ता करते हुए कहती हैं –"ते पितु मातु कहहु सखि कैसे । जिन्ह पठए वन बालक ऐसे ।" –मानस, अयो० ११०।।४

तापस प्रसंग के कारण यमुना तीरवासियों की वार्ता में कोई व्यवधान नहीं पड़ा । बल्कि यह तापस प्रसंग तो यमुना तीरवासी नर–नारियों की वार्ताओं को जोड़ने की एक कड़ी है, अन्यथा इन वार्ताओं के मध्य का व्यवधान खटकता ही रहता ।

किसी वार्ता अथवा सम्वाद के मध्य तापस प्रसंग के समावेश की भाँति रामचरित मानस में ही अनेक प्रसंग हैं । उदाहरणार्थ चित्रकूट दरबार में भगवान श्री राम के यह कहने पर –

"मन प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करौं सोइ आजु ।
सत्य–संघ रघुबर वचन सुनि भा सुखी समाजु ।।"

–रामचरित मानस–अयो० २६४

भरतजी के उत्तर देने के पूर्व अर्थात् श्री राम तथा भरत जी के सम्वाद के मध्य देवराज इन्द्र का सन्देह तथा गुरु बृहस्पति का उन्हें समझाने का प्रसंग जोड़ दिया गया है –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"सुरगन सहित सभय सुर-राजू । सोचहिं चाहत होन अकाजू ।।" से
"मन थिरकरहु देव डर नाहीं । भरतहिं जानि राम परछाँहीं ।।"

तक, अयोध्याकाण्ड के दोहा २६४ समेत बारह चौपाइयाँ तथा २६५वाँ दोहा का समावेश इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है । इसी प्रकार का एक अन्य प्रकरण सुन्दरकाण्ड में भी है । सीता अन्वेषण के पश्चात् किष्किन्धा वापस आने पर हनुमानजी के कार्यों की प्रशंसा करते हुए श्रीराम के यह कहने पर -

"सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं । देखेउँ करि विचार मन माहीं ।"

-सुन्दरकाण्ड ३१।।७

हनुमान जी प्रभु के चरणों को पकड़ कर प्रणाम करते हैं और उनके द्वारा बार-बार उठाने पर भी उठना नहीं चाहते हैं -

इस प्रसंग के बीच शिवजी के प्रसंग का समावेश होता है -

"प्रभु कर पंकज कपि कर सीसा । सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ।।
सावधान मन करि पुनि संकर । लागे कहन कथा अति सुन्दर ।।"

-'मानस' सुन्दर० ३२।।२, ३

इस प्रसंग के समावेश के पश्चात् पूर्व प्रकरण के क्रम में प्रभु श्रीराम हनुमान जी को उठाकर हृदय से लगाते हैं -

"कपि उठाइ प्रभु हृदय लगावा ।
कर गहि परम निकट बैठावा ।"

-'मानस' सुन्दर० ३२।।४

अस्तु यमुना तीरवासी जनों की वार्ता की समाप्ति पर जब वे विषाद करते हैं, उस समय तापस का आगमन कोई अनहोनी घटना नहीं है और न किसी प्रकार गठजोड़ ही है ।

तापस स्वरूप का निरूपण :-

रामचरित मानस के प्रसिद्ध टीकाकार पं० ज्वाला प्रसाद पोद्दार तथा पं० रामेश्वर भट्ट इस तापस को अग्निदेव मानते हैं; जो श्री राम के रक्षार्थ तापस रूप में उपस्थित हुये थे । कुछ विद्वानों की धारणा है कि यह तापस अगस्त्य ऋषि के शिष्य थे, जो श्रीराम के दर्शनार्थ उपस्थिति हुये थे । कुछ विद्वान मानते हैं कि स्वयं भगवान शिव तापस रूप में पधारे थे । कुछ विद्वान उस तापस को हनुमान जी को मानते हैं । इसी प्रकार कुछ विद्वानों ने अपनी विद्वता और सूझ-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बूझ के अनुसार अन्यान्य अपने-अपने मत व्यक्त किये हैं और उनकी पुष्टि में प्रमाण भी दिये हैं, किन्तु इस बिन्दु पर प्रकाश नहीं डाला गया है कि श्रीराम के यमुना नदी पार कर दूसरे तट (राजापुर, जनपद, चित्रकूट) पर ही यह तापस जिस रूप में, चाहे जो भी रहा हो, क्यों प्रकट हुआ ? वनवास हेतु अयोध्या से प्रस्थान करके श्री राम ने सीता, लक्ष्मण सहित पहिला रात्रि निवास तमसा तटपर दूसरी रात्रि विश्राम श्रृंगवेरपुर में सिंसुपा वृक्ष (अशोक) के नीचे तथा तीसरा रात्रि निवास प्रयाग में भारद्वाज मुनि के आश्रम में किया था और चौथे दिन यमुना नदी पार कर दूसरे तट पर तीरवासी जनों से मिले थे –

"विदा किए बटु विनय करि, फिरे पाइ मन काम ।
उतरि नहाए जमुन जल, जो सरीर सम स्याम ।।

–रामचरित मानस–अयो० १०९

सुनत तीरवासी नर नारी । धाए निज निज काज बिसारी ।।"

–रामचरितमानस–अयो० १०९।।१

अस्तु यदि तापस अग्निदेव थे, और वे श्रीराम के रक्षार्थ आये थे, तब तो उन्हें कम से कम श्रीराम के द्वितीय रात्रि निवास में आना था जब उन्होंने घोर जंगल में एक विटप के नीचे रात्रि विश्राम किया था । भगवान शिव को तो अयोध्या से ही वनयात्रा प्रारम्भ करने से ही रक्षार्थ साथ आना चाहिये था, क्योंकि वे तो श्रीराम के अनन्य प्रेमी थे । यदि तापस अगस्त्य मुनि के शिष्य थे, तब तो उनके लिये श्री राम से मिलने का सर्वोत्तम स्थल प्रयाग में भारद्वाज आश्रम ही था ।

तापस को भगवान शिव, अग्निदेव अथवा अगस्त्य ऋषि के शिष्य मानने में एक और भी कठिनाई है । तापस भगवान राम को धरती पर लेटकर दण्ड प्रणाम करता है, फिर लक्ष्मण जी के पाँव पड़ता है, सीता जी के चरणों की धूलि मस्तक में धारण कर प्रसन्नतापूर्वक निषादराज से मिलता है –

"सजल नयन तन पुलकिनिज इष्टदेव पहिचानि ।
परेउ दंड जिमि धरनि तल, दसा न जाइ बखानि ।।

–रामचरितमानस–अयो० ११०

बहुरि लखन पायन्ह सो लागा । लीन्ह उठाइ उमागि अनुरागा ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुनि सिय चरन धूरि धरि सीसा । जननति जानि सिसु दीन्हि असीसा ।।
– 'रामचरितमानस' – अयो० ११०।।२

कीन्हि निषाद दंडवत तेही । मिलेउ मुदित लखि राम सनेही ।।''
– 'रामचरितमानस – अयो० ११०।।३

भगवान शिव और अग्निदेव तो भगवान राम के सम्मानीय हैं फिर भगवान शिव और अग्निदेव और अगस्त्य ऋषि के शिष्य ही भगवान श्री राम को धरती पर लेट कर दण्ड प्रणाम क्यों करेंगें, साधारण प्रणाम क्यों नहीं ? इसी प्रकार वे लक्ष्मण जी के पाँव क्यों पड़ेंगें तथा सीता जी के चरणों की धूलि मस्तक पर क्यों धारण करेंगें और उन्हें अपने इष्टदेव (भगवान श्रीराम) को पहिचानने की भी क्या आवश्यकता थी, वे तो उन्हें पहिचानते ही रहे होंगे । अगर तापस हनुमान जी रहे होते तो पूर्व परिचित होने से किष्किंधा में फिर क्यों न पहिचान पाते ? –

''को तुम स्यामल गौर सरीरा ।'' छत्री रूप फिरहु बनबीरा ।।''
– 'रामचरितमानस' – किष्किंधाकाण्ड १।४

इन सभी तथ्यों एवं तर्कों के आधार पर निश्चय ही यह कहा जा सकता है कि वह तापस कवि तुलसीदास ही हैं जो श्रीराम को धरती पर लेट पर दण्डवत प्रणाम करते हैं, लक्ष्मण जी के पाँव पड़ते हैं, सीता माता की चरणरज मस्तक में धारण करते हैं तथा निषादराज से प्रसन्नता से मिलते हैं । तुलसीदास जी को अपने इष्टदेव भगवान श्रीराम को पहिचानने की भी आवश्यकता नहीं थी क्योंकि वे तो भावना जगत में त्रेता के श्रीराम को 'कवि अलखित गति वेशविरागी' रूप में कलियुग में देख रहे हैं ।

तापस के सम्बन्ध में एक विचारणीय विन्दु यह भी है कि यमुना पार उतरते ही यमुना के दूसरे तट (चित्रकूट जनपदीय राजापुर) पर तापस आगमन क्यों होता है ? इसका विशेष कारण यही है कि राजापुर तुलसी की जन्मभूमि है । सभी को अपनी जन्मभूमि से एक विशेष लगाव होता है । इसीलिये अपने इष्टदेव के अपने जन्मस्थान पर पहुँचते ही, तुलसी पहले राजापुर के तीरवासियों से उनका परिचय करातें हैं और जब तीरवासी जन श्रीराम के वनगमन का कारण जानकर सविषाद पश्चाताप करते हैं तब एकान्त मौका पाकर तुलसी स्वयं तापस रूप में अलखित गति से पहुँच कर अपने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आराध्य देव श्री राम का स्वागत और दण्डवत् प्रणाम कर जीवन लाभ प्राप्त करते हैं।

इस सन्दर्भ में श्री तुलसी पीठाधीश्वर जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज विरचित 'मानस' में तापस प्रसंग' दृष्टव्य है –

''तापसं राघवं नौमि तापसीं नौमि जानकीम्।
तापसं तुलसीदासं कवीनां नौम्यहं गुरुम्।।''

–'मानस में तापस प्रसंग' –जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी

''गिरिधर गुरु पितु मातु प्रभु हरन सकल भव त्रास की।
जय जय तापस रूप गोस्वामी तुलसीदास की।।''

–'मानस में तापस प्रसंग' –जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी, पृष्ठ ९४

जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज 'मानस में तापस प्रसंग' को सुस्पष्ट करते हुये कहते हैं –"श्री विनय पत्रिका का समर्पण दृश्य भी पूज्यपाद को भाव समाधि में गोचर हुआ और स्वाभाविकतया श्री राघवेन्द्र की इच्छा से लिपिबद्ध भी हो गया। यथा –

''मारुति मन रुचि भरत की लखि लखन कही है।
कलिकालहु नाथ! नाम सों परतीति–प्रीति
एक किंकर की निबही है।।१।।
सकल सभा सुनि लै उठी, जानी रीति रही है।
कृपा गरीब निवाज की, देखत गरीब को,
साहब बाँह गही है।।२।।
बिहँसि राम कह्यो सत्य है, सुधि मैं हूँ लही है।
मुदित माथ नावत बनी तुलसी अनाथ की,
परी रघुनाथ हाथ सही है।।३।।''

–'विनय पत्रिका' –(अन्तिम छन्द)

"जिस मनीषी को भाव समाधि में सूक्ष्म श्री साकेत का दर्शन तथा श्री लक्ष्मण की सम्मति एवं श्रीरामभद्र जू का हस्ताक्षर, ये सब दृष्टिगोचर हो सकते हैं, तो क्या श्रीरामभद्र के समक्ष तापस रूप में अपना अवलोकन असत्य माना जा सकता है?"

–'मानस में तापस प्रसंग' –जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज, पृष्ठ ८९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस सम्बन्ध में सुप्रसिद्ध समालोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत है कि "भक्त कवि प्राय: अपने इष्टदेव के साथ अपनी स्थिति का लक्ष्य करा देते हैं। तुलसी तथा सूर दोनों ने कथा प्रसंग में अपने को प्रकट अथवा गुप्त रूप में राम तथा कृष्ण के समीप तक पहुँचाया है और जिस स्थान पर ऐसा हुआ है, वह कवि के निवास स्थान का पूरा संकेत भी है।"

– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', पृष्ठ ९१

अस्तु यमुना नदी पार करते ही चित्रकूट जनपदीय राजापुर में जहाँ तुलसी का जन्म स्थान है, वहाँ अपने परम आराध्य श्रीराम के पहुँचने पर तुलसी तापस के रूप में प्रकट होते हैं और इष्टदेव का अपने जन्मभूमि में स्वागत और दण्डवत प्रणाम कर अपने को कृत कृत्य करते हैं।

तुलसी की भाँति इनसे पहले भक्त महाकवि सूरदास जी ने भी 'सूरसागर' के दशम् स्कन्ध के प्रारम्भ में अपने इष्टदेव श्रीकृष्ण जी के साक्षात्कार करने हेतु 'ढाढ़ी' के रूप में नन्द जी के द्वार तक अपने को पहुँचाया है –

"नन्द जू! मेरो मन आनन्द भयौ हौं गोवर्द्धन तें आयौ।
तुम्हरो पुत्र भयौ हौं सुनिके अति आतुर उठि धायौ।।
हौं तो तेरे घर कौ ढाढ़ी, सूरदास मेरो नाउँ।।"

– 'सूरदास' – दशम् स्कंध, पद ६५३

"हौं तो तुम्हारे घर कौं ढाढ़ी, नाउँ सुनें सचु पाऊँ।
जब तुम मदन मोहन कहि टेरौ, यह सुनिकै घर जाऊँ।।"

– 'सूरसागर' – दशम् स्कंध, पद ६५५

"मैं तेरे घर कौ हौं ढाढ़ी, मो सरि कोउ न आन।"

– 'सूरसागर' – दशम् स्कंध, पद ६५९

भक्त लोग जन्म–जन्मान्तर से अपने को अपने इष्टदेव का सेवक मानते हैं और इसी भावना से कथा प्रसंग में अपने को उनके सम्मुख प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में प्रकट करते हैं। तुलसी भी इसी भावना से प्रेरित होकर अपनी जन्मभूमि राजापुर (जनपद–चित्रकूट) में अपने आराध्य श्रीराम के पदार्पण करने पर तापस रूप में प्रकट हुये हैं।

महाकवि सूरदास द्वारा तापस प्रसंग की पुष्टि –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तापस प्रसंग की वास्तविकता की पुष्टि भक्त कवि सूरदास ने भी अपनी कृति –"रामचरितावली" में किया है –

"बचन समझ नृप आज्ञा कीन्ही, देव उपाय करौ ।
रामचंद पितु आज्ञा मानी, जिय मैं बचन धरौ ।।
यह भू भार उतारन रघुपति, बहुत ऋषिन सुख दैन ।
बनोवास को चले सिया संग, सुखनिधि राजिव नैन ।।
मारग मैं हरि कृपा करी है, परम भक्त इक जान ।
तहँ तै गये चित्रकूट कों, जहाँ मुनिन की खान ।।'

–'सूर रामचरितावली', पद २०८

'सूर रामचरितावली' का "*परम भक्त इकजान*" पद बड़ा सारगर्भित है । यहाँ कवि का आशय है कि जब त्रेता युग में श्री राम ने यमुना पार किया होगा, तब तुलसीदास जी ने भी अपने त्रेतायुगीन जन्म में यमुनातीर वासियों के साथ प्रभु का दर्शन किया होगा । इस कारण तापसरूप में तुलसी के त्रेतायुगीन जन्म को पहचानने की आवश्यकता पड़ी थी । श्री राम ने इस प्रकार उन्हें पहचान कर उन पर कृपा की और वहीं से वे चित्रकूट चले गये ।

राजापुर क्षेत्र में प्रचलित लोकगीत में तापस प्रसंग की पुष्टि –

महाकवि सूरदास के उपरोक्त 'तापस प्रसंग' के वर्णन का पूर्ण साम्य राजापुर (चित्रकूट) क्षेत्र के बहुचर्चित लोकगीत में भी उपलब्ध है –

"जेठ मास मुनि आश्रम आयो, पुनि पहुँचे यमुना तट मा ।
राजापुर मा एक भगत मिला, चित्रकूट पहुँचे दुसरे दिन मा ।।"

–(बारह मासा में वर्णित रामकथा से)

वनवास के समय श्री राम ज्येष्ठ मास में मुनि भारद्वाज के आश्रम में आये । वहाँ से यमुना तट (राजापुर) पर पहुँचे । वहाँ प्रभु एक भक्त (तापस रूप में तुलसी) से मिले और उसके दूसरे दिन चित्रकूट पहुँच गये ।

इस प्रकार महाकवि तुलसीदास तथा सूरदास के साहित्य और राजापुर (चित्रकूट) क्षेत्र के बहुचर्चित उपरोक्त लोकगीत से तापस प्रसंग की पुष्टि होती है और इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि वह तापस और कोई नहीं अपितु, स्वयं तुलसीदास ही थे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस सन्दर्भ में डॉ० आर० सी० प्रसाद पूर्व आंग्ल भाषा विभागाध्यक्ष पटना विश्वविद्यालय द्वारा अंग्रेजी में प्रस्तुत रामचरित मानस का भावानुवाद भी दृष्टव्य है, जिसमें तुलसी पीठाधीश्वर स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज द्वारा प्रणीत 'मानस में तापस प्रसंग' पुस्तक की चर्चा और उसमें व्याख्यायित तुलसी की जन्मभूमि राजापुर (चित्रकूट) की प्राणाणिकता का युक्ति युक्त प्रतिपादन सम्पूर्ण संसार को तुलसीदास जी की जन्मभूमि के रूप में राजापुर (चित्रकूट) को ही नमन करने के लिये श्रद्धावनत कर रहा है।

२. तापसी प्रसंग – तापस प्रसंग के अनुशीलन में मन में यह प्रश्न अचानक उभरा कि गोस्वामी जी की दृष्टि उसी गाँव में तपस्यारत उनकी धर्मपत्नी रत्नावली की ओर क्यों नहीं गई ? जब वे 'अलखित गति' से अपने जन्मभूमि से वन जाते अपने इष्टदेव भगवान राम माता सीता और लक्ष्मण जी को प्रणाम करने पहुँचते हैं तो उसी गाँव में रहने वाली उस देवी को उनके दर्शन कराने क्यों नहीं ले जाते ? उत्तर तुलसी साहित्य में ही मिल गया। 'गीतावली' में गोस्वामी जी ने स्पष्ट लिखा है –

''सखिहिं सुसिख दई प्रेम मगन भई,
सुरति बिसरि गई अपनी ओही।
तुलसी रही है ठाढ़ी पाहन गढ़ी-सी काढ़ी,
कौन जानै कहाँ ते आई, कौन की कोही ।।''

–'गीतावली' –अयो० १९/४

(इस प्रकार सखी को सुशिक्षा दे, वह प्रेम में डूब गई और उसे अपनी सुधि जाती रही। तुलसीदास कहते हैं – फिर तो वह पत्थर में गढ़कर काढ़ी हुई (मूर्ति) के समान ज्यों की त्यों खड़ी रह गई। फिर यह कौन जाने कि वह कहाँ से आई थी और किसकी कौन लगती थी।)

तापस प्रसंग लिखने वाले संत तुलसीदास के इस संकेत से यह जाना जा सकता है कि यह देवी और कोई नहीं बल्कि रत्नावली हैं। इसे हम 'तापसी प्रसंग' की संज्ञा दे सकते हैं।

इस प्रकार 'तापस प्रसंग' और 'तापसी प्रसंग' से तुलसी जन्म स्थान के विवाद पर पूर्ण विराम लग जाता है और यह स्पष्ट हो जाता है कि तुलसी जन्म भूमि राजापुर (जनपद चित्रकूट) ही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३. जन्मभूमि और गुरुभूमि के प्रति प्रेम – जब तुलसीदास जी के इष्टदेव भगवान श्री राम अपनी जन्मभूमि अयोध्या को बैकुण्ठ से भी श्रेष्ठ बतलाकर उसके प्रति अपना अनुराग व्यक्त करते हैं –गोस्वामी जी के ही शब्दों में –

"जद्यपि सब बैकुण्ठ बखाना । वेद पुरान विदित जग जाना ।।
अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ । यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ ।।"

– 'मानस' – उत्तरकाण्ड ३।।२

"अति प्रिय मोहिं यहाँ के बासी । मम धामदा पुरी सुखरासी ।।"

–'मानस' उत्तर० ३।।३

तब कवि का अपनी जन्मभूमि (विक्रमपुर–राजापुर का तत्कालीन नाम) पालन–पोषण भूमि (चित्रकूट के नजदीक हरिहरपुर) और गुरुभूमि (चित्रकूट परिक्रमा मार्ग में नरहरि आश्रम) के प्रति अनन्य अनुराग व्यक्त करना स्वाभाविक ही है । इसी कारण इस क्षेत्र के प्रति विशेष लगाव से ही रामचरित मानस– अयोध्याकाण्ड में 'तापस प्रसंग और उसके बाद मुख्य कथानक को आगे बढ़ाते १५ किमी० बाल्मीकि आश्रम तक पहुँचने में १५ दोहों–चौपाइयों में और बाल्मीकि वार्ता–प्रसंग ९ दोहों–चौपाइयों में, फिर वहाँ से ३५ किमी० चित्रकूट पहुँचने में मात्र उसी एक १३२वें दोहा–"चित्रकूट महिमा अमित कही महामुनि गाइ ।

आइ नहाए सरित बर सिय समेत दोउ भाइ ।। 'मानस'–अयो० १३२

और उसके आगे चित्रकूट वर्णन १० दोहों–चौपाइयों में तथा अपने अन्य ग्रन्थों में भी इन प्रसंगों के मर्म स्पर्शी विशद वर्णन में कवि का मन विशेष रमा है । राजापुर क्षेत्र का हृदयहारी विशद वर्णन तो विशेष दृष्टव्य है –

जो पुर गाँव बसहिं मग माहीं । तिनहिं नाग सुर नगर सिहाहीं ।।

–'मानस' –अयो० ११२।।६

जे सर सरित राम अवगाहहिं तिन्हहिं देव सर सरित सराहहिं ।।

–'मानस' –अयो० ११२।।३

दोहा– एक देखि बट छाँह भल डासि मृदुल तृन पात ।
कहहिं गवाँइअ छिनकु श्रम गवनब अबहिं कि प्रात ।।

–'मानस' –अयो० ११४

एक कलस भरि आनहि पानी । अँचइअ नाथ कहहिं मृदबानी ।।

– 'मानस' –अयो० ११४।।१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामिन अविनय छमबि हमारी । बिलग न मानब जानि गवांरी ।।

– 'मानस' –अयो० ११५ ।।४

कोटि मनोज लजावनि हारे । सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे ।

– 'मानस' –अयो० ११६।।१

बहुरि बदन विधु अंचल ढाँकी । पिय तन चितइ भौंह करि बाँकी ।।

–'मानस' अयो० ११६।।३

खंजन मंजु तिरीछे नयननि । निज पति कहेउ तिन्हहिं सिय सयननि ।।

– 'मानस' – अयो० ११६।।४

गाँव गाँव अस होइ अनन्दू । देखि भानुकुल कैरव चन्दू ।।

–'मानस' –अयो० १२१।।१

धन्य सो देस सैल बन गाऊँ । जहँ–जहँ जाहिं धन्य सोइ ठाऊँ ।।

–'मानस' आयो० १२१।।३

तब रघुबीर श्रमित सिय जानी । देखि निकट बटु सीतल पानी ।।
तहँ बसि कंद मूल फल खाई । प्रात नहाइ चले रघुराई ।।

–'मानस' –अयो० १२३।।२

देखत बन सर सैल सुहाए । बाल्मीकि आश्रम प्रभु आए ।।

–'मानस' – अयो० १२३।।३

चित्रकूट महिमा अमित कही महामुनि गाइ
आइ नहाए सरित वर सिय समेत दोउ भाइ ।।

–'मानस' –अयो० १३२

नीलकंठ कलकंठ सुक चातक चक्क चकोर ।
भाँति भाँति बोलहिं बिहग श्रवन सुखद चितचोर ।

–'मानस' –अयो० १३७

चित्रकूट के बिहग मृग बेलि बिटप तृन जाति ।
पुन्य पुंज सब धन्य अस कहहिं देव दिन राति ।।

–'मानस' –अयो० १३८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जबकि रामचरित मानस में श्री राम वनगमन में गंगापार करने से यमुनापार होने तक करीब दो सौ किमी० का वर्णन १०४ दोहे से १०९ दोहे अर्थात् कुल ५ दोहे –चौपाइयों में, प्रयाग से करीब ८० किमी० यमुना पार करने का वर्णन १०८ दोहे से १०९ दोहे अर्थात् कुल एक दोहा–चौपाइयों में ही किया है ।

इसी प्रकार प्रभु राम के परम भक्त भाई भरत के ससमाज राम को मनाने चित्रकूट जाने में यमुनापार करने के बाद उनके स्वागत–सत्कार, शिष्टाचार और प्राकृतिक वर्णन में मानस–अयोध्याकाण्ड के दोहे २२० से दोहे २३९ तक, इसके बाद चित्रकूट दरबार के हृदय स्पर्शी विशद वर्णन में दोहे ३२१ तक कवि का जैसा मन रमा है वैसा अयोध्या से लेकर लंका से प्रत्यागमन तक अन्यत्र कहीं नहीं दृष्टिगोचर होता है । यमुना पार करने से लेकर चित्रकूट तक का ऐसा ही विशद वर्णन तुलसीदास जी के अन्य ग्रन्थों में भी हुआ है ।

रामकथा के आदि आधार ग्रन्थ आदि कवि महर्षि बाल्मीकि कृत 'रामायण' तथा अन्यान्य रामकथा ग्रन्थों में इस क्षेत्र का ऐसा हृदयस्पर्शी वर्णन अन्यत्र कहीं नहीं मिलता । तुलसी का चित्रकूट क्षेत्र के प्रति असीम प्रेम एवं लगाव कवितावली, गीतावली, दोहावली, विनयपत्रिका, रामाज्ञा प्रश्न आदि में भी सुस्पष्ट है । इससे इस क्षेत्र के प्रति उनके जन्मजात लगाव का स्पष्ट संकेत मिलता है ।

४. सूकर खेत – स्वयं गोस्वामी तुलसीदास ने 'गीतावली' में बड़े स्पष्ट शब्दों में चित्रकूट में बाराह अवतरण (सूकरखेत) का बड़ा सजीव वर्णन किया है –

> "सिखर परस घन घटहिं मिलति बग पाँति सो छवि कवि बरनी ।
> आदि बराह बिहरि बारिधि मनो उठ्यो है दसन धरि धरनी ।।
> जलयुत बिमल सिलनि झलकत नभ बन–प्रतिबिंब तरंग ।
> मानहु जग रचना विचित्र बिलसति बिराट अंग–अंग ।।"

–'गीतावली' –अयोध्याकाण्ड, ५०–४,५

(जब बगुलों की पंक्ति शिखर को स्पर्श करके श्याम घटाओं से मिलती है, तो उसकी छबि कवि इस प्रकार वर्णन करता है, मानों आदि वाराह समुद्र मुें क्रीड़ा कर दाँतों पर पृथ्वी धारण कर उससे बाहर निकाले हैं । (यहाँ चित्रकूट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर्वत आदि वाराह है, बगुलों की पंक्ति दाँत है और घटायें पृथ्वी हैं) जल से भरी हुई निर्मल शिलाओं में आकाश और वन का प्रतिबिम्ब ऐसा झलकता है, जैसे विराट भगवान के अंग–प्रत्यंग में संसार की विचित्र रचना प्रतिफलित हो रही हो ।)

(यह अर्थ गीता प्रेस, गोरखपुर द्वारा सम्पादित 'गीतावली' से लिया गया है ।) प्रस्तुत विवरण की ही भाँति 'वाराहावतार' का वर्णन वाराहपुराण में भी है –

"षट सहस्त्राणि चोच्छायो विस्तारेण पुनस्ययः ।
एवं नव सहस्त्राणि योजनानां विधाय च ।।
वामया दांष्ट्रया गृह्य उज्जहारं च मेदिनीम् ।
सपर्वत वनाकारां सप्त द्वीपां रूपन्तनाम् ।।"

– वाराह पुराण, अ० ११२, श्लोक ६७

(वह (ब्रह्म) छह हजार योजन ऊँचे तथा तीन हजार योजन चौड़े थे । इस प्रकार अपने को नौं हजार योजन विस्तृत कर अपने बायें दाँतों से पृथ्वी का उद्धार किया, जिस (पृथ्वी) में अनेक पर्वत, वन, सातों द्वीप तथा नगर थे ।)

'अग्नि पुराण' में भी वाराहावतार का इसी प्रकार वर्णन है –

"आदि युग में भगवान वाराह ने महासागर के जल में जहाँ बड़ी–बड़ी ऊँची लहरें उठ रही थीं, डूबी हुई पृथ्वी को जैसे हाथी सूँड़ से कमल को उठा लेता है, उसी प्रकार स्वयं अपनी दाढ़ से उठाकर जल के ऊपर स्थापित किया ।"

–(अग्निपुराण, अ० २५ श्लोक २५)

इस प्रकार के पौराणिक वर्णनों का तुलसी के वाराहावतार वर्णन के साम्य से सम्यक् रूपेण स्पष्ट होता है कि तुलसी के अनुसार "सूकर खेत" चित्रकूट का ही शूकर क्षेत्र था, जहाँ उन्होंने बालपन में अपनी पालन स्थली हरिहरपुर से दो–ढाई कोस पहुँचकर गुरुमुख (नरहरिदास) से रामकथा सुनी थी । जैसी कि जनमान्यता है कि अभुक्तमूल नक्षत्र में पैदा होने तथा माता की मृत्यु के बाद चित्रकूट के निकट उनकी धाय चुनिया की ससुराल हरिहरपुर में उनका पालन–पोषण हुआ, जहाँ से चित्रकूट का 'सूकर खेत' नजदीक है ।

५. आत्मपरक उद्धरण – कवितावली, गीतावली, दोहावली और विनयपत्रिका आदि की आत्मपरक पंक्तियाँ इस सत्य की गवाह हैं कि माता–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पिता ने उन्हें जन्मते ही त्याग दिया था और उन्हें बचपन से ही द्वार-द्वार भटकना पड़ा –

(१) "मातु पिता जग जाय तज्यो, विधि हू न लिखो कछु भाल भलाई।
नीच निरादर - भाजन कादर, कूकर टूकन लागि ललाई।।"

– कवितावली, ७, ५७

(२) "जननि जनक तज्यो जनमि" – विनय पत्रिका, २७५।।२

(३) "तनु जन्यो कुटिल कीट ज्यों, तज्यो मातु पिता हूँ।।"

– विनय पत्रिका २७५।।२

(४) "जायो कुल मंगल, बधावनो बजाओ सुनि,
भयो परिताप पाप जननी जनक को।
बारे तें ललात बिललात द्वार-द्वार दीन,
जानत हौं चारिफल चारि ही चनक को।।" – कवितावली ७, ७३

(५) "जाति के, सुजाति के, कुजाति के, पेटागिबस,
खाये टूक सबके, विदित बात दुनी सो।।"

– कवितावली – उत्तरकाण्ड, ७२

(६) "द्वार-द्वार दीनता कही, काढ़ि रद, परि पाहू।"

– विनय पत्रिका २७५।।१

(७) "टूकन को घर-घर डोलत...." – 'हनुमान बाहुक'

(८) "कहा न कियो, कहाँ न गयो, सीस काहि न नायो।"

–विनय पत्रिका २७६।।१

उपरोक्त उद्धरणों से स्पष्ट होता है कि तुलसी एक गाँव से दूसरे गाँव और एक नगर से दूसरे नगर फिरते रहे। चित्रकूट से तुलसी का असीम लगाव देखते हुए यह निश्चित है कि वे इस प्रसिद्ध तीर्थ में बचपन से ही रहे थे क्योंकि ऐसी दीन दशा का समाधान ऐसे ही तीर्थ में सम्भव था। यह भी सही है कि तुलसी को रामभक्ति की प्रेरणा चित्रकूट से ही मिली थी। बाबा वेणीमाधवदास कृत 'मूलगोसाई चरित' का दोहा –

"चित्रकूट के घाट पर भइ संतन की भीर।
तुलसीदास चंदन घिसैं तिलक देत रघुबीर" ।।२४।। तो सर्वविदित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही है । वस्तुतः चित्रकूट उनकी आत्मा की संजीवनी बन चुका था –

"भव भुजंग तुलसी नकुल डसत ज्ञान हर लेत ।
चित्रकूट एक औषधी चितवत होत सचेत ।।" –दोहावली १८०

इसलिये अपनी यायावरी जिन्दगी से थक कर कवि बचपन से ही अन्तश्चेतना में बैठे हुए चित्रकूट में एक अलौकिक शांति पाता है –

(१) "अब चित चेत चित्रकूटहिं चलु ।
तुलसी तोहि विशेष बूझिये एक प्रतीति प्रीति एकै बलु ।।"

– विनयपत्रिका २४–६

(२) "तुलसी जौ राम सों सनेह साँचो चाहिए,
तो सेइए सनेह सों विचित्र चित्रकूट सो ।।"

– कवितावली, उत्तरकाण्ड १४१

६. ऐसी जनश्रुति और जनमान्यता चली आ रही है कि हनुमान भक्त गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी जन्मभूमि राजापुर (तत्कालीन नाम विक्रमपुर) में 'संकटमोचन हनुमान जी' की प्रतिमा स्थापित की थी । 'हनुमान चालीसा' के प्रारम्भ में ही गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी जन्मभूमि विक्रमपुर (राजापुर का तत्कालीन नाम) का स्पष्ट संकेत किया है –

'महावीर विक्रम बजरंगी । कुमति नेवार सुमति के संगी ।।'

– 'हनुमान चालीसा' – दूसरी चौपाई

उन्होंने 'हनुमान चालीसा' –हनुमानाष्टक में भी संकेत करते हुए कहा है–

"को नहिं जानत है जग में कपि संकटमोचन नाम तिहारो ।।"

उल्लेखनीय है कि गोस्वमी तुलसीदास जी द्वारा राजापुर (विक्रमपुर) में स्थापित संकटमोचन हनुमानजी की प्रसिद्ध चर्चित सिद्ध मूर्ति आज भी संकट मोचन के नाम से प्रसिद्ध है । इससे भी यह स्पष्ट होता है कि गोस्वामी तुलसीदास जी की जनमभूमि राजापुर (तत्कालीन नाम विक्रमपुर) ही है –

स्वामी रामानन्द सरस्वती ने लिखा है –

"नाम्ना सङ्कटमोचनो हि तुसलीदासेन संस्थापित –
स्तस्य स्मारक तां गतः स हनुमानद्यापि संपूज्यते ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोके कामनया जनैः सुविधिना स्वेष्ट प्रदो राजते,
कालिन्दी सुतटे प्रसिद्ध पणवद् ग्रामेऽत्र राजापुरे ।।११०।।''

–'तुलसी स्मृति सन्दर्भः' –स्वामी रामानन्द सरस्वती

(वह हनुमान जी यमुनातटवर्ती राजापुर नामक प्रसिद्ध व्यापारिक ग्राम में श्री तुलसीदास जी द्वारा स्थापित संकटमोचन नाम से अभी भी स्मारक रूप से विराजमान हैं। भक्त लोग अपनी कामनापूर्ण करने के लिए उनकी पूजा करते हैं, संकटमोचन हनुमान राजापुर में स्वेष्टप्रद होते हुये सुशोभित हैं ।।११०।।)

७. पत्नी वियोग में तुलसीदास द्वारा राजापुर से वर्षाकालीन यमुना तैर कर ससुराल (महेवा, जिला–कौशाम्बी) जाने का संकेत 'विनयपत्रिका' में इस प्रकार है –

''जमुना ज्यों ज्यों लागी बाढ़न ।
त्यों त्यों सुकृत सुभट कलि भूपहिं निदरि लगे बहु काढ़न ।।
ज्यों ज्यों जल मलीन त्यों त्यों जमगन मुख मलीन लहै आढ़न ।
तुलसीदास जगदध जवास ज्यों अनघ मेघ लगे डाढ़न ।।''

–विनयपत्रिका, २१

(यमुना जल के स्पर्श से उदय पुण्य रूप मेघ, तुलसी के सांसारिक पापरूप जवास को जलाकर भस्म करने लगे ।)

जवास यहाँ यमुना किनारे आज भी बहुतायत से पाया जाता है। जब वे ससुराल पत्नी के पास पहुँचते हैं तो उनकी पत्नी कहती है –

''लाज न लागत आपको दौरे आयहु साथ ।
धिक धिक ऐसे प्रेम को कहा कहौं मैं नाथ ।।

अस्थि चर्म मय देह मम तामें जैसी प्रीति ।
वैसी जो कहुँ राम मँह होति न तो भव भीति ।।''

तत्पश्चात् शुद्ध ज्ञानमय होकर तुलसीदास तुरन्त विरागी हो जाते हैं। तुलसीदास अपनी जवानी की गलती को स्वीकार करते हुए कहते हैं –

(१) ''लरकाई बीती अचेत चित, चंचलता चौगुनी चाय ।
जोबन ज्वर जुबती कुपथ्य करि, भयो त्रिदोष भरि मदन बाय ।।''

–विनयपत्रिका ८३–२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२) "जोबन जुवती संग रँग रात्यो । तब तू महामोह मद मात्यो ।।
ताते तजी धरम मरजादा । बिसरे तब सब प्रथम विषादा ।।"

–विनयपत्रिका १३६–७

उल्लेखनीय है कि तुलसीदास जी की पत्नी रत्नावली का मायका महेवा (इलाहाबाद जिला, वर्तमान जिला–कौशाम्बी की मंझनपुर तहसील में) यमुना के उत्तरी तट पर राजापुर घाट (चित्रकूट) के ठीक उस पार ही स्थित है ।

८. तुलसी की भाषा और संस्कृति – तुलसी–युग में भाषा प्रयोग की दो परम्परायें विद्यमान थी । संस्कृत तथा जनभाषा । संस्कृत के समर्थक संस्कृतेतर भाषा प्राकृत को गँवारू तथा अपभ्रंश को भ्रष्ट–भाषा मानते थे । दूसरी ओर जन–भाषा के समर्थक जन–जन को काव्य का रसास्वादन कराना अपना कर्त्तव्य समझते थे । इन दो उग्र विचार धाराओं के अतिरिक्त एक तीसरा समन्वयवादी वर्ग भी था, जिसके अनुसार न तो संस्कृत को पूर्णतया छोड़ा जा सकता था और न जनभाषा की उपेक्षा ही की जा सकती थी । तुलसी ने इसी समन्वयवादी वर्ग को मान्यता दी है, उसमें एक ओर "नानापुराण निगमागम" का प्रभाव था तो दूसरी ओर "सुरसरि सम, सब कँह हित होई" के सिद्धान्तानुसार जनभाषा के प्रयोग का संकल्प था । उनका तो सिद्धान्त था –

"का भाषा का संस्कृत, प्रेम चाहिए साँच ।
काम जो आवे कामरी, का लै करिअ कुमाच ।।" (दोहावली ५७२)

तुलसी ने अपनी रचनायें अवधी भाषा में लिखी, किन्तु मानस की अवधी, साहित्यिक अवधी है, जो संस्कृत शब्द भण्डार पर आधारित है । जायसी के 'पदमावत' की भाषा ठेठ ग्रामीण अवधी है । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में "जायसी की पहुँच अवध में प्रचलित लोकभाषा के बहते हुए माधुर्य स्रोत तक ही थी, पर गोस्वामी जी की पहुँच दीर्घ संस्कृत कवि–परम्परा द्वारा परिपक्व चाशनी के भण्डारागार तक भी पूरी–पूरी थी ।" ('जायसी ग्रन्थावली', भूमिका पृष्ठ २०५) तुलसी ने ठेठ अवधी का प्रयोग, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, बरवै रामायण तथा रामलला नहछू की रचनाओं में किया है, किन्तु मानस की रचना में उन्होंने अवधी के साथ अन्य भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग किया है । उन्होंने हिन्दी की प्रमुख बोलियों–ब्रज, भोजपुरी, मैथिली,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुन्देली के अतिरिक्त अन्य प्रादेशिक भाषाओं–गुजराती, पंजाबी, राजस्थानी आदि के शब्दों को भी ग्रहण किया है। उन्हें विदेशी भाषाओं–अरबी, फारसी, तुर्की आदि के शब्दों के प्रयोग से भी परहेज न था, पर इन विदेशी भाषाओं के शब्दों के प्रयोग में उन्हीं शब्दों का प्रयोग किया है, जिनसे जनता उस समय परिचित हो चुकी थी। उन्होंने इन विदेशी शब्दों की ध्वनियों और रूपों को भी हिन्दी प्रवृत्ति के अनुरूप बदल दिया था और कहीं–कहीं उन शब्दों में हिन्दी प्रत्यय अथवा उपसर्ग जोड़कर उन्हें स्वदेशी बना लिया था।

विभिन्न भाषा–शास्त्रियों ने अपने–अपने तर्कों के अनुसार 'मानस' की अवधी के विभिन्न नामकरण किये है– मिश्र बन्धुओं ने 'मानस' की भाषा को बैसवाड़ी तथा अवधी कहा है। श्री एफ० ई० के० ने बैसवाड़ी अथवा अवधी माना है। श्री के० लॉग ने प्राचीन बैसवाड़ी, ग्रियर्सन ने अवधी, डॉ० बाबूराम सक्सेना ने प्राचीन अवधी, बाबू श्यामसुन्दरदास ने बैसवाड़ी अवधी तथा हनुमानप्रसाद पोद्दार ने ब्रज मिश्रित अवधी माना है। इस प्रकार मानस की अवधी को किसी न किसी रूप में बैसवाड़ी तथा बृज क्षेत्र से संयुक्त किया गया है, किन्तु बैसवाड़ी तथा बृज क्षेत्र के स्थानीय तत्व तुलसी की रचनाओं में उपलब्ध नहीं है। आंचलिक तथा स्थानीय तत्व जन्म स्थान अथवा जन्मकाल से वहाँ निवास करने पर ही उपलब्ध होते है। तुलसी की रचनाओं में जो स्थानीय तत्व पाये जाते हैं, वे राजापुर (चित्रकूट) के ही हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस तथ्य की ओर संकेत करते हुये लिखा है – "जिन्हें भाषा की परख है, उन्हें देखने में देर न लगेगी कि तुलसीदास की भाषा में ऐसे शब्द जो स्थान विशेष के बाहर नहीं बोले जाते, वे राजापुर तथा चित्रकूट के आसपास के हैं" ('हिन्दी साहि० का इतिहास', पृष्ठ ११९) श्री ज्ञानशंकर पाण्डेय ने राजापुर (चित्रकूट) की बोली को आदर्श मानकर तुलसी की भाषा का शास्त्रीय अध्ययन कर यह निष्कर्ष प्रतिपादित किया है कि इसी राजापुर की बोली में मानस की रचना सम्पन्न हुई है। 'अवधी भाषा की उत्पत्ति और विकास' हिन्दुस्तानी पत्रिका सन् १९६६ भाग २७, (३–४) पृष्ठ (१०८–'२२) तुलसी ने स्वयं अपनी भाषा को 'ग्राम्य गिरा' माना है –

"स्याम सुरभि पय बिसद अति गुनद करहिं सब पान।
गिरा ग्राम्य सिय राम जस, गावहि सुनहिं सुजान।।"

–रामचरित मानस १।१०ख

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वस्तुतः उन्होंने अपनी रचनाओं में राजापुर तथा राजापुर क्षेत्र में बोले जाने वाले उन देशज शब्दों का प्रचुर प्रयोग किया है जो केवल वहीं बोले जाते हैं। इतना ही नहीं 'मानस' में तो राजापुर (चित्रकूट) क्षेत्र में लोक जीवन तथा लोक व्यवहार आदि का वर्णन वहीं के प्रचलित शब्दों तथा भावों में किया गया है। सत्य तो यह है कि तुलसी को किसी भाषा विशेष तक ही सीमित नहीं किया जा सकता है। वे प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने स्थानीय, प्रदेशीय तथा विदेशी भाषाओं के शब्दों का भी चमत्कारी प्रयोग किया है।

तुलसी साहित्य में अरबी, फारसी तथा तुर्की शब्दों के प्रचुर प्रयोग होने के कारण पं० रामनरेश त्रिपाठी अपनी 'रामचरित मानस की भूमिका' में तुलसी को पश्चिमी प्रान्त (सोरों) का निवासी मानते हैं। त्रिपाठी जी जिस प्रकार सोरों तथा सोरों के आस-पास मुस्लिम बस्तियों का उल्लेख करके अपने मत की पुष्टि करते हैं वैसी ही बस्तियाँ राजापुर (चित्रकूट) के आस-पास भी हैं, जैसा कि १९०९ ई० में निर्मित बाँदा के डिस्ट्रिक्ट गजेटियर से राजापुर के मुहर्रम के मेले में मुस्लिम उपस्थिति के आँकड़ों से स्पष्ट है। उक्त गजेटियर के अनुसार मुहर्रम मेले की उपस्थिति बीस हजार पाँच सौ थी जबकि हिन्दुओं के संकट मोचन हनुमान जी के मेले में उपस्थित मात्र बीस हजार थी। (डि० गजेटियर आफ यू० पी० Vol. X, XI, P. १०९, बाँदा)

इसके अतिरिक्त राजापुर तत्कालीन मुगल साम्राज्य के प्रमुख जलमार्ग में स्थित एक प्रमुख व्यापारिक तथा प्रशासकीय नगर था, जहाँ तत्कालीन अनेक राज्य कर्मचारी आते-जाते रहते थे। राजापुर के पास के ही निवासी श्याम सुन्दर कायस्थ, तुलसीदास के शिष्य तथा सम्राट अकबर के कानूनगो थे। अनेक अधिकारी व कर्मचारी आगरा से जलमार्ग द्वारा तुलसी के दर्शनार्थ भी राजापुर आते थे। इस कारण राजापुर में विदेशी शब्दों का प्रचुर प्रयोग होता रहा था। तुलसी ने भी अनेक तीर्थ यात्रायें की थीं। इन सब कारणों से तुलसी का विदेशी शब्द भण्डार बड़ा विस्तृत हो गया था। इसके अतिरिक्त उस युग में मुगल-सत्ता पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठित हो चुकी थी, जिससे जन साधारण में भी विदेशी शब्दों का पर्याप्त प्रचार हो चुका था। अस्तु तुलसी साहित्य में विदेशी शब्दों के प्रयोग के कारण तुलसी को सोरों का निवासी ठहराना उचित न होगा।

मानस में प्रयुक्त राजापुर के देशज शब्द – यों तो रामचरित मानस की रचना अवधी में हुई है, जो अपने व्यापक क्षेत्र में सर्वत्र व्यवहृत होती है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किन्तु राजापुर की अवधी में कुछ ऐसे देशज शब्दों का समावेश है, जो केवल राजापुर क्षेत्र में ही बोले जाते हैं और उनका प्रयोग मानस के अतिरिक्त तुलसी प्रणीत अन्य ग्रन्थों में भी बहुतायत से हुआ है। तुलसी साहित्य में प्रयुक्त उन देशज शब्दों की एक बड़ी विस्तृत सूची है, उनमें से कुछ प्रमुख शब्दों का उल्लेख यहाँ किया जाता है –

पशु नारी तथा सूद – इन शब्दों का प्रयोग रामचरित मानस के सुन्दरकाण्ड की बहुचर्चित चौपाई –"ढोल गँवार सूद्र पशु नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी" में हुआ है। इस चौपाई का यह अर्थ करके कि ढोल, गँवार, सूद्र, पशु तथा नारी ताड़ना करने योग्य हैं, तुलसी को नारी तथा शूद्र विरोधी घोषित किया जा रहा है, जबकि इस चौपाई के वास्तविक अर्थ से इस प्रचलित अर्थ का दूर–दूर का सम्बन्ध भी नहीं है। इस चौपाई के अर्थ का अनर्थ करने का श्रेय, उन लोगों को जाता है, जो राजापुर के इन देशज शब्दों के वास्तविक अर्थ से अनभिज्ञ हैं। राजापुर तथा राजापुर क्षेत्र में आज भी "नारी" अथवा "नार" शब्द का प्रयोग समूह के अर्थ में होता है। पशुओं के समूह को नार कहा जाता है। पशुओं के समूह को ग्राम्य भाषा में "गोरुओं की नार" कहा जाता है यहाँ नारी का प्रयोग तुक मिलाने की दृष्टि से अन्त्यानुप्रास के रूप में हुआ है, जिसका अर्थ पशुओं का समूह ही है।

इसी प्रकार 'सूद्र' शब्द का भी दुरुपयोग हुआ है। यह सूद्र शब्द वास्तव में 'सूद' शब्द है, जिसका प्रयोग पीड़क अथवा कष्ट देने व पीड़ा देने वाले के लिये होता है। राजापुर में आज भी 'सूद' शब्द का प्रयोग पीड़क के अर्थ में होता है। यह शब्द 'सीद' धातु से बना है, जिसका अर्थ पीड़क अथवा कष्ट देने के अर्थ में होता है। तुलसी ने भी अपने साहित्य में 'सीद' शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में किया है –

एते बड़े साहेब समर्थ को निवाजो आज
सीदत सुसेवक बचन मन काय को ।। –बाहुक ३१
करहिं अनीत जाइ नहि बरनी । सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी ।
'मानस'–बाल०१२० (घ) ।।४

अस्तु इस चौपाई का सीधा अर्थ हुआ कि ढोल, गँवार, पीड़क (दुष्ट) तथा पशुओं का समूह समय पड़ने पर आवश्यकतानुसार ताड़ना करने योग्य है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस प्रकार तुलसी न तो शूद्र विरोधी थे और न नारी विरोधी। 'सिया राम मय सब जग जानी....' सिद्धान्त को मानने वाले तुलसी की तो मान्यता थी –

'स्वपच, सबर, खस, जमन, जड़ पाँवर कोल किरात।
रामु कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात।।'–(मानस अयो० १९४)

मरु मारव – इन युग्म शब्दों का प्रयोग बालकाण्ड की चौपाई – 'कासी, मग, सुरसरि–क्रमनासा, मरु मारव, महिदेव गवासा' (५/८) में हुआ है। मानस टीकाकारों ने मरु का अर्थ मारवाड़ तथा मारव का अर्थ मालवा किया है। किन्तु यह वास्तविक अर्थ नहीं है। वास्तव में मरु मारव शब्द देशज शब्द हैं जिनका प्रयोग राजापुर तथा राजापुर क्षेत्र में आज भी होता है। उक्त क्षेत्र की काली उपजाऊ भूमि को 'मारव' अथवा 'मरवा' भूमि कहते हैं। वर्षा ऋतु में वर्षा होने पर यह भूमि मक्खन की भांति कोमल हो जाती है और सूखने पर अति कठोर हो जाती है। इसी कारण तुलसी ने मरु (रेगिस्तान) के विपरीत मारव शब्द का प्रयोग किया है, क्योंकि मरु अथवा रेगिस्तान मुलायम तथा अनुपजाऊ भूमि है, औरह मारव (सूखने पर) अति कठोर तथा उपजाऊ भूमि है, जो परस्पर विलोम अर्थी है।

कुराई – कुराई शब्द का प्रयोग 'मानस' की चौपाई –

"कुस, कंटक काँकरी कुराई। कटुक कठोर कुवस्तु दुराई।।" (राम. च. मा. अयोध्या का., ३१०/५) में हुआ है। मानस के कुछ टीकाकारों ने कुराई का अर्थ तंग और ऊँचा–नीचा रास्ता, अथवा बुरा रास्ता किया है। कुछ टीकाकारों ने कुराई का अर्थ 'दरार' किया है। किन्तु यह दोनों अर्थ भ्रामक हैं। 'कुराई' राजापुर क्षेत्र के लोक भाषा का देशज शब्द है। वर्षा ऋतु के पश्चात् जब राजापुर क्षेत्र की 'मारव' अथवा 'मरवा' भूमि सूखने लगती है, तब वर्षा के बहाव के कारण यत्र–तत्र पोले गड्ढे बन जाते हैं, जो ऊपर से समतल भूमि की भाँति प्रतीत होती हैं। इन पोले गड्ढों को ही 'कुराई' कहते हैं। जिनमें भ्रम–वश किसी मनुष्य अथवा मवेशी का पैर पड़ने से उसके टूटने का भय रहता है, क्योंकि गड्ढे के पोले होने के कारण, पैर गड्ढे के अन्दर धँस जाता है।

गुदारा लागा तथा खेवा – इन शब्दों का प्रयोग रामचरित मानस के अयोध्या काण्ड की चौपाइयों 'भा–भिनसार गुदारा लागा।' (२०१/७) तथा 'प्रात पार भये एकहि खेवा' (२००/३) में हुआ है मानस के कुछ टीकाकारों ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'गुदारा लागा' का अर्थ 'खेवा' किया है, किन्तु खेवा गुदारा का पर्यायवाची शब्द नहीं है। गुदारा शब्द का अर्थ है– बेड़ा (नावों का समूह) और खेवा शब्द का अर्थ है नाव लेकर एक पार से दूसरे पार जाने की पारी। राजापुर में आज भी नाव द्वारा यमुना पार करने वाले घाट को 'गुदारा घाट' कहते हैं, और नाव द्वारा एक तट से यमुना पार करके दूसरे तट पर जाने को खेवा कहते हैं। राजापुर में यह दो शब्द आज भी व्यवहृत होते हैं।

चपरि – चपरि शब्द का प्रयोग गीतावली के अयोध्याकाण्ड ७७वें पद की निम्नांकित पंक्तियों में हुआ है –

"अवसि हौं आयसु पाई रहौंगो।
जनमि कैकेयि कोखि, कृपा निधि क्यों कछु चपरि कहौंगो।"

गीता प्रेस, गोरखपुर के टीकाकार ने चपरि शब्द का अर्थ, बात बढ़ाकर, किया है – कैकेयी के गर्भ से जन्म लेकर, भला मैं कोई बात बढ़ाकर कैसे कह सकता हूँ। किन्तु राजापुर क्षेत्र की लोक भाषा में 'चपरि' का अर्थ जिद अथवा हठ होता है। चपरि से बने शब्द चपरिहा (हठी अथवा जिद्दी), चपरिहाव (हठ अथवा जिद करना) आज भी राजापुर क्षेत्र में व्यवहृत होते हैं। अस्तु इन पंक्तियों का समुचित अर्थ हुआ कि मैं भरत अवश्य ही श्रीराम की आज्ञा पाकर अयोध्या में रहूँगा। कैकेयी के गर्भ से जन्म लेकर भला मैं श्री राम के अयोध्या लौटने की जिद कैसे करूंगा।

रामचरित मानस में भी चपरि शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में हुआ है –

नील महीधर सिखर सम देखि बिसाल बराहु।
चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप हाँकि न होइ निबाहु।।"

– 'मानस' १/१५६

उठति वयसि मसि भीजति – प्रस्तुत पंक्ति गीतावली के अयोध्याकाण्ड के ३७वें पद से प्रयुक्त हुई है। श्री राम की वन यात्रा में ग्राम वधुएँ श्री राम का दर्शन करके उनके सम्बन्ध में कहती हैं –

"उठति वयसि मसि भीजति, सलोने सुठि।
सोभा देखवैया बिनु चित्त ही बिकै हैं।।"

गीता प्रेस, गोरखपुर के टीकाकार ने 'मसि भीजति' का अर्थ–शरीर में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यौवन का रंग चढ़ रहा है, किया है, पर राजापुर तथा चित्रकूट क्षेत्र में 'मसि भीजति का अर्थ–युवावस्था की ओर अग्रसर होने पर उठती हुई मूँछों की रेख के सम्बन्ध में किया जाता है और यहाँ इन पंक्तियों का यही वास्तविक अर्थ है। मसि भीजति का इसी अर्थ में प्रयोग राजापुर क्षेत्र में प्रचलित लोक गीतों में भी हुआ है – एक विरहिणी अपने पति के सम्बन्ध में कहती है – "रेखिया भीजति ही विदेसवा गयो हो रामा।"

इसी प्रकार के दूसरे लोकगीत में –

"उठति रेख मसि भीजति, राम बन गये हो।
बारह बरिस कै उमरिया, कैसे बिताइव हो।।"

यहाँ पति का नाम लेने की प्रथा नहीं है। अस्तु श्री राम के नाम से अपने पति को सम्बोधित किया गया है।

तुलसी ने अपने सभी ग्रन्थों में राजापुर तथा चित्रकूट क्षेत्र की लोक भाषा के देशज शब्दों का प्रचुर प्रयोग किया है। जिनके अर्थ की वास्तविक जानकारी 'मानस' के अनेक टीकाकारों को नहीं है, फलतः वे उन शब्दों का वास्तविक अर्थ नहीं कर पाये हैं। ऐसे गिने चुने कतिपय शब्दों का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। किन्तु इसके अतिरिक्त तुलसी साहित्य में ऐसे सहस्रों शब्द हैं, जिनकी व्याख्या में एक अलग ग्रन्थ ही लिखा जा सकता है।

९. तुलसी साहित्य में राजापुर क्षेत्र की छाप –

तुलसी ने अपने साहित्य में जिस प्रकार राजापुर क्षेत्र के लोक जीवन, लोक व्यवहार, रीति रिवाज, लोक परम्पराओं तथा लोक–भाषा का विशद चित्रण किया है, उसी प्रकार उन्होंने उस क्षेत्र की भूमि (मिट्टी), जलवायु, वनस्पति, उपज, नदी–नाले, वन्य जीवन आदि का भी सूक्ष्म निरीक्षण करके अपने साहित्य में समुचित स्थान दिया है जिससे स्पष्ट होता है कि तुलसीदास जी की जन्मभूमि, गुरुभूमि, राजापुर–चित्रकूट है।

राजापुर बुन्देलखण्ड के चित्रकूट जनपद में यमुना के दक्षिणी तट पर स्थित है। तुलसी ने यमुना तट पर श्री राम को यमुना तीरवासियों के मध्य थोड़ी देर के लिये बिलमाया। वहाँ से श्रीराम की वन यात्रा प्रारम्भ हुई। मार्ग में उन्हें अनेक ग्रामवासी तथा पथिक मिलते हैं और वे उनसे 'मार्ग' की दुर्गमता की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओर संकेत करते हुए कहते हैं कि उस क्षेत्र की भूमि कुश, कंकड़, कंटक तथा कुराई से भरी पड़ी है। वन अत्यन्त सघन है और हिंसक पशुओं से भरे पड़े हैं। (मानस अयोध्या काण्ड १११/६,७) पहाड़ों में अनेक कन्दरायें तथा खोहें है। भूमि 'मारव' है – 'मरु मारव महिदेव गवासा' –बालकाण्ड ५।।८, तुलसी ने उस क्षेत्र में घोर घाम (विन० १५५) तथा ग्रीष्म ऋतु की तप्तभूमि 'भू–भुरि' का भी वर्णन किया है। (कवि० अयो० काण्ड १२)

यहाँ मारव माटी में कुश बहुतायत में पाया जाता है। इसी से तुलसी की रचनाओं में इसका प्रचुर प्रयोग हुआ है –

(१) कुस कंटक मग काँकर नाना। चलब पयादेहिं बिनु पद त्राना ।।

–'मानस'–अयो० ६१ ।।३

(२) कुस किसलय साथरी सुहाई। प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई ।।

–'मानस' – अयो० ६५ ।।१

(३) गुह सँवारि साथरी डसाई। कुस किसलयमय मृदुल सुहाई ।।

–'मानस' –अयो० ८८।।४

(४) कुस साथरी निहरि सुहाई। कीन्ह प्रनाम प्रदच्छिन जाई ।।

–'मानस' –अयो० १९८।।१

(५) सुख स्वरूप रघुबंस मनि, मंगलमोद निधान।
सो सोवत कुस डासि महि, बिधि गति अति बलवान ।।

–'मानस' – अयो० २००

(६) अजिन बसन फल असन महि सयन डासि कुस पात।
बसि तरु तर नित सहत हिम आतप बरषा बात ।।

–'मानस' –अयो० २११

(७) कुस कंटक काँकरी कुराई। कटुक कठोर कुबस्तु दुराई ।।

–'मानस' – अयो० ३१० ।।३

उपज – राजापुर की मारव (मरवा) भूमि उपजाऊ तो है, किन्तु सिंचाई सुविधा न होने के कारण वहाँ चना (कवितावली ७/७३, ७/९९, ७/१४८) जौ, जुवार (गीतावली–बालकाण्ड २), चना (कवितावली ७/७३, ७/९९,७/१४८) धान (कवितावली ७/१०३, मानस–२।।२५२।।१, २।।२६०।।२,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust Foundation. MoE-Grant-2

गीता० –बाल० २, सुन्दर० ४०), कोदव (मानस–अयो० २६०।।२) की उपज अधिक होती थी, जिसका उल्लेख तुलसी के ग्रन्थों में उपलब्ध है –

चना – (१) बारे ते ललात बिललात द्वार द्वार दीन,
जानत हौं चारिफल चारि ही चनक को ।
–कविता० ७/७३

(२) गारी देत नीच, हरिचन्द हू दधीचिहू को ।
आपने चना चबाइ, हाथ चाटियतु है । –कविता० ७/९९

(३) प्यासे हूँ न पावै बारि, भूखे न चनक चारि । –कविता० ७/१४८

धान – (४) सुचि सुंदर सालि सकेलि सोबारि, कै बीज बटोरत ऊसर को ।
–कविता० ७/१०३

(५) वरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास ।
राम नाम बर बरन जुग सावन भादव मास ।।
–'मानस' –बाल० १९

(६) कीन्हि मातु मिस काल कुचाली । 'इति भीति–जस पाकत साली ।।'
–'मानस' –अयो० २५२।१

धान, कोदव – (७) फरइ कि कोदव बालि सुसाली ।
मुकता प्रसव कि संबुक काली ।।
–'मानस' –अयो० २४०/२

जुवार, जौ, धान (८) बगरे नगर निछावरि मनिगन, जनु जुवार जौ धान ।।
– गीतावली–बाल० २

वनस्पति -

जवास – तुलसी साहित्य में वनस्पतियों में जवास का बारम्बार उल्लेख किया गया है – 'अर्क जवास पात बिनु भयऊ' (मानस कि० का० १४/३) "जिमि जवास परे पावस पानी" (मानस अयो० का० ५३/२) बरसत बारि पीर जारिये जवासे जस' (बाहुक ३५) "तुलसीदास जगदघ जवास ज्यों" (विनय० २१) पहिले संभवतः तुलसी के युग में ग्रीष्म ऋतु में खस की टट्टियों की भांति जवास की टट्टियाँ बनाई जाती थीं । खस के स्थान पर जवास का भी प्रयोग होता था । इसके अतिरिक्त जवास का प्रयोग रक्त–चाप के रोगियों के उपचार में भी किया जाता था ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजापुर तथा उसके आसपास यमुना तटवर्ती क्षेत्र में 'जवास' बहुतायत से होती है। 'जवास' के विषय में तुलसीदास जी की जानकारी और तुलसीकृत ग्रन्थों में उसके वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि तुलसीदासजी की जन्मभूमि यमुना तटवर्ती जवास बहुल क्षेत्र राजापुर, (चित्रकूट) है।

धमोई – इसका प्रयोग मानस तथा गीतावली में हुआ है –

"अबहीं ते उर संशय होई। बेनु मूल सुत भयेहु घमोई।" (मा० ६/९/३) 'कहत मन तुलसीस लंका करहुँ सघन घमोई' (गी० ५/ ५/१४) कुछ टीकाकार घमोई को कटंगीवास का रोग मानते हैं, कुछ इसे बाँस के पास पैदा होने वाली घास मानते हैं, जो बाँस के पौधों को नष्ट कर देती है। कुछ अन्य टीकाकार घमोई को सत्यानासी अथवां भड़भंडा मानते है, किन्तु इनमें से कोई भी घमोई का वास्तविक अर्थ नहीं है।

घमोई का पौधा वर्षा ऋतु में राजापुर क्षेत्र में बहुतायात से होता है और जाड़े की ऋतु में सूख जाता है। यह लगभग तीन फीट ऊँचा होता है। इसमें छोटे–छोटे पीले रंग के फूल होते है, जो जहरीले नहीं बल्कि उत्तेजक होते हैं, जिनका प्रयोग प्रायः इलाज में किया जाता है – (बाँदा गजेटियर वालूम २१, सन् १९०९ पृष्ठ १३५)

रावण के दरबार में, रावण सुत प्रहस्त के यह कहने पर कि सीता को श्री राम को वापस कर दिया जाए और व्यर्थ का झगड़ा न बढ़ाया जाय। यदि पत्नी पाकर श्री श्रीराम वापस नहीं जाते तब युद्ध किया जावे। प्रहस्त के इस सुझाव पर रावण ने प्रहस्त से कहा था कि बाँस सदृश सुदृढ़ निशिचर कुल में तू घमोई जैसे निर्बल कैसे पैदा हुआ। यह घमोई का पौधा निर्बलता का द्योतक है।

इन्दारून – यह शब्द विनय पत्रिका में प्रयुक्त हुआ है –

"बिनु हरिभजन इन्दारून के फल तजत नहीं करूआई।" (१७५/६) इन्दारून एक जंगली कड़ुवा फल है, जो राजापुर क्षेत्र में बहुतायत से उगता है। इसकी लता तरबूज की भाँति होती है। इसके फल नारंगी के आंकार के होते हैं, जिनमें खरबूजे की भाँति फाँकें होती हैं। यह खाने में कड़ुवा तथा विषैला होता है। किन्तु देखने में सुन्दर तथा आकर्षक होता है। राजापुर जन्मभूमि होने के कारण तुलसी इस पौधे (लता) से परिचित थे, इसी कारण उन्होंने इसका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रयोग किया था ।

गाँडर – "बाज सुराग की गाँडर ताँती" ('मानस' अयो० का० २४०/६)

गाँडर प्रायः मरवा माटीवाले तालाब में उगने वाली एक प्रकार की घास है, जिसके सींक से झाडू और जड़ से खस की टट्टी आदि बनाने में प्रयोग करते हैं। यह घास मजबूत अवश्य है, पर यह वीणा में ताँत की भाँति नहीं प्रयुक्त की जा सकती ।

पाठीन मछली – वनस्पतियों की भाँति, राजापुर में यमुना नदी में पाठीन मछली भी अधिकता से पाई जाती हैं । क्षेत्रीय होने के कारण तुलसी ने पाठीन मछली का उल्लेख अनेक बार किया है । राम वनगमन के समय राजा दशरथ की व्याकुलता वर्णन में – 'कंठु सूख मुख आव न बानी । जनु पाठीन दीन बिनु पानी' ('मानस' आयो० का० ३४/२) इसके पश्चात् शृंगवेरपुर में निषादराज गुह द्वारा भरत जी के स्वागत के आयोजन में –

मीन पीन पाठीन पुराने । भरि-भरि भार कहारन आने ।।-(मानस अयो० का० १९२/३, ४) तुलसी कालीन राजापुर साम्राज्य के प्रमुख जलमार्ग में एक व्यापारिक नगर था, जहाँ से नावों द्वारा व्यापार होता था । वहाँ नाव चलाने वाले बहुसंख्यक मल्लाहों (केवटों) की आबादी थी । आज भी राजापुर में केवटों का एक बड़ा मुहल्ला है । उस युग में पाठीन मछली उनका प्रमुख भोजन थी । अस्तु राजापुर क्षेत्र होने के कारण तुलसी ने पाठीन मछली का प्रयोग बार-बार किया है ।

अतएव यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि तुलसी की भाषा में राजापुर की स्थानीय छाप है ।

१०. भाषागत साक्ष्य – भाषा की पकड़ सबसे सूक्ष्म होती है, इससे कोई बच नहीं सकता । यही कवि की यथार्थ कसौटी भी है । तुलसीदास जी की अन्तश्चेतना में बैठा जन्म स्थान राजापुर (विक्रमपुर) और गुरुद्वारा 'सूकर खेत'-चित्रकूट जहाँ उनके काव्य की सांस्कृतिक चेतना को प्रभावित करता है, वहाँ उनकी भाषिक संरचना को भी प्रभावित करता है । यहाँ की संस्कृति-रीति रिवाज, रहन-सहन और बोलचाल की भाषा तुलसी काव्य में अभिव्यक्त भारतीय संस्कृति और भाषा की मेरुदण्ड बन गई है । तात्पर्य यह है कि कवि ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यहाँ की संस्कृति और बोलचाल को तो अपनाया, पर उससे एक ऐसी व्यापक संस्कृति और साहित्य का श्रजन हुआ जो भारतीयों के गले का हार बन गई। अगर कोई 'मानस' की संस्कृति को भारतीय संस्कृति कहता है, तो इसमें कोई अत्युक्ति नहीं है। किन्तु क्षेत्रीयता की संकीर्णता में उसे बाँधना सर्वथा अनुचित है, क्योंकि इसे अवधी, भोजपुरी और बुन्देली नहीं कहा जा सकता।

उस महाकवि की भाषा पर विचार करते हुये विद्वानों ने तुलसीदास कृत बारह ग्रन्थों का भाषा विभाजन इस प्रकार से किया है –

अवधी ग्रन्थ – रामचरित मानस, रामलला नहछू, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल तथा रामाज्ञाप्रश्न।

ब्रजभाषा ग्रन्थ – श्री कृष्णगीतावली, वैराग्य संदीपनी, गीतावली, कवितावली, दोहावली तथा विनयपत्रिका।

सच तो यह है कि क्षेत्रीय आग्रह से रचनाओं की भाषा तदनुरूप परिवर्तित कर ली जाती है। वस्तुतः भाषा के अनुशीलन में चित्रकूट क्षेत्र की भाषा पर ध्यान नहीं दिया गया। चित्रकूट क्षेत्र ऐसा केन्द्र है, जहाँ एक ओर बुन्देली प्रचलित है तो दूसरी ओर बघेली। एक ओर गहलौती प्रचलित है, तो दूसरी ओर बनाफरी। वस्तुतः चित्रकूट क्षेत्र तो बुन्देली, अवधी, बघेली, ब्रजी, बैसवाड़ी आदि भाषाओं की संगम स्थली है। तुलसी ने चित्रकूट क्षेत्र की भाषा को आधार बनाया और उसे संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों से समृद्ध कर व्यापक स्वरूप प्रदान कर दिया। इसमें अवधी, बुन्देली, ब्रजी, बैसवाड़ी आदि लोक भाषाओं के शब्द भण्डार के साथ अरबी, फारसी आदि के लोक प्रचलित शब्द रूपों को ग्रहण कर उसे इतना व्यापक बना दिया कि वह राष्ट्र की भाषा बन सके। ऐसी हिन्दी को उन्होंने भाषा शब्द से अभिहित किया है –

(१) "का भाषा का संस्कृत प्रेम चाहिये साँच।
काम जु आवै कामरी का लै करिअ कुमाच ।।" –दोहावली ५७२

(२) "भाषा निबन्धमतिमन्जुलमातनोति ।।" –'मानस'–बालकाण्ड, श्लोक ७

(३) "तौ फुर होउ जो कहेउँ सब भाषा भनिति प्रभाउ ।।"
–'मानस' बालखण्ड १५।।

(४) "भाषाबद्ध करब मैं सोई। मोरे मन प्रबोध जेहिं होई ।।"
–'मानस' बालखण्ड ३०।।१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आश्चर्य यह है कि क्षेत्रीयता की मानसिकता से ग्रसित कुछ दुराग्रही विद्वान अब भी तुलसीकृत ग्रन्थों में चित्रकूट और राजापुर क्षेत्र में बोली जाने वाली जन जन में रची–बसी जनभाषा के शब्दों की उपेक्षा करते हैं, जबकि तुलसी की मातृभाषा होने के कारण इस क्षेत्र के आम बोलचाल के देशज शब्द उनमें ऐसे रच बस गये थे कि वे उनके प्रयोग का लोभ नहीं संवरण कर सके हैं। वस्तुतः इस क्षेत्र की जनभाषा का ठेठ रूप ही तुलसी भाषा की धुरी है। तुलसी की कृतियों में राजापुर–चित्रकूट तथा उसके आसपास बोले जाने वाले ऐसे हजारों देशज शब्द भरे पड़े हैं जिनके वास्तविक अर्थ की समझ यहाँ के अनपढ़ ग्रामीणों तक को है जबकि तुलसी साहित्य के मर्मज्ञ भी यत्रतत्र भ्रमित पाये जाते हैं। उदाहरण के लिए तुलसी के विविध ग्रन्थों से यहाँ की बोली के कुछ देशज शब्द प्रस्तुत हैं –

हिसिषा[१] ईर्ष्या अर्थ में यहाँ चिरकाल से प्रचलित है। किसी को मीठे स्वर में डाटना या रोकना हटकहु[२] ही तो है। एक दूसरे से किसी न किसी रूप में लोग सिहाते रहते है, सो सिहाई[३] शब्द भी इसी अंचल की माटी से उद्भूत है। खरभर[४] शब्द भी चित्त में खरभर (हलचल) मचा देता है। राजापुर (चित्रकूट) के रार[५] मचाते हैं तभी तो तुलसी भी इस शब्द को अपनाते दीखते हैं। वे रिरिहाते[६] अर्थात् गिड़गिड़ाते भी है। इतना ही नहीं उनके रिरियाते–रिरिहाते मुँह में लाटी[७] बँध जाती है, लार तक सूख जाती है और उनकी छाती भीतर ही भीतर मसकने[८] (फटने) लगती है, तभी तो मरायल[९] का प्रयोग करते है।

---

१. जौं अस *हिसिषा* करहिं नर जड़ विवेक अभिमान। –'मानस' १–६९
२. तुम *हटकहु* जौं चहहु उबारा। –'मानस' १–२७३–२
३. अवधराजु सुरराजु *सिहाई*। –'मानस' २–३२३–३
४. होनिहार का करतार को रखवार जग *खरभरु* परा। –'मानस' १/८३ छन्द
५. घोर *रारि* हेरि त्रिपुरारि विधि हारे हिये। –कवितावली ६, ५६
६. रटत *रिरिहात* आरि और न कौर ही ते काज। –विनयपत्रिका २१९
७. सूखहिं अधर लागि मुँह लाटी। –'मानस' २, १४४, २
८. तुलसी उछरि सिन्धु मेरू मसकतु है। –कवितावली ६, १६
९. सठहु सदा *तुम्ह मोर मरायल*। –'मानस' ६, ९६, ३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऐसे ही देशज शब्दों की शृंखला में ढँढोरी[१०], तनको[११], तरेरी[१२], झपटि[१३] और दहेड़ि[१४] हैं। इनको न समझने वाले तुलसी के शब्दों में धमधूसर[१५] ही समझे जायेंगे। इसी प्रकार चिरकाल से आज तक यहाँ बरियार[१६] शब्द प्रचलित है। बायन[१७] तो घर-घर आज भी दिया जाता है। यहाँ किसान मोटरी[१८] बाँधके न चलें तो उनका काम कैसे सीझे? माहुर[१९] यहाँ विष के अर्थ में ग्रहीत है। रगरि[२०] शब्द में भी यहीं की माटी की गंध है। लेरूआ[२१] तो लएरू के रूप में ग्रामांचल में आज भी बहुप्रयुक्त है। लहकौर[२२] के बिना तो पाणिग्रहण असम्भव है, यह यहाँ की लोकरीति है। पिछौरी[२३] शब्द चिरकाल से यहाँ ओढ़नी के अर्थ में चला आ रहा है। विवाह में बरायन[२४] का प्रयोग पीढ़ी दर पीढ़ी सदियों से यहाँ चला आ रहा है। लवाई[२५] शब्द तो सद्यः प्रसूता गाय के लिये चिरपरिचित है। फराँक[२६] ऐसे शब्द जहाँ यहाँ के ग्रामांचल के प्रचलित शब्द हैं, वहीं यहाँ के ग्रामांचल के निर्धनों की कथरी[२७] और ग्राम्य अंचल की माताओं की कनिया[२८] की उपेक्षा कैसे की जा सकती है।

---

१०. सारद उपमा सकल *ढँढोरी*। -'मानस' १, ३४८, ४
११. *तप* तीरथ साधन जोग बिराग सो होइ नहीं दृढ़ता *तनको*। -कविता० ७, ८७
१२. *कहत* दशानन नयन तरेरी। -'मानस' -६/२१/२
१३. इत उत *झपटि डपटि* कपि जोधा। -'मानस' ६, ८१, ३
१४. अहिरिनहि हाँथ दहेड़ि सगुन लै आवै हो। -रामलला नहछू ५
१५. कलिकाल बिचार अचार हरो, नहिं सूझै कछू धमधूसर को। -कविता० ७, १०३
१६. तप बल बिप्र सदा *बरियारा*। -'मानस' १, १६४-२
१७. भले भवन अब बायन दीन्हा। -'मानस' -१, १३६,३
१८. निज निज मरजाद *मोटरी* सी डार दी। -कविता० ७, १८३
१९. अमिय सजीवन *माहुर* मीचू। -'मानस' १, ५, ३
२०. जनम कोटि लगि रगर हमारी। -'मानस' १, ८०, ३
२१. ललन लोने *लेरुआ* बलि मैया। -'गीतावली' १, २०, ३
२२. *लहकौरि* गौरी सिखावरामहि सीय सन सारद कहैं। -'मानस' १, ३२६ छं० ३
२३. मंगलमय दोउ अंग मनोहर ग्रथित चूनरी पीत *पिछौरी*। -गीता० १,१०३
२४. बिहँसति आइ लोहारिनि हाथ *बरायन* हो। -रामलला नहछू ५
२५. निरखि बच्छ जनु धेनु *लवाई*। -मानस ७. ५.५.
२६. दूर *फरांक* रूचिर सो घाटा। -मानस ७, २८१
२७. पातक पीन कुदारिद दीन, मलीन धरे *कथरी* करवा है। -कविता० ७, ५६
२८. सादर समुखि बिलोक राम शिशु रूप अनूप भूप लिये *कनिया*। -गीता० १, ३१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आनाकानी[२९], उनरत[३०], उराव[३१], उबरा[३२], कलबल[३३], किरिच[३४] कोठिला[३५], कोठी[३६] जैसे शब्द राजापुर और चित्रकूट क्षेत्र में चिरप्रचलित हैं। जिनका प्रयोग तुलसीदास जी धड़ल्ले से करते हैं। गभुआर[३७] शब्द की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती है जो यहाँ सर्वत्र प्रचलित है। चीखा[३८] शब्द का अर्थ अन्यत्र शायद चीखने की आवाज हो लेकिन तुलसी इस क्षेत्र में प्रचलित इस शब्द का अर्थ चखना (स्वाद लेना) करते हैं। खुनिस[३९], खोंची[४०], गोठ[४१], ठाढ़[४२], मजूरी[४३], बनी[४४], मस्ट[४५], मोर तोर तैं[४६], रिस[४७], रिसान[४८], फुर[४९], साथरी[५०], हुमकि लात तकि[५१], महूँ, तहूँ सरीखे शब्द जैसे तुलसी के समय में प्रचलित थे वैसे आज भी यहाँ प्रचलित हैं। उपरोक्त के अतिरिक्त अथाई,

---

२९. आनाकानी कंठ हंसी मुंहचाह होन लगी। –गीतावली १, १८२

३०. उनरत *जोबन* देख नृपति मन भावन हो। –रामललानहछू २, ५

३१. तुलसी उराव होत राम को सुभाव सुनि। कविता–७, १५

३२. *उबरा* सो जनवासे आवा। –मानस, १, ३२५, ४

३३. *कलबल* वचन तोतरे बोलत। –मानस, १, १९८, ५

३४. काँच *किरिच* बदले ते लेहीं। –मानस ७, १२०, ६

३५. चुप किन रहत कहेऊ कछु चाहत होइ हैं कीच *कोठिला* धोये। –कृ० गीता० ११

३६. सोक कलंक *कोठि* जनि होहू। –मानस, २, ४९, १

३७. चिक्कन कच कुंचित *गभुवारे*। –मानस, १, १९८, ५

३८. डारि सुधा विषु चाहत *चीखा*। –मानस, २, ४६,२

३९. खेलत *खुनिस* न कबहूँ देखी। –मानस, २, २५९, ३

४०. खाओ *खोंची* माँग मैं तेरो नाम लियो रे। –विनयपत्रिका, ३३

४१. गाय *गोंठ* महिसुरपुर जारे। –मानस, २, १६६, ३

४२. उतरि *ठाढ़* भये सुरसरि रेता। –'मानस', २, १०१, १

४३. बहुत काल मैं कीन्हि *मजूरी*। –'मानस' २, १०१, ३

४४. आज दीन्ह विधि *बनिभलि* भूरी। –'मानस' २, १०१, ३

४५. *मस्ट* करहु अनुचित भलनाहीं। –'मानस' १, २७७, २

४६. मैं अरू *मोर तोर तैं* माया। –'मानस' ३, १४, १

४७. बहइ न हाथ दहइ *रिस* छाती। –'मानस' १, २७९, १

४८. केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिहिं नेवारई। –'मानस' २, २४ छन्द

४९. अवसि नरेश बचन *फुर* करहू। –'मानस' २, १७४, १

५०. कुस किसलय *साथरी* सुहाई। –'मानस' २, १७४, १

५१. *हुमकि* लात तकि कूबर मारा। –'मानस' २, १६२, २

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवरेब, उपही, ओहू[५२], काज, कुराई[५३], कोपर, खाले[५४], गाँड़र ताँती[५५], घरफोरी[५६], घाम, जवास, जुड़ानी, जेवनार, नाईं, निरखत, पनही, पनहिया, परखेउ, पाहुन, पुचकार, बरजउँ, बियानी[५७], बीछी, भिनसार[५८], भीती, भूँभुर, महतारी, मार महि, मारव[५९], ललात, बिललात[६०], लोग–लुगाई, बिहाने, सुआर, आदि ऐसे हजारों शब्द तुलसी साहित्य में भरे पड़े हैं जो राजापुर–चित्रकूट अंचल में चिरकाल से प्रचलित हैं।

डॉ० किशोरी लाल सेवा निवृत्त प्राध्यापक, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के शब्दों में –

"सत्यबात यह है कि तुलसीदास जी की जन्मभूमि राजापुर ही थी। यह तथ्य उनकी भाषा से स्वतः प्रकट हो जाता है।"

इसी प्रकार यहाँ की लोकक्तियाँ और कहावतें – "वीर विहीन मही मैं जानी" –'मानस' १, २५१, २, "दीप बाति नहिं टारन कहेऊँ" –'मानस' २, ५८, ३ "हमहुँ कहब अब ठकुर सोहाती" –'मानस' २, १५, २,

"सठ सुधरहिं सत संगति पाई..."–'मानस' –बाल० २।।५ आदि आज भी राजापुर–चित्रकूट क्षेत्र में प्रचलित हैं।

इसके अतिरिक्त राजापुर (चित्रकूट) के रीति–रिवाज, लोक व्यवहार और लोक संस्कृति की स्पष्ट छाप किसी न किसी रूप में तुलसी की रचनाओं में देखी जा सकती है। आज भी यहाँ विवाह में वैसे ही मंडपाच्छादन, नहछू, अगवानी, स्वागत–सत्कार, परछन, कन्यादान, पैपुजी, साखोच्चार, भाँवरें, माँग भरना, कोहबर, लहकौर आदि वह सबकुछ कराया जाता है जैसे तुलसी ने

---

५२. पिता बचन मनतेउँ नहिं *ओहू*। –'मानस' २, १६२, २
५३. कुस कंटक काँकरी *कुराई*। –'मानस' २, ३१०, ३
५४. गुरु पितु मातु स्वामि सिख पाले। चलेहु कुमग पग परहिं न *खाले*।।–'मानस'अयो० ३१४।।३
५५. बाज सुराग कि *गाँडर ताँती*। –'मानस' २, २४०, ३
५६. धरेहु मोर *घरफोरी* नाऊँ। –'मानस' २, १६, २
५७. नतरु बाँझ भलिबादि *बिआनी*। राम बिमुख सुत तें हितहानी।।–'मानस'अयो० ७४।।१
५८. भा भिनसार *गुदारा* लागा। –'मानस' अयो० ७४।।१
५९. कासी मग सुरसरि क्रमनासा। मरु *मारव* महिदेव गवासा।। –'मानस'–बाल० ५/८
६०. बारे ते *ललात बिललात* द्वार–द्वार दीन –कवितावली ७, ७३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिव–पार्वती और राम–सीता के विवाह में वर्णित किया है ।

११. तुलसी साहित्य में वर्णित लोक–जीवन एवं लोक व्यवहार

तुलसी साहित्य विशेषतया रामचरित मानस, गीतावली, रामलला नहछू, जानकी–मंगल तथा पार्वती मंगल आदि में वर्णित लोकजीवन, लोक व्यवहार लोकरीतियाँ तथा श्रोत–सूत्र आदि में वर्णित संस्कारों के विधि–विधान और प्रथायें राजापुर में आज भी प्रचलित हैं और उसी विधि–विधान से मनाई जाती है, जैसा कि तुलसी–साहित्य में वर्णित है ।

पुत्र–जन्म की कामना हर दम्पत्ति को होती है, क्योंकि वंश–परम्परा को आगे बढ़ाने और 'पु' नामक नर्क से पिता को उद्धार करने का श्रेय पुत्र को ही है । इसी भावना से प्रेरित होकर महाराज दशरथ दुःखी मन से गुरु वशिष्ठ जी के पास जाते हैं और उनकी सलाह से श्रृंगी ऋषि को आमंत्रित कर पुत्रेष्टि यज्ञ करते हैं । यज्ञ सम्पन्न होने पर अग्निदेव प्रकट होकर 'चरू' देते हैं, जिसको ग्रहण कर तीनों रानियाँ गर्भवती होती हैं । गर्भावस्था में प्रायः हर नारी पुत्र–प्राप्ति की कामना करती हैं । राजापुर में आज भी महिलायें कौशिल्या तथा श्रीराम के प्रतीकों द्वारा अपनी यह भावना व्यंक्त करती हैं कि कब उनके पुत्र होगा और कब वह बड़ा होगा –

'कब मोरे राम जनमि हैं, बड़न केरा होई ।
चैते राम जनमि हैं, बड़ा केरा होई ।।'' –आदि

राजापुर के लोकगीतों तथा संस्कारादि के गीतों में श्रीराम को ही प्रतीक बनाया जाता है । जन्म चाहे जिसका हो, उपवीत चाहे जिसका हो, विवाह चाहे जिसका हो, उनके सन्दर्भ में कहा यही जाता है, मानो यह सभी संस्कार श्रीराम के ही हो रहे हैं । पुत्र–जन्म में आज भी राजापुर में सोहर गाये जाते हैं, नगाड़े बजाये जाते हैं, पित्रों की तुष्टि हेतु पिण्डदान किया जाता है और सुआसिनियों को नेग चार तथा ब्राह्मणों को दान दक्षिणा दी जाती है । इस शुभअवसर में श्रीराम का ही प्रतीक लेकर राजापुर में निम्नलिखित लोकगीत आज भी गाया जाता है–

'जन्मे राम भयो रे सुख मन माँ ।'
राजा दशरथ हाथी संकल्पेन, बचा न एकौ हाथी राजा के वन माँ ।।
रानी कौसिल्या सोना संकल्पेन, बचा न एक मोती कौसिल्या के नथ माँ ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसी लोकगीत के अनुरूप श्रीराम जन्म के सन्दर्भ में गीतावली में भी वर्णन है –

'भूपति भवन सोहिलो सुनि बाज गह गहे निसान ।
× × ×
जात करम करि पूजि पितर सुर, दिये महिदेवनंदान ।
बारहिं मुक्ता रतन राज महिषी, पुरु सुमुखि सयान ।
बगरे नगर निछावरि मनिगन, जनु जुवारि जव धान ।।
× × ×
विप्र वधू, सनमानि सुआसिनी, जनपुरजन पहिराई ।
सनमानत अवनीस असीसत, ईस रमेस मनाई ।।

(गीता० बालकाण्ड २/४, ७, १९, २२)

राजापुर में पुत्र जन्मोत्सव के पश्चात् छठी, बरहों, नामकरण आदि का आयोजन होता है, जिसका तद्वत् वर्णन तुलसीदास ने गीतावली में किया है–

छठी, बरहों लोक वेद विधि, करि सुविधान विधानी ।
राम लखन, रिपुदमन, भरत, धरे नाम ललित मुनि ग्यानी ।।

(गीता० बा० ४/१२)

छठी, बरहों के उत्सव में उपस्थित नारियाँ सद्यः पुत्रवती के सम्बन्ध में राजापुर में कहती हैं कि पुत्र जन्म से माँ की "कोख जुड़ा गई" और ठीक इन्हीं शब्दों का प्रयोग तुलसीदास ने रामजन्म के अवसर पर गीतावली में किया है–

'आनंद-अयनि राजरानी सब, माँगहु कोख जुड़ानी ।।

(गी० बा० ४/१०)

छठीं के दिन गीत–वाद्य का अयोजन होता है और नारियाँ रात्रि–जागरण करती हैं, मान्यता यह है कि छठी की रात्रि में पूतना आदि के आक्रमण का भय रहता है। (गीता० बा० का० ५/२)

जिस प्रकार राजापुर में माताएँ अपने नन्हें–मुन्ने के उबटन लगाकर, तेल मालिश कर, आँखों में अंजन, मस्तक में गोरोचन का टीका लगाकर, गले में बाघ नख, पैरों में नुपूर, कमर में करधनी, हाथ में पहुँची पहनाकर उसका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रृंगार करती हैं, वैसे ही तद्वत् वर्णन राजापुर की शब्दावली में ही गीतावली में किया गया है –

"चुपरि, उबटि, अन्हवाई कै नयन आँजे ।
चिर रुचि तिलक गोरोचन को कियो है ।। (गी० बा० १०/१)
× × ×

पग नुपूर कटि किंकनी कर कंजनि पहुँची मंजु ।
हिय हरि नख अद्भुत वन्यो, मानो मनसिज मनिगन गुंज ।।।
लोचन नील सरोज से भ्रूपर मसि बिन्दु विराजत ।।

(गीता० बा० का० २२/५, ६)

राजापुर में शिशुओं को बाघ नख (हरि नख) इसलिये पहनाया जाता है ताकि उन्हें किसी की कृदृष्टि (नजर) न लगे और इसी मान्यता के आधार पर शिशुओं के मस्तक में 'अलखन' लगाया जाता है, जिसका गीतावली में वर्णन 'मसि बिन्दु' के रूप में किया गया है । पहुँची शिशुओं को आज भी पहनाई जाती है । और शिशुओं को 'गभुवार' भी कहा जाता है । इस गभुवार शब्द का प्रयोग तुलसी ने गीतावली तथा रामचरित मानस में किया है –

'गभुवारी अलकावली लसै लटकन ललित ललाम ।।

(गी० बा० २२/७)

चिक्कन कच कुंचित गभुवारे । बहु प्रकार रचि मातु सँवारे ।

(मानस बा० १९८/१०)

कभी–कभी शिशुओं को किसी दुष्ट नारी की 'नजर' लग जाती है और शिशु निरन्तर रुदन करता है । यह 'नजर' आज भी झाड़फूँक मंत्रादि द्वारा ठीक हो जाती है और शिशु का रुदन बन्द हो जाता है । ऐसी कुदृष्टि (नजर) का वर्णन गीतावली में भी है । शिशु राम को किसी की कुदृष्टि (नजर) लग जाती है और वे रूदन करने लगते हैं तब गुरु वशिष्ठ ने नृसिंह मंत्र पढ़ा और शिशु राम स्वस्थ होकर 'किलकने' लगे (गीता० बा० का० १२/१, २, ३ तथा १३/१)।

शिशु श्रीराम के सौन्दर्य का निरूपण तुलसी ने गीतावली में अनेक पदों में किया है, लगभग वैसा ही सौन्दर्य निरूपण राजापुर के निम्नलिखित लोकगीत में हुआ है –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राम के माथे चननवा, बहुत निक लागे हो ।
राम नयन रतनारे, कजर भल सोहै ।
दीन्हो रचि रचि फूला सुभदरत पतरी अँगुरिन ।
राम के माथे लुटकिया बहुत निक लागै हो ।।
राम के गोड़वा घुँघरवा बहुत निक लागै हो ।
नान्हे गोड़न चलत बकैयाँ, देखत दसरथ अति अनुरागे ।

यहाँ यह दृष्टव्य है कि श्री राम जन्मोत्सव में रानियों एवं नगरवासियों द्वारा न्योछावर की मणियों की तुलना जुवार, जौ, धान से की गई है –

"बगरे नगर निछावरि मनिगन, जनु जुवार, जौ धान ।"

– गीता०, बाल० २

क्योंकि जुवार, जौ, धान ही राजापुर क्षेत्र की मुख्य फसलें हैं । तुलसी की यह उपमा ही यह सिद्ध करने के लिये पर्याप्त है कि तुलसी की जन्मभूमि राजापुर है । यदि वे सोरों निवासी होते तो सूरदास की भांति श्रीराम जन्मोत्सव में सुरभि (गाय) हेम (स्वर्ण) हीरे तथा हाथी घोड़े आदि के दान का उल्लेख करते जैसे कि सूरदास ने अपनी 'सूर राम चरितावली' में किया है –

मागध-वंदी सूत लुटाये गो, गयंद हय चीर ।
देत असीस सूर चिरजीवौ, रामचन्द रनधीर ।।

(सूर. रा० च० २/५, ६)

× × ×

देत दान नृपराज दुजिन कौ, सुरभी हेम अपार । (सू० राम० च० २०१)

देत दान राख्यो न भूप कछु महा बड़े नग हीर ।। (सू० राम० च० ४/७)

बृज–क्षेत्र में गउवों की ही अधिकता है, और हाथी घोड़े आदि भी वहाँ बहुतायत से पाये जाते हैं । इसी कारण सूरदास इनके दान का उल्लेख करते हैं । इतना ही नहीं तुलसी के राम महाराज दशरथ के साथ दही भात का भोजन करते हैं, क्योंकि राजापुर क्षेत्र में धान अधिक पैदा होता है– "भाजि चले किलकात मुख दधि ओदन लपटाय" किन्तु सूर के राम 'माखन' तो खाते ही हैं, पर महाराज दशरथ के साथ दाल–भात कढ़ी नाना प्रकार के पक्वान भी खाते हैं और भोजनोपरान्त पान का बीड़ा भी खाते हैं –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दार-भात, घृत, कढ़ी सलोनी, अरु नाना पकवान ।
आरोगत नृपचार पुत्र मिलि अति आनन्द-निधान ।
अँचवन करि पुनि जल अँचवायो, जब नृप बीरा लीनी ।
राम लखन अरु भरत सत्रुहन, सबहिन अँचवन कीनौ ।
बीरा खाय चले खेलन को, मिलि कै चारो वीर ।।

(सूर० राम० च० २०२)

सूर के राम मुखारी (दातून) करके मधु-मेवा पकवान का कलेऊ करते हैं जैसा कि सोरों क्षेत्र में प्रचलन है –

उठि बैठे, दतुवन लै आई , करी मुखारी राम ।
चारो भ्रात मिलि करत कलेऊ मधु मेवा पकवान ।।

(सूर० राम० च० २०२)

अस्तु यदि तुलसी का सोरों से कुछ भी सम्बन्ध होता तो वे अपने साहित्य में उपर्युक्त खाद्य-पदार्थों का कुछ तो उल्लेख करते । खेलों में भी तुलसी के राम राजापुर (चित्रकूट) के प्रचलित खेल-गोली, भौंरा, चकडोरि ही खेलते हैं किन्तु सूर के राम तीर चलाते हैं, घुड़सवारी करते हैं और शिकार करते हैं (सूर० राम चरितावली पद २०२)

तुलसी साहित्य में श्रीराम के चूड़ाकर्म (मुंडन), कर्णबेध, उपवीत तथा विवाहादि का वर्णन है । जिस आयु वर्ग में तुलसी के श्रीराम के इन संस्कारों का वर्णन है, उसी आयु वर्ग के बच्चों के उपर्युक्त संस्कार, आज भी राजापुर क्षेत्र में सम्पन्न होते हैं । इस अवसर पर जो लोकगीत गाये जाते है, वे श्रीराम के ही संस्कार मानकर गाये जाते हैं – उदाहरणार्थ राजापुर के किसी भी बालक के मुंडन संस्कार में निम्नलिखित गीत गाया जाता है –

'राम की लटुरिया झलरियां बहुत नीक लागै ।
राम सिर सोहै झलरिया तो नउवा अरज करै ।'
'राजा हमका हुकुम करि देहेउ तो कर देइत मुंडन ।।' –आदि

चूड़ा कर्म तथा कर्णबेध के पश्चात् यज्ञोपवीत संस्कार बड़े महत्व का होता है । यह संस्कार राजापुर में आठ वर्ष से बारह वर्ष की आयु के मध्य सम्पन्न होता है । रामचरित मानस में भी श्रीराम के इसी आयुवर्ग में इस संस्कार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का उल्लेख है –

भये कुमार जबहिं सब भ्राता ।
दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता ।। (बाल० २०३/३)

राजापुर के प्रस्तुत लोकगीत में भी श्रीराम की आठ वर्ष की आयु हो जाने पर महारानी कौशिल्या की चिन्ता श्रीराम के यज्ञोपवीत (बरुआ) की होती है–

मचियन बैठि कौसिलिया रानी, कहत राजा दशरथ सो ।
आठ बरिस के राम जी भयउ, बरुआ करि डारो ।।

यज्ञोपवीत संस्कार के पश्चात् बालक ब्रह्मचारी वेष में अध्ययन हेतु बारह वर्ष के लिये गुरुकुल जाता है । राजा दशरथ श्रीराम के ब्रह्मचारी वेष की कल्पना से दुःखी होकर कौशिल्या के प्रश्न का उत्तर देते हैं –

आठ बरिस के राम जी भयउ, तुम बरुआ करन चहत हौ ।
चाहत राम के माथे चन्दन, गले मिरग की छाला ।।

गुरुकुल जाने के पूर्व बालक ब्रह्मचारी रूप में अपनी माता से प्रथम भिक्षा माँगता है । इस सम्बन्ध के राजापुर में लोकगीत में श्रीराम का ही संदर्भ है –

बेदी माँ ठाढें हैं, राम दूर दूर चितवैं ।
कहाँ गई माता हमार, भिखिया लै डारो हो ।।

यज्ञोपवतीत संस्कार के पश्चात् जीवन का सबसे महत्वपूर्ण संस्कार पाणिग्रहण संस्कार होता है । राजापुर में जो वैवाहिक लोक रीतियाँ प्रचलित हैं, उन सबका सजीव वर्णन, रामचरित मानस, जानकी मंगल तथा पार्वती मंगल में, श्रीराम–सीता तथा शिव पार्वती विवाह वर्णन में है । जनकपुर से श्रीजनक जी की सूचना पर राजा दशरथ बारात की तैयारी में लग जाते हैं । बारात नगर के बाहर एकत्र होने लगती है । यह प्रथा राजापुर में आज भी विद्यमान है । अभी कुछ दिन पूर्व तक (जब मोटरकार आदि की व्यवस्था नहीं थी), राजापुर क्षेत्र में बारात हाथी, घोड़े, ऊँट, शिविका (पालकी) रथ व बैलगाड़ियों आदि से जाती थी । घुड़सवार बड़े उत्साह से घोड़े नचाते थे और बारात प्रस्थान के पूर्व

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक उद्घोष किया जाता था, जिससे कि कोई पिछड़ा हुआ बाराती छूट न जाय। श्रीराम बारात की तैयारी तथा प्रस्थान भी लगभग उपर्युक्त भाँति ही है, जिसका वर्णन रामचरित मानस में है –

"भरत सकल साहनी बोलाये। आयसु दीन्ह मुदित उठि धाये।।
रुचि-रुचि जीन तुरग तिन्ह साजे। बरन बरन बर बाजि बिराजे।"

–'मानस' –बाल० २९७।।३, ४

× × ×

चढ़ि चढ़ि रथ बाहेर नगर लागी जुरन बारात।।

–'मानस' –बाल० २९९

× × ×

चले मत्त गज घंट बिराजी। मनँहु सुभग सावन घन राजी।।

–'मानस' –बाल० २९९।।२

बाहन अपर अनेक बिधाना। सिबिका सुभग सुखासन जाना।।

–'मानस' –बाल० २९९।।३

बेसर ऊँट वृषभ बहुजाती। चले वस्तु भरि अगनित भाँती।।

–'मानस' –बाल० २९९।।६

× × ×

एहि विधि कीन्ह बरात पयाना। हय गय गाजहिं हने निसाना।।

–'मानस' –बाल० ३०३।।४

राजापुर तथा राजापुर क्षेत्र में जिस प्रकार बारात आगमन की सूचना पर कन्या-पक्ष के लोग बारात की अगवानी करते हैं, जनवासे का प्रबन्ध करते हैं तथा बारातियों का स्वागत सत्कार कर विवाह के लिये वर पक्ष का आवाहन करते हैं, वैसा ही वर्णन 'रामचरित मानस', 'जानकी मंगल' तथा 'पार्वती मंगल' में राजापुर की प्रचलित शब्दावली में है। कन्यादान के समय कन्या के माता-पिता यह सोचकर कि जिस कन्या को उन्होंने बड़े लाड़-प्यार से पाला-पोसा है, अब वह पराई हो जायेगी, द्रवित हो जाते हैं और मंडप में कन्यादान के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समय उनके हाँथ काँपते हैं, जिससे जलपात्र कुश आदि भी काँपने लगते हैं। इस सम्बन्ध में राजापुर क्षेत्र में प्रचलित लोकगीत बड़ा मार्मिक है –

काँपै गेंडुवाऔ काँपै पानी, काँपै कुसा की डोभ।
मड़ये माँ काँपै अमुक ? रामा देहि लड़िलरी का दान।।

कन्या के माता–पिता की यह भाव विह्वलता देखकर ग्राम वधुएँ उन्हें कर्त्तव्य बोध कराते हुये गाती हैं –

काँपै गेंडुवाऔ काँपै पानी, काँपै कुसा की डोभ।
अब कस काँपौ अमुक रामा आई धरम की जून।।

वैदिक वैवाहिक प्रथाओं के पश्चात् कोहवर, लहकौर, बाती–मिलन तथा पाँसा खेलने आदि की लौकिक रीतियाँ मनाई जाती हैं। इन लौकिक रीतियों का उल्लेख 'रामचरित मानस', 'जानकी मंगल' तथा 'पार्वती मंगल' में है। इनका वर्णन राजापुर की व्यवहृत लोकभाषा में ही है –

कोहबरहिं आने कुअँर, कुअँरि, सुआसिन्ह सुख पाइकै।
अति प्रीति लौकिक रीति लागी करन, मंगल गाइकै।।

(मानस बा० का० ३२६ छंद २)

<u>जानकी मंगल में</u> –

चतुर नारि बर कुँवरिहिं रीति सिखावहिं।
देहिं गारि लहकौरि समौ सुख पावहिं।। (१४९)
जुँआ खेलावन कौतुक कीन्ह सयानिन्ह।
जीति हारि मिस देहिं गारि दुहु रानिन्ह।। (१५०)

<u>पार्वती मंगल में</u> –

रोकि द्वार मैना तब कौतुक कीन्हेउ।
करि लहकौरि गौरि–हर बड़ सुख दीन्हेउ।। (१३४)
जुँआ खेलावत गारि देहिं गिरि नारिहिं।
अपनि ओर निहारि प्रमोद पुरारिहिं।। (१३५)

उपर्युक्त लोकरीतियों का तद्वत प्रचलन आज भी राजापुर क्षेत्र में है और वहाँ तत्सम्बन्धी लोकगीत भी गाये जाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'कोहवर' एक लौकिक रीति है, जिसका प्रचलन अवध प्रान्त में तो है जब कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश (सोरों आदि में) यह प्रथा नहीं है। यदि तुलसी सोरों निवासी होते तो श्री राम विवाह में इस प्रथा का उल्लेख न करते। इस प्रथा के अन्तर्गत कन्या की सहेलियाँ, वर के जूते चुराकर उन्हें कपड़े से ढक कर वर से कहती हैं, कि यह उनकी कुलदेवी हैं, इन्हें प्रणाम करो नहीं तो यह रूष्ट हो जायेंगी। इसी प्रकार फिर वर कन्या पक्ष में हास–परिहास होता है। इस सम्बन्ध में राजापुर क्षेत्र में प्रचलित एक लम्बा लोकगीत है –

लाल इन देविन के लागहु पाँय।
यह हमरी कुल पूज्य भवानी, तुम्हें उचित यह आय।
परम आनन्द होइ दूनां दिसि इनके पूजे पाँय ।।
क्रोध ते विधन, प्रसन्न भये आँनद कहतीं हम सतिभाय।
वेगि परौ पग दीन भाव करि, होइ क्रोध बिलगाय ।।

× × ×

तब विहँसि कहेउ घूँघुट, धरि हमरौ पनहिं चोराई।
तिन्ह देविन के भाग सराहहु, दोउ पद कमल चढ़ाई ।।

कोहवर (पादुका पूजन) के पश्चात् बाती (ज्योति) मिलाने की लोकरीति हास–परिहास के साथ होती है। इस लोकरीति के अनुसार एक ही दीपक में दो जलती हुई बातियाँ रख दी जाती है। इसके पश्चात् कन्या पक्ष की नारियाँ वर से दोनों बातियों को एक में मिलाने को कहती हैं। इस लोकरीति का यह आशय है कि वर तथा कन्या पक्ष दोनों कुलों की मान–मर्यादा, कीर्ति–प्रतिष्ठा आदि का एकीकरण हो जाय। इस कार्यक्रम में भी वर तथा कन्या पक्ष की नारियों में परस्पर हास–परिहास होता है। कन्या पक्ष की नारियाँ वर से कहती हैं –

लाल तुम काहे टारौ न बाती।
की भगिनी जननी सिखये कछु, की यह लागत ताती।
बाती देखि संका कस उपजी, पठवहु बोलि बराती ।।
की टारौ की भगिनी हारौ, जो तुम्हें सुगम सुहाती।
जो माँगहु सो लेहु लाड़िले, मनि मानिक बहुजाती ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के बाती लै जाहु घरै तुम, देहु मातु कहँ थाती ।
इतना सुनत विहँसि अरिहन बोलेउ, सकल सखी मुसकानी ।
यह थाती सौंपौ तिनहीं को, जो हमरे सँग जाती ।।

इसके पश्चात् लहकौर की लोकरीति सम्पादित होती है, जिसके अनुसार वर, वधू को और वधू, वर को कुछ पकवान खिलाती है । इस संदर्भ का राजापुर क्षेत्र में प्रचलित लोकगीत निम्नलिखित है –

ब्याह काज करि कै परिपूरन, सखी सुअवसर पाइ ।
सुभग रीति लहकौर खान हित वर को चली लिवाय ।।
गो घृत-खाँड़ और मेवादिक धरे अग्र भरि थारा ।
लगे जिवावन वर दुलहिन को सखि हँसिगीत उचारा ।।

लहकौर के पश्चात् पाँसा खिलाने की लोक–रीति है, जिसका वर्णन रामचरित मानस में तो नहीं है किन्तु जानकी मंगल तथा पार्वती मंगल में है । पाँसा खेलने का आयोजन वर–कन्या के मध्य हास–परिहास के साथ होता है । इस लोकरीति का पालन राजापुर क्षेत्र में आज भी होता है । विवाहोपरान्त कन्या पक्ष द्वारा बारातियों के ज्योनार की व्यवस्था की जाती है । जिस प्रकार रामचरित मानस (बाल० ३२७/१–८ तथा ३२८/१–८) जानकी मंगल (१५९–१६०) तथा पार्वती मंगल (१३७–१३८) में ज्योनार, व्यंजन परोसने की प्रक्रिया है, तथा जिस प्रकार कन्या पक्ष की नारियों द्वारा वर पक्ष के विशिष्ट जनों का नाम लेकर गारी गीत गाने का उल्लेख है, वही सब आज भी राजापुर क्षेत्र में व्यवहृत है । इसके पश्चात् बारात की विदाई तथा वर के स्वगृह पहुँचने पर परछन आदि का जिस प्रकार का वर्णन तुलसी साहित्य में है, वैसे ही राजापुर क्षेत्र में आज भी होता है ।

उपर्युक्त सभी संस्कारों में व्यवहृत लोकरीतियों का राजापुर क्षेत्र की प्रचलित लोकभाषा की शब्दावली का तुलसी साहित्य में प्रयोग यह सिद्ध करने के लिये पर्याप्त है कि राजापुर (चित्रकूट) ही तुलसी की जन्मभूमि है ।

<u>लोक व्यवहार</u> – तुलसी साहित्य में वर्णित संस्कारों तथा लोकरीतियों की भाँति रामचरित मानस में वर्णित लोक व्यवहारों का भी राजापुर क्षेत्र के अधिकांश परिवारों में आज भी तद्वत् पालन होता है । तुलसी युग की भाँति आज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भी इस क्षेत्र में संयुक्त परिवार की व्यवस्था है। परिवार के मुखिया होने के नाते पिता का पूर्ण सम्मान होता है और सभी पारिवारिक आयोजन तथा कार्य-कलापों में उसकी प्रमुख भूमिका होती है। पिता की आज्ञा के पालन तथा पारिवारिक प्रतिष्ठा बनाये रखने का पूर्ण ध्यान रखा जाता है, जिसका उल्लेख तुलसीदास ने गीतावली में किया है। चित्रकूट में भरत जी द्वारा श्रीराम के अयोध्या लौट चलने के आग्रह पर श्रीराम कहते हैं -

बहुत कहा कहि कहि समुझावौं।
निजकर खाल खैंचि या तनु ते, जौ पितु पग पानही करावौं।।
होउँ न उरिन पिता दसरथ ते, कैसे ताके वचन मेटि पति पावौं।।
तुलसीदास जाको सुजस तिहूँपुर, क्यों तेहि कुलहिं कालिमा लावौं।।

-गीतावली, (अ० ७२)

इसी प्रकार के भाव लक्ष्मण जी के भी हैं। सीता निर्वासन हेतु सीता जी को वन ले जाते समय वे सोंचते हैं कि राम वन-गमन के समय उन्होंने पिता को कठोर वचन कहे थे, जिसके कारण उन्हें सीता परित्याग जैसा कठोर कार्य करना पड़ रहा है।

प्रेम निधि पितु को कहे मैं परुष वचन अघाइ।
पाप तेहिं परिताप तुलसी उचित सहे सिराइ।।

-(गी० अ० का० ३०)

पिता की भाँति माँ का दर्जा भी बहुत ऊँचा होता है। घर-गृहस्थी के कार्यों में माँ की मान्यता होती है। तुलसी के समय भी माँ की यही मान्यता थी। इसी कारण राम वनगमन के प्रकरण में कौशिल्या जी श्रीराम से कहती हैं-

जौ केवल पितु आयसु ताता। तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता।।

– 'मानस'-अयो० ५५।।१

किन्तु विमाताओं का भी उचित सम्मान होता था। इस कारण माता कौशिल्या पुनः कहती हैं।

जौ पितु मातु कहेउ बन जाना। तौ कानन सत अवध समाना।।

– मानस अयो० का० ५५ , २

तुलसी युग में तथा स्वतन्त्रता पूर्व राजापुर क्षेत्र में भी बहु विवाह की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रथा थी। बड़े-बड़े जमींदारों तथा अन्य अति सम्पन्न परिवारों में बहुपत्नी प्रथा थी। सहपत्नियों में प्रायः सामंजस्य रहता था, किन्तु कहीं-कहीं, कभी-कभी, परस्पर कटुता के उदाहरण भी मिलते थे, जैसा कि रामचरित मानस में श्रीराम के राज्याभिषेक के आयोजन के समय कैकेयी ने राजा दशरथ से उनके वनगमन का वरदान माँग लिया -

जस कौसिला मोर भल ताका। तस फल उन्हहिं देउँ करि साका ।।

(मानस अयो० का० ३२/८)

इसी सन्दर्भ में कौशिल्या जी, सुमित्रा से कहती हैं - कि मैंने कैकेयी को सौत कभी नहीं समझा है, मैंने तो सदा उससे भगिनी जैसा ही व्यवहार किया है-

मैं न लखी सौति, सखी। भगिनी ज्यों सेई है। (कवि०अयो०का० ३)

कौशिल्या जी चित्रकूट में भी जनकराज महिषी सुनयना जी से कहती हैं- कि उन्होंने राम के राज्याभिषेक हेतु महाराज दशरथ से कुछ भी नहीं कहा था-

राम सपथ मैं कीन्हि न काऊ। सौं करि कहऊँ सखी सति भाऊ ।।

(राम० च० मा०, अयो० का० २८२/२)

जिस प्रकार वर्तमान में कुछ दिनों पश्चात् सहपत्नियों में परस्पर समाधान हो जाता है, वैसा ही वर्णन गीतावली के अयोध्या काण्ड में है। कौशिल्या जी विचार करती हैं।

कैकेयी करी धौं चतुराई कौन ?
राम-लखन, सिय वनहिं पठाये, पति पठये सुर-भौन।
कहा भला धौं गयो भरत को, लगे तरुन तन दौन ।।

(गी० अ० का० ८३)

ऐसे अवसर में आज की भाँति सुमित्रा जी, कौशिल्या जी को सान्त्वना देते हुये कहती हैं -

कीजै कहा, जीजी जू ! सुमित्रा परि पाँय कहै।
तुलसी सहावै बिधि, सोइ सहियतु है ।।

(कवि० अ० का० ४)

<u>भ्रातृ-प्रेम</u> - संयुक्त परिवार में बड़े भाई का भी सम्मान पिता की ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाँति होता है और बड़ा भाई भी अपने अनुजों का मन रखने के लिये न्यायोचित आचरण ही करता है। अनुज भी अपने बड़े भाई के सम्मुख (बराबरी करने हेतु) नहीं आते हैं। यही आचरण रामचरित मानस में वर्णित चित्रकूट दरबार में परिलक्षित होता है। भरत जी, श्रीराम के सम्बन्ध में कहते हैं –

मो पर कृपा सनेहु विसेषी। खेलत खुनिस न कबहूँ देखी।।
सिसुपन ते परिहरेउँ न संगू। कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू।।
मैं प्रभु कृपा रीति जिय जोही। हारेहुँ खेल जितावहिं मोंही।।

(मानस० अयो० २५९/६-८)

महूँ सनेह संकोच बस सनमुख कही न बैन।
दरसन तृपित न आजु लगि, प्रेम पियासे नैन।।

(मानस० अयो०का० २६०)

गीतावली में भी "छोटेहु ते छोह करि आये, मैं समुहैं न हेरो।।"

(अयो० का० ७३)

राजापुर क्षेत्र में जमींदारी उन्मूलन पूर्व जमींदारी अभिलेक्षों में खेवट, खतौनी आदि में बड़े भाई का ही नाम अंकित होता था और वह अपने अनुजों तथा उनके परिवारी जनों की सुख–सुविधा का पूर्ण ध्यान रखता था। आज भी वहाँ अनेक परिवार हैं, जिनमें छोटे भाई, बड़े भाई के आदर व सम्मान की दृष्टि से उससे सामने होकर बात नहीं करते हैं। बड़े भाई की पत्नी भी अन्य भाइयों की पत्नियों तथा उनकी सन्तानों का पूरा ध्यान रखती है और उनके बच्चों को अपने बच्चों से अधिक मानती हैं, जिसका उदाहरण तुलसी साहित्य में भी उपलब्ध है। कौशिल्या जी कैकेयी के सम्बन्ध में सुमित्रा जी से कहती है –

सिथिल सनेह कहै कौसिला, सुमित्रा जू सों।
मैं न लखी सौति सखी ! भगिनी ज्यों सेई है।।
कहै मोंहि मैया, कहौ मैं न मैया, भरत की।
बलैया लेहौ भैया तेरी मैया कैकेयी है।।

(कविता० अयो० का० ३)

एक अन्य प्रसंग में संयुक्त परिवार के मुखिया होने के नाते बड़े भाई परिवार का किस प्रकार पालन–पोषण करते हैं, उसका उदाहरण रामचरित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मानस में उपलब्ध है । चित्रकूट में श्रीराम, सीता जी तथा लक्ष्मण जी की देखभाल इस तरह करते हैं–

सीय, लखन जेहि विधि सुखु लहहीं, सोइ रघुनाथ करहिं सोई कहहीं ।
जोगवहि प्रभु सिय लषनहिं कैसे । पलक विलोचन गोलक जैसे ।
लक्ष्मण तथा सीताजी भी श्रीराम की सेवा में –
सेवहिं लखनु सीय रघुवीरहिं । जिमि अबिबेकी पुरुष सरीरहिं ।।

('मानस'० अयो० का० १४०/१ व १४१/१, २)

अन्य परिवारिक सम्बन्ध – परिवार की गरिमा तथा संयुक्त परिवार को सुदृढ़ बनाये रखने हेतु तुलसी युग की भाँति आज भी राजापुर क्षेत्र में माता–पिता तथा गुरुजनों के समक्ष कोई भी अपनी पत्नी तथा सन्तान से बात नहीं करता है जैसा कि रामचरित मानस में उल्लेख है । वनगमन के समय श्रीराम सीताजी को समझाते हुये बड़े संकोच में कहते हैं ।

मातु समीप कहत सकुचाहीं । बोले समउ समुझि मनमाँहीं ।।

(अयो० का० ६०/१)

राजापुर क्षेत्र में आज़ भी पत्नियाँ अपने पति का नाम नहीं लेती हैं, जैसे की वनमार्ग में ग्राम–वधुओं द्वारा सीताजी से श्रीराम का परिचय पूँछने पर सीता जी केवल नेत्रों से इशारे से श्रीराम का परिचय देती है–

खंजन मंजु तिरीछे नयननि, निजपति कहेउ तिन्हहि सिय सयननि ।

(अयो० का० ११६/७)

कवितावली में भी इसी प्रकार का वर्णन है–

तिरछे करि नैन, दै सैन तिन्है समुझाइ कछू मुसकाइ चली ।।

(कवि०अयो०का० २२)

ऐसा ही सीताजी का उत्तर राजापुर क्षेत्र में प्रचलित एक लोकगीत में भी है । रावण द्वारा हरण किये जाने पर सहायता की पुकार करने पर जटायु उनसे उनका परिचय पूँछता है, तब सीता जी कहती हैं –

राजा जनक की कन्या कुमारी, राजा दसरथ घर ब्याही ।
पति अपने का नाम न जानौ, लछिमन कै भौजाई ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पारस्परिक सम्बन्ध – आज भी राजापुर क्षेत्र में पास–पड़ोस तथा गाँव में होने वाले मांगलिक तथा आपद–कार्यों में सम्मिलित होकर एक दूसरे के सुख–दुःख में भागीदार होते हैं। आयोजन तो एक घर में होता है पर लोगों में उत्साह इतना होता है, मानो कि उन्हीं के घर आयोजन हो रहा हो। इसी प्रकार किसी के घर मृत्यु आदि की दशा में दस दिन पर्यन्त गाँव के पुरुष एवं नारियाँ शोक सन्तप्त परिवार के साथ शोक प्रकट करते हुये सामूहिक स्नान कर मृतक को तिलांजलि देते हैं, तथा अन्तिम संस्कार के अन्य कृत्यों में योगदान करते हैं। राजापुर क्षेत्र की इस परम्परा की झलक तुलसी साहित्य में भी लक्षित होती है, चाहे राम जन्म हो अथवा उनकी छठी, बरहों तथा वैवाहिक आयोजन अथवा राम वनगमन या महाराज दशरथ की मृत्यु–सभी में राजापुर क्षेत्र की भाँति अवध पुरवासी सम्मिलित होते हैं और पूर्ण मनोयोग से योगदान करते हैं।

श्रीराम जन्म के समय सभी अयोध्यावासी एक ही रंग में रंगकर परस्पर अबीर उड़ाते हैं, अरगजा छिड़कते हैं तथा न्योछावर करके अपने घरों को रत्नों–मणियों आदि से रिक्त कर देते हैं–

भरहिं अबीर, अरगजा छिरकहिं, सकल लोकरंग रये।
उमगि चल्यो आनंद लोकतिहुँ, देत सबनि मंदिर रितये ।।

(गीता० बा० का० ३)

इसी प्रकार श्रीराम विवाह के अवसर पर वर–यात्रा के समय अयोध्या में– '**पुर घर–घर आनंद महा, सुनि चाह सुहाई।**' (गीता० बा०का० १०३)

और बारात की वापसी पर –

पुरजन आवत अकनि बराता, मुदित सकल पुलकावलि गाता।
निज निज सुन्दर सदन सँवारे। हाट बाट चौहट पुर द्वारे ।।
गली सकल अरगजाँ सिंचाई। जँह तँह चौके चारु पुराई ।।

(राम०च०मा०बा०का० ३४३/३–५)

दशरथ जी की मृत्यु पर भी घर–घर शोक मनाया गया था–

'**बिलपहिं बिकल दास अरु दासी।**
घर–घर रुदनु करहिं पुरबासी ।।'

(राम०अयो०का० १५५/५)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इतना ही नहीं, तुलसी तथा तुलसी साहित्य की छाप राजापुर क्षेत्र में उतनी गहरी है कि वहाँ का समस्त वातावरण राममय बना हुआ है। वहाँ शिशु जन्म में 'सोहर' रामजन्म के गाये जाते हैं और मृत के कन्धा देने में "रामनाम सत्य है" का उद्घोष किया जाता है। प्रायः हर संस्कार में श्रीराम को ही प्रतीक मानकर राम कथात्मक लोकगीत गाये जाते हैं। जन्म, छठी, बरहों, चूड़ाकरण, कर्ण छेदन, उपनयन अथवा विवाह चाहे किसी का भी हो, गीत श्रीराम के ही गाये जाते हैं। इस क्षेत्र में 'अथ' तथा 'इति' मूलक अभिव्यक्तियाँ 'श्रीराम' शब्द के द्वारा ही होती हैं। किसी बड़ी राशि के तौलने पर किसान, व्यापारी अथवा महाजन आदि राशि की पहली तौल को 'एक' न कहकर 'राम' कहते हैं, तत्पश्चात् दो, तीन, चार आदि की क्रमिक गणना करते हैं। इसी प्रकार किसी कार्य को रोकने के समय भी 'राम कहो' कहकर विराम लिया जाता है। अभिवादन में भी 'राम-राम', 'जयराम' जय सियाराम अथवा जय सीताराम' कहकर ही अभिव्यक्ति की जाती है। करुणा अथवा घृणा की भावना व्यक्त करते समय भी 'राम-राम' कहा जाता है। राजापुर क्षेत्र में व्यक्तियों तथा स्थानों के नाम भी प्रायः 'राम' से सम्बन्धित होते हैं, जैसे रामप्रसाद, रामचरण, सीताराम, सियाराम आदि। इसी प्रकार ग्रामों के नाम भी राम से ही संदर्भित रहते हैं, जैसे रामनगर, रमपुरिया, रामपुर, रघुनाथपुर आदि। इस प्रकार राजापुर क्षेत्र के जन-जीवन, लोक साहित्य, लोक संस्कृति, धार्मिक तथा लौकिक रीति-रिवाज तथा अन्य परम्पराओं में श्रीराम व्याप्त हैं, जो तुलसी तथा उनके साहित्य की देन हैं।

इतना ही नहीं, राजापुर तथा उसके निकट रामपरक लोकगीत उपलब्ध हैं, जिनका गायन लोक परम्परा से पीढ़ी दर पीढ़ी होता चला आ रहा है। ग्रामीण अंचल में यह लोकगीत बड़े लोकप्रिय हैं। इन गीतों के अन्त में टेक 'तुलसी' को दी गई है, किन्तु इन गीतों की रचना में से तुलसी का कोई सम्बन्ध नहीं है। इनमें से कुछ लोकगीत यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१) जनकपुर में धनुर्यज्ञ आयोजन में किसी नरेश द्वारा शिव-धनुष न उठाये अथवा तोड़े जाने पर श्रीराम धनुष तोड़ने जाते हैं।

धनुहा उठै न सीता रहैं कुंआरी।
जनकराज इक यज्ञ रच्यो है, धनुष धरेयो ओंड़काई ।।
जो कोऊ धनुहा टोरि गिरावे, सीतहिं लेहि बियाही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लंका से इक निसिचर आवा, धनुष देखि मुस्काई
तिल भर जगह धनुष ना छाँड़ै, रावन चल्यो खिसियाई ।।
रामचंद धनुहा लगि पहुँचे सिया-मातु मुस्काहीं ।
कोमल तन उमरि के थोरे, धनुहा उठै धौ नाहीं ।।
उलटा कछनी कछे रामचन्द्र धरती माथ नवाई
बाई अटुका धनुहा दाबेन, टूक-टूक होई जाई ।।
टूट्यो धनुहा सबद भो भारी, बजन लगी सहनाई ।
तुलसीदास भजौ भगवानै, सीतहिं लिहिन बियाही ।

(२) प्रस्तुत पद सीता हरण तथा रावण-जटायु युद्ध के संदर्भ में है-

हरि गै जानकि लछमन कै भौजाई ।
भिक्षा मांगन चला निसाचर, देहु जानकी माई ।।
लै कै भिक्षा निकरी जानकी, रथ माँ लिहिस बिठाई ।
त्राहि-त्राहि करि बोलि जानकी, सरन सरन गोहराई ।।
है कोउ जोधा रामादल माँ, मोहिका लेइ छोड़ाई ।।
किनकी हौ तुम कन्या कुमारी, केहिके घर माँ व्याही ।
अपने पति का नाम बताओ, रथ राखौं बेलमाई ।।
राजा जनक की कन्याकुमारी, राजा दशरथ घर ब्याही ।
अपने पति का नाम न जानौं, लछिमन कै भौजाई ।।
इतनी बातैं सुनत जटायु लगा सरग मंडराई ।
मारि कैं चोंच महायुद्ध कीन्हेसि रथ राखेसि बेलमाई ।।
अगिन बान जब छाँड़ि निसाचर, अंख-पंख जरि जाई ।
देत असीस जानकी माई, जुग जुग जियौ जटाई ।।
कहौ जो बहुरैं लछमन देवरा कथा कह्यो समझाई ।
तुलसीदास भजौ भगवानै, गीध परम गति पाई ।।

(३) इस पद में मेघनाद की मृत्यु पर सुलोचना विलाप करती है -

देखि कै भुजा सुलोचना रोई मिटिगै रेख हमारी ।
मोरे पति का लछमन मारेसि, [illegible] मा चुरिया उतारी ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम्हरा भरोसा मैं कियो स्वामी, तुम्हरी लंका मोरी ।
सारी लंका सुख मा सोवै, मैं दुखिया बेचारी ।।
कबहुँ न ऐहो अब घर मंदिर, मंदिर सून परेयो है ।
कतौं न कीन्ह्यों झार बिछौना सूनी सेज परी है ।।
तुम तौ स्वामी सरग सिधार्यो, कौन करै प्रतिपाल हमारी ।
तुलसीदास भजौ भगवानै, हरिचरन बलिहारी ।।

स्वागत-सत्कार की स्थानीय परम्परा - राजापुर तथा राजापुर क्षेत्र में नहीं, अपितु समस्त बुन्देलखण्ड स्वागत सत्कार की परम्पराओं के लिये सदा से ही प्रख्यात रहा है और आज भी यह परम्परा विद्यमान है। सम्राट हुमायूँ ने ही अपने भारत-पलायन के समय यहाँ शरण ली थी। बघेल-नरेश व्याघ्रदेव ने बघेलखण्ड से आकर कालींजर के निकट शरण ली थी, अब्दुर्रहीम खानखाना ने भी अपने दुर्दिनों में यहीं शरण ली थी, और यह स्वीकारा था-

चित्रकूट में रमि-रहे, रहिमन अवध नरेश ।
जापर विपदा परत है, सो आवत यहि देश ।।

रहीम की भाँति तुलसी ने भी इस क्षेत्र में स्वागत का विशद वर्णन अपनी रामचरित-मानस, गीतावली तथा कवितावली में किया है। यह इस क्षेत्र का स्वागत सत्कार ही था कि भगवान श्रीराम चित्रकूट में केवल बसे ही नहीं, अपितु वे वहाँ "रमि" रहे और वह भी पूरे बारह वर्षों तक श्रीराम के वनगमन मार्ग तथा वनवास स्थान में कहीं भी उनका इतना स्वागत सत्कार नहीं हुआ और न कहीं भी उनके वनगमन के प्रति संवेदना प्रकट की गई, जितना कि इस क्षेत्र में यह सब हुआ। श्रीराम के यमुना पारकर राजापुर क्षेत्र में प्रवेश करते ही ग्राम वधुएँ सविषाद कहती हैं -

ते पितु मातु कहहु सखि कैसे । जिन्ह पठए बन बालक ऐसे ।।

(राम०अयो० का० ३३)

वनमार्ग में ग्रामवासी वनगमन की जानकारी प्राप्तकर आपस में कहते हैं-

बोले राज देन को, रजायसु भो कानन को ।
कैकेयी कुचाल करि कानन पठायो है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुल-गुरु सचिव काहू न समुझायो ।
काँच मनि लै अमोल मानिक गँवायो है ।। (गीता०अयो०का०३९)

सीताजी को देख ग्राम वधुएँ अपने को धन्य समझती हैं और आपस में कहती हैं –

नीके कै निकाई देखि, जनम सफल लेखि ।
हमसी भूरि भागिनी नभ न छोनी है ।। (गीता०अयो०का० २२)

ग्राम बन्धुओं की प्रेमपूर्ण वार्ता सुनकर प्रभु श्रीराम एक वृक्ष की छाया में रुक जाते हैं, (तुलसी प्रभु तरु विलमे, किये प्रेम कनौउ कै न ? –गीता०अ०का० २४) रामचरित मानस में भी ऐसा ही प्रसंग है वनमार्ग में ग्रामवासी श्रीराम के स्वागतार्थ वट वृक्ष की सुखद छाया में कोमल घास तथा पत्ते बिछाकर उनसे विश्राम करने का आग्रह करते हैं । प्रभु बैठ जाते हैं, इसलिये नहीं कि वे श्रमित हैं, पर वे बैठ जाते हैं ग्रामवासियों के प्रेमपूर्ण अनुरोध के कारण और ग्रामवासी प्रभु के समयानुकूल स्वागत में जुट जाते हैं – "एक कलश भरि आनहिं पानी । अँचइअ नाथ कहहिं मृदुवानी" (राम०च०मा०अयो०का० ११४/१) ग्राम वधुयें सीता जी से प्रेमपूर्वक उनका परिचय पूछती हैं और सीता जी उन्हें समुचित उत्तर देती हैं । वहाँ से श्रीराम के प्रस्थान करने पर ग्रामवधुयें आत्म विभोर आपस में कहती हैं –

धरि धीर कहैं, चलु देखिअ जाइ, जहाँ सजनी ! रजनी रहिहैं ।।
(कवि०अयो० २३)

भगवान श्रीराम के चित्रकूट पहुँचने पर वनवासी कोलकिरात उनके स्वागत का विशद आयोजन कहते हैं, और भेंट स्वरूप दोनों में कंदमूल फल भरकर प्रभु के समक्ष रख उन्हें प्रणाम करते हुये कहते हैं –

हम सेवक परिवार समेता । नाथ न सकुचब आयसु देता ।।
(राम०च०अयो०का० १३५/८)

भरत जी के ससैन्य चित्रकूट पहुँचते ही वहाँ के वनवासी कोल किरात उनके स्वागत सत्कार में लग जाते हैं । वे लोग कंदमूल फल तथा स्वादिष्ट शहद लेकर उपस्थित होते हैं । लोग उन्हें इन सबका मूल्य देते हैं, किन्तु वे श्रीराम की दहाई देकर मूल्य अस्वीकार करते हुये कहते हैं –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुम्ह प्रिय पाहुन बन पगु धारे । सेवा जोगु न भाग हमारे ।।
देब काह हम तुम्हहिं गोसाँई । ईंधनु पात किरात मिताई ।।
(राम०च०अयो०का० २५०/१)

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि श्रीराम वनगमन मार्ग में अयोध्या से लंका तक श्रीराम को अनेक ग्राम मिले होंगे, मार्ग में अनगिनत पथिक तथा वनवासी भी मिले होंगे किन्तु कहीं भी, किसी ने उनके प्रति इतनी संवेदना नहीं प्रकट की है और न कहीं पर इतना स्वागत सत्कार ही हुआ है, जितना कि राजापुर से चित्रकूट मार्ग में तथा चित्रकूट में हुआ है । राजापुर क्षेत्र में यह परम्परा आज भी विद्यमान है । इस तथ्य का उल्लेख करके तुलसी ने यह स्पष्ट कर दिया है, कि उनकी जन्मभूमि राजापुर (चित्रकूट) ही है ।

१२- भाषात्मक लिपि प्रवृत्ति - विक्रम परिषद् काशी द्वारा प्रकाशित श्री रामचरित मानस के सम्पादकीय में प्रधान सम्पादक श्री सीताराम चतुर्वेदी ने स्पष्ट किया है कि किसी भी मानस की प्रति में व्यापक रूप से अकारान्त संज्ञा और विशेषण शब्दों के अन्तिम वर्ण को उकरान्त करने के नियम का प्रयोग नहीं मिलता । प्रतिलिपिकारों, सम्पादकों आदि ने ही आग्रही दृष्टि के कारण उकारान्त या इकारान्त कर दिया है, जिससे तुलसी की भाषा और तुलसी को उनके क्षेत्र का सिद्ध करने के लिये प्रामाणिक तर्क जुटाये जा सकें । इसी क्षेत्रीय आग्रह ने तुलसी के ग्रन्थों में अनेक परिवर्तन किये हैं, जिससे उन ग्रन्थों के प्रामाणिक संस्करणों का प्रकाशन दुर्लभ हो गया है ।

आश्चर्य तो यह है कि तुलसी-युग और तुलसी की विशिष्ट परिस्थितियों को नकारते हुए क्षेत्रीयता के आधार पर निर्णय गढ़ लिये जाते हैं । तुलसी जीवनवृन्त के परिपेक्ष्य में सोरों (एटा) तथा राजापुर (गोंडा) समर्थकों द्वारा तुलसीदास जी रचित ग्रंथ-प्रसंगों के व्यतिक्रम, शब्द भावार्थ का अपने मनोनुकूल परिवर्तन, शब्दों के अर्थ का अनर्थ, भाषा का क्षेत्रीयकरण तथा अन्तः साक्ष्य के तथ्यात्मक परिदृश्यों की उपेक्षा कर कल्पना प्रसूत अथवा कृत्रिमता से परिपूर्ण तुलसी जीवनवृत्त से जन सामान्य को भ्रमित करने का दुष्प्रयास किया जा रहा है ।

गीताप्रेस गोरखपुर के प्रकाशक का 'रामचरित मानस' के सम्बन्ध में कथन है - "पूज्यपाद गोस्वामी जी के हाथ की लिखी हुई कोई पूरी प्रामाणिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रति खोज करने पर न मिलने के कारण हम लोग शुद्ध पाठ का दावा तो नहीं कर सकते परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि जो कुछ पुरानी से पुरानी सामग्री हमें प्राप्त हो सकी उसका अपनी समझ के अनुसार ईमानदारी से उपयोग किया गया है। बालकाण्ड की प्रति सबसे पुरानी श्री अयोध्या जी के श्रावण कुंज की है जो विक्रम संवत् १६६१ की लिखी है, अयोध्याकाण्ड भी राजापुर (चित्रकूट) की है जो गोस्वामी जी के हाथ की लिखी मानी जाती है और सुन्दरकाण्ड की एक प्रति अवध प्रान्त के दुलही नामक स्थान में मिली थी, जो संवत् १६७२ की लिखी है। ये तीनों काण्ड गोस्वामी जी के समय के लिखे हैं, इनके सिवा शेष काण्ड उनके समय के नहीं मिल सके। इसलिये बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड और सुन्दरकाण्ड का पाठ तो प्रायः उपर्युक्त प्रतियों से लिया गया है जो उपलब्ध प्रतियों में सबसे अधिक विश्वसनीय तथा प्रामाणिक मानी जाती हैं।"

'मानस' पाण्डुलिपि की लिपि प्रवृत्ति

१. कथा-श्रवण प्रसंग की भाषा प्रवृत्ति -

"मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकर खेत।

समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत।।" -'मानस' १,३०क

उपरोक्त कथा-श्रवण प्रसंग मानसोक्ति में उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम एक वचन 'मैं' के प्रयोग से तुलसीदास जी स्वयं को दिग्दर्शित करते हैं। यह प्रवृत्ति मूलतः राजापुर-चित्रकूट भाषाई क्षेत्र की है और यह 'सूकरखेत'-चित्रकूट क्षेत्र बुन्देली, ब्रजी, अवधी आदि भाषाओं की संगम स्थली है और यहाँ प्रायः उत्तम पुरुष वाचक एक वचनीय सर्वनाम 'मैं' के रूप में प्रयुक्त होता है। रामचरित मानस में 'मैं' शब्द का प्रयोग ३०७ बार हुआ है। जबकि 'मैं' अवध के किसी भाषाई क्षेत्र में प्रयोग नहीं होता है। इस तथ्यात्मक प्रवृत्ति की पुष्टि अवधी के मूर्धन्य विद्वान एवं भाषा शास्त्र के प्रथम पांक्तेय विद्वान इस प्रकार से करते हैं -

(१) 'मैं' उत्तम पुरुष सर्वनाम अवधी में 'हम' बोला जाता है -

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैं जाता हूँ	हम जाइति हैं ।
मैं खाता हूँ	हम खाइति हैं ।......"

–डॉ० दुर्गाशंकर मिश्र ("अवधी भाषा का स्वरूप")

(२) "इस सर्वनाम का एक वचन रूप 'मैं' बहुवचन 'हम' की अपेक्षा बहुत कम प्रयुक्त होता है । बहुवचन रूप ने एक वचन का स्थान छीन लिया है और पूर्वी बोलियों में तो सर्वनाम के एकवचन का रूप रह ही नहीं गया है, बहुवचन 'हम' सर्वत्र प्रयुक्त होता है, जैसे–'हम देखब' और केवल प्रसंग से यह जाना जा सकता है कि यह एक वचन है या बहुवचन । जब कोई विशेषता लानी होती है तो बहुवचन के लिए सब या सब केऊ जोड़ देते हैं; जैसे –"हम सब देखब ।"

–डॉ० बाबूराम सक्सेना ("अवधी का विकास" –पृष्ठ १३७)

इस प्रकार तुलसीदास जी रचित 'रामचरितमानस' में उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम का एक वचन का रूप 'मैं' का प्रयोग प्रचुर मात्रा में होने और 'हम' के ९७ बार प्रयोग –

"अब उर राखेहु जो हम कहेऊ" – 'मानस'–१, ७६,३
"बिनु पंखन्ह हम चहहिं उड़ाना" – 'मानस' १, ७७, ३
तथा, "हमहुँ कहब अब ठकुर सोहाती" –'मानस' २, १५, २

आदि से यह संकेत मिलता है कि जिस स्थान विशेष पर इस प्रवृत्ति का प्रयोग सामान्यतः होता है, वही स्थान विशेष एवं क्षेत्रीय परिवेश तुलसी जन्मभूमि का वास्तविक अधिकारी हो सकता है । उल्लेखनीय है कि ऐसी भाषा–प्रवृत्ति राजापुर–चित्रकूट क्षेत्र में ब्रजी, अवधी, बुन्देली, बघेली आदि की संगम स्थली होने से सहज पाई जाती है । 'रामचरितमानस' के भाषा स्वरूप में उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम के अविकारी, विकारी तथा सम्बन्धकारक शब्दावली के रूप में महूँ, मैं, मो, मोहि, मोही, मोहू, मोर, मोरा, मोरी, मोरे, मोरें, हम, हमरे, हमरें, हमार, हमारा, हमारि, हमारी, हमारे तथा हमारें आदि के प्रयोग हुये हैं ।

'मानस' में इन शब्दों की परिमाण तालिका का दिग् दर्शन निम्नांकित प्रकार से प्रस्तुत है –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शब्द	मात्रा स्थान	शब्द	मात्रा स्थान	शब्द	मात्रा स्थान
मैं	३०७	मोरी	३८	हमरें	१०
मो	४७	मोरे	१३	हमार	१९
मोहि	४०२	मोरें	६६	हमारा	२०
मोही	६०	मोरेहु	०१	हमारि	०६
मोर	१२४	मोहू	०६	हमारी	१३
मोरा	३८	हम	९७	हमारे	५५
मोरि	५०	हमरे	०१	हमारें	११

उत्तम पुरूष वाचक सर्वनाम का एक वचनीय 'मैं' का प्रयोग प्रायः पश्चिमी हिन्दी के भाषाई क्षेत्र अथवा ब्रजभाषा क्षेत्र में होता है। अवधी के भाषाई क्षेत्र में उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम के रूप में प्रायः बहुवचनीय 'हम' का ही प्रयोग 'मैं' के स्थान पर होता है। राजापुर-चित्रकूट क्षेत्र ब्रज, बुन्देली, अवधी आदि भाषाओं की संगम स्थली होने से यहाँ उपरोक्त प्रवृत्ति 'मैं' और 'हम' दोनों का प्रयोग आम बोलचाल की भाषा और बोली में आज भी देखा जा सकता है।

(३) 'रामचरितमानस' की अद्यावधि उपलब्ध प्राचीन प्रायः समस्त पाण्डुलिपियों के भाषा स्वरूप में 'खकार' तथा 'बकार' के कोई रूप नहीं हैं अर्थात् 'खकार' के स्थान पर मूर्द्धन्य 'षकार' तथा 'बकार' के स्थान पर 'वकार' के स्थानापन्न रूप दृष्टिगोचर होते हैं यद्यपि 'रामचरितमानस' के अद्यावधि प्रकाशित प्रायः सभी संस्करणों के भाषा स्वरूप में 'खकार' का मूल आलेख व्यवहृत है तथा 'बकार' और 'वकार' दोनों के प्रयोग हैं।

इस प्रकार उक्त भाषात्मक लिपि एवं प्रवृत्ति के समीक्षात्मक तथा विवेचनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि 'खकार' के स्थान पर मूर्द्धन्य 'षकार', 'बकार' के स्थान पर 'वकार' तथा उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम का एकवचन 'मैं' के साथ ही 'हम' के प्रयोग राजापुर-चित्रकूट क्षेत्रपरक हैं जो तुलसीदास जी की जन्म भूमि, गुरुभूमि एवं कर्मभूमि के पुष्ट प्रमाण अन्तः साक्ष्य रूप में तुलसीदास जी कृत ग्रन्थों के भाषा स्वरूप में दृष्टिगत होते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२. 'रामचरित मानस' के बालकाण्ड (छाया प्रति सं० १ पृष्ठ १९०) की यह पाण्डुलिपि अयोध्याजी के श्रावण कुंज में उपलब्ध है। इसके भाषा स्वरूप में निम्नलिखित लिपि प्रवृत्तियाँ व्यवहृत हैं –

(१) 'खकार' के स्थान पर मूर्द्धन्य 'षकार' जैसे 'देखत' के स्थान पर 'देषत', 'देख' के स्थान पर 'देष' प्रयुक्त हुआ है।

(२) समस्त भाषा स्वरूप में 'बकार' का प्रयोग नहीं है, बकार के स्थान पर 'वकार' का प्रयोग है।

(३) कतिपय 'वकार' के निम्नभाग में लिपि चिन्ह (व़) रूप में एक बिन्दु का उपयोजन है।

(४) 'यकार' के निम्नभाग में लिपि चिन्ह (य़) रूप में एक विन्दु का प्रयोग।

उक्त प्रवृत्तियाँ अवधी में व्यवहृत नहीं होतीं अपितु अवधी में मूर्द्धन्य 'षकार' के स्थान पर 'खकार' तथा 'वकार' के स्थान पर 'बकार' का प्रयोग किया जाता है। यथा–

दोष	>	दोख,	पुरुष	>	पुरुख आदि
वेद	>	बेद,	विवेक	>	बिबेक आदि।

विन्दु लगाने की प्रवृत्ति अवधी में नहीं है। इस लिपि प्रवृत्ति को भाषा शास्त्र की अग्रिम पंक्ति के अवधी विद्वान डॉ० बाबूराम सक्सेना भ्रान्ति रूप में स्वीकार करते हैं।

३. यह राजापुर (बाँदा, वर्तमान जिला चित्रकूट) में विद्यमान 'रामचरित मानस'–'अयोध्याकाण्ड' की गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा हस्तलिखित पाण्डुलिपि की छायाप्रति है। (छाया प्रति संख्या २ पृष्ठ १९१) इसमें चार ऐसी भाषात्मक लिपि प्रवृत्तियाँ हैं जो तुलसी जन्मभूमि सिद्ध करने में सहायक सिद्ध हो सकती हैं। यथा–

(१) 'खकार' व्यंजन का इस लिपि में कोई स्थान नहीं है। 'खकार' के स्थान पर मूर्द्धन्य 'षकार' का प्रयोग हुआ है।

(२) 'बकार' के स्थान पर 'वकार' का प्रयोग हुआ है।

(३) 'यकार' व्यंजन के प्रयोग में 'यकार' के निम्न भाग में एक विन्दु (.)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'य़कार' का प्रयोग है ।

(४) 'वकार' के स्थान पर 'व़कार' का प्रयोग हुआ है ।

यह प्रवृत्तियाँ अवधी भाषा अथवा अवध क्षेत्रीय भू भाग में व्यवहृत नहीं होती हैं । अवधी में इनके प्रयोग निम्नलिखित प्रकार हैं –

(१) 'षकार' अवधी में 'खकार' के रूप में व्यवहृत होता है –

पुरुष > पुरुख, दोष > दोख आदि ।

(२) अवधी में 'वकार' की ध्वनि अल्परूप में मिलती है । अवधी में 'वकार' के स्थान पर 'बकार' का प्रयोग होता है । यथा –

वेद > बेद, विवेक > बिबेक आदि ।

(३) अवधी में 'वकार' और 'यकार' के निम्नभाग में बिन्दु लगाने की कोई प्रवृत्ति नहीं है । अवधी भाषाशास्त्री डॉ० बाबूराम सक्सेना ने बिन्दु प्रतिष्ठान को भ्रान्ति रूप में स्वीकार किया है ।

उपर्युक्त तुलसी भाषा की उल्लिखित एवं दर्शित समस्त प्रवृत्तियाँ राजापुर–चित्रकूट क्षेत्र के भाषा स्वरूप में लगभग १३वीं शताब्दी से अविकल रूप में व्यवहृत होती रही हैं । राजापुर से प्राप्त तुलसी परवर्ती पाण्डुलिपियों में भी यह लिपि प्रवृति देखने को मिलती है ।

४. विक्रमी संवत् १६६९ में काशी में लिपिबद्ध एक पंचनामा है जो तुलसीदास जी के परमप्रिय सतसंगी टोडर की मृत्यु के उपरान्त उनके पारिवारिक विवाद के समापन हेतु तत्कालीन काजी द्वारा फारसी में लिखा गया था । इस पंचनामा की प्रारम्भिक छह पंक्तियाँ तुलसीदासजी के हस्तलेख में हिन्दी जगत् के विद्वान निर्विवादित रूप में स्वीकार करते हैं । पंचनामा में दी गई तिथि गणना से शुद्ध है । इसकी मूलप्रति पूर्व काशी नरेश के निजी संग्रहालय में सुरक्षित है । (देखिये छाया प्रति सं० ३ पृष्ठ १९२)

इस पंचनामा के भाषा स्वरूप में कतिपय ऐसी भाषात्मक लिपि प्रवृत्तियाँ व्यवहृत हुई हैं जिनका किसी भी व्याकरणिक परम्परा अथवा विधि में परिबन्धन नहीं है । पंचनामा की भाषात्मक लिपि प्रवृत्ति निम्नांकित पंक्तियों में दृष्टव्य है –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१) उक्त पंचनामा की प्रारम्भिक छह पंक्तियों के हस्तलेख में व्यवहृत शब्दावली में 'यकार' के निम्नभाग में एक चिन्ह रूप में विन्दु (.) का उपयोजन है, परन्तु जिस 'यकार' का रूप किसी अन्य व्यंजन से संयुक्त होकर व्यवहृत हुआ है, वहाँ विन्दु नहीं है।

(२) इसके भाषा स्वरूप की चतुर्थ पंक्ति में 'बिनु' का प्रयोग 'विनु' रूप में हुआ है, अर्थात् 'बकार' के स्थान 'वकार' का प्रयोग हुआ है।

५. गोस्वामी तुलसीदास के राजापुर निवासी शिष्य परम्परा को मिले माफीनामा को जारी रखने के ऐतिहासिक दस्तावेज सन् १७१९ ई० तथा उसके बाद पन्ना नरेश की संवत् १८१२ एवं संवत् १८१३ की राजाज्ञाओं (देखिये दुर्लभ साक्ष्य छायाप्रति ३ व ४ पृष्ठ ९४, ९५) में व्यवहृत शब्दावली में राजापुर-चित्रकूट क्षेत्र तथा तुलसीदासजी की लिपि प्रवृत्ति 'यकार' और 'वकार' के निम्न भाग में एक चिन्ह रूप में विन्दु (.) का उपयोजन है और 'बकार' के स्थान पर 'वकार' का प्रयोग हुआ है।

यहाँ यह प्रश्न उठता है कि यह भाषात्मक लिपि प्रवृत्तियाँ किस भाषाई क्षेत्र विशेष में व्यवहृत होती हैं ? यह तो पूर्णतः सत्य है कि यह प्रवृत्तियाँ अवधी और ब्रजी की नहीं हैं।

इस सन्दर्भ में निम्नांकित तालिका दृष्टव्य है –

वर्तमान वर्ण	सोरों पाण्डुलिपियों के अक्षर	टोडर परिवार के पंचनामा के अक्षर	राजापुर अयो०काण्ड के अक्षर
ज	ज	ज	ज
ण	रा, ण	रा	रा
य	य	य़	य़
र	र	न	न
ब	ब	व	व
व	व	व़	व़
क्ष	क्ष	क्ष	क्ष

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि सोरों पाण्डुलिपियों के अक्षर अपेक्षाकृत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आधुनिक अक्षरों से मिलते–जुलते हैं और टोडर परिवार के तुलसीदास जी द्वारा लिखित 'पंचनामा' की प्रारम्भिक छह पंक्तियों के अक्षर तथा राजापुर (चित्रकूट) के 'अयोध्याकाण्ड' के अक्षर, लिपि प्रवृत्ति एवं मोड़ मिलते–जुलते हैं। वास्तविकता यह है कि तुलसीदास जी की भाषा एवं भाषात्मक लिपि प्रवृत्ति उनके जन्मभूमिज संस्कारों से धरोहर के रूप में उन्हें प्राप्त हुई है क्योंकि प्रत्येक मानव बालपन की अचेतावस्था से ही अपने पारिवारिक परिवेश और अपने विद्यागुरू के सान्निध्य से इस अमूल्य धरोहर को सहज ही प्राप्त करता है।

जैसा कि तुलसीदास जी की भाषा एवं भाषात्मक लिपि प्रवृत्ति के उपरोक्त विस्तृत विश्लेषण से स्पष्ट है कि तुलसीदास जी की भाषा एवं भाषात्मक लिपि प्रवृत्ति तुलसी जन्मभूमि राजापुर (चित्रकूट) और गुरुद्वारा 'सूकरखेत'–चित्रकूट क्षेत्र की आमबोलचाल की भाषा की लिपिप्रवृत्ति से पूर्णरूपेण मिलती है। यह क्षेत्र प्रारम्भ से ही बुन्देली, बघेली, ब्रजी और अवधी आदि भाषा एवं संस्कृति की संगम स्थली रहा है जिसका स्पष्ट प्रभाव तुलसी की भाषा, संस्कृति तथा भाषात्मक लिपि प्रवृत्ति में परिलक्षित है।

इससे सिद्ध होता है कि गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्मभूमि राजापुर (चित्रकूट) ही है।

⌘⌘⌘⌘

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

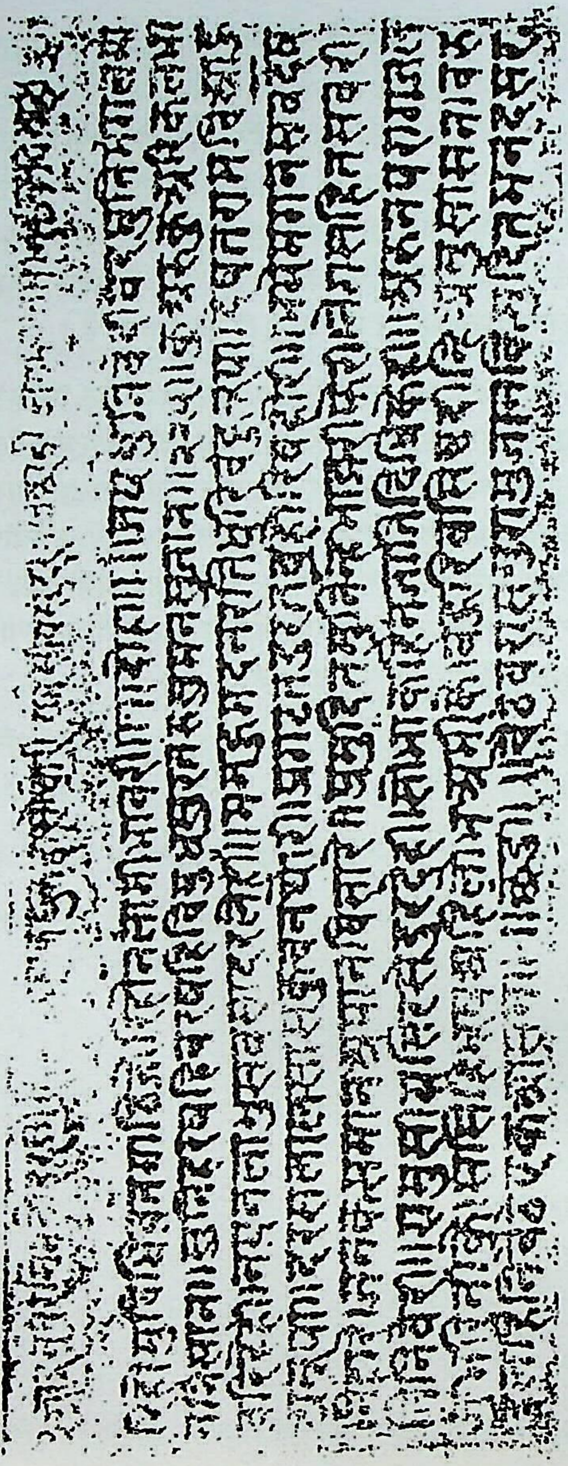

सं० १६३१ (?) के हस्तलिखित बालकांड का एक पृष्ठ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मानस मंदिर' राजापुर जिला चित्रकूट में उपलब्ध रामचरित मानस के 'अयोध्याकाण्ड' की तुलसी हस्तलिखित प्रति का अन्तिम पृष्ठ -

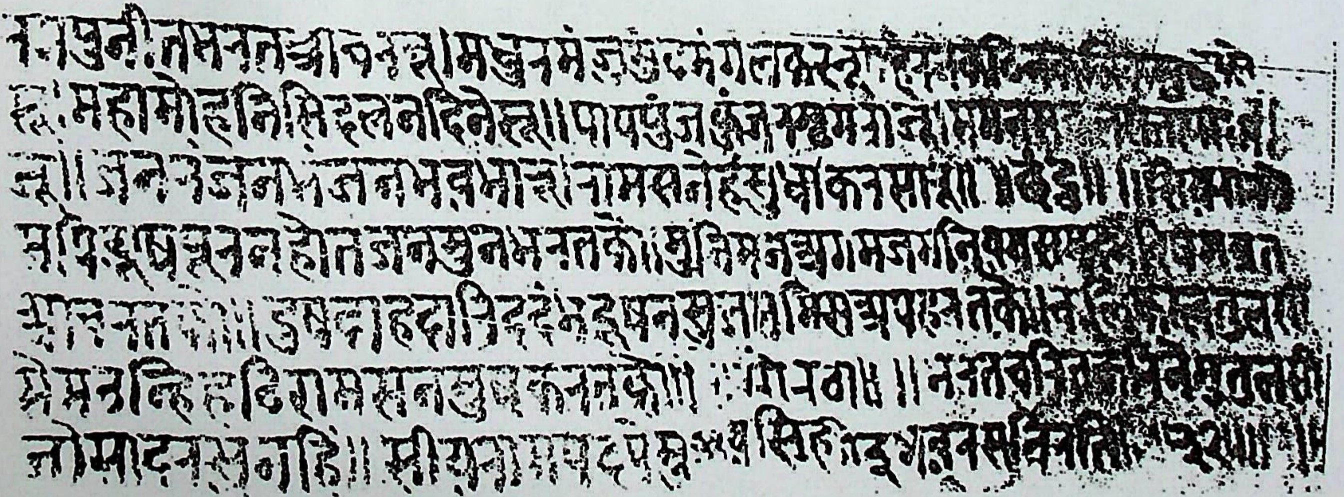

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रायटोडरमल के पारिवारिक पंचनामा का प्रारंभिक भाग -

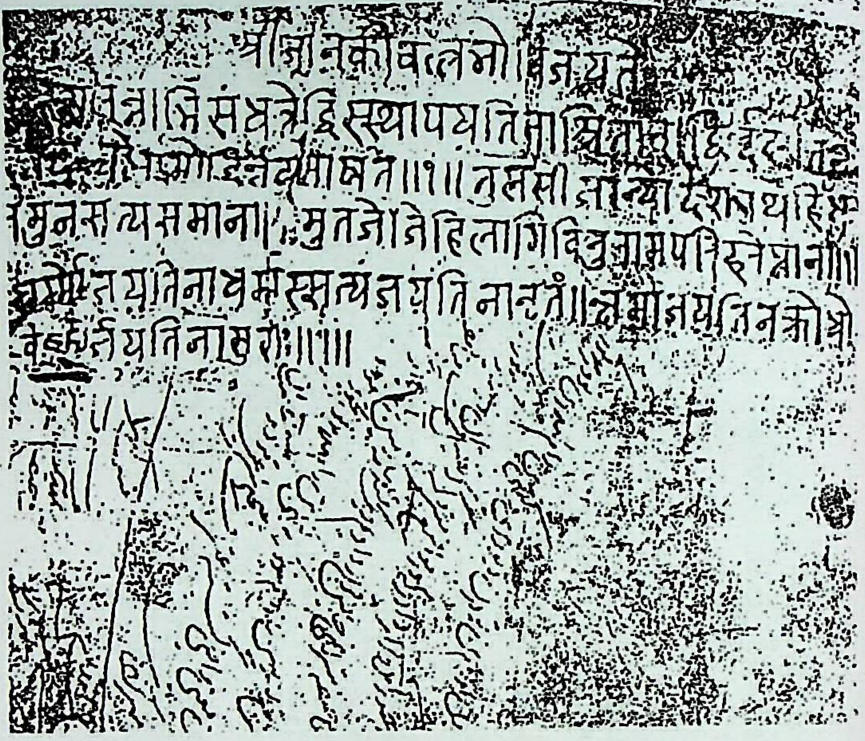
श्रीजानकीवल्लभो विजयते

[illegible] त्रास्ति संभवे द्वि स्थापयति [illegible]

[illegible] ॥१॥ तुलसी जान्यो दशरथ हि [illegible]

[illegible] न सत्य समाना॥ सुत तजे जेहि लागि बिनु राम परिहरे प्राना॥

[illegible] यति नाथ [illegible] यति नान्दतौ॥ [illegible] यति [illegible]

[illegible] यति ना [illegible]॥१॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोक मान्यता

तुलसी जीवनवृत्त से जुड़ी जन प्रचलित जनश्रुतियाँ जो शदियों से अद्यावधि चली आ रही हैं, जिनका जन्म पूर्णतया सत्याधारित भूमि पर हुआ है तथा जिनका प्रचार-प्रसार भी जनसामान्य की निष्पक्ष एवं आग्रहहीन मान्यताओं की भावना के प्रवाह में हुआ है वही कालान्तर में जनमान्यताओं तथा लोकमान्यताओं के रूप में प्रतिस्थापित हुई हैं । मगर आज थोथे पाण्डित्य प्रदर्शन के लोभी कुछ क्षेत्रवादी, आस्पदवादी संकीर्ण मनोवृत्ति के स्वार्थी दुराग्रही तथाकथित विद्वान उन जनश्रुतियों और लोकमान्यताओं को निष्पक्ष यथोचित मान्यता और महत्व न देकर उन्हें महत्वहीन मानकर नकारने का दुष्प्रयास कर रहे हैं ।

जनश्रुतियों तथा जनमान्यताओं की लोक मानस के निर्माण में अहम् तथा प्रभावी भूमिका रहती है । लोक मान्यता दो-एक वर्षों में नहीं अपितु शताद्वियों में बनती है, जो किसी ठोस आधार या सत्यता पर आधारित होती है और उसे नकारा नहीं जा सकता ।

तुलसी जन्मभूमि राजापुर (बाँदा, वर्तमान जिला-चित्रकूट) तथा तुलसी के जीवनवृत्त से जुड़ी और भादौं की उफनती यमुना को पार कर पत्नी रत्ना के पास उस पार ससुराल महेवा (इलाहाबाद, वर्तमान जिला-कौशाम्बी) पहुँचने और पत्नी के फटकार एवं मार्मिक वचनों से तुलसी के विरक्त होने जैसी पीढ़ियों से चली आ रही लोकमान्यतायें न केवल प्राचीन एवं पुष्ट हैं, अपितु देश-विदेश के जनमानस में परिव्याप्त और लोक आस्था में रमी हुई हैं । वस्तुतः ऐसा मूल में सत्यता के बिना हो ही नहीं सकता ।

इस प्रकार सम्राट अकबर के समय से ही राजापुर (विक्रमपुर-राजापुर जनपद-चित्रकूट का तत्कालीन नाम) ही तुलसी की जन्मभूमि लोकमान्य और विश्वमान्य रही है और जनस्वीकृति तथा जनधारणाओं की कसौटी पर सोरों (एटा) अथवा राजापुर-पसका, (गोंडा) के कपोल कल्पित कल्पनाधारित मनगढ़न्त तथ्य निराधार तथा असत्य माने जाते रहें हैं ।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के भू० पू० प्रधानमंत्री पं० जगन्नाथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसाद शुक्ल के अनुसार "साढ़े तीन सौ वर्षों से प्राचीन लेखों और जनश्रुतियों के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्मभूमि लोग राजापुर को ही मानते आ रहे हैं ।"

इस सन्दर्भ में साहित्य महारथी पं० देवीदत्त जी शुक्ल 'सरस्वती' सम्पादक प्रयाग का यह कथन दृष्टव्य है –"यह एक प्रसिद्ध परम्परा है कि गोस्वामी तुलसीदास बाँदा जिले के राजापुर के निवासी थे ।..... इसमें सन्देह नहीं है कि राजापुर की प्रसिद्धि एक मात्र गोस्वामी जी के जन्मभूमि होने के कारण ही हुई है । यदि उनका उस गाँव से वैसा घनिष्ट सम्बन्ध न होता तो उनके नाम पर वहाँ शाही माफी आदि क्यों दी जाती ?"

⌘ ⌘ ⌘ ⌘

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजापुर की पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भौगोलिक स्थिति -

विश्व विश्रुत श्रीरामचरितमानस के प्रणेता कालजयी विश्वकवि संत शिरोमणि श्रीमद् गोस्वामी तुलसीदास जी की पावन जन्मस्थली राजापुर अपने विकास और ह्रास के इतिहास को संजोये हुए दक्षिणी-पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड के बाँदा जनपद (वर्तमान जनपद चित्रकूट) में चित्रकूटधाम से ४० किलोमीटर उत्तर-पूर्व में पावन सुरम्य यमुना नदी के सुरम्य दक्षिणी किनारे पर २५°-२३° उत्तरी अक्षांश तथा ८१°-१२' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित एक प्राचीन व्यापारिक नगर है। यमुना के ठीक उस पार महेवा, (तुलसीदास जी की ससुराल) जनपद कौशाम्बी (पूर्व जनपद-इलाहाबाद) स्थित है जो अब यमुना पुल से जुड़ गया है।

यह बाँदा नगर से ९० किलोमीटर, कर्वी से २९ से ३४ किलोमीटर तथा प्रयाग से ८० किलोमीटर है। अभी यह नगर रेलमार्ग से नहीं जुड़ पाया है किन्तु सड़क मार्ग से साधन उपलब्ध हैं। रेलवे का निकटस्थ स्टेशन चित्रकूटधाम कर्वी है।

राजापुर की प्राचीनता -

तुलसी कालीन राजापुर की स्थिति एक सामान्य वन्यग्राम की थी किन्तु इस नगर तथा पार्श्ववर्ती स्थानों से प्राप्त पुरावशेषों से यह स्पष्ट होता है कि यह नगर गुप्तकाल में उन्नति के शिखर पर था। पूर्व में यह विक्रमपुर के नाम से प्रख्यात था, किन्तु कालान्तर में रजियापुर तथा राजापुर नाम से प्रसिद्ध हुआ।

वस्तुतः ईसा पूर्व विक्रम सम्वत् के प्रारम्भ में ही सुप्रसिद्ध जनप्रिय उज्जयिनी नरेश विक्रमादित्य के शासनकाल में सुरक्षा के दृष्टिकोण से इस वन्य ग्राम की भौगोलिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं व्यापारिक स्थिति को देखकर इसे एक विराट नगर के रूप में परिवर्तित करने की योजना बनाई गई और इसका नाम विक्रमपुर रखा गया। वर्तमान समय में राजापुर में जो प्राचीन दस्तावेज, फरमान, सनदें, अदालती कार्रवाई के कागजात एवं प्राचीन पाण्डुलिपियाँ जीर्ण-शीर्ण अवस्था में उपलब्ध हैं उनमें भी विक्रमपुर नाम का उल्लेख है। सम्राट अकबर एवं उनके उत्तराधिकारियों ने गोस्वामी तुलसीदासजी एवं उनके शिष्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वंशजों को जो घाट–हाट आदि के माफीनामा एवं उनके उत्तराधिकारियों द्वारा उसको जारी रखने के जो फरमान जारी किये थे उनमें भी विक्रमपुर नाम का ही उल्लेख है।

तथ्यों की वास्तविकता यह है कि राजापुर का पूर्व नाम विक्रमपुर था। शैव मतावलम्बी विक्रमपुर की स्थापना एक विराट नगर योजना के अन्तर्गत की गई थी। सुरक्षा एवं व्यापार के दृष्टिकोण से यमुना के दक्षिणी तटवर्ती प्रदेश में इस विराट नगर की स्थापना का एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य था क्योंकि उस समय यहाँ से १० कोस पूर्वोत्तर में यमुना तटवर्ती बौद्ध मतावलम्बी कौशाम्बी की स्पर्धा में विक्रमपुर की स्थापना की गई थी और उसे प्रमुख व्यावसायिक एवं व्यापारिक केन्द्र के रूप में विकसित किया गया था क्योंकि इसके द्वारा उज्जयिनी आदि का सीधा सम्पर्क यमुना के प्रमुख राष्ट्रीय जलमार्ग द्वारा दिल्ली, आगरा, मथुरा तथा पूर्व में कौशाम्बी, प्रयाग, काशी और पाटिलपुर (पटना) आदि नगरों से स्पाथित हो गया था।

पुरातात्विक संदर्भ –

राजापुर (चित्रकूट) एक पुरातात्विक महत्व का नगर है। यहाँ प्राप्त अनेक प्राचीन मूर्तियों का निरीक्षण एवं उल्लेख अनेक पुरातत्वविदों ने किया है। सन् १९४८ ई० में विश्व के ३६ भाषाओं के ज्ञाता महापंडित राहुल सांकृत्यायन के नेतृत्व में ६० साहित्यकारों, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों, पत्रकारों का दल राजापुर (बाँदा) पधारकर वहाँ प्राप्त नृत्यमुद्रा में बीसभुजी गणेश प्रतिमा, चतुर्मुख शिवलिंग, अर्द्धनारीश्वर शिव तथा नारी प्रतिमा के स्कन्धारुढ़ तोते को देखकर उन्हें दूसरी शताब्दी के आस–पास का ठहराया है।

सुप्रसिद्ध पुरातत्वविद सागर विश्वविद्यालय के इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी ने 'राजापुर में पुरातत्व' में लिखा है –"गुप्तकालीन चतुर्मुखशिवलिंग, नृत्य मुद्रा में बीस भुजी गणेश प्रतिमा, यत्र तत्र बिखरे बड़ी संख्या में वृहत विचित्र शिवलिंग तथा समोगरी मंदिर के ध्वंशावशेष, कुषाणकालीन तथा चन्देलकालीन मूर्तियों से राजापुर का अस्तित्व कुषाणकाल (ईसा की प्रथम शताब्दी) से अब तक निरन्तर अबाधरूप से चला आ रहा है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चतुर्भुजी शिवलिङ्ग राजापुर (चित्रकूट)

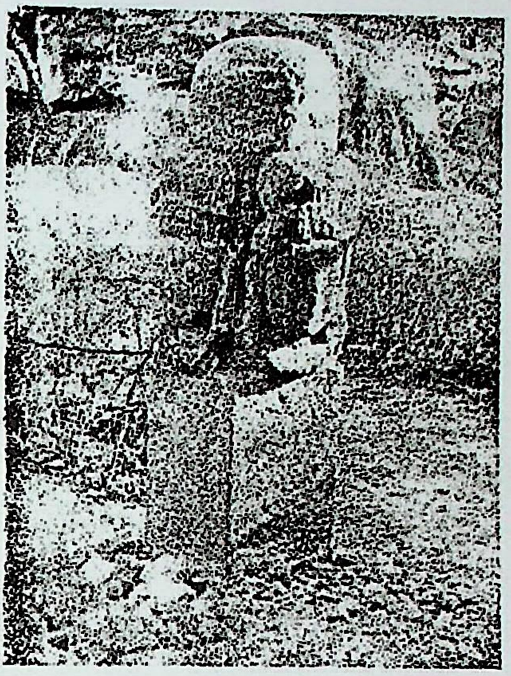

२०-भुजी गणेश जी की मूर्ति, राजापुर (चित्रकूट)

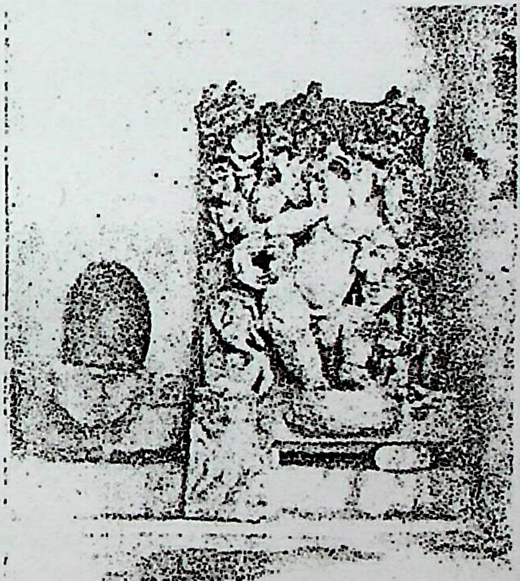

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभोगरी मन्दिर, राजापुर का ध्वंसावशेष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसी प्रकार राजापुर भ्रमणोपरान्त सुप्रसिद्ध पुरातत्वविद एवं इतिहासकार जी० के० पुरी ने एक और खोज की है– "वर्तमान राजापुर में एक प्राचीन शिव मंदिर ऐसा है जिसमें प्रमुख मूर्ति शिवलिंग न होकर गौरीशंकर की प्रतिमा है। यह प्रतिमा भी गुप्तक़ालीन है क्योंकि गुप्तकाल में ही सर्वप्रथम शिव एवं पार्वती की संयुक्त मूर्तिओं के निर्मित होने के प्रमाण मिलते हैं।" –'भारत का इतिहास' जी०के० पुरी, पृष्ठ २३।

"राजापुर की प्राचीनता एवं नियोजित नगर संरचना" पृष्ठ १७ में लेखक श्री गोविन्द प्रकाश श्रीवास्तव ने लिखा है –"वर्तमान में भी राजापुर में शैवमंदिरों का आधिक्य यहाँ के पूर्ववासियों का शैव मतावलम्बी होना तथा गुप्तकाल से सम्बन्धित होना प्रमाणित करता है।"

इस प्रकार राजापुर का अस्तित्व कुषाण काल (ईसा की प्रथम शताब्दी) से आजतक अबाधरूप से चला आ रहा है। इतना अवश्य है कि राजनैतिक उथल–पुथल के साथ इस नगरी में उत्थान–पतन की स्थितियाँ आई हैं किन्तु यह अस्तित्वहीन कभी नहीं हुआ। यदि यहाँ पुरातात्विक उत्खनन की व्यवस्था सुनिश्चित की जाय तो यहाँ की अतीत की अनेक उपलब्धियाँ प्रकाश में आ सकती हैं। राजापुर और उससे मिले बेराउर–रायपुर ग्राम में भवन निर्माण हेतु नींव की खुदाई करने, वर्षा में पानी के बहाव के कटाव पर चन्देलकाल तथा उसके पूर्व की मूर्तियाँ, मृदभाण्ड के टुकड़े और कभी–कभी सिक्के आदि भी प्राप्त होते हैं।

राजापुर का प्राचीन नाम विक्रमपुर था,[१] जिसकी पुष्टि वहाँ प्राप्त अनेक हस्तलिखित संस्कृत पुस्तकों की पुष्पिकाओं से भी होती है। उदाहरणार्थ कुछ पुष्पिकायें यहाँ दी जा रही हैं –

(१) आम्भुदयिक श्राद्ध सं० १६९९ वि० –

"संवत् १६९९ मार्गवदि षष्ठी बुधवासरे विक्रमपुर शुभ स्थाने लिखित गोसांईराम द्विवेदिनामिदं पुस्तकम् शुभमस्तु।"

(२) षष्ठी पूजन विधि – सम्वत् १८१९ शाके १६८४

गहोड़ायां शुचो देशे धन–धान्य समाकुले

1–"According to some old literature, the original name for Rajapur was Vikrampur..." –Goswami Tulsidas ji (A biography) –Rohit S. Pankhania, page 12.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विक्रमाख्य पुरेरम्ये, कालिंद्याद् दक्षिणे तटे ।
यादृशं पुस्तकं दृष्टा, तादृशं लिष्यतं मया;
यदि शुद्धमशुद्धम्बा, मम दोषो न दीयते ।।

लिष्यतं मया राम दुबेदेन–आत्म पाठार्थ हेतवे । मिति कार्तिक सुदि चतुर्दशी रविवासरेक: पुस्तकं समाप्तम् ।

(३) संध्योपासना विधि –

सम्वत् १८३० शाके १६९४ समय नाम मार्ग वदि ३ भृगु वासरेक: लिष्यतं । गहोरा देशान्तर्गत, यमुना दक्षिण तटे विक्रमपुर शुभ स्थाने श्री राजा अजीत सिंह राज्ये श्री राजा हिन्दूपति भुज्यमाने कालींजरगढ़ वर्तमाने पुस्तकं लिष्यतं । श्री दुबे गोवर्द्धनेन लिष्यतं श्री दुबे दमरीराम पाठार्थम् ।

(४) ऋषि पंचमी व्रतकथा –

इति श्री भविष्योत्तर–पुराणे कृष्ण–युधिष्ठिर सम्वादे ऋषि पंचमी व्रतकथां समाप्तं शुभमस्तु । सम्वत् १८३४ शाके १६९९ कीलक नाम सम्वत् सरे दक्षिणायणे वर्षाऋतो श्रावण मासे शुक्ल पक्षे षष्ठी शनिवासरेक: पुस्तकं समाप्तम् । श्रीमद् द्विवेदिनाथ, तस्मात्मज भैयाराम, तस्य आत्मज संगम लाल तस्यात्मज मयाराम लिषितं पुस्तकं शुभं भूयात् –

गहोड़ायां शुचे देशे, धन धान्य समाकुले,
विक्रमाख्य–पुरेरम्यं कालिंद्याद् दक्षिणतटे ।
यादृशं पुस्तकं दृष्टा, तादृशं लिषतं मया
यदि शुद्धमशुद्धम्बा मम दोषो न दीयतं ।

मुस्लिम शासन के स्थापना में भी विक्रमपुर की ख्याति दिल्ली दरबार तक थी । उस युग में यमुना के राष्ट्रीय जलमार्ग से आगरा–दिल्ली और प्रयाग–काशी आदि तक व्यापार और आवागमन होता था, जिसका उल्लेख राजापुर के निकट खटवारा (कायस्थवाड़ा) निवासी बल्देवदास कृत 'कायस्थ वंशावली' में मिलता है– बल्देवदास के पूर्वज हेमराय व खेमराय सम्वत् १२९० वि० (१२३३ ई०) में बघेलराज व्याघ्रदेव के साथ गुजरात से आकर राजापुर (विक्रमपुर) में सवाई नाले के पास आबाद हुये थे और व्याघ्रदेव तत्कालीन सत्ता के केन्द्र विन्दु कालींजर के पास मड़फा नामक स्थान पर एक किला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बनवाया और बघेलन तथा बघेलबारी नामक नगर बसाये। व्याघ्रदेव के ज्येष्ठ पुत्र कर्णदेव ने टोंस नदी के आस-पास का प्रदेश जीतकर बघेल राज की स्थिति सुदृढ़ की थी।

व्याघ्रदेव के राजनैतिक प्रभाव तथा विक्रमपुर की व्यापारिक समृद्धि तथा राजनैतिक ख्याति के कारण ही खटवारा (कायस्थवाड़ा) निवासी बल्देवदास के पूर्वज हेमराय तथा खेमराय की पहुँच दिल्ली दरबार तक हो गई थी, जिसके फलस्वरूप सुल्ताना रजिया के शासनकाल (१२३६-'४० ई०) में हेमराय कानूनगो पद पर प्रतिष्ठित हुये थे। इस सम्बन्ध का उल्लेख 'कायस्थ वंशावली' में निम्नलिखित प्रकार से है –

राय मनोहर के कुछ दिन मँह क्रमते दुह सुत जाये।
हेमराय अरु खेमराय है, प्रभु तेहि तेज बढ़ाये।।
ते दोउ बन्धु बघेलराज संग देश गहोरा आये।
बसे सवाईनाल यमुन तट, दिल्लीपति बुलवाये।।
हेमराय जगदीश कृपा से सनद शाह की पाये।
तेहि अवसर चौदह-परगन के कानूगोय कहाये।।

सुल्ताना रजिया की इस कृपा से अभिभूत होकर हेमराय ने प्रयास करके विक्रमपुर का रजियापुर नामकरण किया, जो कुछ कालतक राजस्व अभिलेखों तक ही सीमित रहा। सुल्ताना रजिया के पिता इल्तुतमिश (१२१०-३५ ई०) के शासनकाल के कुछ ताम्र सिक्के भी राजापुर में प्राप्त हुये हैं।

मुस्लिम शासन ने देश में अपनी सत्ता स्थापित करने पर ग्रामों की परम्पराओं तथा इति वृत्तियों का उल्लेख 'शर्तवाजबुल अर्ज' में किया है, उसमें राजापुर को रजियापुर कहा गया है। सम्भवतः पहिले रजियापुर और फिर राजापुर नाम हुआ होगा।

मुगलशासक हुमायूँ सन् १५३० ई० में गद्दी पर बैठा तथा उसने सन् १५३१ ई० में बुन्देलखण्ड में कालींजर पर चढ़ाई कर दी। उसके पश्चात् सन् १५४४ ई० में शेरशाह ने कालींजर किले पर घेरा डाला। इन दोनों शासकों ने अपने-अपने आक्रमणों में मार्ग में पड़ने वाले तत्कालीन समृद्ध व्यापारिक केन्द्र विक्रमपुर में बड़ी तवाही और लूटपाट मचाई। विनाशकारी संहार और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूर्तियों का विध्वंस करके अपनी धार्मिक क्रूरता और नृशंसता का परिचय दिया जिससे यहाँ के अधिकांश निवासी, व्यापारी तथा शिल्पकार यहाँ से पलायन कर गये और विक्रमपुर श्रीहीन तथा वीरान सा हो गया। इस स्थिति की ओर संकेत करते हुये सुप्रसिद्ध उपन्यासकार अमृत लाल नागर ने अपने सुप्रसिद्ध उपन्यास 'मानस का हंस' में लिखा है– "जब हुमायूँ और शेरशाह की लड़ाई के पुराने दिनों की भगदड़ में इधर–उधर छितरा के भागने वाले मुगल लड़वैये डाकू बनकर लूटपाट और आतंक मचाने लगे, तब यह विक्रमपुर गाँव पूरी तरह से लुट–पिट और खण्डहर बनकर सभ्यता के मानचित्र से मिट गया था।"

–'मानस का हंस' अनु० १, पृष्ठ ११,१२।

आचार्य सोहन लाल रामरंग जैसे सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यासकार ने सुप्रसिद्ध उपन्यास 'युग पुरुष तुलसी' में भी उस समय की भयावह त्रासदी की ओर संकेतित किया है –

"......माता जन्म देकर चली गई। पिता सुना कि वे भी पठानों के आक्रमण में समाप्त हो गये। कोई माता–पिता का परिचित भी बचा कि नहीं? इसी ऊहापोह में धीरे–धीरे राजापुर आ ही गया।" –युग पुरुष तुलसी" –१, १४

इसी कालावधि में तुलसीदास अपनी धर्मपत्नी रत्नावली के उपदेशात्मक व्यंग्य वचनों से आहत होकर विरक्त संत हो गये और विभिन्न धार्मिक स्थलों में विचरण करते रहे। सम्वत् १६३१–३३ (सन् १५७४–'७६ ई०) में 'श्री रामचरित मानस' की रचना के बाद अत्यधिक प्रसिद्धि हो जाने से वह जहाँ भी जाते समादरित होते थे। कुछ वर्षों बाद वे अपने जन्मभूमि विक्रमपुर पधारे। यद्यपि उस समय विक्रमपुर वीरान हो चुका था। वह प्रतिदिन पूजा–पाठ के अतिरिक्त एक निश्चित समय में श्री रामचरित की कथा भी कहते थे। धीरे–धीरे सिद्ध संत के भावविभोर कर देने वाले मधुर कण्ठ, कथा और प्रवचन शैली से आकृष्ट होकर श्रोताओं की भीड़ बढ़ने लगी। अनेक श्रद्धालु गोस्वामी तुलसीदासजी के शिष्य भी हो गये।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने जनभाषा में अपनी कथा के माध्यम से निराश–हताश श्रद्धालु श्रोताओं को श्री राम के दिव्य लोकरंजक 'शक्ति–शील–सौन्दर्य' समन्वित शक्ति का संबल देकर उनके मनोबल, आत्मशक्ति और संगठन शक्ति का वर्द्धन किया। पलायन कर गये लोगों को पुनः निवास करने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के लिये प्रेरित किया। इस प्रकार वीरान विक्रमपुर जिसको उस समय कुछ लोग 'दूबन का पुरवा' या 'रजियापुर' कहते थे, तुलसीदासजी ने उसे पुनर्वासित कर 'रजियापुर' के स्थान पर अपने रामराज की परिकल्पनानुसार तीनों लोकों के राजा राम के विशेषण 'राजा का पुर' अर्थात् 'राजापुर' नामकरण किया, क्योंकि तुलसीदास जी मात्र राम को ही राजा मानते थे, सांसारिक राजाओं को नहीं। जैसा कि निम्नांकित उद्धरणों से स्पष्ट है –

(१) "तुलसी तिलोक आज ***दूजो न विराजै राजा***"

–कवितावली –सुन्दरकाण्ड २१

(२) "हम चाकर रघुबीर के पटौ लिखौ दरबार।
अब तुलसी का होयगो नर के मनसबदार।।"

(३) "राजा मेरे राजाराम अवध सहरू।" –विनयपत्रिका –पद २५०

(४) "रंक के निवाज रघुराज राजा राजनि के।"

–कवितावली–उत्तरकाण्ड ७९

(५) "राजन को राजा सो तो साहब महेश को।"

–कवितावली– उत्तरकाण्ड १२५

यहाँ यह भी कहना अनुपयुक्त न होगा कि तुलसीदास जी के मन–मस्तिष्क में राजा और राम दोनों एक–दूसरे के पूरक हो गये थे। तुलसीदास जी द्वारा राजापुर नामकरण प्रचलन के पूर्व विक्रमपुर नामोल्लेख सम्राट अकबर प्रदत्त तुलसीदासजी के माफीनामे में और उत्तराधिकारियों द्वारा प्रदत्त एतद् सम्बन्धी आदेशों, अभिलेखों तथा पन्नानरेश के दिवान हिन्दूपतिजूदेव द्वारा सम्वत् १८१२ में प्रदत्त पट्टे में भी प्राप्त होता है।

गोस्वामी तुलसीदास के जीवनकाल में भी राजापुर का नाम विक्रमपुर था। सन् १७१९ ई० में प्रदत्त एक सनद में राजापुर का पहिली बार उल्लेख हुआ है।[१]

---

१. आमिलान हाल इस्तकबाल परगनै गहोरा सिरकार कालींजर सूबे इलाहाबाद के.....पण्डित मदारीराम गोसाईं तुलसीदास जी के वंश में का महसूल साइर व तहबाजारी वा गुजर श्री जमुना जी राजापुर अमले पर बमूजिब सनद बादशाही वा सूबेदारान वा राजा बुन्देलखण्ड क़दीम मुकर्रर......हूजे हर साल नई सनद पा गयो।

–ता० २१ शाबान सन् १२।" (सन् १७१९ बमुकाम बाँदा।)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसी जन्मभूमि विवाद क्यों और कैसे ?

विवाद के मूल स्त्रोत तथा उनकी समीक्षा -

(१) "मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकर खेत"-

तुलसीदास जी की जन्मभूमि के सम्बन्ध में विवाद का मूल कारण उनके रामचरितमानस के बालकाण्ड का निम्नांकित दोहा माना जाता है-

"मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकरखेत ।
समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत ।।"

-'रामचरितमानस' -१।।३०क

उक्त दोहे में कथित 'सूकरखेत' को आधार मानकर कतिपय क्षेत्रवादी मानसिकता से ग्रसित एवं पाण्डित्य प्रदर्शन प्रवृत्ति के दुराग्रही विद्वान तुलसीदास जी की जन्मभूमि सूकरखेत-सोरों (जिला एटा) और कतिपय तथाकथित विद्वान सूकरखेत-पसका के पास राजापुर (जिला गोंडा) मानने का दुराग्रह करते हैं ।

दोहे में 'पुनि' शब्द का अर्थ है फिर या पुनः अर्थात् फिर वही कथा मैंने 'सूकरखेत' में अपने गुरुजी से सुनी, परन्तु उस समय मैं बालपन के कारण बहुत बेसमझ था, इससे उसको उस प्रकार (अच्छी तरह) समझा नहीं ।' - ('मानस'-१, ३०)

बालपन में गुरुमुख से किस शूकरखेत में तुलसीदास जी ने कथा सुनी होगी इसको जानने के लिए उनकी जन्मभूमि की निकटता और बाल्यकाल तथा आवागमन की उस युग की साधन विहीनता को दृष्टिगत रखते हुये ही विचार करना उचित होगा । धर्मप्राण भारत में दो दर्जन शूकरक्षेत्र या वाराहक्षेत्र माने जाते हैं - (१) राजस्थान में विरहीकलाँ (२) पिंडारावन में (३) बद्रीनाथ धाम में (४) अयोध्या से २४ मील की दूरी पर सरयू और घाघरा के संगम-पसका में (५) नेपाल में विराट नगर के पास (६) सोरों जिला एटा में (७) दक्षिण में महानदी या सुवर्णमुखी के उत्तरभाग में (८) पापनाशिनी नर्मदा नदी के तट पर जहाँ नदी का नाम ही शूकरा पड़ गया है (९) मध्य प्रदेश के नरसिंह पुर जनपद के ब्रह्माण्ड तीर्थ में (१०) सुमेरु गिरि में (११) हिमवान में (१२)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्रकूटधाम में (१३) विन्ध्याचल में (१४) मन्दराचल में (१५) गन्धमादन में (१६) शालिग्राम में (१७) माल्यवान में (१८) परिपालक में (१९) महेन्द्र (२०) मलय (२१) सह्य (२२) सिंहाचल (२३) रैवत में (२४) मेरु पर्वत के अंजन आदि स्थानों पर अवस्थित माने जाते हैं जो स्कन्ध पुराण के वाराह खण्ड व अन्य धार्मिक ग्रन्थों में उल्लिखित हैं।

यदि उक्त दोहे में कथित 'सूकरखेत' ही उनकी जन्मभूमि और गुरुभूमि समस्या का समाधान है तो सोरों (एटा) तथा पसका (गोंडा) स्थित सूकरखेत ही क्यों ? राजापुर (चित्रकूट) के पास चित्रकूट धाम स्थित सूकर खेत क्यों नहीं ? जबकि राजापुर (चित्रकूट) के तुलसी जन्मभूमि होने के सर्वमान्य अकाट्य, ठोस, पुष्ट प्रामाणिक आधार हैं। इस सन्दर्भ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के भूतपूर्व प्रधानमंत्री पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल का कथन दृष्टव्य है –"तीन सौ वर्षों से प्राचीन लेखों, जनश्रुतियों के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्मभूमि लोग राजापुर को ही मानते आ रहे हैं।......तुलसीदास के गुरु बाबा नरहरिदास की धूनी, तलैया, महल, समाधि वहाँ अब तक विद्यमान हैं और जिस पीपल को तुलसीदास का लगाया हुआ कहते हैं वह भी जनश्रुति के अनुसार अब तक कई बार सूख कर अब तक हरा बना है।"

अभुक्त मूल नक्षत्र में पैदा होने से परित्यक्त होने से चुनिया ने नवजात शिशु रामबोला (तुलसी का बचपन का नाम) को लाकर चित्रकूट धाम के निकट अपने ससुराल हरिहरपुर में उनका पालन-पोषण किया।

नैसर्गिक सुषमा सम्पन्न चित्रकूटधाम भारत का प्राचीनतम आध्यात्मिक तीर्थ तथा वीतराग महात्माओं की तपोभूमि है। चित्रकूट धाम में कामदनाथ के दर्शन परिक्रमा करने हजारों-लाखों श्रद्धालु युग युगान्तर से आते रहे हैं। अमावश्या के दिन परिक्रमा करने का विशेष महत्व माना जाता है। निकट होने से बालक रामबोला हरिहरपुर से धाय माँ चुनिया के साथ परिक्रमा में आते थे। गाँव देहात के ५-६ वर्ष के बच्चों के लिये भी ४,५ मील की दूरी कुछ अधिक नहीं होती। आज भी आस-पास के गाँवों के बच्चे परिक्रमा करते देखे जाते हैं।

कामतानाथ की परिक्रमा में दूसरे मुखारबिन्द के पास श्री नरहरिदास जी का स्थान स्थित है। गुरुनरहरिदास जी के आश्रम के अवशिष्ट स्थल आज भी वहाँ मिलते हैं। धाय माँ चुनिया और उसके पति के मरने के बाद अनाथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आश्रयहीन ६-७ वर्ष का बालक रामबोला भोजन – भिक्षा के लिए भटकता चित्रकूटधाम ऐसे तीर्थ में पहुँचा जहाँ उसकी भेंट गुरु नरहरिदास जी से हुई जो उसकी दीनदशा देख द्रवित हो अपने आश्रम में रख कर उसको शिक्षा-दीक्षा दी। इस सम्बन्ध में एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि चित्रकूट स्थित शूकरक्षेत्र जिसका उल्लेख उपरोक्त २४ शूकरक्षेत्रों में है, इसी स्थल विशेष में है। 'यहाँ शूकरमुखाकृत की एक अति प्राचीन प्रतिमा है। यह क्षेत्र यहाँ संतों-महन्तों द्वारा परम पवित्र एवं सिद्ध स्थल माना जाता है। जब शूकर भगवान की प्रतिमा, स्वामी नरहरिदास जी के स्मारक नरहरि मंदिर, धूनी, तलैया, समाधी, तुलसीदासजी का मंदिर, मंदिर के पीछे तुलसीदास जी द्वारा लगाया पीपल का पेड़,-चबूतरा तथा यहाँ से ४, ५ मील दूरी पर हरिहरपुर गाँव जहाँ गोस्वामी तुलसीदास जी का बाल्यकाल बीता, यहाँ विद्यमान हैं तो यह निश्चित रूप से मान्य है कि गोस्वामी तुलसीदास जी की गुरुभूमि चित्रकूट स्थित श्री कामतानाथ जी की परिक्रमा में दूसरे मुखारबिन्द में ही थी, अन्यत्र नहीं। यहीं वे बालपन में आ सकते थे और आये थे। ६ वर्ष का बालक माता-पिता विहीन और आश्रयहीन होकर यहाँ से दूर-दराज का पैदल सफर करके भला कैसे सोरों (जिला-एटा) या सरयू – घाघरा के संगम-पसका (जिला-गोंडा) अपने बालपन में जा सकता है ? ऐसा सोचना सम्भावना से परे है। अतएव वह 'सूकरखेत' भगवान कामतानाथ जी की परिक्रमा में ही स्थित है जहाँ तुलसीदास जी ने 'गीतावली' – अयो० के ५०वें पद में चित्रकूट में शूकरक्षेत्र का बड़ा ही सजीव चित्रण किया है – (देखिये 'तुलसी जीवनवृत्त' में 'सूकरखेत' वर्णन)

गोस्वामी तुलसीदास जी के निकटस्थ प्रिय शिष्य शूकर क्षेत्र – पसका (जिला-गोंडा) निवासी बाबा वेणीमाधवदास जी ने भी तुलसीदास जी का बालपन का गुरुद्वारा राम शैल (चित्रकूट) स्थित नरहरिदास जी की कुटी कहा है –

"प्रिय शिष्य अनन्तानन्द हते। नरहरियानन्द सुनाम छते।
बसैं रामशैल कुटी करिकै। तल्लीन दशा अति प्रिय हरि कै।।"

– मूल गोसाईं चरित' ०६।।३, ४ पृष्ठ ३७

तमाम सुप्रसिद्ध विद्वानों, कवियों, लेखकों के अलावा 'गोस्वामी तुलसीदास' (नाटक) के रचयिता नारायणदास भक्तमाली ने भी चित्रकूट के 'सूकरखेत' में स्थित नरहरिदास आश्रम को तुलसीदास जी के बालपन का गुरुद्वारा होने का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उ़ल्लेख किया है –

"शिष्य अनन्तानन्द के, हरि प्रिय नरहरिदास ।
चित्रकूट में रम रहे, कामदगिरि तट वास ।।"

–'गोस्वामी तुलसीदास'–पृष्ठ ५९

तुलसीदासजी का चित्रकूट में चिर निवास, उसके प्रति इतनी श्रद्धा, आकर्षण और लगाव तथा अपनी रचनाओं में चित्रकूट क्षेत्र का हृदयहारी विशद वर्णन भी चित्रकूट के गुरुद्वारा और राजापुर (चित्रकूट) के जन्मभूमि होने का मनोवैज्ञानिक भावनात्मक संकेत है। जबकि सोरों (एटा) या पसका (गोंडा) के प्रति ऐसा किंचित मात्र भी नहीं है। वस्तुतः क्षेत्रीयता की संकीर्ण मानसिकता और दुराग्रहवश 'समुझी नहिं तस' और अर्थ का अनर्थ कर व्यर्थ बात का बतंगड़ और विवाद बनाया गया।

(२) राजापुर के 'मानस' पुजारी का षडयंत्र और 'गजेटियर'

सोरों समर्थकों के आधार श्रोत सन् १८७४, १८८६, १९०८ ई० के 'इम्पीरियल गजेटियर' (शासकीय अभिलेख) और १९०९ ई० का बाँदा जिले का गजेटियर है।

गजेटियर के अनुसार –" अकबर के शासनकाल में सोरों जनपद एटा के निवासी तुलसीदास नाम के पवित्र आत्मा ने वर्तमान राजापुर जो जनपद बाँदा में यमुना के दक्षिण कूल पर स्थित है, की स्थापना की थी।"

–'तुलसी जन्मभूमिः शोध परक समीक्षा" –प्रेमनारायण गुप्त, पृष्ठ ६१

समीक्षा – राजापुर (चित्रकूट) के अस्तित्व और प्राचीनता का तथ्यपूर्ण विश्लेषण 'राजापुर की पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि' दृष्टव्य है। राजापुर का प्राचीन नाम विक्रमपुर था जिसका उल्लेख राजापुर में प्राप्त प्राचीन पाण्डुलिपियों और सम्राट अकबर द्वारा तुलसीदास जी को प्रदत्त माफीनामा और बाद में उसके परिपालन के लिये जारी फरमानों में हुआ है। तुलसीदास जी के जन्म के समय राजापुर का नाम विक्रमपुर था मगर उसके बाद मुगल और पठान आक्रन्ताओं के आक्रमण से उजड़े विक्रमपुर को संत शिरोमणिं गोस्वामी तुलसीदास ने फिर से बसाकर उसका नाम रजियापुर से राजापुर कर दिया था जिसे 'गजेटियर' निर्माताओं ने भ्रमवश या सोची समझी चाल के तहत तुलसीदास जी द्वारा राजापुर की स्थापना किया जाना मान लिया जो कि सत्य से परे नितान्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिथ्या प्रलाप है ।

यह तो स्पष्ट ही है कि सन् १८७४ ई० में प्रकाशित 'गजेटियर' (शासनाभिलेख) में ही प्रथम बार राजापुर (बाँदा) को तुलसीदास जी की जन्मभूमि मानने वाली सदियों पुरानी मान्यता एवं जनश्रुति के विरुद्ध तुलसीदास जी का सोरों से आकर राजापुर बसाने का तथ्योल्लेख हुआ है । लेकिन ऐसा अप्रत्यासित उल्लेख क्यों और कैसे किया गया ? यह एक गम्भीर एवं विचारणीय प्रश्न है । यह किसी नियोजित षणयंत्र के तहत हुआ प्रतीत होता है ।

अस्तु विचारणीय प्रश्न यह है कि राजापुर के विरुद्ध उक्त षडयंत्र का प्रारम्भ कब, कैसे और किसके द्वारा हुआ ? इस सन्दर्भ में सत्य का विश्लेषण परम आवश्यक है । गोस्वामी तुलसीदास के दिवंगत होने के पश्चात् उनकी हस्तलिखित श्री रामचरित मानस की पाण्डुलिपि काशी में उनके परममित्र टोडरमल के यहाँ सुरक्षित थी जिसे तुलसीजन्म भूमि राजापुर निवासी तुलसी दासजी के प्रथम शिष्य पं० गनपति उपाध्याय को काशी में सौंप दी गई जिसे पं० गनपत उपाध्याय राजापुर ले आये और उनकी इस अनुपम अमानत को राजापुर में गोस्वामी तुलसीदास जी के पैतृक घर में रक्खा । प्रारम्भ में तो महाकवि की शिष्य परम्परा में 'मानस' की उक्त पाण्डुलिपि का बड़ा सम्मान रहा, उसे देवतुल्य पूजा जाता रहा किन्तु कुछ कालोपरान्त उसकी पूजा अर्चना में अवरोध उत्पन्न होने लगा । गोस्वामी तुलसीदास जी की शिष्य परम्परा में आनेवाले वंशजों में वृद्धि हो गई, उनमें परस्पर कलह प्रारम्भ हो गई थी जिसके कारण 'मानस' की वह पावन पाण्डुलिपि उपेक्षित सी हो रही थी, उसकी पूजा अर्चना तथा उसको दर्शनार्थियों को दिखलाने के लिए किसी उत्तरदायी व्यक्ति का अभाव हो गया था ।

ऐसी दशा में राजापुर के विशिष्ट नागरिकों, श्रद्धालुओं, तुलसी भक्तों तथा तुलसी शिष्यवंशज माफीदारों की सहमति से यह निर्णय लिया गया कि मानस की उक्त पावन पाण्डुलिपि की दैनिक एवं नियमित पूजा, अर्चना के लिए एक आचरणशील पुजारी नियुक्त किया जाये । 'मानस' में श्रद्धालुओं द्वारा अर्पित चढ़ावा का अर्द्धभाग उसे उसकी सेवा के लिये तथा शेष अर्द्ध भाग माफीदारों को दिये जाने का निर्णय लिया गया ।

संयोग से उन्हीं दिनों अपनी चित्रकूट यात्रा से लौटा हुआ एक अपरिचित व्यक्ति स्थानीय श्री संकटमोचन हनुमान मंदिर में ठहरा हुआ था । वह भक्तप्रकृति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवं धार्मिक अभिरुचि का व्यक्ति था। वह नियमित रूप से यमुना स्नान तथा संकटमोचन हनुमान जी मंदिर में घंटों पूजा-पाठ करता था। राजापुर के नैसर्गिक वातावरण से वह अधिक प्रभावित था तथा प्रतिदिन गोस्वामी तुलसीदास जी के स्थान में जाकर सायंकाल उनकी हस्तलिखित 'मानस' के दर्शन करता और सस्वर मानस का पाठ करता। उसके आचरण तथा धार्मिक कृत्यों से राजापुर वासी प्रभावित थे। उसके सम्बन्ध में यही ज्ञात हुआ कि वह सोरों क्षेत्रवासी ब्राह्मण था। अस्तु उसकी धार्मिकता तथा आचरणशीलता से प्रभावित होकर उसके समक्ष तुलसीदासजी की हस्तलिखित 'मानस' पाण्डुलिपि का पुजारी बनने का प्रस्ताव रखा गया जिसे उसने सहर्ष स्वीकार कर लिया तथा अपने आचरण एवं व्यवहार से शीघ्र ही लोकप्रिय हो गया।

वह एक पढ़ा-लिखा मिष्ठभाषी युवक था। कुछ दिनों तक तो वह सच्चे मन से 'मानस' की पूजा-अर्चना में संलग्न रहा किन्तु परिस्थिति ने उसके मानस में लोभ का बीजारोपण कर दिया। महाकवि के शिष्य वंशज माफीदार अनपढ़ एवं झगड़ालू थे। अपनी माफीदारी के क्षेत्र में वे सामान्य जनता से दुर्व्यवहार भी करते थे। अतः राजापुर के अधिकांश नागरिक उनसे असन्तुष्ट थे तथा उनके प्रतिवेशी व्यक्ति तो उनकी उपलब्धियों से ईर्ष्या भी करते थे। वे चाहते थे कि घाट-हाट की माफी का जो लाभ इन्हें मिल रहा है वह किसी प्रकार बन्द हो जाय। पुजारी की मानसिकता इस परिस्थिति में विषाक्त हो गई। 'मानस' पाण्डुलिपि के स्वामित्व का उसे लोभ हो गया। अतः उसने सूक्ष्म दूरदर्शिता से आगन्तुकों में यह भ्रमात्मक विश्वास उत्पन्न करना प्रारम्भ कर दिया कि राजापुर गोस्वामी तुलसीदास की जन्मभूमि नहीं है। इसको तो उन्होंने सोरों से आकर बसाया था तथा इसका राजापुर नाम रखा था। इस प्रकार महाकवि के जन्म स्थान होने का जो गौरव राजापुर को प्राप्त था उससे राजापुर को वंचित करने तथा गोस्वामी तुलसीदास जी की 'मानस' की हस्तलिखित पाण्डुलिपि को राजापुर की सांस्कृतिक सम्पदा मानने के अधिकार को समाप्त करने का उसने निंद्य एवं कृतघ्न प्रयास प्रारम्भ किया।

इसी क्रम में सन् १८७४ के शासकीय अभिलेख में प्रकाशनार्थ राजापुर सम्बन्धी तथ्यों के संकलन के लिए जो सर्वेक्षण दल राजापुर आया था वह भी उस पुजारी से मिला था तथा 'मानस' की पाण्डुलिपि का अवलोकन किया था। उस दल से भी उसने तुलसीदास के सोरों से राजापुर आने का मिथक साधिकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाणी में वर्णित कर दल के सदस्यों को प्रभावित कर लिया था। चूँकि उस समय वह 'मानस' की पाण्डुलिपि का संरक्षक और पुजारी था अतः सर्वेक्षण दल के सदस्यों ने उसकी बात को पूर्णतया सत्य मान लिया। यद्यपि उस समय राजापुर से सम्बद्ध राजस्व विभाग के कर्मचारियों से भी स्थानीय तथ्यों का संकलन कराया गया था तथापि उनके द्वारा प्रस्तुत तथ्य तालिका को महत्व न देकर शासकीय अभिलेख ('गजेटियर') में मुद्रित नहीं कराया गया क्योंकि इसका विशेष कारण यह था कि विदेशी हुकूमत विरोधी राजापुर के तुलसी शिष्य वंशज माफीदारों से अंग्रेज पहले से ही नाराज चले आ रहे थे। तुलसी जन्मभूमि के माफीदारों को तुलसीदास के शिष्य वंशज के नाम पर सदियों से मिल रही घाट–हाट आदि की माफी को छीनने और उन्हें नुकशान पहुँचाने तथा तुलसी जन्मभूमि विवादित बनाने की नीयत से ही धृष्ट पुजारी के सोरों–मिथक को 'गजेटियर्स' में उल्लिखित किया गया।

इस प्रकार सन् १८७४ में प्रकाशित सर्वप्रथम शासकीय अभिलेख में राजापुर से सम्बन्धित तथ्यों में सोरों का उल्लेख हुआ है जोकि निश्चित रूप से उस दुष्ट पुजारी की कृतघ्न चाल और अंग्रेजों के दुरभि साजिश का ही परिणाम है।

शनैः शनैः पुजारी के मानस में 'मानस' पाण्डुलिपि के स्वामित्व का लोभ बढ़ता गया और जब वह उसका संवरण नहीं कर पाया तब एक रात में 'मानस' की पाण्डुलिपि को लेकर चोरी–चोरी राजापुर से पलायन कर गया। जब प्रातः वास्तविकता का ज्ञान हुआ तब राजापुर वासियों ने उसका पीछा किया। चूँकि उस समय तीव्र गतिगामी यातायात के साधन का पूर्णतया अभाव था, अतः पैदल यात्रा करते हुए पुजारी को उसका पीछा करने वाले उसे उस समय पकड़ने में सफल हो गये जब वह कालाकांकर में नौका द्वारा गंगापार कर रहा था। नौका में बैठे हुए उसने भी यह देख लिया कि उसका पीछा करने वाले राजापुर वासी हैं, अतः अपने को चोरी के लांछन से बचाने के लिए उसने 'मानस' की पाण्डुलिपि को गंगा की धार में फेंक दिया। कालाकांकर नरेश के अथक एवं प्रशंसनीय प्रयास से जाल डालकर उसे निकाला जा सका। इससे 'मानस' के प्रारम्भ एवं अन्त के काण्ड पानी में गल गये मात्र बीच का 'अयोध्याकाण्ड' शेष बचा जो आज भी राजापुर में सुरक्षित है। उसके प्रत्येक पृष्ठ के चारों ओर पानी में पड़े रहने के कारण पड़ने वाले धब्बे स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मानस' पाण्डुलिपि चोरी के लांछन से लज्जित होकर वह पुजारी साधु तथा उसके अनन्तर दण्डी संन्यासी हो गया था किन्तु उसके मन की कुटिलता ज्यों की त्यों थी। वह चोरी के कलंक और अपमान के लिए राजापुर के प्रति प्रतिहिंसाग्नि प्रतिशोध में आजन्म जलता रहा तथा भिन्न-भिन्न प्रकार से राजापुर के खिलाफ षणयांत्रिक साजिशें करता रहा।

उक्त पुजारी दण्डी संन्यासी के रूप में सन् १९१६-'१७ के आस-पास सोरों जाता है तथा सोरोंवासियों को तुलसी जन्मभूमि हेतु उत्प्रेरित करता है और 'श्री धर्म प्रचारिणी गंगा सभा' के मंत्री श्री गोविन्द बल्लभ भट्ट को राजापुर की 'श्री तुलसी समिति' के अध्यक्ष एवं मंत्री से पत्र व्यवहार करने का परामर्श एवं निर्देश देता है।[१] पुनः वही पुजारी सन् १९१९ में दण्डी संन्यासी के रूप में राजापुर आता है तथा वहाँ से एक छद्म पत्र सोरों पक्ष के समर्थन में सोरों भेजता है। इस प्रकार उसके षणयांत्रिक रहस्य का स्पष्ट उद्घाटन हो जाता है।

इस प्रकार विदेशी हुकूमत विरोधी और मराठा समर्थक स्वतन्त्रता प्रेमी राजापुर के तुलसी शिष्य वंशज माफीदारों के सन् १८४६ के अंग्रेज-मराठा युद्ध और सन् १८५७ में प्रथम स्वतन्त्रता संघर्ष में जिले की मऊ तहसील लूटने और कब्जा करने में शामिल होने से नाराज अंग्रेजों ने अपनी नीति के तहत माफीदारों को बादशाह अकबर द्वारा प्रदत्त चली आ रही राजापुर यमुना घाट की माफी छीनने और माफीदारों को हानि पहुँचाने तथा महत्वपूर्ण राजापुर यमुना घाट को कब्जियाने की नीयत से पौने चार सौ वर्षों से चली आ रही स्थापना और मान्यता को नकारते हुए दुर्भावना, दुराग्रह से उक्त पुजारी के उक्त मनगढ़न्त तथ्यहीन सोरों मिथक के आधार पर सन् १८७४ में निर्मित 'गजेटियर' में जानबूझ कर सोची-समझी नीति के तहत भारतीय संस्कृति के संरक्षक गोस्वामी तुलसीदासजी के जन्मभूमि विवाद की नींव डाली कि सोरो जिला एटा, निवासी संत ने बाँदा जिले में यमुना के किनारे जंगल में आकर राजापुर बसाया।

इस प्रकार सन् १८७४ में प्रकाशित सर्वप्रथम शासकीय अभिलेख- 'इम्पीरियल गजेटियर' में राजापुर से सम्बन्धित सन्दर्भ में सोरों का उल्लेख हुआ है जो कि निश्चित रूप से उस दुष्ट पुजारी की कृतघ्न निन्द्य चाल और

---

१. 'गोस्वामी तुलसीदास' - गोविन्दबल्लभभट्ट शास्त्री, पृष्ठ ५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंग्रेजों के दुरभि साजिश का ही परिणाम है और उसी के आधार पर ही उसके बाद सन् १८८६, १९०८ के 'इम्पीरियल गजेटियर' तथा १९०९ के बाँदा जिले के गजेटियर में भी सोरों एवं राजापुर के सन्दर्भ में उसी से मिलता-जुलता उल्लेख हुआ है ।

इस प्रकार उक्त मिथ्या मिथक और अंग्रेजों के दुरभि साजिश से बने 'गजेटियर' तथा -

"मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकरखेत ।
समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत ।।"

-'मानस' -बाल०, दोहा ३० क *को आधार मानकर*

कतिपय क्षेत्रीयता से ग्रसित दिग्भ्रान्त छपास मानसिकता के दुराग्रहियों ने उक्त सूकरखेत को बलात् सोरों से जोड़कर तुलसी जन्मभूमि और गुरुभूमि के निरर्थक विवाद का सूत्रपात किया ।

(३) तुलसी जन्मभूमि विवाद के जनक -

विश्व विश्रुत श्रीमद् रामचरितमानस के प्रणेता संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्मभूमि के सम्बन्ध में उनका कोई स्वकथित स्पष्ट उल्लेख उनके साहित्य में कहीं उपलब्ध नहीं है । प्रारम्भ से ही उनकी जन्मभूमि के लिए राजापुर (पूर्व जनपद बाँदा, वर्तमान जनपद चित्रकूट) ही प्रसिद्ध था । इस प्रसिद्धि का आधार अकाट्य अन्तःसाक्ष्य, वाह्यसाक्ष्य, ऐतिहासिक साक्ष्य तथा परम्परा प्रचलित प्रबल जनश्रुति हैं जो आज भी उसी आदि रूप में विद्यमान हैं ।

कतिपय आत्मश्लाघी एवं यशलिप्सित पाश्चात्य तथा भारतीय विद्वानों ने अंग्रेजी प्रशासन का प्रश्रय पाकर तुलसी जन्मभूमि को विवाद के गर्त में डालने का निंद्य कार्य किया है । जहाँ तक पाश्चात्य विद्वानों का प्रश्न है वे हिन्दी, उर्दू, अरबी, फारसी और अंग्रेजी भाषा की लिपि तथा उच्चारण की भिन्नता एवं काठिन्य से ग्रस्त थे । अतः उनमें किसी ने राजापुर को रजियापुर किसी ने हाजीपुर या हस्तिनापुर माना और उसे पुनः अप्रमाणिक मानते हुए शान्त हो गए लेकिन किसी भी पाश्चात्य विद्वान ने सोरों (जिला एटा) को गोस्वामी तुलसीदासजी की जन्मभूमि नहीं स्वीकार किया । किन्तु क्षेत्रीयता से ग्रसित दिग्भ्रान्त छपास मानसिकता के कतिपय दुराग्रही भारतीय विद्वान तो राजापुर (बाँदा) का विरोध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर अभिनव शोधकर्त्ता के रूप में प्रशस्ति पाने का दिवास्वप्न देखकर अपने को धन्य समझने लगे।

सोरों का शोर – इस कृत्य का सबसे बड़ा लान्छन बाँदा जिले के तत्कालीन डिप्टी कलेक्टर राय बहादुर लाला सीताराम जी पर लगा है। उन्होंने राजापुर (बाँदा) में उपलब्ध गोस्वामी तुलसीदास की हस्तलिखित श्री रामचरित मानस के 'अयोध्याकाण्ड' की प्रतिलिपि को टीका सहित सन् १९०८ ई० में प्रकाशित किया था तथा उसकी भूमिका में उन्होंने महाकवि की जन्मभूमि –"मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकरखेत...." का आधार लेकर सूकरखेत (सोरों जिला–एटा) माना है। किसी भी मुद्रित अथवा हस्तलिखित पुस्तक में प्रथम बार तुलसी जन्मभूमि राजापुर (बाँदा) के स्थान पर किसी अन्य स्थान को मान्यता दी गई थी। इसका कारण उनमें राजापुर के प्रति प्रतिशोध, विद्वेष – विरोध की भावना तथा एक अभिनव शोधकर्ता के रूप में प्रसिद्धि पाने की लिप्सा का आधिक्य था।

हिन्दी भाषा–भाषी क्षेत्र में कई सूकरखेत हैं, अतः अवधवासी श्री सीताराम जी के समक्ष एक गहन समस्या थी कि वह किस सूकरखेत को तुलसी जन्मभूमि के रूप में मान्यता दें। उनकी पैतृक भूमि के क्षेत्रान्तर्गत पसका (जिला–गोंडा) का सूकरखेत उनके संज्ञान में था किन्तु उसके पक्ष में साक्ष्य–प्राबल्य का अभाव था तथा उसको स्वीकारने में उन पर पक्षपात का दोषारोपण होता। इस प्रकार न तो उन्होंने अपनी पैतृक भूमि पसका (जिला–गोंडा) के सूकरखेत को महत्व दिया और न अपनी कर्मभूमि बाँदा जनपदान्तर्गत राजापुर के समीपवर्ती चित्रकूट के सूकरखेत को ही महत्व दिया।

वास्तवकिता यह है कि जब लाला सीताराम जी सर्वप्रथम राजापुर पधारे तब वह बाँदा जिले के डिप्टी कलेक्टर और कर्वी सब डिवीजन के प्रभारी थे तथा राजापुर उन्हीं के क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत था। राजापुर में तुलसीदास जी की शिष्य परम्परा से सम्बन्धित तत्कालीन वंशजों के पास उन्होंने बहुमूल्य सांस्कृतिक– ऐतिहासिक धरोहर के रूप में सम्राट अकबर द्वारा गोस्वामी तुलसीदास जी को प्रदत्त माफीनामा विभिन्न फरमान, शासनादेश तथा अनेक अभिलेख मूलरूप में देखा। महाकवि की हस्तलिखित 'मानस' के 'अयोध्याकाण्ड' की मूल पाण्डुलिपि भी देखी। लाला सीताराम जी एक साहित्यिक अभिरुचि के व्यक्ति थे। उनकी योजना प्रयाग स्थित अपने आवास में एक साहित्यिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संग्रहालय स्थापित करने की थी। गोस्वामी तुलसीदास जी से सम्बन्धित जो भी मूल अभिलेख तथा 'अयोध्याकाण्ड' की मूल पाण्डुलिपि राजापुर में उपलब्ध थी, उन्हें अपने निजी संग्रहालय में स्थान देना चाहते थे। अस्तु राजापुर की सामग्री प्राप्त करने के लिए उन्होंने विभिन्न प्रयास किए। चूँकि वह राजापुर क्षेत्र के उच्च प्रशासनिक अधिकारी थे। अतः उन्हें पूर्ण विश्वास था कि वह वांछित अभिलेखों को पाने में सफल हो जायेंगे, किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। जिन तुलसी शिष्य वंशज माफीदारों के पास उक्त अभिलेख थे वह न तो किसी लोभ एवं लालच से डिगे और न किसी भय से डरे। अपनी असफलता पर सीताराम जी की मानसिकता में प्रतिक्रिया होनी स्वाभाविक थी। वे माफीदारों पर कुपित होकर राजापुर के विरुद्ध हो गए तथा राजापुर को सदियों से प्राप्त तुलसी जन्मभूमि होने के गौरव से वंचित करने में संकल्प बद्ध होकर संनद्ध हो गए।

सन् १९०८ ई० में लाला सीताराम जी की 'अयोध्याकाण्ड' की टीका का प्रकाशन हुआ। वह प्रत्येक दशा में 'सूकरखेत' को महाकवि की जन्मभूमि प्रमाणित करना चाहते थे किन्तु उनके पैतृक निवास क्षेत्र पसका (जिला–गोंडा) का सूकरखेत जो उनके संज्ञान में था, प्रमाणों से इतना दीन–हीन था कि वह राजापुर (बाँदा) के प्रतिपक्षी के रूप में ठहर ही नहीं सकता था। सन् १८७४ और १८८६ में जो शासकीय अभिलेख (गजट) प्रकाशित हो चुके थे उनमें तुलसीदास जी के सोरों (जिला एटा) से राजापुर आने का उल्लेख है। अतः सीताराम जी ने दृढ़मत होकर इसी सोरों को सूकरखेत के रूप में स्वीकार कर उसे तुलसी की जन्मभूमि और गुरुभूमि मान लिया। यह विचित्र संयोग ही कहा जायेगा कि ठीक उसी वर्ष सन् १९०९ में प्रकाशित बाँदा जिला 'गजेटियर' के लिए सामग्री संकलित की जा रही थी जिसमें लाला सीताराम का पूरा वर्चस्व था। उन्होंने बाँदा जिले के गजेटियर में भी किंचित संशोधन, परिवर्द्धन के साथ राजापुर से सम्बन्धित वही विवरण उल्लिखित कराया जैसा कि सन् १८७४ के 'गजेटियर' (शासकीय अभिलेख) में उपलब्ध था।

इस स्तरहीन कृत्य के लिए उनकी मानसिकता का कल्मष दोषी है। उन्होंने राजापुर के तुलसी जन्मभूमि होने की परम्परा या प्रबल जनश्रुति लोकमान्यता और ऐतिहासिक साक्ष्यों तथा अन्य सत्यपरक साक्ष्यों की उपेक्षा की और अपनी मानसिकता के दुराग्रह के वशीभूत होकर राजापुर को महाकवि की जन्मभूमि होने के गौरव से वंचित करने का असफल एवं निंद्य प्रयास किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजापुर के विपक्ष में निर्णय लेने के अन्य दो कारणों से भी सीताराम जी ग्रसित थे । प्रथम तो यह कि राजापुर के स्थान पर सूकरखेत (सोरों) को तुलसी जन्मभूमि मानने को वह अपनी एक अभिनव खोज मानते थे तथा द्वितीय यह कि वह एक पराधीन देश के नागरिक थे जिनको अंग्रेजी शासन में एक उच्च प्रशासनिक पद प्राप्त था । उनके मस्तिष्क में राजभक्ति अथवा स्वामिभक्ति की भावना भी प्रबल थी तथा अंग्रेजी शासन का एक विश्वस्त अधिकारी होने का भी उनके जीवन का लक्ष्य रहा होगा तभी तो उन्हें रायबहादुर की उपाधि प्रदान की गई थी । ऐसी दशा में वह अंग्रेजी शासन के पूर्व प्रकाशित शासनाभिलेखों के विरुद्ध कैसे जा सकते थे ?अस्तु उनमें यह साहस ही नहीं था कि वह पूर्व प्रकाशित शासनाभिलेखों में मुद्रित असत्य तथ्यों का बाँदा जिले के 'गजेटियर' में खण्डन करते ।

इस प्रकार लाला सीताराम द्वारा प्रकाशित 'अयोध्याकाण्ड' की उक्त टीका तथा उनके निर्देशन में बने बाँदा जिले के 'गजेटियर' द्वारा यह भ्रान्ति उत्पन्न की गई कि राजापुर को सोरों निवासी तुलसीदास जी ने बसाया था। आज जहाँ राजापुर स्थित है वहाँ उस समय जंगल था, वहाँ तुलसीदास ने आकर अपनी साधना स्थली बनाया था । जिस राजापुर को तुलसीदास जी ने बसाया था, भला वह उनकी जन्मभूमि कैसे हो सकती है ?

इसके पश्चात् सन् १९२९ में सोरों निवासी आचार्य गोविन्द बल्लभ भट्ट शास्त्री की एक टिप्पणी 'गोस्वामी जी का जन्म स्थान–राजापुर या सोरों ?' शीर्षक के अन्तर्गत 'माधुरी' पत्रिका के कविचर्चा स्तम्भ के एक कोने में प्रकाशित हुई । श्री भट्ट जी का यह प्रयास भी उस दुष्ट संन्यासी और लाला सीताराम जी की प्रेरणा का परिणाम था ।

सन् १९३५ में पं० रामनरेश त्रिपाठी जी राजापुर आए थे, परन्तु गोस्वामी तुलसीदास जी की शिष्यं परम्परा के तत्कालीन तुलसी मंदिर एवं 'मानस' पुजारियों द्वारा उन्हें वह सम्मान और महत्व नहीं मिला जिसे वह चाहते थे । अतः वे कुपित होकर राजापुर के घोर विरोधी बन गये । यही कारण है कि उन्होंने अपनी पुस्तक में अपनी राजापुर यात्रा का कोई उल्लेख नहीं किया है । उन्होंने तुलसी जन्म स्थान विवाद को अत्यन्त महत्व दिया और 'बाँदा गजेटियर' तथा 'मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकरखेत' दोहे को आधार मानकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोरों को तुलसी जन्मभूमि और गुरुभूमि प्रचारित किया। श्री त्रिपाठी जी का कृत्य भी पूर्णतया प्रतिशोध और दुराग्रह से ग्रसित था। अपने लिए अपेक्षित सामग्री की प्राप्ति के लिए श्री त्रिपाठी ने प्रयाग स्थित लाला सीताराम के संग्रहालय को भी देखा था। लाला सीताराम को वह अपना परममित्र मानते थे क्योंकि दोनों राजापुर के विरोधी थे।

गोंडा पक्ष – सोरों समर्थकों की देखा देखी 'रामचरितमानस मानस' बालकाण्ड के दोहा –

"मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकरखेत।
समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत।।"

– 'मानस' – बाल० ३०क, को आधार मानकर गोंडा जनपद में भी पसका में सूकरखेत को गुरुभूमि और उससे करीब ६ किलोमीटर दूर राजापुर को तुलसी जन्मभूमि सिद्ध करने के प्रयास जोर पकड़ रहे हैं। सोरों के देखादेखी इस विवाद का सूत्रपात सन् १९१४ ई० में उत्तर प्रदेश के हरदोई जनपद के बछौली ग्राम निवासी स्वामी सदगुरुशरण तथा बालकराम विनायक ने किया था, किन्तु उनका यह प्रयास सार्थक न हो सका।

पुनः इसका सूत्रपात सन् १९६३ई० में गोंडा जनपद में पुलिस अधीक्षक रहे ठाकुर अवध नारायण सिंह ने किया, किन्तु समुचित साक्ष्यों के अभाव से उस समय उन्हें सफलता नहीं मिली। सन् १९६८ ई० में ठाकुर अवधनारायण सिंह पुनः सक्रिय हुये और उन्होंने अपनी अध्यक्षता में 'तुलसी स्मारक सभा' गठित की और नेपाल के किसी ग्राम से प्राप्त की गई तुलसी सम्बन्धी संदिग्ध एक हस्त लिखित पुस्तक के आधार पर वे गोंडा जनपदीय पसका को सूकरखेत तुलसी की गुरुभूमि और उसके पास राजापुर ग्राम को तुलसी जन्मभूमि सिद्ध करने को पुनः सक्रिय हो गये। मगर कोई सारभूत प्रमाण न होने के कारण गोंडा जनपदीय सामग्री संदिग्ध, कृत्रिम ओर कपोल कल्पित सिद्ध हो जाती है। अगर गोंडा जनपदीय पसका (कथित सूकरखेत) तुलसी की गुरुभूमि और उसके पास राजापुर उनकी जन्मभूमि होती तो तुलसीदास जी के पसका (जिला गोंडा) निवासी उनके निकटस्थ प्रिय शिष्य बाबा वेणी माधवदास जी राजापुर (चित्रकूट) को तुलसी जन्मभूमि और रामशैल (चित्रकूट) को तुलसी की गुरुभूमि क्यों कहते ? और राय बहादुर लाला सीताराम अपने पैतृक क्षेत्र पसका के सूकरखेत को छोड़कर एटा जिले के सोरों को सूकरखेत और तुलसी की जन्मभूमि क्यों मानते ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(४) तुलसी की भाषा और लोक संस्कृति -

गोस्वामी तुलसीदास के काव्यों की भाषा अवधी भाषा और व्रजभाषा है। रामचरित मानस जैसे विश्व प्रसिद्ध महाकाव्य सहित आधा दर्जन ग्रन्थों की भाषा अवधी होने से अवध क्षेत्र में स्थित राजापुर, पसका-शूकरक्षेत्र (जनपद गोंडा) को गोंडा समर्थक तुलसी की जन्मभूमि और गुरुभूमि मानते हैं।

इसी प्रकार विनयपत्रिका आदि आधा दर्जन गोस्वामी तुलसीदास के ग्रन्थों की रचना ब्रजभाषा में होने से ब्रज क्षेत्र सोरों (जिला एटा) समर्थक सोरों को तुलसीदास जी की जन्मभूमि और गुरुभूमि मानते हैं। राजापुर-पसका, जिला गोंडा तथा सोरों जिला एटा समर्थकों का तर्क है कि यदि तुलसीदास जी का जन्म बाँदा जिले के राजापुर में हुआ होता तो उनके काव्यों में बुन्देली बोली के शब्दों का प्रयोग अवश्य होता, क्योंकि बाँदा जनपद बुन्देलखण्ड संभाग के अन्तर्गत आता है। बुन्देलखण्ड की भाषा-बोली लोक संस्कृति, लोक व्यवहार तुलसी साहित्य के भाषा-बोली, लोक संस्कृति, लोक व्यवहार से भिन्न है।

समीक्षा - गोस्वामी तुलसीदास जी ने अवधी और ब्रजभाषा, इन दोनों भाषाओं में काव्य रचना की है। बाँदा जनपद तथा उसमें से नव सृजित चित्रकूट जनपद भौगोलिक और प्रशासनिक दृष्टि से बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत आते हैं परन्तु भाषा और संस्कृति की दृष्टि से बाँदा और खासकर चित्रकूट जनपद का सम्पूर्ण भूभाग बुन्देली बोली के भाषिक क्षेत्र में नहीं समाविष्ट होता है। बाँदा जनपद के केवल पश्चिमी क्षेत्र (मटौंध आदि) में ही बुन्देली बोली जाती है। बाँदा जनपद के उत्तरी तथा पूर्वी भाग में और चित्रकूट जनपद के सम्पूर्ण भाग में बघेली की उपशाखा गहोरा[१] बोली जाती है। बघेली अवधी की एक उपबोली[२] है और वह उसकी दक्षिणी शाखा है।[३] इस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्मस्थान राजापुर (जिला बाँदा अब चित्रकूट जनपद) और गुरुद्वारा चित्रकूट धाम भाषिक दृष्टि से अवधी भाषा के क्षेत्र में आता है। राजापुर (चित्रकूट) तथा चित्रकूट जनपद के सम्पूर्ण क्षेत्र की भाषा बोली, लोक-संस्कृति, लोक-व्यवहार, तुलसी साहित्य की बोली भाषा, लोक संस्कृति, लोक व्यवहार में रची बसी है - ('तुलसी की भाषा' शीर्षक देखिये)

१- 'हिन्दी भाषा'-डॉ० भोलानाथ तिवारी-पृष्ठ २६९

२- 'हिन्दी भाषा' -डॉ० हरदेव बाहरी-पृष्ठ १८९

३- 'हिन्दी : उद्भव, विकास और रूप'-डॉ० हरदेव बाहरी-पृष्ठ ६९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसी जन्मभूमि विषयक सोंरो सामग्री की विवेचना

तुलसी-जन्मभूमि सम्बन्धी सोरों सामग्री की विवेचना हेतु कई गोष्ठियाँ हो चुकी हैं और प्रायः हर गोष्ठी में उसकी सत्यता पर प्रश्न चिन्ह लगते रहे हैं। इस सामग्री की खोज में डॉ० रामदत्त भारद्वाज तथा आचार्य वेदव्रत शास्त्री का विशेष योगदान रहा है। आचार्य वेदव्रत शास्त्री की नवीन पुस्तक "तुलसी जीवनवृत्त तर्क और तथ्य" में अधिकांशतः डॉ० माताप्रसाद जी गुप्त के विचारों तथा तर्कों के खण्डन का ही प्रयास किया गया है। डॉ० रामदत्त भारद्वाज के अनुसार सोरों-सामग्री के दो रूप हैं - (१) गृह्य सामग्री तथा (२) वाह्य सामग्री। उनके अनुसार गृह्य सामग्री षट् विध है जिसके अन्तर्गत (१) भवन (२) तुलसी वंशज (३) जनश्रुतियाँ (४) भाषा-शैली (५) पाण्डु लिपियाँ (६) तुलसीदास के वचन तथा भवन सामग्री सम्मिलित हैं।

भवन-सामग्री के अन्तर्गत रामपुर का बलराम-मन्दिर, सोरों में गुरु नरसिंह की पाठशाला, बाराह मंदिर, गंगाघाट, तुलसीदास तथा नन्ददास के गृह, सोमेश्वर तथा सीताराम मंदिर और तुलसीदास की ससुराल बदरिया का उल्लेख किया जाता है। इसके अतिरिक्त यह भी कहा जाता है कि गुरु नरसिंह तथा नन्ददास के वंशज सोरों में आज भी विद्यमान हैं। सोरों की एक जनश्रुति के आधार पर कहा जाता है कि सोरों में जिस घर में तुलसीदास की पत्नी रत्नावली निवास करती थी, उस घर की रज धारण करने से आरोग्य लाभ होता है। इसके अतिरिक्त यह भी कहा जाता है कि "तुलसी तेरी झोपड़ी, गलकटियन के पास" तथा "तुलसी-घर मरघट में गलकटियन के पास"। इन कहावतों के अनुसार तुलसी के घर के पास मरघट है, जहाँ कसाई लोग निवास करते थे। नरसिंह मंदिर के सम्बन्ध में कहा जाता है कि तुलसी इसी मंदिर में गुरु नरसिंह से पढ़ते थे।

जहाँ तक उपर्युक्त रामपुर के बलराम मन्दिर का सम्बन्ध है। अलीगढ़ विश्वविद्यालय के डॉ० गोवर्द्धननाथ शुक्ल ने ३१ मई १९६० ई० को भारतीय हिन्दी परिषद के तत्वावधान में दिल्ली में आयोजित गोष्ठी में तर्कपूर्ण तथ्यों से यह स्पष्ट किया है कि जब एटा जनपद में रामपुर नाम का कोई गाँव है ही नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust Funding IKS-MoE-Grant-2

फिर सोरों के गंगातट पर यह रामपुर ग्राम कहाँ से आ गया। डॉ० शुक्ल ने सम्वत् २०१५ विक्रमी में प्रकाशित सोरों जन्मभूमि विषयक अपनी पुस्तक में तथ्यों एवं तत्सम्बन्धी प्रमाणों की आद्योपान्त विवेचना करके उसमें दिये गये तथ्यों को कपोल-कल्पित तथा असत्य ठहराया है।

सोरों में जिस मकान को तुलसीदास का मकान बतलाया जाता है, वह वास्तव में बुद्धू गद्दी नामक मुसलमान का है। अब बुद्धू गद्दी के उत्तराधिकारी मु० जरीफ से देशराज सिंह लोध ने क्रयकर लिया है। यह कच्चा मकान योगमार्ग मुहल्ले में हैं, जिसके समीप मुसलमान कसाई रहते हैं, और उसके उत्तर पश्चिम की ओर मरघट भी है। देखने में यह मकान किसी विशाल भवन के खंडहर में निर्मित प्रतीत होता है जैसा कि इसकी चहारदीवारी के फाटक से स्पष्ट होता है। इस मकान के सम्बन्ध में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो० माता प्रसाद जी गुप्त ने सम्मेलन पत्रिका (श्रावण-भाद्रपद सं० १९९७ विक्रमी) में लिखा है -

"इस भवन के सम्बन्ध में एक और बात है, जिसे सोरों को तुलसी-जन्मभूमि मानने वाले लोग प्रकाश में नहीं लाते हैं। मुझे (डॉ० माता प्रसाद गुप्त) को स्थानीय जांच से यह ज्ञात हुआ कि उपर्युक्त मकान तथा उसमें मिले-जुले कुछ और भी मकान पहिले राजौरियों के थे (शुक्लों के नहीं थे) और वे राजौरिया घराने धीरे-धीरे नष्ट हो गये।" यह बात लेखक (डॉ० गुप्त) को कुछ कठिनाई के बाद ज्ञात हुई, क्योंकि सोरों का अधिकांश जन समाज यह चाहता है कि सोरों तुलसी की जन्मभूमि मानी जाये और यह बात कदाचित उनके मार्ग में बाधक होती। इस सम्बन्ध में यह दृष्टव्य है कि तुलसी के इस कथित घर के सम्बन्ध में एटा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर में कोई उल्लेख नहीं है। यदि इस तथ्य में कुछ भी सत्यता होती तो एटा गजेटियर में इसका उल्लेख अवश्य होता।

नरसिंह मंदिर - सोरों स्थित यह मंदिर एक मकान का खंडहर है। जिसके चिन्ह इसके पूर्व तथा पश्चिम की ओर स्पष्ट प्रतीत होते हैं। दक्षिण का हिस्सा नवीन प्रतीत होता है। यह मंदिर चौधरी मुहल्ले में स्थित है और इसमें हनुमान जी की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। इस मंदिर के सम्बन्ध में डॉ० माता प्रसाद गुप्त लिखते हैं -"नरसिंह जी के मंदिर की जांच करते हुये मैं उस स्थान में पटवारी मुंशी गिरिजाशंकर से मिला और उनसे उस मंदिर की खतौनी जमाबन्दी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की नकल प्राप्त की। उस खतौनी में लिखा है "मंदिर श्रीनरसिंह जी महराज"। प्रश्न यह है कि क्या यह शब्दावली इस बात की सूचक है कि उक्त मंदिर किसी नरसिंह चौधरी का था, कम से कम प्रस्तुत लेखक (डॉ० गुप्त) तो इस शब्दावली का आशय यही लेगा कि यह मंदिर नरसिंह भगवान का था, न कि किन्ही नरसिंह चौधरी का "जी" और "महराज" शब्द तो कम से कम यही संकेत करते हैं – (सम्मेलन पत्रिका श्रावण–भाद्रपद सं० १९९८ वि०पृष्ठ १२) प्रतीत यह होता है कि उक्त पक्के मकान के खंडहर में नरसिंह जी की मूर्ति स्थापित करके उसे मंदिर का रूप देने का भरपूर प्रयास किया गया है।

जहाँ तक तथाकथित तुलसी–गुरु नरसिंह का प्रश्न है रामचरित मानस के वालकाण्ड का यह सोरठा –

सोरठा – वंदउँ गुरु–पद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि।
महा–मोह तमपुंज जासु बचन रबिकर निकर ।।५।।

तुलसीदास विरचित नहीं है, वह तो 'जावालि संहिता' के निम्नांकित श्लोक का अनुवाद मात्र है –

वन्दे गुरु पदाब्जं यो नर रूप स्वयं हरिः।
यद् वाक्यं सूर्योदयस्तमो नश्यति साम्प्रतम् ।।

अस्तु इस सोरठे में तुलसीदास के गुरु से कोई सम्वन्ध नहीं है फिर 'जावालि संहिता' के रचनाकार को तुलसीदास के गुरु से क्या प्रयोजन ?

आचार्य वेदव्रत शास्त्री ने अपनी पुस्तक "तुलसी जीवन–वृत्त और तथ्य" (पृष्ठ १३३ तथा १६९–१७१) में डॉ० माता प्रसाद गुप्त के उपर्युक्त अभिमतों के खण्डन का प्रयास किया है, किन्तु उनमें पुष्ट प्रमाणों का अभाव है। अतएव नरसिंह को तुलसी गुरु मानने का प्रश्न ही नहीं उठता। ऐसी परिस्थिति में सोरों में नरसिंह मंदिर होने अथवा न होने से किसी समस्या का समाधान नहीं होता है।

नरसिंह चौंधरी के वंशज – चौधरियों के मुहल्ले में चौंधरी खानदान के कुछ लोग रहते हैं, जो अपने को तुलसी के तथाकथित गुरु का वंशज बतलाते हैं किन्तु उपर्युक्त संदर्भ में स्पष्ट किया गया है कि तुलसी के गुरु नरसिंह अथवा नरहरि नहीं थे। तुलसी ने भी स्वयं कहा है कि उन्होंने नरसिंह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथवा नरहरि से नहीं बल्कि निज गुरु से रामकथा सुनी थी। डॉ० माताप्रसाद गुप्त अपनी सोरों यात्रा में रंगनाथ चौधरी से मिले थे, जिन्हें अपनी आठ पीढ़ियों के पूर्व पुरुषों का नाम ज्ञात है और उनमें नरसिंह नाम से कोई पुरुष नहीं थे। उपर्युक्त मंदिर उनके घराने के अधिकार में अवश्य है। डॉ० गुप्त के इस मत के खण्डन में आचार्य वेदव्रत शास्त्री का कथन है कि "ऐसा प्रतीत होता है कि डॉ० गुप्त की रंगनाथ से भेंट ही नहीं हुई।" किन्तु डॉ० गुप्त के अनुसार उन्होंने स्वयं रंगनाथ से मिलकर सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की थी।

जनश्रुतियाँ – कहा जाता है कि जिस भवन में तुलसीदास की पत्नी 'रत्नावली' रहती थीं उसकी रज धारण करने से आरोग्य लाभ होता है, किन्तु जनश्रुति में यह उल्लेख नहीं है कि उक्त भवन की रज धारण करने से किस रोग से मुक्ति मिलती है। अस्तु इस आधी–अधूरी जनश्रुति को तुलसी जन्मभूमि से जोड़ना उचित नहीं प्रतीत होता है।

एक अन्य जनश्रुति – "तुलसी तेरी झोपड़ी गलकटियन के पास" – के आधार पर सोरों समर्थकों का यह मानना है कि तुलसीदास का घर कसाइयों के घर के पास था। सोरों समर्थक यह भी कहते हैं "तुलसी घर मरघट में गलकटियन के पास" अर्थात् तुलसी का घर मरघट में कसाइयों के घर के पास था, किन्तु तुलसीकालीन संस्कृति के अनुसार किसी कुलीन ब्राह्मण का घर न तो मरघट में हो सकता है और न तो कसाइयों के घर के पास ही हो सकता था। उपर्युक्त दोनों जनश्रुतियाँ कहाँ से उद्धृत की गई हैं अथवा उनके अस्तित्व का क्या आधार है, इस सम्बन्ध में सोरों समर्थक मौन हैं। वस्तुतः तुलसी रचित दोहावली अथवा अन्य स्थलों से प्रचलित पदों का स्वार्थपूर्ण परिवर्तन करके उपर्युक्त दोनों जनश्रुतियों का सृजन किया गया है।

यह सर्वमान्य है कि तुलसीदास काशी में गंगातट में असीघाट में रहते थे, वहीं पर और भी वैष्णव साधु रहते थे, जो गले में तुलसी की माला धारण करते थे और इस कारण उन्हें कंठमलिया कहते थे। (दोहावली ९९)। अस्तु 'तुलसी तेरी झोपड़ी गलकटियन के पास' पाठ नहीं है वास्तविक पाठ है– "तुलसी तेरी झोपड़ी कंठमलियन के पास'। इसी प्रकार "तुलसी घर मरघट में गलकटियन के पास" का वास्तविक पाठ है – 'तुलसी घर असि–घाट पर कंठमलियन के पास' अर्थात् तुलसी का घर असीघाट पर कंठमलिया वैष्णव साधुओं के पास है। उपर्युक्त तथाकथित जनश्रुतियों की पंक्तियों में मनमाना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिवर्तन कर सोरों समर्थकों के मन्तव्य की पूर्ति नहीं होती है ।

तुलसी की भाषा – सोरों समर्थकों का कथन है कि पं० गोविन्द बल्लभ भट्ट, पं० गौरीशंकर द्विवेदी तथा पं० रामनरेश जी त्रिपाठी ने तुलसी साहित्य के कुछ ऐसे शब्दों का उल्लेख किया है जो उनके अनुसार केवल सोरों में ही बोले जाते हैं, और इस आधार पर वे तुलसी को सोरों निवासी मानते हैं। डॉ० देवकी नंदन श्रीवास्तव अपने शोध प्रबन्ध "तुलसी की भाषा" में लिखते हैं – "तुलसी साहित्य में सोरों में बोले जाने वाले कुछ शब्दों के प्रयोग मात्र से तुलसीदास को सोरों निवासी नहीं माना जा सकता है, क्योंकि तुलसी साहित्य में बैसवाड़ी के भी शब्द पाये जाते हैं, पर इस आधार पर वे वैसवाड़ा निवासी नहीं हो सकते और न अरबी और फारसी शब्दों के प्रयोग से वे अरब अथवा फारस निवासी ही हो सकते हैं । तुलसी ने अपनी अनेक तीर्थ यात्राओं में लगभग पूरे भारत का भ्रमण किया था, इस कारण उनका शब्द भण्डार बड़ा विस्तृत था, जिनका प्रयोग उन्होंने आवश्यकतानुसार अपने साहित्य में किया है ।"

इसके अतिरिक्त तुलसी की रचनाओं में जो स्थानीय तत्व पाये जाते हैं, वे राजापुर में उपलब्ध हैं सोरों तथा व्रज क्षेत्र में उनका सर्वथा अभाव है । ऐसी परिस्थित में भाषा के आधार पर तुलसीदास को सोरों निवासी मानना युक्तियुक्त न होगा ।

आत्म परिचय – सोरों समर्थकों की मान्यता है कि "गोस्वामी जी के कुछ वचन और कूट आत्म परिचयात्मक है" जिनसे सोरों पक्ष की पुष्टि होती है । कवितावली के उत्तरकाण्ड के "तुलसी तिहारों घर जायो है घर को" के आधार पर सोरों समर्थक तुलसी को सोरों के निकट रामपुर का निवासी मानते हैं । कवितावली का सम्बन्धित पद निम्नलिखित है –

धर्म के सेतु, जग मंगल के हेतु, भूमि
भारु हरिबे को अवतारु लिये नर को ।
नीतिऔ प्रतीति–प्रतिपाल चालि प्रभु मानु ।
लोक वेद राखिबेको पनु रघुवर को
वानर, विभीषन की ओर के कनावड़े हैं ।
सो प्रसंगु सुने अंगु जरै अनुचर को ।
राखे रीति आपनी, जो होइ सोई कीजै बलि,
तुलसी तिहारो घर जायऊ है घर को –

(कविता० उ० का० १२२)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोरों समर्थक "घर जायऊ" का अर्थ घर में उत्पन्न हुआ सेवक तो करते हैं, किन्तु वे श्रीराम का घर सोरों निकटवर्ती रामपुर को मानते हैं, और इस सन्दर्भ में एक विचित्र अर्थ करते हैं। उनके अनुसार "तुलसी राम को विष्णु का अवतार मानते हैं, विष्णु के दशावतारों में 'वाराहावतार' भी है। अतः उनका (तुलसी का) संकेत उसी वाराह क्षेत्र की ओर है और वे श्रीराम को उनके उस पूर्व अवतार का स्मरण दिलाते हैं कि "मैं आपके उसी घर अर्थात् वाराह क्षेत्र (सोरों) का हूँ और आपका सेवक भी हूँ। अतः मेरे ऊपर कृपा कीजिये।" ("तुलसी जीवन वृत्त तर्क तथा तथ्य" पृष्ठ ४२) इस प्रकार सोरों समर्थक तुलसी जन्म स्थान सोरों सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। यदि सोरों समर्थकों का यह तर्क मान भी लिया जाये, तब फिर विष्णु के अन्य अवतारों के जन्म स्थानों को श्रीराम का घर क्यों न माना जाय? जहाँ तक सोरों का प्रश्न है वहाँ तो वाराहावतार भी नहीं हुआ था। वाराहपुराण के अनुसार वाराहावतार तो मथुरा में हुआ था। इसके अतिरिक्त गत ३१ मई १९६० ई० में दिल्ली में सम्पन्न हुई गोष्ठी में अलीगढ़ विश्वविद्यालय के प्रो० गोवर्द्धननाथ शुक्ल ने कहा था कि एटा जनपद में रामपुर नाम का कोई गांव है ही नहीं फिर गंगातट पर यह रामपुर कहाँ स्थित हो गया। ऐसी दशा में सोरों समर्थकों का उपर्युक्त तर्क सोरों को तुलसी की जन्मभूमि सिद्ध करने का प्रयास उचित नहीं है।

भागीरथी तथा सुरसरि की समीपता के सन्दर्भ में -

'कवितावली' के उत्तरकाण्ड के पद 'विनवौं करजोरि' तथा 'विनय पत्रिका' के पद, "भरतखण्ड समीप सुरसरि थल भलो" का संदर्भ विहीन मनमाना अर्थ करके सोरों समर्थक सोरों में तुलसी जन्मभूमि सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। उपर्युक्त दोनों पदों का संदर्भ निम्नलिखित प्रकार से है -

बरु बारहि बार सरीर धरौं, रघुबीर को है तव तीर रहौंगो,
भागीरथी! बिनवौं करजोरि, बहोरि न खोरि लगै सो कहौंगो।

(कविता० उ०का० १४७)

यह भरत खण्ड समीप सुरसरि, थल-भलो, संगति भली।
तेरी कुमति कायर! कलप बल्ली चहति विष-फल फली।।

(विनय पत्रिका १३५)

आचार्य वेदव्रत का मानना है कि अयोध्या में गंगा नहीं सरयू नदी है,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसलिये तुलसी का जन्मस्थान सोरों हैं, क्योंकि वहाँ गंगा नदी है पर क्या गंगा सोरों में ही है, अन्य कहीं नहीं ? फिर तुलसी तो गंगा के असीघाट पर काशीवास कर रहे थे, तब वे सोरों की गंगा का गुण-गान क्यों करेंगे, काशी की गंगा का क्यों नहीं ? "विनवौ करजोरि" संदर्भित पद में तुलसीदास अपने अगले जन्मों में गंगातट पर रहने की बात करते हैं - "**बरु बारहिं बार सरीर धरौं, रघुबीर कोहै, तव तीर रहौंगो**"। ऐसी परिस्थिति में सोरों समर्थकों द्वारा तुलसी के वर्तमान जन्म को सोरों के गंगातट पर खींचने का प्रयास मात्र है। इसी प्रकार विनय पत्रिका के पद में आये "थल भलो, संगति भली" के अनुसार यदि सोरों समर्थकों का तर्क मान लिया जाए तो गंगातटीय होने के कारण तथाकथित तुलसी जन्मभूमि 'थल तो भलो हो सकता है किन्तु वहाँ संगति कैसे भली होगी, वह स्थान तो मरघट में गलकटिगन के समीप इंगित किया जाता है। इस प्रकार सोरों समर्थकों का मत तर्क की कसौटी में उचित नहीं ठहरता है।

सुकुल जन्म - "सुकुल-जन्म" का उल्लेख विनय पत्रिका के १३५वें पद में हुआ हैं-

दियो सुकुल - जन्म सरीर सुन्दर, हेतु जो फल चारि को।
जो पाइ पंडित परम-पद, पावत पुरारि, मुरारि को ।।

सोरों समर्थक आचार्य वेदव्रत के अनुसार प्रस्तुत 'सुकुल' शब्द 'सनाढ्य शुक्ल' का द्योतक है, किन्तु अपने इस मत की पुष्टि में उन्होंने कोई प्रमाण नहीं दिया है। यदि इस 'सुकुल' शब्द को आस्पद के अर्थ में लिया जाता है, तब तो कान्यकुब्ज, सरयूपारीण आदि में भी शुक्ल आस्पद होता है, फिर सनाढ्य शुक्ल से ही आग्रह क्यों ? यहाँ सुकुल शब्द से आशय सुन्दर कुल से है, जैसा कि इसी पंक्ति में व्यवहृत शरीर-सुन्दर का तात्पर्य सुन्दर शरीर से है। यहाँ 'सु' शब्द कुल का विशेषण है, जैसा कि सुन्दर शब्द 'शरीर' का विशेषण है। अस्तु इस 'सुकुल शब्द को किसी आस्पद विशेष से सम्बद्ध करना उचित न होगा।

कूटार्थ - विनय पत्रिका का एक पद है -

"राम सनेही सो तैं न सनेह कियो।
अगम जो अमरनिंहू सो तनु तोहि दियो ।। —(पद १३५)

र्युक्त पंक्ति के वर्ण 'सो' और 'तैं' को हटाकर उन दोनों के स्थनों पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'ते' कर दिया है और उपर्युक्त पद की द्वितीय पंक्ति में वर्ण हूँ, को 'हू' से परिवर्तित कर दिया है, तथा अगम अमरनि हूँ, सो तन तोहि दियो है, का सामान्य अर्थ न करके उसे कूट की संज्ञा देते हुये 'अगम' का अर्थ अव्यक्त ब्रह्म अर्थात् तुलसी के राम और 'अमरनि' का अर्थ 'न जायते म्रियते वा कदाचिन्' के अनुसार आत्मा करके, तुलसी के पिता 'आत्माराम' अर्थ किया है। इस अर्थ के लिये 'अगम' तथा 'अमरनि' को 'तन' शब्द का विशेषण बनाया है, किन्तु तन न तो अगम होता है और न अमर होता है, तन तो नाशवान है। इस अर्थ के लिये विनय पत्रिका की उपर्युक्त द्वितीय पंक्ति में आये हुये 'जो' और 'हु' का अर्थ ही नहीं किया गया है। अस्तु तोड़-मरोड़ पूर्ण यह मनमाना अर्थ क़दापि ग्राह्य नहीं हो सकता।

विनय पत्रिका की उपर्युक्त द्वितीय पंक्ति के हूँ को 'हु' में परिवर्तित करके तुलसी की माता हुलसी का नाम ढूंढने का प्रयास किया गया है। इतना ही नहीं, उक्त पंक्ति के 'हू' और 'सो' के मध्य शाक-पार्थिव सिद्धांत के अनुसार 'त्व' की स्थापना करके 'हुलसी' शब्द का रूप सिद्ध किया गया है, किन्तु यह समस्त प्रयास व्याकरणीय नियमों के प्रतिकूल हैं। 'हू' शब्द अव्यय है और 'सो' शब्द सर्वनाम है, जिनका संयोग नियमानुसार संभव नहीं है। फिर शाक-पार्थिव सिद्धान्त के अनुसार उत्तर पद लोप होता है, मध्यमपद का लोप नहीं होता है। इसके अतिरिक्त इस सिद्धान्त के अनुसार केवल संख्या वाचक शब्दों का लोप होता है, वर्णों का लोप नहीं होता है। फिर एक बार 'ल' का लोप करके पुनः उसकी स्थापना नहीं की जा सकती। इसके अतिरिक्त 'ल' अक्षर है पद नहीं है, लोप तो पद का ही होता है। अस्तु उपर्युक्त शब्दों को तोड़-मरोड़ करके तथा व्याकरण के नियमों की अनदेखी करके हुलसी तथा आत्माराम की कल्पना एक निरर्थक प्रयास मात्र है।

सूकरखेत – विनय पत्रिका के ही १३५वें पद की पंक्ति में आये हुये – "थल भलो संगति भली" का सामान्य अर्थ न करके सोरों-समर्थकों ने इन्हें कूट मानकर मनमाना अर्थ किया है। उनके अनुसार 'भलो' के 'भ' का अर्थ हुआ 'भूधर' और लो का अक्षर 'ल' दन्त स्थानीय है, जिसका अर्थ हुआ, 'दन्त' और अक्षर का अर्थ हुआ 'ब्रह्म'। इस प्रकार 'भूधर' का अर्थ हुआ पृथ्वी और 'धर' का अर्थ हुआ 'धरी' अथवा धारण किया गया है। इन सभी अर्थों को संयुक्त करके सोरों समर्थक 'भलो' का अर्थ करते हैं, वह क्षेत्र, जहाँ ब्रह्म ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पृथ्वी दन्त स्थान में धारण किया। किन्तु व्याकरण के किसी भी नियम से 'ध' से 'धरी' शब्द नहीं बनता है। इसके अतिरिक्त वाराह भगवान ब्रह्म के अवतार भी नहीं हैं, वे तो विष्णु के अवतार हैं। अस्तु यह कूटार्थ तो केवल कुटिलार्थ ही हो सकता है। यदि भलो का अर्थ सूकर क्षेत्र है तब तो देश में २४ सूकर क्षेत्र हैं, फिर इसका संदर्भ सोरों से ही क्यों ? वाराह अवतार तो वाराह पुराण के अनुसार मथुरा में हुआ था, कहीं अन्यत्र नहीं। इस प्रकार इस कूटार्थ से सोरों समर्थकों का मन्तव्य पूर्ण नहीं होता है।

पाण्डुलिपियाँ – सोरों पक्ष के समर्थन में निम्नलिखित पाण्डुलिपियों का उल्लेख किया जाता है, इसके प्रमुख संरक्षक पं० गोविन्द बल्लभ भट्ट, पं० भद्रदत्त शर्मा, श्री हरगोविन्द पंडा तथा आचार्य वेदव्रत शास्त्री आदि हैं। इन पाण्डुलिपियों का विवरण निम्नलिखित है –

(१) रामचरित मानस के बालकाण्ड के अन्तिम पृष्ठ की पुष्पिका जिसे सं० १६४३ वि० की लिखी तथा अरण्यकाण्ड की अन्तिम पुष्पिका आषाढ़ शुक्ल ४ सं० १६४३ वि० की लिखी मानते हैं।

(२) नन्ददास कृत भ्रमरगीत (प्रतिलिपिकार कृष्णदास के शिष्य बालकृष्ण)

(३) रत्नावली के दोहे–इन दोहों के दो संस्करण हैं, जिनके एक संस्करण में दो सौ दोहे तथा दूसरे संस्करण में एक सौ ग्यारह दोहे हैं। इन दोहों में रत्नावली का आत्म परिचय, वियोग वर्णन तथा कन्याओं की शिक्षा आदि का वर्णन है।

(क) दोहा रत्नावली – श्री गोपालदास की प्रति भाद्रपद अमावस्या सोमवार सं० १८२४ वि० में पूर्ण हुई।

(ख) दोहा रत्नावली – श्री गंगाधर की प्रति भाद्रपद शुक्ल चन्द्रवार सं० १८७५ वि० में पूर्ण हुई।

(ग) रत्नावली–लघुदोहा संग्रह माघ शुक्ल त्रयोदशी सोमवार सं० १८७५ वि० में पूर्ण हुई।

(४) सूकर क्षेत्र माहात्म्य – इसे नन्ददास के पुत्र कृष्णदास ने सं० १८७० वि० में लिखा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(क) मुरलीधर चतुर्वेदी लिखित प्रतिलिपि सं० १८०९ वि० ।

(ख़) शिवसहाय की लिखित प्रति कार्तिक कृष्ण बुधवार सं० १८७० वि० ।

(५) कृष्णदास वंशावली - कृष्णदास ने दस दोहों में अपनी वंशावली लिखी है, जिन्हें मुरलीधर चतुर्वेदी ने, तथा शिवसहाय कायस्थ ने सूकर क्षेत्र माहात्म्य के अन्त में स्थान दिया है।

(६) रत्नावली चरित -

(क) मुरलीधर चतुर्वेदी कृत, जो श्रावण शुक्ल प्रतिपदा सं० १८२९ वि० को पूर्ण हुई थी।

(ख) रामवल्लभ मिश्र की प्रति जो मार्गशीर्ष छठ शनिवार सं० १८६४ वि० में पूर्ण हुई।

(७) वर्षफल - इसे नन्ददास ने कृष्ण त्रयोदशी सं० १६५७ वि० में अपने पितृव्य चन्द्रहास के निर्देश से लिखा था इसकी एक प्रतिलिपि रुद्रनाथ ने सं० १८७० वि० में पूर्ण की थी।

(८) सेवादास की टीका- नाभादास भक्तमाल पर प्रियादास ने भक्त रसबोधिनी" टीका लिखी थी जो सं० १८९४ वि० मार्गशीर्ष शुक्ल दशमी बुधवार को पूर्ण हुई थी।

उपर्युक्त पाण्डुलिपियों की प्रमाणिकता सिद्ध करने हेतु डॉ० रामदत्त भारद्वाज ने "सोरों सामग्री की प्रामाणिकता" शीर्षक अपनी पुस्तिका में भारत सरकार के डायरेक्टर आर्क्योलोजी-विभाग, श्री के० डी० भार्गव की रिपोर्ट तथा उसी विभाग के ज्वाइन्ट डाइरेक्टर जनरल डॉ० बी० सी० एच० छाबरा के दिनांक २२ दिसम्बर, १९५९ ई० के पत्र की प्रतिलिपि उद्धृत की है। श्री भार्गव ने संबन्धित पाण्डुलिपियों की तिथि-निर्धारण में अपनी असमर्थता व्यक्त करते हुए यह टिप्पणी की है कि पाण्डुलिपियों की तिथि निर्धारण में आर्क्योलोजिक डिपार्टमेन्ट डॉ० वी० सी० एच० छाबरा ने केवल इतना ही लिखा है कि जो पाण्डुलिपियाँ उन्हें भेजी गई हैं उनकी देवनागरी के अक्षरों का समय उन पाण्डुलिपियों में दिये गये समय का ही प्रतीत होता है। यह आख्या केवल अनुमान मात्र पर आधारित है। इसमें कोई स्पष्ट मत नहीं दिया गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसके अतिरिक्त अरण्यकाण्ड की प्रतिलिपियों में दी गई पुष्पिका में पुनर्लेखन (Was-Widding) भी इस रिपोर्ट में दर्शाया गया है। अस्तु ऐसी परिस्थिति से सम्बन्धित पाण्डुलिपियों की लेखन तिथियों की प्रमाणिकता की पुष्टि की अभी अपेक्षा है।

सोरों की कतिपय पाण्डुलिपियों के अक्षरों का राजापुर में 'रामचरितमानस' के 'अयोध्याकाण्ड' तथा वाराणसी के तुलसीदास के स्नेही टोडर की जायदाद के बटवारे के अभिलेख में तुलसीदास द्वारा लिखित अक्षरों तथा राजापुर (चित्रकूट) में उपलब्ध अनेक पाण्डुलिपियों का मिलान करने पर सोरों की पाण्डुलिपियों के अक्षर आधुनिक प्रतीत होते हैं।

सोरों की पाण्डुलिपियों के अक्षर लगभग पूर्ण विकसित हैं, परन्तु 'पंचनामा' तथा राजापुर के 'अयोध्याकाण्ड' के अक्षर अर्द्धविकसित अवस्था के हैं। सोरों पाण्डुलिपियों के अक्षर अधिक सुडौल हैं और यह सुड़ौलता आधुनिकता की प्रतीक है। 'पंचनामा' तथा 'अयोध्याकाण्ड' के अक्षरों के खत तथा मोड़ (Strokes and Curves) की भाँति सोरों पाण्डुलिपियों के खत व मोड़ नहीं हैं। सामन्यतः लिपि का विकास एक ही साथ होता है। अस्तु यह संभव नहीं है कि एक व्यक्ति एक ही समय में सोरों में विकसित लिपि में लिखे और वही व्यक्ति राजापुर (चित्रकूट) तथा काशी में जाकर अर्द्धविकसित लिपि का आश्रय ले। हस्तलेख (Writing) में तो अंतर हो सकता है, किन्तु अक्षरों के खत और मोड़ आदि में वैभिन्न नहीं हो सकता है।

इसके अतिरिक्त कृष्णदास कृत सूकर-क्षेत्र माहात्म्य में एक खटकने वाली बात यह है कि इसके शब्द एक ही शिरोरेखा में लिखे गये हैं, और दो शब्दों के मध्य एक निश्चित दूरी छोड़ी गई है, किन्तु इस प्रकार का लिपि विकास कम से कम सूकर-क्षेत्र माहात्म्य के लेखन काल १८७० वि० तक नहीं हुआ था। यही तथ्य सेवादास कृत "भक्तमाल की टीका" की पाण्डुलिपि के सम्बन्ध में चरितार्थ होता है। ऐसी परिस्थिति में सोरों की पाण्डुलिपियों में दी गई तिथियों की प्रामाणिकता की पुष्टि नहीं होती है।

बाह्य सामग्री -

सोरों समर्थक वाह्य सामग्री में नाभादास की प्रशस्तियाँ, अष्टसरवामृत, प्रियादास की टीका, वैष्णववार्तायें, भाव-प्रकाश, गोकुलनाथ जी के वचनामृत,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वल्लभ जी के वचनामृत और उनकी भवदीयनामा मणिमाला, भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के प्रशस्ति पद, मानस की प्राचीन टीकायें, बाबू शिवनन्दन सहाय के लेख और ग्रन्थ, भक्तमाल पर सीतारामशरण भगवानप्रसाद की टीका, सरजार्ज ग्रियर्सन, एडविन ग्रीब्ज एवं एफ० एस० ग्राउन्ड के अनुसंधान तथा गजेटियर आदि के उल्लेख हैं।

उपर्युक्त वाह्य-सामग्री समर्थक विद्वानों ने सूकर क्षेत्र, तुलसीदास के नन्ददास के भाई होने एवं इसी प्रकार के अन्य तथ्यों का उल्लेख किया है, पर उन तथ्यों की पुष्टि के सम्बन्ध में समुचित साक्ष्य उपलब्ध नहीं हैं। इसी प्रकार पाश्चात्य विद्वानों ने भी अपने दिये गये तथ्यों के समुचित प्रमाण नहीं दिये हैं। एडविन-ग्रीब्ज ने तो १८९१ ई० में काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका में लिखा है, कि तुलसीदास राजापुर (चित्रकूट) में पैदा हुये थे। अस्तु सोरों की गृह्य एवं वाह्य सामग्री के निष्पक्ष वैज्ञानिक अध्ययन की अपेक्षा है।

अलीगढ़ विश्वविद्यालय के प्रो० गोवर्द्धननाथ शुक्ल ने अपनी "सोरों सामग्री पर एक दृष्टि" शीर्षक पुस्तिका में सोरों सामग्री का भंडाफोड़ किया है। पं० गोविन्द वल्लभ भट्ट की सम्वत् २०१५वि० में प्रकाशित पुस्तक की विवेचना करते हुये प्रो० शुक्ल ने स्पष्ट किया है कि तुलसीदास अथवा उनके तथाकथित अनुज नन्ददास का घर सोरों क्षेत्र में कहीं नहीं है और एटा जनपद में "रामपुर" नाम का कोई ग्राम भी नहीं है। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया है कि सोरों में नन्ददास को तो कोई जानता ही नहीं है। पं० रामनरेश त्रिपाठी की "तुलसीदास के जन्मस्थान की खोज" शीर्षक वाली रामचरित मानस की भूमिका की चर्चा करते हुये उन्होंने यह सिद्ध किया है कि वहाँ का नरसिंह मंदिर अत्याधुनिक है और भाषा तथा लोकाचार के आधार पर तुलसीदास को सोरों-क्षेत्रीय नहीं सिद्ध किया जा सकता है।

प्रमुख साहित्यिक गोष्ठियाँ -

(१) दिल्ली की गोष्ठी -

३१ मई १९६० ई० में भारतीय हिन्दी परिषद के तत्वावधान में एक गोष्ठी दिल्ली में आयोजित की गई थी। इस गोष्ठी में डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, आचार्य विनय मोहन शर्मा, डॉ० देवकीनन्दन श्रीवास्तव, डॉ० बृजेश्वर वर्मा जैसे शीर्षस्थ विद्वान् सम्मिलित हुए थे। गोष्ठी का विषय था -

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"सोरों सामग्री की प्रामाणिकता" पर विचार।

इस गोष्ठी में तीन बैठकें आयोजित की गई थी। प्रथम बैठक की अध्यक्षता डॉ० धीरेन्द्र वर्मा ने दूसरी बैठक की अध्यक्षता आचार्य विनय मोहन शर्मा तथा तीसरी बैठक की अध्यक्षता डॉ० नागेन्द्र ने की थी।

सर्वप्रथम, डॉ० रामदत्त भारद्वाज ने सोरों सामग्री का संक्षिप्त परिचय देते हुये वहाँ के वाह्य तथा अन्तः साक्ष्यों के आधार पर सोरों के निकट गंगातट पर स्थित रामपुर ग्राम में तुलसी जन्मभूमि होने पर बल दिया। डॉ० उदयभानु सिंह ने सोरों तथा राजापुर के उभय पक्षों की विचारणीय प्रश्नावली का विश्लेषण करते हुये सोरों सामग्री की अप्रमाणिकता पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् अलीगढ़ विश्व-विद्यालय के प्रो० गोवर्द्धन नाथ शुक्ल ने राजापुर (चित्रकूट) पक्ष का प्रबल समर्थन करते हुये, सोरों सामग्री के प्रत्येक साक्ष्य का खण्डन करते हुये, उसकी निस्सारता प्रमाणित करते हुये कहा कि एटा जनपद में रामपुर नाम का कोई ग्राम ही नहीं है। उन्होंने भाषा सम्बन्धी अनेक उदाहरणों के साथ सोरों के वैवाहिक रीति-रिवाजों तथा संस्कारों का उल्लेख करते हुये राजापुर को तुलसी की जन्मभूमि सिद्ध किया। प्रो० शुक्ल के पश्चात् आचार्य वेदव्रत शास्त्री ने डॉ० माता प्रसाद गुप्त के राजापुर पक्षीय विचारों का खंडन करते हुये, सोरों सामग्री की प्रामाणिकता सिद्ध करने का प्रयास किया।

द्वितीय गोष्ठी में गोरखपुर विश्वविद्यालय के डॉ० भगवती प्रसाद सिंह ने 'मूल गोसाई चरित' तथा 'वाराह पुराण' आदि के आधार पर सोरों पक्ष को नकारते हुये "राजापुर" को तुलसी जन्मभूमि होने का समर्थन किया।

तृतीय गोष्ठी में आचार्य शिवावतार मिश्र ने राजापुर पक्ष का समर्थन करते हुये तुलसीदास द्वारा स्थापित संकट मोचन हनुमान प्रतिमा, तुलसी मंदिर, तुलसी प्रतिमा, तुलसी हस्तलिखित 'रामरचित मानस' के 'अयोध्या काण्ड', सम्राट अकबर प्रदत्त तुलसी को राजापुर घाट-हाट, कलारी, साइर आदि की माफी एवं तत्संबन्धी दस्तावेजों आदि का उल्लेख करते हुये राजापुर (चित्रकूट) को ही तुलसी जन्मभूमि प्रमाणित किया। इसके पश्चात् डॉ० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने अपने अकाट्य तर्कों द्वारा राजापुर (चित्रकूट) को तुलसी जन्मभूमि सिद्ध किया। उन्होंने सोरों सामग्री सम्बन्धित बालकाण्ड तथा अरण्य काण्ड की पाण्डुलिपियों की पुष्पिकाओं पर प्रकाश डाला, जिनमें सम्वत् ८ के स्थान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर १ का स्पष्ट बोध होता है । बालकाण्ड की समाप्ति रेखा के पश्चात् ही "लिखा रघुनाथ दास के काशीपुरी में" बाद में जोड़ा गया प्रतीत होता है । उन्होंने यह भी कहा कि १७८० ई० तक लिपियों में "कृश्न" लिखा जाता था "कृष्न" नहीं लिखा जाता था ।

गोष्ठी के अंत में डॉ० नागेन्द्र ने उपस्थित विद्वानों का आवाहन करते हुये राजापुर (चित्रकूट) पक्ष के प्रमाणों को कल्पित एवं असत्य सिद्ध करने के लिये मंच पर आमंत्रित किया, किन्तु कोई विद्वान आगे नहीं आया ।

(२) लखनऊ की गोष्ठी -

६ व ७ जनवरी सन् १९९७ में लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग तथा हिन्दी संस्थान के तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय गोष्ठी में अलीगढ़ विश्वविद्यालय के प्रो० शिवकुमार शाण्डिल्य ने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा "सोरों" कृष्ण का क्षेत्र है । एठा शब्द से एटा बना है, वहाँ बृज की संस्कृति पाई जाती है, जिसमें श्रीकृष्ण का महत्व है । क्या उस संस्कृति में पैदा होने वाला तुलसी राधा और कृष्ण को छोड़कर सीता और राम का गुणगान कर सकता था ? भाई के प्रति त्याग का भाव अवध में है, सोरों में तो भाई के प्रति प्रतित्याग का उल्लेख है । अगर तुलसी का जन्म सोरों में हुआ होता तो वे रामचरित मानस नहीं लिखते । उन्होंने अनेक शब्दावलियों की चर्चा करते हुये कहा कि तुलसी के काव्य में 'अहिवातों' का उल्लेख है । यह शब्द सोरों में नहीं बोला जाता है । इसी प्रकार 'लूका' शब्द का प्रयोग सोरों में नहीं राजापुर (चित्रकूट) में होता है । प्रो० शाण्डिल्य के इन तर्कों का प्रतिवाद सोरों समर्थकों की ओर से कुछ भी नहीं प्रस्तुत किया जा सका ।

⌘⌘⌘⌘

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोंरो सामग्री की समीक्षा

सोरों (जनपद-एटा) समर्थकों ने 'रामचरित मानस' बालकाण्ड के दोहा ३० क-

"मैं पुनि निज गुरुसन सुनी कथा सो सूकर खेत ।
समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत ।।"

की पृष्ठभूमि में प्रचुर सामग्री जुटाकर तुलसीदास जी का जन्मस्थान और गुरुद्वारा सोरों सिद्ध करने का प्रयास किया है ।

सोरों सामग्री के प्रतिपादक लाला सीताराम, गोविन्द वल्लभ भट्ट, भद्रदत्त शर्मा, वेदव्रत शास्त्री, रामनरेश त्रिपाठी, डॉ० दीनदयाल गुप्त, डॉ० रामदत्त भारद्वाज, डॉ० भगीरथ मिश्र, डॉ० राजाराम रस्तोगी तथा प्रेमनारायण गुप्त आदि सोरों सामग्री को विश्वसनीय मानते हुये सोरों (कथित सूकर खेत) को तुलसी की जन्मस्थली और गुरुद्वारा मानते हैं ।

सूकरखेत माहात्म भाषा, मुरलीधर के छप्पय, रत्नावली चरित, दोहा रत्नावली, भ्रमरगीत की पुष्पिका, वर्षफल, सेवादास की टीका, तुलसी प्रकाश, भक्ति रसबोधिनी, श्री अष्टछाप की वार्ता, गोकुलनाथ के वचनामृत, बावन वचनामृत, अष्ट सखामृत, दो सौ बावन वैष्णववार्ता, सम्प्रदाय कल्पद्रुम भक्ति विलास, इम्पीरियल गजेटियर्स, बाँदा गजेटियर' आदि के आधार पर तुलसी का जन्म स्थान सोरों माना है ।

१. तर्क -

सोरों समर्थकों ने 'मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकर खेत...' के आधार पर अपना यह मत व्यक्त किया है कि तुलसीदास जी का जन्म सूकरखेत (सोरों, जनपद एटा, उ० प्र०) के निकट रामपुर नामक ग्राम में हुआ था ।[१] उनके जन्म के पश्चात् उनके माता-पिता सोरों के योग मार्ग नामक मुहल्ले में जाकर बस गये थे । तुलसीदास ने अपनी बाल्यावस्था में अपने गुरु से सोरों (एटा) में ही रामकथा सुनी थी ।

---

१. 'गोस्वामी तुलसीदास : व्यक्तित्व; दर्शन; साहित्य" -डॉ० रामदत्त भारद्वाज, पृष्ठ १६६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसीदास जी का जन्म चूँकि रामपुर (जिला-एटा) में हुआ था, इसीलिए उनके मन में रामपुर के प्रति विशेष लगाव था। उन्होंने 'बरवै रामायण' में कहा है कि राम का नाम लेने पर अन्त में रामपुर (बैकुण्ठ) की प्राप्ति होती है।[१] इसीप्रकार उन्होंने 'रामचरित मानस' के अनेक स्थलों पर अयोध्या को रामपुर कहा है।[२] कवि ने 'बरवै रामायण' तथा 'रामचरित मानस' के उपर्युक्त प्रसंगों में क्रमशः बैकुण्ठ तथा अयोध्या के स्थान पर रामपुर शब्द का प्रयोग कर अपने जन्मस्थान रामपुर (जिला-एटा) का ही श्रद्धा पूर्वक स्मरण किया है।[३]

समीक्षा - "मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकर खेत...." - 'मानस' बाल० ३० दोहे की विशद विवेचना ('सूकरखेत' शीर्षक) से सुस्पष्ट है कि उक्त 'सूकर खेत' से कवि का भावात्मक संकेत चित्रकूट धाम स्थित 'सूकर खेत' से है, अन्यत्र से नहीं। यदि 'सूकर खेत' का होना ही समस्या का समाधान है तो सोरों तथा गोंडः स्थित सूकरखेत ही क्यों? चित्रकूट धाम स्थित शूकर क्षेत्र की गणना भी देश के २४ शूकर क्षेत्रों में की जाती है। यह 'सूकर खेत' तुलसी की सर्वाधिक मान्य प्रामाणिक जन्म भूमि राजापुर (चित्रकूट) और परित्यक्तावस्था में पालन भूमि हरिहरपुर के सन्निकट भी है। फिर सूकर खेत-सोरों कैसे हो गया? सोरों समर्थकों द्वारा बरवै रामायण' ७/६७ और 'रामचरित मानस' - १/२९०/१,७/१४४/७ आदि में उल्लिखित 'रामपुर' का वास्तविक अर्थ बैकुण्ठ और 'अयोध्यापुरी' के स्थान पर सोरों (एटा) के पास स्थित रामपुर खींच-खाँच कर कूटार्थ (कुटिलार्थ) द्वारा मनमानी अर्थ का अनर्थ करना हास्यास्पद है। फिर डॉ० गोवर्द्धनाथ शुक्ल पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष अलीगढ़ विश्वविद्यालय का कथन है कि सम्पूर्ण एटा जिले में रामपुर नाम का कोई ग्राम ही नहीं है।[४] यहाँ यह उल्लेखनीय है कि डॉ० गोवर्द्धननाथ शुक्ल एटा जनपद के ही निवासी हैं। अतएव एटा जनपद के रामपुर ग्राम की स्थिति

---

१. तुलसी रामनाम सम, मित्र न आन।
जो पहुँचाव रामपुर, तनु अवसान॥ - 'बरवै रामायण" ७/६७

२. पहुँचे दूत रामपुर पावन। हरषे नगर बिलोकि सुहावन॥ -'रामचरितमानस' १/२९०/१
तब तब जाइ रामपुर रहऊँ। सिसुलीला बिलोकि सुख लहऊँ॥ -'रामचरित मानस' ७/१४४/७

३. "तुलसी जन्मभूमि" -डॉ० सूर्य प्रसाद दीक्षित, पृष्ठ १३

४. "तुलसी विमर्श"-डॉ० अयोध्या प्रसाद पाण्डेय, पृष्ठ २७, ३४, ४०, ४१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के सम्बन्ध में उनका मत प्रामाणिक तथा स्वीकार्य है ।[१]

२. तर्क –

किसी तुलसी चरित लेखक ने राजापुर (बाँदा, वर्तमान जनपद चित्रकूट) को किसी ने और कहीं तुलसीदास जी का जन्म स्थान माना है । पर किसी ने इस शंका का समाधान नहीं किया कि जब तुलसीदास जी बहुत बालक और अचेत थे, तब वे सूकरखेत कैसे पहुँचे ?

समीक्षा – यह तर्क 'रामचरित मानस' के बालकाण्ड के दोहा –

"मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकर खेत ।
समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत ।।"

–'मानस' १/३०क के आधार पर किया गया है ।

स्कन्ध पुराण, वाराह पुराण और अग्नि पुराण आदि के अनुसार पूरे देश में २४ या इससे अधिक स्थान ऐसे हैं जो शूकर क्षेत्र के रूप में उल्लिखित हैं । इससे उपरोक्त दोहे से मात्र सोरों ही तो किसी प्रकार सिद्ध नहीं होता ।

यदि सूकरखेत का होना ही उक्त समस्या का समाधान है तो सोरों तथा गोंडा (पसका) स्थित सूकर खेत ही क्यों ? राजापुर (जनपद चित्रकूट) के पास चित्रकूट धाम के सूकरखेत की गणना उक्त २४ शूकर क्षेत्र में की जाती है और राजापुर (जनपद चित्रकूट) के तुलसी जन्मभूमि होने के ठोस अकाट्य पुष्ट प्रामाणिक आधार हैं । इस सन्दर्भ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के भूतपूर्व प्रधानमंत्री पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल का कथन दृष्टव्य है –

"तीन सौ वर्षों से प्राचीन लेखों, जनश्रुतियों के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्मभूमि लोग राजापुर को ही मानते आ रहे हैं ।...... तुलसीदास के गुरु बाबा नरहरिदास की धूनी, तलैया, महल, समाधि वहाँ अब तक विद्यमान हैं । और लोग जिस पीपल को तुलसीदास का लगाया हुआ कहते हैं वह भी जनश्रुति के अनुसार अब तक कई बार सूखकर अब तक हरा बना है ।"

तुलसीदास जी के प्रिय शिष्य सूकर खेत–पसका (जिला गोंडा) निवासी

---

१. "राजापुर तुलसी के गाथा" –पृष्ठ ४७ पर श्री शम्भूनाथ टण्डन द्वारा उद्धृत डॉ० गोवर्धननाथ शुक्ल का मत ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबा वेणी माधवदास ने भी तुलसीदास जी का बालपन का गुरुद्वारा रामशैल (चित्रकूट) स्थित नरहरिदास जी की कुटी कहा है –

"प्रिय शिष्य अनन्तानन्द हते । नरहरियानन्द सुनाम छते ।
बसैं राम सुशैल कुटी करिकै । लयलीन दशा अति प्रिय हरि कै ।।"

– 'मूल गोसाईं चरित" – ६।।३, ४ पृष्ठ ३७

डॉ० चक्रधर नलिन ने अपने एक लेख 'गोस्वामी तुलसीदास की जन्मस्थली' में लिखा है – "सोरों (सूकर ग्राम सोराँव, सोरां) गंगातट का पुराण प्रसिद्ध वाराह क्षेत्र वह सूकर खेत नहीं जहाँ तुलसीदास जी ने बालपन में गुरु नरहरिदास जी से कथा सुनी थी । सोरों की सामग्री में उल्लिखित तुलसीदास कोई अन्य तुलसी हो सकते हैं और इनके प्रसिद्ध होने पर फिर दोनों के एक करने का प्रयत्न किया गया प्रतीत होता है ।"

तुलसीदास जी ने तो स्वयं "गीतावली" – अयोध्याकाण्ड के ५०वें पद में स्पष्ट शब्दों में चित्रकूट में वाराह (शूकर) अवतरण का सजीव वर्णन किया है जिस भावात्मक संकेत से स्पष्ट होता है कि तुलसीदास जी ने 'सूकरखेत' चित्रकूट में बालपन में गुरु मुख से राम कथा सुनी थी – (इस सन्दर्भ में 'सूकरखेत' शीर्षक दृष्टव्य है ।) जैसे कि जनमान्यता है कि राजापुर (चित्रकूट) में अभुक्तमूल नक्षत्र में पैदा होने से परित्यक्त होने और माता की मृत्यु के बाद चित्रकूट के निकट धाय चुनिया की ससुराल हरिहरपुर में उनका पालन–पोषण हुआ जहाँ से चित्रकूट का 'सूकरखेत' दो–ढाई कोस है जहाँ से ५, ६ वर्ष का बालक रामबोला (तुलसीदास जी का बचपन का नाम, जनश्रुति और लोक मान्यता के अनुसार पैदा होने के बाद राम बोलने से उनका 'रामबोला' नाम पड़ा ।) आसानी से पहुँच सकता था, किन्तु तथाकथित शूकर क्षेत्र सोरों (एटा) या पसका (गोंडा) तक आवागमन के साधन विहीन उस युग में भला कैसे पहुँच सकता था ?

अस्तु सोरों समर्थकों का उपरोक्त तर्क तथ्य से परे, भ्रामक और कोरे कपोल कल्पना पर आधारित है ।

३. तर्क – 'गजेटियर्स' –

सोरों समर्थक सोरों को गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्मभूमि सिद्ध करने के लिये अंग्रेज शासकों द्वारा सन् १८७४, १८८६, १९०८ तथा १९०९ ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में प्रकाशित शासकीय अभिलेख जिनको 'गजेटियर' की संज्ञा दी गई है, का प्रमाण पेश करते हैं। उपरोक्त अभिलेखों में यह उल्लेख किया गया है कि राजापुर को तुलसीदास जी ने बसाया है। सन् १८७४ ई० के 'इम्पीरियल गजेटियर' और १९०९ ई० के बाँदा जिले के गजेटियर में यह स्पष्ट रूप से वर्णित किया गया है कि एटा जिले के सोरों से तुलसीदासजी यमुना किनारे उस जंगल में आये, जहाँ वर्तमान में राजापुर स्थित है। उन्होंने अपने प्रभाव से कई शिष्य बनाये तथा उन्हीं को अपने पास आवासित करके राजापुर बसाया। सन् १८८६ ई० के अभिलेख में मात्र सोरों का उल्लेख है, उसकी तहसील और जिले का उल्लेख नहीं है। सन् १९०८ ई० के अभिलेख में सोरों का उल्लेख नहीं है, वरन् इतना उल्लेख है कि राजापुर को तुलसीदास जी ने बसाया था।

यहाँ यह विचारणीय है कि उपर्युक्त चारों अभिलेखों के राजापुर सम्बन्धी विवरण में विचारणीय अन्तर्विरोध है तथा किसी भी अभिलेख में तुलसीदास जी का जन्मस्थान सोरों नहीं माना गया है, अपितु तुलसीदास जी का सोरों से राजापुर आना वर्णित है। जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है कि 'इम्पीरियल गजेटियर' जो सन् १९०८ ई० में प्रकाशित हुआ था उसमें सोरों का भी उल्लेख नहीं है, किन्तु यह अवश्य अंकित है कि राजापुर तुलसीदास जी द्वारा बसाया गया। इस सन्दर्भ में सन् १८७४, १८८६, १९०८ एवं १९०९ ई० के 'गजेटियर्स' की छाया प्रति दृष्टव्य हैं–(पृष्ठ २३७ से २४५ तक)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१८७४ के 'गजेटियर' की छायाप्रति

गजटियर

STATISTICAL,

DESCRIPTIVE AND HISTORICAL ACCOUNT

OF THE

NORTH-WESTERN PROVINCES OF INDIA.

EDITED, UNDER ORDERS OF THE GOVERNMENT OF INDIA,

BY EDWIN T. ATKINSON, B.A.,

Bengal Civil Service.

VOL. I.

BUNDELKHAND.

FINL DEPT.
LIBRARY
SIMLA

ALLAHABAD:

PRINTED AT THE NORTH-WESTERN PROVINCES GOVERNMENT PRESS,

1874.

ई० सन् १८७४ में प्रकाशित और प्रमाणित गजेटियर का मुख पृष्ठ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१८७४ के 'गजेटियर' की छायाप्रति

RAJAPUR, or Majhgawán, a large commercial town on the banks of the Jamna, 18 miles to the north-east of *Karwi*, in Parganah Chhíbún of the Banda District. This is the principal mart for all country produce in the district, especially cotton. From Rajapur it is conveyed by boat to Allahabad, and up the river to Cawnpur. The population in 1872 numbered 6,670 souls, of whom 3,067 were females. The Hindús belong to the trading classes chiefly, and numbered 6,256 (2,866) females; there were also 414 Musalmáns (201 females). The area of the town site is 87 acres, giving 76 souls to the acre. The Act XX. of 1856 is in force, and in 1872 yielded a revenue of Rs. 2,614, falling at five annas per head of the population. The expenditure for the same year was Rs. 2,337. Several large Allahabad firms have agencies at Rajapur for the purchase of country produce. Large though it is and still very prosperous, Rajapur is rapidly on the decline, and there is little doubt that in a few years it will cease to be a place of any importance. The principal cause of its decline is not, however, matter for regret, as it shows that merchants are commencing to appreciate the advantage of railway communication, and selecting sites nearer and on the line. The principal rival to Rajapur is Satná, in the Ríwí State, to which within the last few years a large number of Rajapur firms have transferred their business. Satná is attracting the inland traffic to a large extent, and when the bazar at Mánikpur is completely established, and the roads and bridges to it from the interior (which are now in progress) complete, Mánikpur will become a formidable competitor. The principal trade at Rajapur is that of export country produce, but, of course, local bazars are established at which a brisk local trade is carried on, and where almost anything can be obtained. Besides country produce there are large cloth-merchants who import their cloth from Allahabad and sell it at Rajapur, and all the local bazars in the neighbourhood, and even as far as Sitapur and Karwi, are supplied from this source.

There is no municipality at Rajapur, and hence no statistics of trade can be obtained. There is a first class police-station, but no other public building. The ferry is a valuable source of income, and is leased at an annual rental of about Rs. 2,000. Beyond its commercial aspect there is, however, very little of interest in Rajapur. The circumstances of its origin are peculiar. Tradition has it that in Akbar's reign, a holy man, Tulsi Dás, a resident of Soron, in Parganah Aliganj of the Etah District, came to the jungle on the banks of the Jamna, where Rajapur now stands, erected a temple, and devoted himself to prayer and meditation. His sanctity soon attracted followers, who settled around him, and as their numbers increased they began to devote themselves (and with wonderful success) to commerce as well as to religion. There are some curious local customs peculiar to Rajapur, derived from the precepts of Tulsi :—First, no houses are allowed to be built of stone or masonry, even the

ई० सन् १८७४ में प्रकाशित गजेटियर का राजापुर से सम्बन्धित पृष्ठ ५७२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ri host live in mud houses; temples alone are made of masonry. Second, no *hajáms* (or barbers) are allowed to settle within Rajapur; *hajáms* from other villages come in from time to time to perform their avocations, but they are never allowed to settle. Third, dancing-girls, except of the caste of Berins, are not allowed to live within Rajapur. Fourth, no *Kumhárs* (or potters) are allowed to settle; all *garhas* and pots, &c., made by these men are brought in from other villages. It is curious how these absurd restrictions are valued and insisted upon by the people of Rajapur, who look on these regulations of their founder with superstitious reverence. There are several fine *sivalas* (Hindu temples) in Rajapur, at which fairs are frequently held. Four large fairs are annually held, to which large crowds resort. The original name of the town (by which it is sometimes now even known) is Majhgáwan. How, when, or where the name was changed to its present one— Rajapur, the royal city—is a matter of utter uncertainty.

ई० सन् १८७४ में प्रकाशित गजेटियर का राजापुर से सम्बन्धित पृष्ठ ५७३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१८८६

THE IMPERIAL GAZETTEER OF INDIA

W. W. HUNTER, C.S.I., C.I.E., LL.D.,

DIRECTOR-GENERAL OF STATISTICS TO THE GOVERNMENT OF INDIA.

NATIONAL ARCHIVES
38191
17.2.71
GOVT. OF INDIA

VOLUME XI.

PÁLI TO RATIÁ.

SECOND EDITION.

TRÜBNER & CO., LONDON, 1886.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१८८६

Rájápur (or *Májhgáon*).—Commercial town in Mau *tahsíl*, Bánda District, North-Western Provinces. Situated in lat. 25° 24′ N., and long. 81° 12′ E., on the bank of the Jumna, 18 miles north-east of Kárwí town. Population (1881) 7329, namely, Hindus, 6946; Muhammadans, 377; and Jains, 6. The town is not a municipality, but for police and conservancy purposes a small house-tax is levied under the provisions of Act xx. of 1856. Rájápur is the principal mart for all the produce of the District, especially cotton, which is conveyed by boat to Allahábád, and so up the Ganges to Cawnpur. Allahábád firms have agencies for the purchase of produce. The trade of the town, though still large, is now declining, as the railway has superseded the river for purposes of transport, and new trading sites are set up along the line. Many Rájápur merchants have within a few years removed their business to Satná in Rewá State, which is attracting the inland traffic to a great extent. The principal trade at Rájápur is the export of country produce, but a brisk local trade in miscellaneous commodities is carried on in the *bázár*. Large cloth merchants import cloth from Allahábád, and sell it at Rájápur; and all the local *bázárs* in the neighbourhood, as far as Sitápur and Kárwí, are supplied from this source.

Rájápur was founded in the reign of Akbar by Tulsi Dás, a devotee from Soron, who erected a temple, and attracted many followers. He established several peculiar restrictions, still scrupulously observed by the inhabitants; amongst others, that no houses (except shrines) should be built of stone, even the wealthiest merchants still living in mud houses. Several handsome temples. Four annual fairs. Police station. Ferry, let at an annual rental of £350.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१९०८

IMPERIAL GAZETTEER OF INDIA

PROVINCIAL SERIES

UNITED PROVINCES OF AGRA AND OUDH

VOL. II

THE ALLAHĀBĀD, BENARES, GORAKHPUR, KUMAUN, LUCKNOW, AND FYZĀBĀD DIVISIONS, AND THE NATIVE STATES

SUPERINTENDENT OF GOVERNMENT PRINTING
CALCUTTA
1908

Price Rs. 6, or 9s.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१९०८

Rājāpur (or Majhgawān).—Town in the Mau *tahsīl* of Bāndā District, United Provinces, situated in 25° 23′ N. and 81° 9′ E., on the bank of the Jumna, 18 miles north-east of Karwī. Population (1901), 5,491. Rājāpur is the name of the town, and Majhgawān that of the *mauza* or village area within which it is situated. According to tradition the town was founded by Tulsī Dās, the celebrated author of the vernacular version of the Rāmāyana, and his residence is still shown. He is said to have established several peculiar restrictions, which are scrupulously observed; no houses (except shrines) are built of stone, and potters, barbers, and dancing-girls are rigorously excluded. The only public buildings are the police station, post office, school, and dispensary. Rājāpur was for a time the chief commercial centre of the District, owing to its position on the Jumna; but many of its merchants have migrated to Karwī, and the place is declining. Besides the export of country produce, there is a small manufacture of shoes and blankets. The school has ninety pupils.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१९०९

IMPERIAL RECO[RD]
15.JUN.1910
DEPARTMENT.

BANDA

A GAZETTEER,

BEING

VOLUME XXI

OF THE

DISTRICT GAZETTEERS OF THE UNITED PROVINCES OF AGRA AND OUDH.

COMPILED AND EDITED

BY

D. L. DRAKE-BROCKMAN, I.C.S.

ALLAHABAD:

Printed by F. Luker, Supdt., Govt. Press, United Provinces.

1909.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

Price Rs. 2 (4s. 6d.)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१९०९

Rajapur.

The origin of the town is described as follows. It is said that in the reign of Akbar a holy man, named Tulsi Das, a resident of Soron in Kasganj *tahsil* of the Etah district, came to the jungle on the banks of the Jumna, where Rajapur now stands, and devoted himself to prayer and meditation. His sanctity soon attracted followers, who settled round him, and as their number increased they began to devote themselves to commerce as well as religion. This is of course Tulsi Das, the author of the *Ramayana*, and his house is still shown in the town. It was a low *kachcha* building, but has recently been rebuilt and contains a shrine and an old, somewhat mutilated manuscript of the *Ramayana*. There is a small *muafi* attached to the shrine, but the present *muafidars* are ignorant and quarrelsome and do nothing to further the spirit of religious purity and lofty ideals preached by the venerable poet. The shrine also contains a stone figure, said to be an effigy of the poet, of celestial origin, and to have been found buried in the sands near Rajapur. Local tradition says that Tulsi Das became acquainted with Rajapur through his having married into a Brahman family in Mahewa, *tahsil* Sirathu, district Allahabad. There are some peculiar customs in vogue at Rajapur, derived from the precepts of Tulsi Das. No houses are allowed to be built of stone or masonry, and even the richest live in mud houses: only temples are made of masonry. No barbers are ever allowed to settle within the town, and no dancing-girls, except of the caste of Beriahs, are allowed to live within it. Kumhars are also interdicted from residence, and all *gharas* and pots are brought in from outside. The rules, however, are now so far relaxed as to be held to apply only to the precincts of Tulsi Das' house.

The population of the town in 1901 was 5,491 persons, largely consisting of Banias and Brahmans, the wealthier traders residing here being of the latter caste. The best known of these are the Rupaulias, of whom some account will be found in chapter III.

There are a first-class police station, a secondary vernacular school, a branch post-office, a pound and a dispensary, and in *Baisakh* (April-May) and *Kartik* (October-November) a fair is held at the temple of Mahabir-Sankat Mochan, lasting some ten days and having an average attendance of about 8,000 people.

Tulsi Das was born in *Sambat* 1631 and died at Benares in 1680. The following verses give the date of the poet's death:—

Sambat Sorah sai assi Assigang ke tir,
Sawan Shukla saptami Tulsi tajo sarir.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैसा कि "राजापुर के 'मानस' पुजारी का षणयंत्रऔर 'गजेटियर" शीर्षक में स्पष्ट किया गया है कि प्रथम शासकीय अभिलेख में जो सन् १८७४ ई० में प्रकाशित हुआ था, राजापुर के विपक्ष में सोरों का उल्लेख एक सुनियोजित षणयन्त्र के आधार पर किया गया था तथा उसके बाद के प्रकाशित अन्य अभिलेखों में प्रथम अभिलेख का आधार लेकर सोरों निवासी तुलसीदास द्वारा राजापुर बसाने का उल्लेख किया गया हैं।"

'गजेटियर्स' में विसंगतियाँ तथा असत्य तथ्योल्लेख -

उपर्युक्त चारों 'गजेटियर्स (शासकीय अभिलेखों) में जिस विषय वस्तु का उल्लेख किया गया है उसमें प्रायः अन्तर्विरोध और विसंगतियाँ हैं, साथ ही कतिपय तथ्य तो सत्य से नितान्त परे हैं -

(१) मनगढ़न्त जनश्रुतियों और दुर्भावना, दुराग्रहपूर्ण कल्पना पर आधारित 'गजेटियर्स' के आधार पर सोरों समर्थकों का यह दावा कि राजापुर तुलसीदास जी ने बसाया था, नितान्त खोखला है, क्योंकि ऐतिहासिक, पुरातात्विक एवं साहित्यिक-सांस्कृतिक दृष्टि से राजापुर प्राचीन कस्बा है। सुप्रसिद्ध पुरातत्वविद् सागर विश्वविद्यालय के इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर कृष्णदत्त वाजपेयी ने 'राजापुर में पुरातत्व' शीर्षक में लिखा है- "गुप्तकालीन चतुर्मुख शिवलिंग, नृत्यमुद्रा में बीसभुजी गणेश प्रतिमा, यत्रतत्र बिखरे बड़ी संख्या में वृहत विचित्र शिवलिंग तथा समोगरी मंदिर के ध्वंशावशेष राजापुर की प्राचीनता सिद्ध करने को पर्याप्त हैं।"

महापंडित राहुल सांकृत्यायन और सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ एवं पुरातत्व विद प्रोफेसर के० डी० बाजपेयी के अनुसार राजापुर में प्राप्त कुषाणकालीन, गुप्तकालीन तथा चन्देलकालीन मूर्तियों से ज्ञात होता है कि राजापुर का अस्तित्व कुषाण काल से अब तक निरन्तर अबाध रूप से चला आ रहा है। सम्राट अकबर द्वारा गोस्वामी तुलसीदास और उनके शिष्य वंशजों को दिये गये घाट-हाट आदि के माफीनामा, बाद में मुगल सम्राटों और पन्ना नरेश अमान सिंह जूदेव के दीवान हिन्दूपति जूदेव द्वारा उसे जारी रखने के फरमानों तथा राजापुर से प्राप्त प्राचीन पाण्डुलिपियों में राजापुर का तत्कालीन नाम विक्रमपुर एक माना हुआ तिजारती कस्बा था जहाँ से नावों द्वारा आवागमन और दूर-दूर तक व्यापार होता था। इसलिए अकबर बादशाह ने वहाँ घाट-हाट की माफी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोस्वामी तुलसीदास को दी थी। नया नगर बसने में इतना समुन्नत कैसे होता कि वहाँ घाट–हाट आदि की माफी दी जाती ? अस्तु तुलसीदास जी द्वारा राजापुर बसाये जाने का प्रश्न ही नहीं उठता। इस सन्दर्भ में साहित्य महारथी पं० देवीदत्त जी शुक्ल 'सरस्वती' सम्पादक प्रयाग का कथन दृष्टव्य है –"यह एक प्रसिद्ध परम्परा है कि गोस्वामी तुलसीदास बाँदा जिले के राजापुर के निवासी थे।.....इसमें सन्देह नहीं है कि राजापुर की प्रसिद्धि एक मात्र गोस्वामी जी के जन्मभूमि होने के कारण ही हुई। यदि उनका उस गाँव से वैसा घनिष्ठ सम्बन्ध न होता तो उनके नाम पर वहाँ शाही माफी आदि क्यों दी जाती ?"

(२) तुलसीदास जी के शिष्य बाबा वेणीमाधव दास के 'मूल गोसाईं चरित', बाबा रघुबरदास के 'गोसाईं चरित', कवि बल्देवदास कृत 'राजापुर–महात्म', सरयू प्रसाद शर्मा रचित 'तुलसी चरितामृत' गोवर्द्धनदास कृत 'तुलसीदास और राजापुर' आदि के अनुसार गोस्वामी तुलसीदास के प्रपितामह परशुराम राजापुर आकर आबाद हुये थे। अस्तु तुलसीदास जी के प्रपितामह जिस कस्बा में आकर आबाद हुये उसे उनके द्वारा बसाये जाने का प्रश्न ही नहीं उठता।

(३) सन् १८७४, १८८६, १९०८ ई० के शासनाभिलेख में कस्बे का नाम राजापुर या मझगवाँ अंकित हैं। ऐसी स्थिति में विचारणीय है कि तुलसीदास जी ने राजापुर बसाया या मझगवाँ ? यदि मझगवाँ बसाया तो इसका नाम राजापुर किसने परिवर्तित किया ? यदि राजापुर बसाया तो उसके पूर्व मझगवाँ का अस्तित्व क्या था ?

(४) सोरों समर्थकों का यह कहना असंगत है कि तुलसीदास सोरों से राजापुर (बाँदा) आकर रहे थे। भला वे विरक्त साधू–संन्यासी होकर राजापुर क्यों रहते ? राजापुर कोई तीर्थ स्थान नहीं था। अगर उन्हें बाहर से आकर रहना ही होता तो राजापुर न रहकर उसके निकटस्थ चित्रकूट ऐसे सुप्रसिद्ध चित्रकूट धाम में ही रहे होते। पतित पावनी मुक्ति दायिनी पवित्र गंगा के समीपवर्ती सोरों का परित्याग कर यमुना के समीपवर्ती राजापुर को अपनी तपोभूमि क्यों बनाते ?[१]

(५) 'गजेटियर्स' में राजापुर (बाँदा) के सम्बन्ध में दुराग्रह, दुर्भावनावश, साजिशन कपोल कल्पित, मनगढ़न्त जन श्रुतियों के आधार पर जो उल्लेख

१. "तुलसीदास" – डॉ० माता प्रसाद गुप्त, पृष्ठ १६३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया गया है, उस सम्बन्ध में न तो उनके पास कोई तथ्यपूर्ण प्रमाण थे न ही सोरों (एटा) निवासी तुलसीदास द्वारा राजापुर बसाये जाने की तथाकथित जनश्रुति ही राजापुर–चित्रकूट मण्डल अथवा अन्यत्र कहीं प्रचलित है और न तो एटा जिले के गजेटियर में तुलसीदास का कोई उल्लेख है।

(६) सन् १८७४ के अभिलेख में राजापुर की कुल जनसंख्या ६६७० सन् १८८६ के अभिलेख में ६९४६ तथा सन् १९०८ एवं १९०९ के अभिलेखों में राजापुर की कुल जनसंख्या ५४९१ अंकित है। इस विवरण के अनुसार सन् १८८६ में जो जनसंख्या थी वह २२ वर्षों के पश्चात् अधिक न होकर पहले से कम हो गई है। चूँकि सन् १९०८ एवं १९०९ के अभिलेखों में जो जनसंख्या छपी है उसका आधार सन् १९०१ की जनगणना है, अतः दोनों में साम्य है।

(७) सन् १८७४ के अभिलेख में यह लिखा है कि एक महान् संत तुलसीदास सोरों परगना अलीगंज जिला एटा से यमुना किनारे उस जंगल में आये जहाँ आज राजापुर स्थित है। उससे भिन्न सन् १८८६ के अभिलेख में यह छपा है कि अकबर के शासनकाल में सोरों के एक संत तुलसीदास ने राजापुर को बसाया था। इससे भी भिन्न सन् १९०८ के अभिलेख में तुलसीदास जी के साथ सोरों का किंचित उल्लेख ही नहीं है। उसमें मात्र इतना ही छपा है कि परम्परा से यह माना जाता है कि हिन्दी में रामायण के रचने वाले तुलसीदास ने इसकी स्थापना की थी। एक वर्ष बाद प्रकाशित सन् १९०९ के अभिलेख में पुनः सोरों को विशेष महत्व दिया गया और आवश्यक संशोधन करके यह उल्लेख किया गया कि ऐसा कहा जाता है कि अकबर के शासनकाल में एक पवित्र संत तुलसीदास निवासी सोरों तहसील कासगंज जिला एटा यमुना के किनारे उस जंगल में आये जहाँ राजापुर स्थित है। इस प्रकार इस उल्लेख को जनश्रुति सम्मत बताते हुये उसका आधार सन् १८७४ के अभिलेख को ही बनाया गया किन्तु उसमें सोरों की तहसील कासगंज अंकित कर आवश्यक संशोधन किया गया। दोनों अभिलेखों का यह अन्तर विचारणीय है, क्योंकि दोनों अभिलेख शासकीय प्रकाशन हैं।

(८) सन् १८७४ तथा १८८६ के अभिलेखों मे यह उल्लेख है कि तुलसीदास जी ने राजापुर में एक मंदिर बनवाया जो कि पूर्णतया असत्य है क्योंकि राजापुर में उक्त तथाकथित न तो कोई मंदिर है और न उसका कहीं कोई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवशेष चिन्ह ही उपलब्ध है। हाँ, तुलसीदास जी द्वारा प्रतिष्ठित संकटमोचन हनुमान जी की चन्दन से उभरी शिलामूर्ति अवश्य विद्यमान है, जिस पर तुलसीदास जी के बहुत बाद श्रद्धालु भक्तजनों ने मंदिर का निर्माण करा दिया है।

(९) सन् १९०९ के अभिलेख में राजापुर में तुलसीदास जी के मकान का भी वर्णन है कि यह मकान कच्ची मिट्टी का है लेकिन अभी शीघ्र ही पुनः निर्मित किया गया है, जिसमें एक मंदिर तथा रामायण की पुरानी पाण्डुलिपि रखी है। यह तथ्य भी सत्य से परे हैं क्योंकि वर्तमान 'तुलसी जन्म कुटीर' जो कि गोस्वामी तुलसीदास जी के जन्मगृह के स्थान पर निर्मित है, उसका निर्माण सन् १९०७ में प्रारम्भ हुआ था तथा एक वर्ष की अवधि में सन् १९०८ तक तो वह बनकर तैयार हो चुका था। अस्तु सन् १९०९ में उसे कच्ची मिट्टी का पुनः निर्मित मकान कहना सत्य का उपहास करना है।

(१०) चारों शासकीय अभिलेखों में राजापुर निवासियों के लिए तुलसीदास जी के द्वारा लगाये गये, प्रतिबन्धों का उल्लेख है, जिसमें यह कहा गया है कि राजापुर में नाई नहीं रह सकते। यह सही नहीं है। तुलसीदास जी ने बारी जाति को ही प्रतिबन्धित किया था, नाई को नहीं। बारी लोग बाल नहीं काटते, अपितु जूठी पत्तलें उठाते हैं। राजापुर में ठाकुरों, कुम्हारों और वेश्याओं के निवास-निषेध के सम्बन्ध में तो जनश्रुति चली आ रही है मगर 'गजेटियर्स' में उल्लिखित नापितों (नाइयों) के सम्बन्ध में नहीं। नापित तो यहाँ पहले से ही आबाद चले आ रहे हैं। उक्त प्रतिबन्ध वर्तमान में भी मान्य हैं किन्तु अभिलेखों में उल्लेख है कि ये प्रतिबन्ध गोस्वामी तुलसीदास जी के घर के आसपास ही सीमित रह गये हैं। अस्तु 'गजेटियर' की बातें निराधार, भ्रामक, तथ्यहीन, कपोल कल्पित और दुर्भावना-दुराग्रहयुक्त हैं।

(११) सन् १९०९ ई० के बाँदा जिले के गजेटियर का निर्माण सन् १९०८ में तुलसी जन्मभूमि 'सोरों' विवाद के जनक बाँदा जिले के तत्कालीन डिप्टी कलेक्टर लाला सीताराम जी की देखरेख में किया गया था। उसमें तुलसीदास जी के जन्म का संवत् १६३१ तथा मृत्यु का संवत् १६८० अंकित है। 'गजेटियर' में संवत् १६३१ में तुलसीदास जी का जन्म संवत् लिखाना कितना हास्यास्पद और मिथ्या है। संवत् १६३१ में तो उन्होंने अपने विश्व प्रसिद्ध अमर महाकाव्य 'रामचरित मानस' की रचना की थी। स्वयं गोस्वामी तुलसीदास जी के ही शब्दों में -

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"संवत् सोरह सै एकतीसा । करउँ कथा हरिपद धरि सीसा ।।"
– 'मानस'–बालकाण्ड ३३।।२ इससे अभिलेख की कपोल कल्पना की कलई स्वतः खुल जाती है ।

(१२) बाँदा जिले के 'गजेटियर' में तुलसीदास जी की ससुराल महेवा जिला इलाहाबाद (राजापुर के ठीक उत्तर यमुना के उत्तरी किनारे पर) उल्लिखित है, जबकि सोरों समर्थक उनकी ससुराल सोरों के समीप गंगा के उस पार बदरिया बताते हैं, जबकि एटा जिले के 'गजेटियर' में गोस्वामी तुलसीदास जी के सम्बन्ध में कहीं कोई उल्लेख नहीं है ।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि ऐसे उल्लेखों से संग्रहीत 'गजेटियर्स' किसी भी दशा में विश्वसनीय नहीं हैं । उनमें मुद्रित तुलसीदास जी का सोरों से आकर राजापुर बसाना नियोजित षड़यंत्र के तहत मात्र एक मिथ्यामिथक और हास्यास्पद मिथ्या प्रलाप मात्र हैं ।

इस सम्बन्ध में डॉ० सूर्य प्रसाद दीक्षित का मत है कि – "अंग्रेजों द्वारा तैयार किये गये 'गजेटियर' जनश्रुतियों पर आधारित हैं और ये जनश्रुतियाँ निराधार हैं । यह भी सम्भव है कि इस 'गजेटियर' के अंग्रेज संपादकों के विदेशी और विभाषी होने के कारण उन्हें जन सामान्य से प्रामाणिक सामग्री न प्राप्त हो पायी हो ।" – "तुलसी जन्मभूमि" – डॉ० सूर्य प्रसाद दीक्षित, पृष्ठ ५४

उपरोक्त समीक्षात्मक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि उपरोक्त शासकीय अभिलेख किसी भी दशा में विश्वसनीय नहीं हैं । उनमें उल्लिखित तुलसीदास जी का सोरों से आकार राजापुर बसाना मात्र एक भ्रमात्मक मिथ्या मिथक है । यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि पूर्वाग्रह से ग्रसित होने पर भी 'गजेटियर' निर्माता इतना साहस नहीं कर पाये हैं कि सोरों को तुलसीदास जी की जन्मभूमि अंकित कर देते । यह भी उल्लेखनीय है कि एटा जिले के 'गजेटियर' या अन्य किसी भी 'गजेटियर' या अभिलेख में गोस्वामी तुलसीदास जी के विषय में कहीं कोई उल्लेख नहीं है । अतः विद्वानों ने यह निष्कर्ष निकाला कि यदि मान भी लिया जाय कि तुलसीदास सोरों से राजापुर आए तो क्या प्रमाण कि वह सोरों में ही पैदा हुए थे ? कोई व्यक्ति कहीं से कहीं जाता है तो क्या वह स्थान जहाँ से वह आया है उसकी जन्मभूमि है ? फिर गोस्वामी तुलसीदास जी तो घुमक्कड़ संतों में थे । तथ्यों की वास्तविकता तो यह है कि तुलसीदास जी से पीढ़ियों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहले से राजापुर के पूर्व नाम विक्रमपुर और रजियापुर का अस्तित्व था जो राजापुर के प्राचीन पाण्डुलिपियों, सनदों, अभिलेखों, पुरातात्विक अवशेषों आदि से स्वतः सिद्ध है। अतः राजापुर को तुलसीदास जी द्वारा बसाये जाने का उल्लेख सफेद झूँठ और हास्यास्पद नहीं तो और क्या है ? विदेशी आक्रान्ताओं के शासनकाल में हमारे इतिहास और संस्कृति की क्या स्थिति थी, यह सुबुद्ध पाठक भली भाँति समझतें है कि देश की संस्कृति और इतिहास को उन्होंने सदैव ही अपने मनोनुकूल तोड़ मरोड़ कर पेश किया। हमारे राष्ट्र के प्रसिद्ध सुबुद्ध समाजवादी नेता डॉ० राममनोहर लोहिया का निम्नलिखित कथन इस सम्बन्ध में बिल्कुल सत्य है –

"मुझे ऐसा लगता है कि आर्य, द्रविण और जातियों–उपजातियों के ये सब भेद गढ़े गये हैं, विशेषकर विदेशियों ने गढ़े हैं। यदि ये थे भी, तो तीन–चार हजार वर्ष पहिले। अब वे बिल्कुल झूँठे हैं। इसी झूँठ के सहारे देश का पूरा इतिहास, भूगोल, साहित्य और संस्कृति इत्यादि अब तक पढ़ाये जाते हैं। इससे अनर्थ हो रहा है।" –"तुलसी परिशीलन स्मृति ग्रन्थ", पृष्ठ ४१

४. तर्क –

गोस्वामी तुलसीदास जी ने विनय पत्रिका पद १३५/१ में जहाँ "दियो सुकुल जनम सरीर सुन्दर हेतु जो फल चारि को" आदि पद में अपने जन्म के सम्बन्ध में संकेत किया है, वहीं अपनी जन्मभूमि के सम्बन्ध में कहा है–

"यह भरत खण्ड समीप सुरसरि थल भलो संगति भली" – विनयपत्रिका १३५/१ इस पद में गोस्वामी जी के जन्म स्थली का प्रासंगिक उल्लेख है, अतः सुरसरि (गंगा) के समीप का थल (स्थान) ही उनका जन्मस्थान हो सकता है, अन्य काशी इत्यादि वैराग्य कालिक स्थान नहीं। तुलसीदास जी का गंगा के प्रति असीम लगाव भी गंगा किनारे सोरों जन्मभूमि होने को संकेतिक करता है।

समीक्षा – इस तर्क में विनय पत्रिका के उक्त पद का आंशिक भाग उद्धृत करके यह सिद्ध करने की चेष्टा की गई है कि गोस्वामी तुलसीदास जी का आस्पद 'सुकुल' और जन्म स्थान सोरों है जबकि पूरे पद का दूसरा ही तात्पर्य निकलता है –

"राम सनेही सों तैं न सनेह कियो।
अगम जो अमरनि हूँ सो तनु तोहि दियो।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दियो सुकुल जनम, सरीर सुन्दर, हेतु जो फल चारि को ।
जो पाइ पंडित परम पद, पावत पुरारि-मुरारि को ।।
यह भरत खण्ड, समीप सुरसरि, थल भलो संगति भली ।
तेरी कुमति कायर ! कलप-वल्ली चहति है विषफल फली ।।''

–विनय पत्रिका–१३५/१

यहाँ 'सुकुल' शब्द आस्पद के लिए नहीं अपितु अच्छे कुल अर्थात् ब्राह्मण कुल के लिए प्रयुक्त हुआ है कवि ने कवितावली के पद ७।।३३ में भी इसी प्रकार के विचार व्यक्त किये हैं –

भलि भारत भूमि, भले कुल जन्म, समाजु सरीरु भले लहिकै ।
जो भजै भगवानु सयान सोई, तुलसी हठ चातकु ज्यों गहि कै ।।

– 'कवितावली' –७।।३३

मगर क्षेत्रवादियों और आस्पदवादियों ने तोड़ मरोड़ कर अर्थ का अनर्थ किया है । इस पद के "भरतखण्ड समीप सुरसरि, थल भलो, संगति भली" तथा "भक्ति कल्प थालिका" – विनय० १७/२ आदि पर आधारित सोरों समर्थकों का यह मत सही नहीं है कि गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म गंगाजी के समीप स्थित सोरों में हुआ था, यमुना तटवर्ती राजापुर में नहीं । यहाँ यह उल्लेखनीय है कि सोरों के निकट गंगा न तो पहले प्रवाहित होती थी और न इस समय ही प्रवाहित होती है । रही बात तुलसीदास जी के गंगा जी के प्रति श्रद्धा-भक्ति और लगाव की बात तो गंगा जी के प्रति प्रायः हर भारतवासी के हृदय में अटूट श्रद्धा-भक्ति और स्वाभाविक लगाव होता है तभी तो माघ की भयंकरशीत लहरी में भी कष्ट सहते हुए लाखों की संख्या में लोग गंगा की रेती में माह-डेढ़ माह कल्पवास करते हैं, 'फिर साधु महात्माओं की तो गंगाजी के प्रति और ही श्रद्धा-भक्ति और असीम स्वाभाविक लगाव होता है ।

दूसरी बात यह है विनय पत्रिका का उपर्युक्त प्रसंग कवि के काशीवास से सम्बन्धित हैं, उनके जन्मस्थान से नहीं । तीसरी बात तुलसीदास जी का श्री राधा-कृष्ण से अप्रभावित होना और श्री सीताराम के प्रति पूर्ण समर्पण एवं अनन्य भक्ति और कृष्ण चरित की जगह रामचरितमानस जैसे विश्व प्रसिद्ध महाकाव्य की रचना करना भी उनके ब्रज क्षेत्र (सोरों) जन्मभूमि न होने को संकेतिक करता है । इस सम्बन्ध में तुलसीदास जी का यह कथन भी दृष्टव्य है-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"कहा कहौं छवि आज की भले बने हो नाथ।
तुलसी मस्तक तब नवै धनुष बान लिए हाथ।।"

और राम के अनन्य भक्त के लिए अन्ततः "मुरली लकुट दुराइकै, धनुष-बान लियो हाथ।। अपने जन के कारणे, स्याम भये रघुनाथ।।"

५. तर्क -

सोरों समर्थकों के अनुसार गोस्वामी तुलसीदास जी की ससुराल सोरों के समीपवर्ती ग्राम बदरिया में थी।[१] वे अपनी ससुराल गंगा को पार कर गये थे। 'रत्नावली' नामक काव्य में इस तथ्य का उल्लेख किया गया है।[२] बाँदा जिले के सन् १९०९ ई० में प्रकाशित गजट में जनश्रुति के आधार पर तुलसीदास जी को सोरों का निवासी बताया गया है और कहा गया है कि तुलसीदास सोरों से विरक्त होकर यमुना नदी के तटवर्ती उस जंगल में आये थे, जहाँ आज राजापुर आबाद है।[३] तुलसीदास जी ने किसी राजा नामक साधु की स्मृति में राजापुर बसाया था।

समीक्षा - सोरों समर्थकों का 'रत्नावली' आदि संदिग्ध, अप्रमाणिक ग्रन्थों के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास जी की ससुराल सोरों समीपवर्ती बदरिया बताना प्रामाणिक तथ्यों से परे कपोल-कल्पित, मिथ्या प्रलाप मात्र है।[४]

जनश्रुति के अनुसार तुलसीदास जी यमुना पार कर अपनी ससुराल गये थे, गंगा पार कर नहीं। डॉ० माता प्रसाद गुप्त ने 'रत्नावली' काव्य को अप्रामाणिक माना है।[५] सोरों की पाण्डुलिपियों के अक्षरों का राजापुर (चित्रकूट) में 'रामचरित मानस' के अयोध्याकाण्ड तथा काशी के तुलसीदास जी के परम स्नेही मित्र टोडर की जायदाद के बटवारे के अभिलेख (पंचनामा) में तुलसीदास

---

१. "तुलसीदास" -डॉ० माता प्रसाद गुप्त, पृष्ठ ९४
२. कैसे उतरे गंगधार। मेरे जिय अचरज अपार।। -'रत्नावली' १२४
-"गोस्वमी तुलसीदासः व्यक्तित्वः दर्शनः साहित्य" -डॉ० रामदत्त भरद्वाज, पृष्ठ ५३७
३. "It is said that in the reign of Akbar, a holy man named 'TulsiDas' a resident of soron in Kasganj Tahsil of Etah district, came to the jungle on the bank of Jamuna where Rajapur now stands". -'District Gazetters,, Banda-1909' Page 285-286
४. "तुसलीदास" -डॉ० माताप्रसाद गुप्त, पृष्ठ १०४,
५. "तुलसीदास" - डॉ० माताप्रसाद गुप्त, पृष्ठ १०२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वारा लिखित अक्षरों का मिलान करने पर सोरों की पाण्डुलिपियों के अक्षर, लिपि, खत तथा मोड़ में अन्तर है। यह आधुनिक प्रतीत होते हैं। सामान्यतः लिपि का विकास एक ही साथ होता है। इसी प्रकार सोरों की पाण्डुलिपियों में दिये गये तथ्यों एवं तिथियों की प्रामाणिकता की पुष्टि नहीं होती है।[१] परम्परया प्रचलित जनश्रुतियों एवं उपरोक्त १९०९ ई० में प्रकाशित बाँदा 'गजेटियर' के अनुसार भी गोस्वामी तुलसीदास जी की ससुराल राजापुर (चित्रकूट) के पास यमुना के उत्तरी किनारे पर स्थित महेवा (जिला–इलाहाबाद, वर्तमान जिला–कौशाम्बी) है।[२] यहाँ यह प्रश्न विचारणीय है कि यदि मान भी लिया जाय कि तुलसीदास की ससुराल सोरों के समीप बदरिया में थी और तुलसीदास सोरों से विरक्त साधु के रूप में यमुना किनारे जंगल में आये और राजापुर बसाया तब उनका विवाह बाँदा जिले के 'गजेटियर' में उल्लिखित महेवा (राजापुर के समीप) में कब हुआ ? क्या साधु–संन्यासी होकर उन्होंने राजापुर को बसाया भी और राजापुर से यमुना उस पार महेवा (जिला इलाहाबाद, सम्प्रति कौशाम्बी जिला) में विवाह भी किया ? तुलसीदास विरक्त होकर राजापुर आये थे या फिर विवाहोपरान्त विरक्त हुए ? तुलसीदास का विवाह महेवा में प्रमाणित होने पर सोरों की समस्त व्यूह रचना स्वयंमेव ध्वस्त हो जाती है। यहाँ यह विचारणीय है कि किसी भी 'गजेटियर' में तुलसीदास जी का जन्म स्थान सोरों नहीं माना गया है। मात्र उन्हें सोरों निवासी बताया गया है। सोरों निवासी होने का तात्पर्य सोरों जन्मस्थान तो हो नहीं जाता। हो सकता है कि गोस्वामी जी ने सोरों में भी निवास किया हो। विरागी सन्त तुलसीदास का किसी राजा साधु की स्मृति में राजापुर नगर को बसाना सम्भव प्रतीत नहीं होता है।[३] इसके अलावा एटा जिले के 'गजट' में गोस्वामी तुलसीदास के सोरों (जिला एटा) में उत्पन्न होने या निवासी होने, विवाह होने तथा वहाँ से विरक्त होकर राजापुर (जिला बाँदा) में जाकर बसने के सम्बन्ध में कोई उल्लेख नहीं है।

---

१. "तुलसी विमर्श" –डॉ० अयोध्या प्रसाद पाण्डेय, पृष्ठ ३९–

२. Local tradition says that Tulsidas.......married in to a Brahman family in Mahewa tahsil Sirathu, district Allahabad". –'District Gazetter Banda 1909', Page285–286

३. "तुलसीदास" –डॉ० माता प्रसाद गुप्त, पृष्ठ १६४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६- तुलसीदास और नन्ददास

सोरों समर्थकों ने तुलसीदास जी की जन्मभूमि सोरों मानने के लिये नन्ददास को तुलसीदास का छोटा भाई माना है। इसके प्रमाण में वे 'भक्तमाल' और 'दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता' का उल्लेख करते हैं। कतिपय लेखकों ने 'भक्तमाल' को साक्षी बनाकर नन्ददास को चन्द्रहास का भाई माना है।

भक्त नाभादास कृत 'भक्तमाल' का वह छप्पय उद्धृत है जिसमें नन्ददास और चन्द्रहास का उल्लेख किया गया है –

"लीला पद रस रीति ग्रन्थ रचना में नागर।
सरस उक्ति युत उक्ति भक्ति रस गान उजागर।।
प्रचुरय पथ लौं सुजसु रामपुर ग्राम निवासी।
सकल सुफल संबलित भक्त पद रेनु उपासी।।
चन्द्रहास अग्रज सुहृद परम प्रेम-पथ में पगे।
श्री नन्ददास आनन्द निधि रसिक सुप्रमुदित रंगरंगे।।"

– 'भक्तमाल' –नाभादास जी

इस छप्पय से केवल यही ध्वनि निकलती है कि नन्ददास रामपुर निवासी थे और चन्द्रहास के ज्येष्ठ भ्राता से इनकी प्रगाढ़ मैत्री थी। विचार करने की बात है कि रामपुर ग्राम और चन्द्रहास से तुलसीदास जी से क्या सरोकार है?

नन्ददास को तुलसीदास का भाई बनाने में सोरों समर्थकों द्वारा 'दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता' का प्रमाण पेश किया जाता है और उन्हें रामपुर ग्राम का वासी बताया जाता है।[१] बाद में माता-पिता सोरों आ गये।

स्वर्गीय बाबू राधाकृष्ण ने रास पंचाध्यायी का सम्पादन किया है, उसमें उन्होंने लिखा है – "दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता में नन्ददास जी सनौढ़िया ब्राह्मण तुलसीदास के छोटे भाई और दोनों रामानन्द के शिष्य थे।"

मिश्र बन्धुओं ने अपने 'मिश्र बन्धु विनोद' में लिखा है कि "वार्ता देखने

---

१. "तुलसीदास" –डॉ० माता प्रसाद गुप्त, पृष्ठ १२६–१२७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से प्रकट हुआ कि उसमें नन्ददास को 'केवल' ब्राह्मण और गोस्वामी तुलसीदास का भाई कहा गया है। इससे प्रगट है कि नन्ददास कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे।"

कुछ सोरों समर्थकों ने "दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता" का उल्लेख करते हुये नन्ददास को विट्ठलनाथ का शिष्य और तुलसीदास के छोटे भाई लिखा है।

इस प्रकार यह बड़े आश्चर्य की बात है कि एक ही 'वार्ता' में भिन्न बातें लिखी हैं। उसमें यह उल्लेख तो मिलता है कि नन्ददास सनौढ़िया (सनाढ्य का अपभ्रंश) ब्राह्मण हैं पर उसमें यह कहीं नहीं है कि वे रामपुर के निवासी हैं। वैसे भी जनश्रुतियों पर आधारित वार्ता ग्रन्थ प्रामाणिक नहीं माने जाते।

मुरलीधर रचित "रत्नावली चरित्र" में निम्नलिखित छप्पय के अनुसार सोरों समर्थक तुलसीदास को नन्ददास का भाई और सहपाठी मानते हैं –

एक पितामह सदन दोऊ जनमें बुधरासी।
दोऊ एकै गुरु नृसिंह बुध अन्तेवासी ।।
तुलसीदास, नंददास मते द्वै मुरली धारे।
एक भजे सियराम, एक घनश्याम पुकारे ।।
एक बसै तो रामपुर, एक श्यामपुर में रहे।
एक रामायण लिखी, एक भागवत पद कहे ।।

आचार्य वेदव्रत शास्त्री अपने मत की पुष्टि हेतु रामपुर को अयोध्या (समस्त अवध प्रान्त) तथा स्यामपुर को समस्त ब्रज क्षेत्र मानते हैं, पर अपनी इस मान्यता का वे कोई प्रमाण नहीं देते हैं। उनकी यह कल्पना मात्र है। आचार्य जी इस बात पर मौन हैं कि मुरलीधर ने किस प्रमाण के आधार पर तुलसीदास को नंददास का भाई कहा है। आचार्य जी 'बल्लभ कुल बल्लभ भये, तासु अनुज नंददास', वे नंददास को बल्लभकुल बल्लभ मानते हैं, किन्तु बल्लभकुल बल्लभाचार्य जी ही थे, नंददास तो बल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी मात्र थे। सोरों के ही बाबूराम शुक्ल (सनाढ्य) नन्ददास को अपना वंशज बतलाते हैं।

'दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता' तथा 'भक्तमाल' आदि ग्रन्थों में नन्ददास को तुलसीदास जी का कहीं गुरुभ्राता बतलाया गया है और कहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाई ।[1] इस प्रकार नंददास तथा तुलसीदास का भ्रातृत्व निर्विवाद तथ्य नहीं है ।[2] इस सम्बन्ध में तुलसी स्मृति सन्दर्भ का कथन दृष्टव्य है –

> जन्म स्थान विधौ विवाद इह यः कैश्चित् समुत्पाद्यते,
> 'सोरों' नामकमस्ति तत्र विषये प्रामाण्यमेतच्च यत् ।
> तत्रत्यस्य हि नन्ददास सुधियो बन्धुत्वमेतस्य तत्,
> काश्यां शेष सनातनस्य हि गुरोर्विद्यार्थिनोर्बन्धुता ।।१५२।।

– 'तुलसी स्मृति संदर्भ' – स्वमी रामानन्द सरस्वती

(महाकवि श्री तुलसीदास जी के जन्मस्थान के विषय में जो लोग विवाद पैदा करते हैं कि सोरों नामक स्थान है । उस विषय में जो यह प्रबल प्रमाण देते हैं कि तुलसीदास जी सोरों निवासी श्री नन्ददास पंडित के भाई हैं, वह काशी में शेष सनातन नामक आचार्य के यहाँ ये दोनों पढ़ते थे इससे विद्यार्थियों की बन्धुता है, सहोदर बन्धु होने का कोई प्रमाण नहीं है ।।१५२।।)

तुलसीदास जी की माता तुलसी के पैदा होते ही स्वर्ग सिधार गई थीं । पिता की भी मृत्यु हो गई थी – "तनु जन्यो कुटिल कीट ज्यों तज्यो मातु–पिताहू" –'विनय पत्रिका' (२७५–२ क)– परित्यक्त अनाथ तुलसी ने स्वयं लिखा है –

> "मातु पिता जग जाइ तज्यो, विधिहू न लिखो कछु भाल भलाई ।
> नीच निरादर भाजन कादर, कूकर टूकन लागि ललाई ।।"

–कवितावली ७/५७

> "बारे तें ललात बिललात द्वार–द्वार दीन ।
> जानत हौं चारि फल चारि ही चनक कौ ।।" –कविता० ७/७३

आदि अनेक आत्मपरक उद्धरणों से स्पष्ट होता कि अगर तुलसीदास जी के दादा, काका, भाई आदि सगे सम्बन्धी होते तो उन्हें पैदा होने के बाद से ही इस प्रकार दर–दर न भटकना पड़ता । तुलसीदास जी के पैदा होते ही माँ की मृत्यु हो गई थी तो फिर उनसे छोटे भाई नन्ददास को होने का तो कोई सवाल ही नहीं उठता । तुलसीदास जी के पसका जिला गोंडा के निकटस्थ प्रिय शिष्य बाबा वेणी माधव दास जी ने नन्ददास को तुलसीदास जी का गुरुभाई बतलाया है –

---

१. "तुलसी जन्म भूमि" –डॉ० सूर्य प्रसाद दीक्षित, पृष्ठ २८
२. "तुलसी जन्म भूमि" –डॉ० सूर्य प्रसाद दीक्षित, पृष्ठ १६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"नन्ददास कनौजिया प्रेम मढ़े । जिन शेष सनातन तीर पढ़े ।।
शिक्षा गुरुबन्धु भये तेहितें । अति प्रेम सों आय मिले यहिते ।।"

–'मूल गोसाईं चरति' ७४/५ (संवत् १६८७ वि० में विरचित)

यदि तुलसीदास नंददास के भाई होते और रामपुर या सोरों (ब्रज क्षेत्र) में पैदा हुये होते तो ब्रज क्षेत्र के अन्य कवियों की भाँति उनके भी परम आराध्य राम न होकर कृष्ण होते और वे भी रामकथा न कहकर औरों की तरह कृष्ण कथा कहे होते । संवत् १९९५ विक्रमी में 'कल्याण' मानसांक के मुख्य पृष्ठ पर प्रकाशित स्वयं नंददास के 'तुलसी वंदना' में नन्ददास को कान्यकुब्ज ब्राह्मण और तुलसीदास जी का गुरुभाई बताया गया है, वही सही प्रतीत होता है –

"श्री मन्तुलसीदास स्व गुरु भ्राता पद वन्दे ।
शेष सनातन विपुल ज्ञान जिन पाइ अनन्दे ।।
रामचरित जिन्ह कीन्ह ताप त्रय कलिमल हारी ।
करि पोथी पर सही आदरेहु आप पुरारी ।।
राखी जिनकी टेक मदन मोहन धनुधारी ।
बाल्मीकि अवतार कहत तेहिं संत प्रचारी ।।
नन्ददास के हृदय नयन को खोलेउ सोई ।
उज्वल रस टपकाय दियो जानत सब कोई ।।"

–नन्ददास

सोरों समर्थक उपरोक्त 'तुलसी वन्दना' को नन्ददास की कथित चौदह रचनाओं में से न मानकर इसे कल्पित एवं कृत्रिम मानते हैं । मगर यह उनकी कथित रचनाओं के अतिरिक्त किसी अन्य रचना में अथवा कोई स्फुट रचना भी तो हो सकती है ।

इस सन्दर्भ में सुप्रसिद्ध उपन्यासकार अमृतलाल नागर के उपन्यास 'मानस का हंस' के निम्नांकित उद्धरण दृष्टव्य हैं –

"सीढ़ियाँ पार कर चुकने के बाद गली में आने पर नन्ददास ने (तुलसीदास से) एकायक कहा –"अब मेरा मन काशी से ऊब गया भइया । सोरों जाना चाहता हूँ ।....तुम भी मेरे साथ सोरों चलते तो मुझे बड़ा सुख मिलता ।"

(तुलसी ने कहा) "तुम्हारा तो वहाँ घर है । मेरे लिए भला कौन–सा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आकर्षण है ?" – 'मानस का हंस' – १५ पृष्ठ १४१

"वह मेरा गुरुभाई है। काशी जी में साथ पढ़ता था।" –'मानस का हंस'–अनुच्छेद १७ पृष्ठ १६१

"तुलसीदास अपने गुरु भाई की बाँह कसकर थामे हुए आगे बढ़ गये। नन्ददास की काया तुलसी के सहारे जा रही थीं ...।" –'मानस का हंस'–अनुच्छेद १८ पृष्ठ १७७

उपन्यासकार आचार्य सोहन लाल रामरंग विरचित सुप्रसिद्ध उपन्यास 'युग पुरुष तुलसी' का भी निम्नांकित उद्धरण दृष्टव्य है –

"....नन्ददास आकर उनके चरण दबाने लगे। गोस्वामी जी के निषेध करने पर भी वे दबाते–दबाते बोले – देखिये आप मेरे गुरुभाई–गुरु और इस दृष्टि से अग्रज भी हैं। काशी में शेष सनातन देव के गुरुकुल में आपने शिक्षा ग्रहण करते–करते हम जैसे कनिष्ठ छात्रों को गुरुजी के आदेश से शिक्षा भी दी। ....इस दृष्टि से आप पहिले अग्रज आर फिर गुरु हुये। गुरुकुल के सम्बन्ध से गुरुभाई भी कहे जा सकते हैं।" – 'युग पुरुष तुलसी' – खण्ड२, अनुच्छेद ४५, पृष्ठ ८३७

'गोस्वामी तुलसीदास का जीवन चरित' पुस्तिका श्रीमती रानी कमल कुँवरि देवजू (रियासत सरीला, जिला हमीरपुर) ने दोहे चौपाइयों में तुलसीदास जी का जीवन चरित दिया है। इसमें तुलसी का जन्म स्थान राजापुर और नन्ददास को गुरुभाई लिखा है।

आर० एस० पंखानिया ने 'गोस्वामी तुलसीदास जी (जीवनी)' में भी नंददास को तुलसीदास जी का गुरुभाई कहा है –

"....Visiting the places of interest in Vrindavana. Here he is said to have met his Guru Bhai Nanddas."

- Goswami Tulsidas Ji (A biography)- R. S. Pankhania, Page 153

उपरोक्त समीक्षात्मक विश्लेषण से स्पष्ट है कि सोरों पक्ष का नंददास विषयक तर्क भी कपोलकल्पित, कृत्रिम और तथ्यहीन है। वस्तुतः नंददास गोस्वामी तुलसीदास के गुरुभाई थे।

७. तर्क – "तनु जन्यो कुटिल कीट ज्यों तज्यो मातु – पिताहू"

– विनयपत्रिका २७५–२ क

पं० रामनरेश त्रिपाठी तथा डॉ० रामदत्त भारद्वाज आदि सोरों समर्थकों के अनुसार– "कुटिल कीट" का अर्थ विनयपत्रिका के टीकाकारों ने सर्पिणी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदि किया है, पर सोरों और उसके आसपास कुटीला नामक एक कीड़ा होता है जो केकड़े की जाति का है और उसकी यह विशेषता कही जाती है कि वह अपनी माता का पेट फाड़कर बाहर निकलता है। तुलसीदास के उत्पन्न होते ही उनकी माता का देहान्त हो गया था, इसी से उन्होंने अपनी तुलना कुटिल कीट से की है। माता की मृत्यु के बाद ही सम्भवतः थोड़े दिनों में उनके पिता का भी देहान्त हो गया होगा। पिता के साथ लगा हुआ 'हू' इसी अर्थ का द्योतक है।"

– 'तुलसी और उनका काव्य' –पृष्ठ १० व ११

(२) "सोरों वाले कुटिल कीट से कुटीला नामक ऐसे कीड़े से आशय निकालते हैं जो संतान को जन्म देने के बाद ही मर जाता है और कहते हैं कि तुलसीदास के माता–पिता का देहान्त बालक के जन्म के कुछ समय पश्चात् ही हो गया था, इसलिए गोस्वामी जी ने ऐसा लिखा है।"

– 'गोस्वामी तुलसीदास व्यक्तित्वः दर्शन, साहित्य', पृष्ठ २९०

समीक्षा – उपरोक्त दोनों उद्धरणों में 'कुटिल कीट' का अर्थ क्षेत्रीयता के दुराग्रह से तोड़ मरोड़ कर मनगढ़ंत किया गया है। वस्तुतः 'गीताप्रेस गोरखपुर' के 'विनयपत्रिका' के टीकाकारों द्वारा दिया गया 'कुटिल कीट का अर्थ न तो 'सर्पिणी' ठीक जँचता है और न तो सोरों समर्थकों का केकड़ा जाति का कल्पित 'कुटीला' कीड़ा ही सही जँचता है। क्योंकि 'सर्पिणी' तो पैदा करते ही स्वयं अपने बच्चे को खा जाती है और सोरों समर्थकों का कल्पित 'कुटीला' कीड़ा का न तो कोई अस्तित्व है और न उसमें कल्पित कथित विशेषता का कोई सवाल उठता है।

वास्तव में तुलसीदास जी ने 'कुटिल कीट' 'बीछी' (बिच्छू) के लिए लिखा है। बिच्छू का स्वभाव एवं 'डंक' कुटिल (टेढ़ा) होता है और वह बच्चे पैदा करते ही मर जाती है, क्योंकि उसके बच्चे पेट फाड़कर पैदा होते हैं और माँ को ही खा जाते हैं।

राजापुर–चित्रकूट क्षेत्र 'मारव' (मरवा) या 'मार महि' और ऊबड़-खाबड़, पहाड़ी–जंगली होने से 'बीछी' (बिच्छू) बहुल होने से ही तुलसीदास जी को उसके विषय में विशेष जानकारी थी, यह उनकी रचनाओं से भी स्पष्ट है। उल्लेखनीय है कि तुलसीदास द्वारा प्रयुक्त 'बीछी' शब्द इस क्षेत्र की जनभाषा और आम बोलचाल का शब्द है। उद्धरण देखिये –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१) "नगर व्यापि गइ बात सुतीछी ।
छुवत चढ़ी जनु सब तन <u>बीछी</u> ।। –'मानस'– अयोध्या० ४५।।३

(२) ग्रह ग्रहीत पुनि बात बस तेहि पुनि <u>बीछी</u> मार ।
तेहि पिआइअ बारुनी कहहु काह उपचार ।। –'मानस' अयो० १८०

(३) जिन्हहिं निरखि मग साँपिन <u>बीछी</u> ।
तजहिं विषम विषु तामस तीछी ।। –'मानस' अयो० २६१ ।।४

इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषण से सोरों के तर्क दुराग्रहपूर्ण, कृत्रिम, कल्पित, मन गढ़न्त और अविश्वसनीय सिद्ध होते हैं और राजापुर (चित्रकूट) का पक्ष सही और सबल सिद्ध होता है ।

८. तर्क – तुलसीदास जी सनाढ्य ब्राह्मण थे । यदि वे कानकुब्ज अथवा सरबरिया ब्राह्मण होते तो काशी में उनको जाति बताने में कोई खटका ही नहीं था क्योंकि इन नामों से काशी के लोग परिचित थे । वे थे सनाढ्य, पूर्वी जिलों में सनाढ्यों की बस्ती आज भी कम है । पहले तो बिल्कुल न रही होगी । सनाढ्यों में विद्वानों की संख्या अब भी बहुत कम है । इससे काशी के लोग विश्वास ही न करते रहे होंगे कि सनाढ्य भी कोई ब्राह्मण होते हैं ।

समीक्षा – यह तर्क तो और भी दुर्बल सिद्ध होता है । पहले तो यह कि गोस्वामी जी की अत्यधिक ऊँची आध्यात्मिक स्थिति थी । वे जन–जन से अपनी जाति इत्यादि के विषय में की गई शंकाओं का समाधान करने लगते तो 'रामचरित मानस' आदि एक दर्जन से अधिक ग्रन्थों की रचना के लिए उन्हें समय कहाँ मिलता ? उन्होंने तो कदाचित इसी स्थिति को अपनाने में अपना और लोक का कल्याण अधिक समझ कर ईर्ष्यालुओं, निंदकों से पिंड छुड़ाने के लिए कहा –

"धूत कहौ, अवधूत कहौ,
रजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोऊ ।
काहू की बेटी सों बेटा न ब्याहब,
काहू की जाति बिगार न सोऊ ।।"

– कवितावली ७–१०६

"काशी के लोग विश्वास ही न करते होंगे कि सनाढ्य भी कोई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्राह्मण होते हैं ।" –यह तर्क तो और भी हास्यास्पद प्रतीत होता है । काशी में जहाँ पंडितों और ब्राह्मणों की शाखा–प्रशाखायें जानने वाले लोक व्यवहारी विद्वान ब्राह्मण रहते थे, भला 'सनाढ्य' से चौंक कर आश्चर्य क्यों करते ? और मान लीजिये, यह सिद्ध भी हो जाय कि वे –'सनाढ्य' ब्राह्मण थे, तो यह कैसे सिद्ध होता है कि उनका जन्म सोरों में ही हुआ था, राजापुर (चित्रकूट) में नहीं ?

इस प्रकार सोरों समर्थकों का यह तर्क भी अतीव थोथा प्रतीत होता हैं ।

९. तर्क – तुलसीदास जी का आधिपत्य ब्रजभाषा और अवधी दोनों पर था । अतः यह भी उनके ब्रज और अवध की सरहद यानी सोरों का होने का प्रमाण है ।

समीक्षा – गोस्वामी तुलसीदास जी का ब्रजभाषा और अवधी दोनों पर समानरूप से आधिपत्य होने का अर्थकदापि नहीं हो सकता कि वह भूमि ब्रज और अवध की सीमा हो, और उसमें भी सोरों ।

राजापुर–चित्रकूट क्षेत्र तो बुन्देली, ब्रज, बघेली, अवधी आदि भाषाओं की संगमस्थली है और गोस्वामी तुलसीदास की भाषा–संस्कृति एवं भाषात्मक लिपि प्रवृत्ति से पूर्ण रूपेण मिलती है जैसा कि तुलसी की भाषा एवं भाषात्मक लिपि प्रवृत्ति में विशदरूप से विश्लेषित किया गया है । फिर ब्रजभाषा में रचना करने वाले 'राम चन्द्रिका' महाकाव्य के रचयिता आचार्य केशवदास भी तो बुन्देलखण्ड के ओरछा के निवासी थे, ब्रज या अवधी क्षेत्र के नहीं । सोरों समर्थकों का उपरोक्त तर्क वैसा ही ज्ञात होता है, जैसे कोई भारतीय अंग्रेजी का विद्वान हो तो उसकी भाषा की विद्वता के आधार पर यह कहना कि उसकी जन्मभूमि इंग्लैण्ड हो सकती है ।

"सत्य बात यह है कि तुलसीदास की जन्मभूमि राजापुर ही थी, यह तथ्य उनकी भाषा से स्वतः प्रकट हो जाता है ।"

–डॉ० किशोरीलाल पूर्व प्राध्यापक इलाहाबाद विश्वविद्यालय

१०. तर्क – तुलसीदास जी ने अपनी रचनाओं में अरबी और फारसी के शब्दों का स्वच्छन्दता से प्रयोग किया है । यह भी उनके पश्चिमी जिला निवासी होने का प्रबल प्रमाण माना जा सकता है । सोरों और उसके आसपास के जिलों में मुसलमानों की बस्तियाँ अधिक हैं । इससे अरबी–फारसी के जितने शब्द पश्चिमी हिन्दी में मिलते हैं, उतने पूर्वी हिन्दी में नहीं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समीक्षा – पश्चिमी जिला के निवासी होने के कारण यह आवश्यक नहीं कि अरबी और फारसी शब्दों के प्रयोग की अधिकता हो। वैसे तो नन्ददास और सूरदास भी पश्चिम के ही जिलों में निवास करते थे, फिर भी उनकी रचनाओं में तुलसीदास जी की अपेक्षा अरबी और फारसी शब्दों का प्रयोग बहुत कम है। सोरों समर्थक नन्ददास जी को तो तुलसीदास जी का अनुज ही बतलाते हैं फिर क्या कारण है कि नन्ददास की रचना में एक प्रकार से अरबी और फारसी शब्दों का प्रयोग नहीं के बराबर है और तुलसीदास जी की रचनाओं में इतनी अधिकता है ? तुलसीदास जी वस्तुतः जनभाषा के महाकवि थे अस्तु जनभाषा में रचे-बसे अरबी-फारसी के शब्दों का उनकी रचनाओं में पाया जाना स्वाभाविक है।

११. तर्क – तुलसीदास जी ने कवितावली, गीतावली, दोहावली और विनयपत्रिका में बहुत से ऐसे शब्दों और मुहावरों का प्रयोग किया है जो सोरों में आमतौर पर प्रचलित हैं पर राजापुर आदि में उस अर्थ में नहीं प्रचलित हैं।

समीक्षा – उपरोक्त तर्क की पुष्टि के लिए जो उदाहरण दिये जाते हैं, प्रायः सभी विनयपत्रिका से ही उद्धृत हैं। विनयपत्रिका की भाषा ब्रजभाषा है। बहुत सम्भव है इस कारण कुछ ऐसे ब्रजभाषा शब्दों का प्रयोग हो, जिनका प्रयोग तो ब्रज क्षेत्र में होता हो किन्तु अवधी क्षेत्र में नहीं। यह तो और भी हास्यास्पद प्रतीत होता है कि उन शब्दों का प्रयोग ब्रज क्षेत्र में भी सोरों ही में होता हो। फिर तुलसी तो विरागी होने के बाद बयालिस वर्षों तक तीर्थाटन करते रहे, इसी से उस समय प्रचलित दोनों काव्य भाषाओं –ब्रज और अवधी के साथ ही उनकी भाषा में अरबी-फारसी आदि के शब्द भी मिलते हैं। वस्तुतः राजापुर-चित्रकूट क्षेत्र की भाषा-बोली बुन्देली, बघेली, वैसवाड़ी, ब्रजी, अवधी आदि भाषाओं की संगमस्थली होने और बालपन से तुलसी के उससे सम्बद्ध होने से ही वह तुलसी की भाषा-बोली की मूलाधार रही है, इसी से उनकी भाषा में बुन्देली, बघेली, बैसवाड़ी, ब्रजी, अवधी, अरबी-फारसी भाषा के शब्दों का मिलाजुला प्रयोग मिलता है, केवल ब्रजी या अवधी का ही नहीं।

वास्तविकता तो यह है कि तुलसीदास जी की रचनाओं में ऐसे शब्दों, मुहावरों और लोकोक्तियों का बहुतायत से प्रयोग किया गया है जो राजापुर-चित्रकूट क्षेत्र में आमतौर पर प्रचलित हैं पर सोरों आदि में उस अर्थ में नहीं प्रचलित हैं। कुछ उद्धदण देखिये –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१) "हमहुँ कहब अब ठकुर सोहाती" –'मानस'–अयो० १५।।२

(२) "दीप बाति नहिं टारन कहेऊँ" –'मानस' –अयो० ५८।।३

(३) "नतरु बाँझ भलि बादि बियानी ।" –'मानस' –अयो० ७४।।१

(४) "खाओ खोंची माँग मैं तेरो नाम लियो रे ।" –'विनयपत्रिका' ३३

(५) "बारे तें ललात बिललात द्वार–द्वार दीन" –'कवितावली' –७, ७३ ।

अतः सोरों समर्थकों का यह तर्क भी तथ्यहीन प्रतीत होता है ।–

१२. तर्क – ब्रज और उसके आसपास के जिलों में भौंरा और चकडोरी खेलने का रिवाज बहुत है । लड़के बाजी लगाकर ये खेल खेलते हैं । पर अयोध्या, बनारस और राजापुर में इन खेलों का प्रचार शायद ही है । सोरों में इस का बड़ा प्रचार है । इससे गीतावली में आये हुये "खेलत अवध खोरि गोली, भौंरा, चकडोरि" से यह अनुमान किया जा सकता है कि तुलसीदास जी का जन्म ऐसे स्थान में हुआ था जहाँ गोली, भौंरा और चकडोरी खेलने का बड़ा रिवाज था ।

समीक्षा – इस तर्क में तो कोरे अनुमान का आश्रय लिया गया है । इन खेलों का रिवाज तो राजापुर–चित्रकूट क्षेत्र में भी बहुत प्रचलित है । यदि सोरों समर्थकों का यह कथन मान भी लिया जाय कि इन खेलों का रिवाज उपरोक्त स्थानों में शायद ही हो तो भी तुलसीदास जी का जन्मस्थान तो सोरों किसी प्रकार सिद्ध नहीं होता । तुलसीदास जी ने तो "चौगान" खेलने का भी उल्लेख किया है, तो क्या सोरों आदि में 'चौगान' खेला जाता है ?

"ते तव सिर कंदुक सम नाना । खेलिहहिं भालु कीस चौगाना ।।"

–'मानस' लंकाकाण्ड २६।।३

१३. तर्क – सोरों को तुलसीदास जी की जन्मभूमि बताने वाले प्रमाण में वहाँ के पंडे की बही में तुलसीदास का नाम होने का तर्क देते हैं । यह तथ्य तो इस बात का प्रबल प्रमाण है कि तुलसीदास यदि तीर्थ भ्रमण करते समय कभी सोरों गये भी थे तो केवल उस पंडा के यजमान यात्री के रूप में ही उनका नाम पंडे की बही में होगा क्योंकि आजकल भी पंडे (तीर्थ पुरोहित) केवल बाहर से आने वाले यजमानों के नाम अपनी बही में दर्ज करते हैं, स्थानीय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निवासियों के नहीं।

१४. तर्क – तुलसी जन्म स्थान के सम्बन्ध में राजापुर (बाँदा) के प्रतिद्वन्दी के रूप में सोरों का नाम सन् १९०८ ई० के बाद खुलकर आया। किन्तु सन् १९५३–५४ ई० तक यह विवाद तत्कालीन साहित्यकारों, पुरातत्वविदों, इतिहासज्ञों, शोधकों एवं राजनीतिज्ञों द्वारा तथ्यातथ्य के आधार पर निर्णीत घोषित कर दिया गया था कि वास्तव में राजापुर (बाँदा) ही तुलसीदास जी का जन्म स्थान है।

१५. तर्क – इसके बाद भी क्षेत्रवादी, आस्पदवादी संकीर्ण मनोवृत्ति और थोथे पांडित्य प्रदर्शन के दुराग्रह से फिर वही विवाद उठने पर गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्मभूमि की वास्तविकता पर व्यापक विचार करने हेतु ३१ मई सन् १९६० ई० में देश की राजधानी दिल्ली में देशभर के विद्वानों की गोष्ठी भारतीय हिन्दी परिषद के तत्वावधान में संयोजित की गई। इस गोष्ठी की तीन बैंठकें हुईं। प्रथम बैठक के अध्यक्ष इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० धीरेन्द्र वर्मा थे, द्वितीय बैठक कलकत्ता विश्वविद्यालय हिन्दी विभागाध्यक्ष आचार्य विनयमोहन शर्मा तथा तृतीय बैठक दिल्ली विश्वविद्यालय हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० नागेन्द्र की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई थी। उस गोष्ठी में डॉ० रामदत्त भारद्वाज ने सोरों का पक्ष सतर्क उपस्थित करते हुये बतलाया था कि सोरों के निकट गंगातट पर स्थित रामपुर गाँव तुलसी जन्मभूमि है। इसका जोरदार खण्डन करते हुए अलीगढ़ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० गोवर्धननाथ शुक्ल जो स्वंय भी सोरों क्षेत्र के निवासी थे, बताया कि रामपुर नाम का कोई गाँव एटा जनपद भर में नहीं हैं, फिर गंगातट पर यह रामपुर कहाँ से आ गया? उन्होंने श्री गोविन्द बल्लभ भट्ट की संवत् २०१५ वि० (सन् १९५८ ई०) में प्रकाशित पुस्तक 'गोस्वामी तुलसीदास' की आद्योपान्त विवेचना करते हुए इसे नितान्त रूप से कपोल कल्पित, अविश्वसनीय एवं असत्य सिद्ध किया। इसके बाद डॉ० उदयभान सिंह ने राजापुर (बाँदा) का प्रबल समर्थन करते हुए इस तथ्य की पुष्टि की कि तुलसी जन्मभूमि प्रामाणिक रूप से राजापुर (बाँदा) ही है। आचार्य देवव्रत शर्मा और डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा भी उस बैठक में उपस्थित थे।

द्वितीय गोष्ठी में गोरखपुर विश्वविद्यालय के डॉ० भगवती प्रसाद सिंह ने सोरों की सभी सामग्री एवं प्रमाणों को कपोल–कल्पित, असत्य एवं तथ्यहीन सिद्ध करते हुए तथा सोरों समर्थकों को चुनौती देते हुए राजापुर (बाँदा) को ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रामाणिक तुलसी जन्मभूमि सिद्ध किया ।

तीसरी गोष्ठी में अत्तर्रा (बाँदा) स्नातकोत्तर महाविद्यालय के आचार्य पं० शिवावतार मिश्र ने राजापुर सामग्री प्रामाणिक रूप से उपस्थित करते हुए राजापुर (बाँदा) को ही तुलसी जन्मभूमि सिद्ध किया । इसके पश्चात् डॉ० विश्वनाथ प्रसाद ने अपने अकाट्य तर्कों को प्रस्तुत करते हुए राजापुर (बाँदा) को ही तुलसी जन्मभूमि सिद्ध किया । तत्पश्चात् गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ० नागेन्द्र ने उपस्थित विद्वानों का आवाह्न करते हुए राजापुर (बाँदा) की सामग्री की समीक्षा करते हुए विद्वानों को राजापुर सामग्री की समीक्षा के लिए उत्साहित किया और मंच पर आने के लिए आमंत्रित किया पर कोई भी विद्वान आगे नहीं आया । इस बैठक में डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ० देवकी नन्दन श्रीवास्तव, डॉ० माता प्रसाद गुप्त, सेठ गोविन्द दास, पं० राम बहोरी शुक्ल जैसे विद्वान भी उपस्थित थे ।

अन्त में गोष्ठी में सम्मिलित सभी विद्वानों की आत्मा की एक ही आवाज थी कि सोरों सामग्री संदिग्ध ही नहीं, नितान्त रूप से कपोल कल्पित, अविश्वसनीय एवं असत्य है और राजापुर (बाँदा) ही मानसकार गोस्वामी तुलसीदास की प्रामाणिक जन्मभूमि है ।

अन्ततः सोरों सामग्री के उपरोक्त विशद् विश्लेषण से स्पष्ट है कि सोरों के तर्क दुराग्रहपूर्ण, तथ्य संदिग्ध, कृत्रिम, कल्पित, मनगढ़ंत, जाली और अविश्वसनीय हैं और राजापुर (चित्रकूट) ही गोस्वामी तुलसीदास जी की प्रामाणिक जन्मभूमि है ।

⌘⌘⌘⌘

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसी जन्मभूमि सम्बन्धी गोण्ड़ा-जनपदीय सामग्री की विवेचना

सोरों समर्थकों की भाँति गोण्डा जनपद में भी तुलसी जन्मभूमि सिद्ध करने के प्रयास जोर पकड़ रहे हैं। सर्वप्रथम इस समस्या का सूत्रपात १९१४ ई० में उत्तर प्रदेश के हरदोई जनपदीय बछौली ग्राम निवासी स्वामी सद्गुरु शरण तथा बालकराम विनायक ने किया था। उन्होंने गोण्डा में "तुलसी सभा" की स्थापना करके "तुलसी" नामक पत्र भी प्रकाशित किया था। उनके अनुसार घाघरा-सरयू के संगम पर स्थित 'पसका' ग्राम तुलसी की गुरुभूमि और उसी के निकट राजापुर नामक ग्राम तुलसी की जन्मभूमि है, किन्तु उनका यह प्रयास सार्थक न हो सका, और कुछ समय पश्चात् "तुलसी सभा", "तुलसी"-पत्रिका दोनों समाप्त हो गईं।

इस समस्या का पुनः सूत्रपात ठाकुर अवधनारायण सिंह ने तब किया जब वे सन् १९६० के दशक में गोण्डा जनपद में पुलिस अधीक्षक के पद पर नियुक्त थे। सेवा निवृत्ति के पश्चात् गोण्डा जनपद के ही कर्नलगंज नगर में आबाद हो गये थे। गोण्डा जनपद में घाघरा-सरयू के पसका संगम तट पर तुलसी गुरुभूमि और उसी के निकट राजापुर नामक स्थान पर तुलसी जन्मभूमि सिद्ध करने के प्रयास तो उन्होंने १९६३ ई० से ही प्रारम्भ कर दिये, किन्तु समुचित साक्ष्यों के अभाव से उस समय उन्हें सफलता नहीं मिली।

१९६३ ई० में ही "तुलसी विमर्श" के लेखक डॉ० अयोध्या प्रसाद पाण्डेय द्वारा स्थानीय निरीक्षण से ज्ञात हुआ था कि पसका में क्षतिग्रस्त नरसिंह मन्दिर है। उस समय उस मंदिर के महन्त जगदेवदास जी थे, जो इस पद पर १९५३ ई० से प्रतिष्ठित थे। पसका तुलसी गुरुभूमि तथा राजापुर उनके जन्मभूमि होने के सम्बन्ध में महंत जी तथा वहाँ उपस्थित जनों को कोई जानकारी न थी। महन्त जी के संरक्षण में किसी कश्मीरी पंडित आनन्ददास द्वारा सम्वत् १८४४ वि० (अर्थात् १७८७ ई०) की लिखित रामचरित मानस की एक प्रति थी। इसमें मानस के सातोंकांड हैं, यह अलग-अलग पन्नों में लिखी है। इसका प्रत्येक पृष्ठ १०" × ५" का है और प्रत्येक पृष्ठ में ग्यारह-ग्यारह पंक्तियाँ हैं। इसके उत्तरकाण्ड के पृष्ठ ७७ पर निम्नलिखित पुष्पिका अंकित है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ओम् श्री रामाय नमः ।। ओम् सम्वत् १८४४ आश्विन वदि पंचम्याम् सोमवासरान्वितायां इदं पुस्तकं कश्मीरी ब्राह्मण आनन्ददासिती लिख्यतं ।।

इसके अतिरिक्त महन्त जी ने एक पुराने बड़े सफेद कागज में, उक्त नरसिंह मंदिर के महन्तों की सूची दिखलाई जो निम्नलिखित प्रकार से है –

(१) श्री रामानन्द जी
|
(२) श्री अनन्तानन्द जी
|
(३) श्री कृष्णादास जी
|
(४) श्री अग्रदास जी
|
(५) श्री कृष्णदास जी
|
(६) श्री बिदेहा कृष्णदास जी
|
(७) श्री जंगे जी
|
(८) श्री तुलसीदास जी
|
(९) श्री चतुर्भुजदास जी
|
(१०) श्री बालमुकुंददास जी
|
(११) श्री रबिमणिदास जी
|
(१२) श्री कीलूदास जी
|
(१३) श्री बालकदास जी
|

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१४) श्री ठाकुरदास जी
|
(१५) श्री सरजूदास जी
|
(१६) श्री अम्बरदास जी
|
(१७) श्री पुरुषोत्तमदास जी
|
(१८) श्री नरहरिदास जी
|
(१९) श्री रामअवधदास जी
|
(२०) श्री जगदेवदास जी

उपर्युक्त रामचरित मानस की हस्तलिखित प्रति तथा महन्तों की सूची के अतिरिक्त महन्त जगदेवदास जी के पास तुलसी गुरुभूमि तथा तुलसी जन्मभूमि सम्बन्धी कोई अन्य साक्ष्य न था। सम्बन्धित जीर्ण-शीर्ण मंदिर की मरम्मत तब बहुत दिनों से नहीं हुई थी।

महन्तों की उपर्युक्त तालिका के क्रमांक आठ में महन्त तुलसीदास तथा क्रमांक १८ में महन्त नरहरिदास अंकित हैं, अस्तु ये दोनों महंत न तो समकालीन हो सकते हैं और न इनमें शिष्य-गुरु सम्बन्ध ही संभव है। ये तुलसीदास, मानस रचयिता तुलसीदास के अतिरिक्त अन्य तुलसीदास तथा यह नरहरिदास, मानस रचयिता तुलसीदास के गुरु के अतिरिक्त कोई नरहरिदास हो सकते हैं।

पसका ग्राम के निकट राजापुर ग्राम अवश्य है, किन्तु वहाँ के किसी भी व्यक्ति को वहाँ तुलसी की जन्मभूमि होने की जानकारी नहीं थी, और तुलसी जन्मभूमि सम्बन्धी कोई प्रमाण भी उपलब्ध नहीं था। इस परिस्थिति में ठाकुर अवध नारायण सिंह को १९६३ ई० में प्रारम्भ किये प्रयास स्थगित करने पड़े।

१९६८ ई० में ठाकुर अवध नारायण सिंह पुनः सक्रिय हुए और उन्होंने अपनी अध्यक्षता में "तुलसी स्मारक सभा" गठित की। उन्हें नेपाल के किसी ग्राम में तुलसी-सम्बन्धी एक हस्तलिखित पुस्तक उपलब्ध हो गई और उसके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आधार पर वे गोण्डा जनपदीय पसका ग्राम को तुलसी गुरुभूमि और राजापुर ग्रम को तुलसी जन्मभूमि सिद्ध करने को पुनः सक्रिय हो गये। नेपाल में प्राप्त हस्तलिखित कृति के अनुसार तुलसी की माता हुलसी बहराइच जनपद के दहोड़ा-ताल (दधिबल ग्राम) निवासी घनीर मिश्र की पुत्री तथा जगत नारायण मिश्र की पौत्री थी। हुलसी की दो पुत्रियों-कमला और विमला की सात-आठ वर्ष की आयु में मृत्यु हो जाने के पश्चात् उनके पति आत्माराम ने पसका संगम के निकट बराही मन्दिर में घोर तप किया, जिसके फलस्वरूप उनके पुत्र रूप में तुलसीदास का जन्म हुआ था। इस अप्रकाशित नेपाली पुस्तक का तथा इसकी लिपि आदि का अभी वैज्ञानिक परीक्षण नहीं हुआ है और पुस्तक के शीर्षक (नाम) तथा उनमें वर्णित विषय वस्तु आदि के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी भी अपेक्षित है। धनीर मिश्र की पुत्री का नाम हुलसी होना और हुलसी के पति का नाम आत्माराम होना संयोग भी हो सकता है, जिसके अनुसार तुलसी जन्मभूमि सम्बन्धी अब तक की समस्त मान्यतायें बिना किसी विशेष विश्लेषण के ध्वस्त नहीं की जा सकतीं। यदि अवध नारायण की इस मान्यता पर बल होता तो गोण्डा निवासी तथा 'मूल गोसाईं चरित' के रचयिता बाबा वेणी माधवदास इसका कुछ न कुछ उल्लेख अपनी पुस्तक 'मूल गोसाईं चरित' में अवश्य करते। उन्होंने तो चित्रकूट जनपदीय राजापुर को ही तुलसी जन्मभूमि माना है। वस्तुतः धनीर मिश्र तथा हुलसी के सम्बन्ध में दधिबल ग्राम (बहराइच) में जन साधारण को जानकारी भी नहीं है।

लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग तथा उत्तर प्रदेश के हिन्दी संस्थान द्वारा आयोजित "तुलसी जन्म-स्थली खोज" विषयक गोष्ठी (६ व ७ जनवरी, १९९७) में गोण्डा समर्थकों ने अपना पक्ष रखते हुए यह व्यक्त किया था कि अयोध्या-गोण्डा मार्ग पर अयोध्या से उत्तर-पश्चिम पसका नामक पुराना रजवाड़ा है, जिसे सूकरखेत कहा जाता है, वहाँ नरहरि घाट, नरहरि आश्रम, वाराह मंदिर तथा वाराही मंदिर आदि हैं। वहाँ तुलसीदास के गुरु नरहरिदास रहते थे। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि गोण्डा 'गजेटियर' के अनुसार तुलसीदास के सखा और शिष्य वेणी माधवदास का निवास स्थान भी वहाँ था। नेपाल में प्राप्त पुस्तक के अनुसार 'पसका' के निकट राजापुर में तुलसी जन्मभूमि है, जिसके समीपस्थ गोचर भूमि को आत्माराम का टपरा कहा जाता है, जिसका उल्लेख राजस्व अभिलेखों में भी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घाघरा सरयू संगम स्थित पसका एक तीर्थ स्थान है, जहाँ प्रतिवर्ष पौष माह में मेला लगता है और भक्तगण एक माह पर्यन्त झोपड़ी बनाकर रहते हैं। इस स्थान की प्रसिद्धि वहाँ नरहरि आश्रम, वाराह मंदिर तथा पौष मेले के कारण है। १९६३ ई० की तीर्थ यात्रा के समय पसका में नरहरि घाट, नरहरि आश्रम आदि की कोई प्रसिद्धि नहीं थी। वराही मंदिर भी पसका के कुछ दूर था पर वह तपस्थली के नाम से प्रसिद्ध नहीं था, जहाँ से आत्माराम ने पुत्र प्राप्ति हेतु तपस्या की है। यह सभी उद्भावनायें नेपाल की हस्तलिखित पुस्तक की प्राप्ति के पश्चात् की प्रतीत होती है। वराही देवी की स्थापना वाराह भगवान के साथ नहीं होती है। अग्निपुराण (अध्याय ४९) के अनुसार वाराह मूर्ति मनुष्याकार होना चाहिए। उनके बांये हाथ में पद्मादेवी तथा लक्ष्मी जी उनकी बांई कोहनी का सहारा लिये सुशोभित होती हैं। राजापुर के पास की गोचर भूमि के राजस्व अभिलेख में आत्माराम का टपरा नाम से उल्लेख यह प्रमाणित नहीं करता कि यह आत्माराम तुलसीदास के पिता हैं, क्योंकि आत्माराम दधिवल (बहराइच) के निवासी थे। जहाँ तक राजस्व अभिलेखों का प्रश्न है वह बन्दोवस्त के समय तैयार किये जाते हैं। किसी अभिलेख में प्रायः बन्दोवस्त के समय उपस्थित व्यक्ति का नाम अंकित किया जाता है। राजापुर में तुलसी सम्बन्धी कोई प्रमाण नहीं उपलब्ध है और महंतों के तालिका के अनुसार नरहरि दास और तुलसीदास समकालीन नहीं हैं। इस प्रकार पसका तथा राजापुर में तुलसी गुरु नरहरि तथा तुलसीदास का कोई सारभूत प्रमाण न होने के कारण गोण्डा जनपदीय तुलसी जन्मभूमि संदिग्ध हो जाती है। तुलसीदास के समकालीन उनके शिष्य पसका (जिला गोंडा) निवासी वेणीमाधवदास गोण्डा जनपदीय राजापुर को तुलसी जन्मभूमि न मानकर चित्रकूट जनपदीय राजापुर को तुलसी जन्मभूमि मानते हैं। जहाँ तक पसका के सूकर क्षेत्र होने का प्रश्न है, देश में २४ सूकर खेत हैं और प्रत्येक सूकर क्षेत्र में गुरु नरहरि हैं। सोरों तथा चित्रकूट में भी सूकर क्षेत्र है, फिर गोण्डा जनपदीय राजापुर को ही तुलसी जन्मभूमि के सम्बन्ध में प्राथमिकता क्यों दी जाय? जहाँ तक वाराह क्षेत्र का प्रश्न है वह तो केवल मथुरा में ही है।

⌘⌘⌘⌘

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजापुर (गोंडा) सामग्री की समीक्षा

सर्वप्रथम राजापुर (गोंडा) विवाद का सूत्रपात १९१४ ई० में स्वामी सद्गुरु शरण तथा बालकराम विनायक ने 'मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकर खेत.....' की व्याख्या सोरों समर्थकों की तरह अपने ढंग से करके उसी को केन्द्र बिन्दु बनाकर की, किन्तु उनका यह प्रयास सफल नहीं हो सका।

इस विवाद का पुनः सूत्रपात ठाकुर अवधनारायण सिंह ने तब किया जब वे सन् १९६० के दशक में गोंडा जनपद में पुलिस अधीक्षक के पद पर नियुक्त थे। उन्होंने पसका (गोंडा) के कथित शूकर क्षेत्र को तुलसी की गुरुभूमि और उससे ६ किमी उत्तर राजापुर नामक स्थान को तुलसी जन्मभूमि सिद्ध करने के प्रयास १९६३ ई० से ही प्रारम्भ कर दिये, किन्तु समुचित साक्ष्यों के अभाव से उस समय उन्हें सफलता नहीं मिल सकी। सन् १९६८ ई० में ठाकुर अवधनारायण पुनः सक्रिय हुए और उन्होंने अपनी अध्यक्षता में "तुलसी स्मारक सभा" गठित की। उन्हें नेपाल के किसी ग्राम से तुलसी सम्बन्धी एक हस्तलिखित पुस्तक प्राप्त हुई जिसके आधार पर वे गोंडा जनपदीय पसका ग्राम को तुलसी गुरुभूमि और राजापुर ग्राम को तुलसी जन्मभूमि सिद्ध करने को पुनः सक्रिय हो गये। नेपाल में प्राप्त हस्तलिखित कृति के अनुसार तुलसी की माता हुलसी बहराइच जनपद के दहोड़ा–ताल (दधिबल ग्राम) निवासी धनीर मिश्र की पुत्री थी। उनके पति आत्माराम ने पसका संगम के निकट वराही मंदिर में घोर तप किया, जिसके फलस्वरूप उनके पुत्र रूप में तुलसीदास का जन्म हुआ था।

राजापुर–पसका (जिला गोंडा) समर्थकों ने अपने मत के समर्थन में निम्नांकित तथ्य एवं तर्क प्रस्तुत किये हैं –

१. तर्क – गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म गोंडा जिले के राजापुर नामक ग्राम में हुआ था और उन्होंने अपनी वाल्यावस्था में अपने गुरु नरहरिदास से शूकरक्षेत्र (गोंडा) में रामकथा सुनी थी। तुलसीदास जी के शिष्य बाबा वेणीमाधवदास ने अपने ग्रन्थ 'मूल गोसाईं चरित' में गोस्वामी तुलसीदास के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुये कहा है –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"कहत कथा इतिहास बहु, आए सूकर खेत ।
संगम सरयू घाघरा, संत जनन सुख देत ।।"

–'मूल गोसाईं चरित' –दोहा १०

गोस्वामी जी के काशी निवासी मित्र श्री कृष्ण दत्त मिश्र ने संवत् १६८१ में प्रणीत अपने ग्रन्थ 'गौतम चन्द्रिका' में सरयू तथा घाघरा के संगम पर स्थित शूकर क्षेत्र में बाबा नरहरिदास के आश्रम होने का उल्लेख किया है ।[1]

समीक्षा–गोंडा जिले के 'गजेटियर' में तुलसीदास जी के गोंडा जिले में उत्पन्न होने का कोई उल्लेख नहीं किया गया है । उसमें बाबा वेणीमाधवदास के गोंडा जनपद के अन्तर्गत पसका नामक स्थान के निवासी होने और तुलसीदास जी के शिष्य होने तथा उनके द्वारा 'मूल गोसाई चरित' नामक ग्रन्थ के लिखे जाने मात्र का ही उल्लेख किया गया है ।[2] उल्लेखनीय है कि बाबा वेणी माधवदास ने भी यमुना नदी के तट पर स्थित राजापुर जिला बाँदा को ही गोस्वामी तुलसीदास जी का जन्म स्थान बतलाया है –

"यमुना तट दूबन का पुरवा । बसते सब जातिन को कुरवा ।।
सुकृती सतपात्र सुधी सुखिया । रजियापुर राजगुरु मुखिया ।।"

– "मूल गोसाईं चरति" –१।।२, ३

दोहा–"पन्द्रह सै चउवन विषै, कालिन्दी के तीर ।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी धरेउ शरीर ।।२।।"

–'मूल गोसाईं चरित' –बाबा वेणीमाधवदास

उपरोक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि अगर राजापुर जिला गोंडा तुलसीदास जी का जन्म स्थान हुआ होता तो फिर गोस्वामी तुलसीदास जी के निकटस्थ पसका–जिला गोंडा ही के निवासी प्रिय शिष्य 'मूल गोसाईं चरित' के रचयिता बाबा वेणीमाधवदास गोस्वामी तुलसीदास जी के जन्मस्थान को कालिन्दी के तीर राजापुर (बाँदा, वर्तमान जनपद चित्रकूट) क्यों लिखते ? और उनका

---

१. "तुलसी जन्मभूमि' –डॉ० सूर्य प्रसाद दीक्षित, पृष्ठ ६६

2. "One or two Gonda worthies have attained some major of literary fame, Beni Madho Das of Paska was a disciple and companion of Tulsidas whose life-history he wrote in the form of poem entitled "The Goswami Charit." – "District Gazetteers of Gonda," Vol. XILV., by. W. C. Benett.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरुद्वारा राम सुशैल (चित्रकूट) क्यों कहते ? शूकर क्षेत्र 'पसका' जिला गोंडा क्यों न बतलाते ?

"प्रिय शिष्य अनन्तानन्द हते । नरहरियानन्द सुनाम छते ।
बसैं राम सुशैल कुटी करिकै । लयलीन दशा अति प्रिय हरिकै ।।"
– 'मूल गोसाईं चरित' ६।।३, ४ पृष्ठ ३७

जैसा कि साधुओं–संन्यासियों के प्राय: कई आश्रम होते थे, गुरु नरहरिदास जी का आश्रम राम सुशैल (चित्रकूटधाम) के अतिरिक्त पसका–शूकर क्षेत्र (जिला–गोंडा) भी रहा होगा तभी तो चित्रकूट से गुरु नरहरिदास जी के साथ शिष्य तुलसीदास अध्ययनार्थ काशी जाते समय रास्ते में कथा–इतिहास कहते – सुनते सरयू – घाघरा संगम स्थित शूकरक्षेत्र पहुँचे । बाबा वेणीमाधवदास के ही शब्दों में –

"कहत कथा इतिहास बहु, आए सूकरखेत ।
संगम सरयू – घाघरा संत जनन सुख देत ।।१०।।"
–'मूल गोसाईं चरित'

और काशी में –

"कछु दिन रहिगे यति प्रवर, पढ़न लग्यो बटु भास ।
चित्रकूट कहँ तब गये, लखि सब भाँति सुपास ।।१३।।"
–'मूल गोसाईं चरित'

उपरोक्त विश्लेषण से सुस्पष्ट है कि तुलसीदास ने बालपन में गुरु नरहरिदास से 'राम सुशैल' (चित्रकूट) स्थित 'सूकर खेत' में रामकथा सुनी थी जो उनकी लोकमान्य जन्मभूमि चित्रकूट जनपदीय राजापुर और पालन भूमि हरिहरपुर के सन्निकट है, जहाँ ५–६ वर्ष का अनाथ बालक रामबोला (तुलसीदास जी का बचपन का नाम) आसानी से पहुँच कर आश्रय पा सकता था ।

इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि नेपाल जैसे विदेश से प्राप्त तुलसी सम्बन्धी हस्तलिखित पुस्तक के आधार पर जिसकी प्रामाणिकता ही संदिग्ध है, तुलसी–जन्मभूमि राजापुर (गोंडा) और गुरुद्वारा पसका–शूकर क्षेत्र (गोंडा) सिद्ध करने का प्रयास क्षेत्रीयता की मानसिकता से ग्रसित पांडित्य प्रदर्शन का निरर्थक दुस्प्रयास है ।

२. तर्क – गोस्वामी तुलसीदास ने बाल्यावस्था में अपने गुरु नरहरिदास से शूकर क्षेत्र (गोंडा जनपद) में रामकथा सुनी थी । यह शूकर क्षेत्र राजापुर (जिला बाँदा, वर्तमान जिला चित्रकूट) से बहुत दूर है । अत: गोस्वामी जी का जन्म स्थान शूकर क्षेत्र के समीप का ही कोई स्थान होना चाहिये । गोंडा जिले में भी एक राजापुर है । यह राजापुर इस शूकर क्षेत्र से मात्र छह किलोमीटर की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूरी पर स्थित है। अतएव गोंडा जिले का राजापुर ही गोस्वामी तुलसीदास का जन्मस्थान हो सकता है।[1]

समीक्षा – वस्तुतः तुलसीदास जी बालपन में रामसुशैल (चित्रकूट) स्थित 'सूकर खेत' के गुरु नरहरिदास आश्रम में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की और रामकथा सुनी और उसके बाद १३–१४ वर्ष की अवस्था में गुरुनरहरिदास जी के साथ कथा–इतिहास सुनते सरयू–घाघरा संगम स्थित शूकरक्षेत्र, अयोध्या होते काशी गये और वहाँ प्रकाण्ड पंडित आचार्य शेष सनातन जी से १५–१६ वर्षों तक व्याकरण, वेद–वेदांगादि की शिक्षा प्राप्त की। गोस्वामी तुलसीदास जी के निकटस्थ प्रिय शिष्य पसका–शूकर क्षेत्र के ही निवासी बाबा वेणीमाधवदास ने इस सत्य को स्वीकारते स्वरचित 'मूल गोसाईं चरित' के दोहा–६, चौपाई ३, ४ में कहा है –

"प्रिय शिष्य अनन्तानन्द हते। नरहरियानन्द सुनाम छते।
बसैं रामसुशैल कुटी करिकै, लयलीन दशा अति प्रिय हरिकै।।"

आगे वे १०वें दोहे में कहते है –
"कहत कथा इतिहास बहु, आए सूकर खेत।
संगम सरयू–घाघरा, संत जनन सुख देत।।"

अगर गोंडा जनपदीय शूकर क्षेत्र के निकटस्थ राजापुर में गोस्वामी तुलसीदास जी पैदा हुये होते तो तुलसीदास के निकटस्थ शिष्य शूकरक्षेत्र–पसका निवासी बाबा वेणीमाधवदास यमुना तटीय राजापुर (चित्रकूट) को गोस्वामी तुलसीदास जी के जन्मभूमि[2] और चित्रकूट स्थित सूकर–खेत में रामसुशैल (चित्रकूट) स्थित नरहरिदास आश्रम को गुरुद्वारा क्यों कहते ?[3] इसके अतिरिक्त अगर तुलसीदास जी का गुरुद्वारा पसका का सूकर क्षेत्र और जन्मभूमि गोंडा जनपदीय राजापुर होती तो उसी अवध क्षेत्र के पैतृक निवासी

---

१. 'अब विराम की जरूरत' –श्री बृजेश शुक्ल (दैनिक समाचार–'हिन्दुस्तान' के दि० ६/८/२००० के अंक में प्रकाशित लेख।
२. "पन्द्रह सै चउवन विषै, कालिन्दी के तीर।
श्रावन शुक्ला सप्तमी, तुलसी धरेउ शरीर ।।२।।" –"मूल गोसाईं चरित'–बाबा वेणी माधव दास
३. प्रिय शिष्य अनन्तानन्द हते। नरहरियानन्द सुनाम छते।
बसैं राम सुशैल कुटी करिये। लयलीन दशा अति प्रिय हरिकै।" –'मूल गोसाईं चरित' बाबा वेणीमाधवदास ६।।३, ४ पृष्ठ ३७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राय बहादुर लाला सीताराम जोकि तुलसी जन्मभूमि और गुरुभूमि विवाद के जनक माने जाते हैं, अपने पैतृक क्षेत्र को (नकारकर) सोरों (जिला–एटा) को तुलसी की जन्मभूमि और गुरुभूमि क्यों मानते ? अस्तु गोंडा पक्षीय यह तर्क भी मनगढ़न्त और मिथ्या है ।

३. तर्क – शूकर क्षेत्र – पसका (गोंडा) के नृसिंह मंदिर में महन्तों की सूची के आधार पर गोंडा समर्थक गोस्वामी तुलसीदास जी को सूची में उल्लिखित नरहरिदास जी का शिष्य और शूकर क्षेत्र–पसका (गोंडा) को उनका बालपन का गुरुद्वारा सिद्ध करते हैं ।

समीक्षा – महन्तों की उपर्युक्त तालिका के क्रमांक आठ में महन्त तुलसीदास तथा क्रमांक अठारह में नरहरिदास अंकित हैं, अस्तु ये दोनों महन्त न तो समकालीन हो सकते हैं और न इनमें शिष्य गुरु सम्बन्ध ही संभव है । ये तुलसीदास, मानस रचयिता तुलसीदास के अतिरिक्त अन्य तुलसीदास तथा यह नरहरिदास, मानस रचयिता तुलसीदास के गुरु के अतिरिक्त कोई नरहरिदास हो सकते हैं । अब तो कुछ विद्वान १३ और उससे भी अधिक तुलसी या तुलसीदास होने का उल्लेख करते हैं । महन्तों के उक्त सूची में उल्लिखित तुलसीदास शायद इनमें से कोई तुलसीदास रहे हों । तुलसीदास जन्मस्थली विवाद अनेक तुलसीदास तथा उनके कृतित्व से उत्पन्न तार्किकता पर भ्रमाधारित क्षेत्रीयता की दुराग्रही छपास मानसिकता और थोथे पाण्डित्य प्रदर्शन की देन है । अन्तः साक्ष्यों, बाह्य साक्ष्यों, ऐतिहासिक साक्ष्यों और लोकमान्यतानुसार तुलसीदास जी की जन्मभूमि राजापुर (चित्रकूट) और गुरु भूमि चित्रकूट धाम स्थित 'सूकर खेत' नरहरि आश्रम ही है ।

४. तर्क – राजापुर (गोंडा) समर्थक विद्वान मानते हैं कि 'मानस' रचयिता गोस्वामी तुलसीदास अविवाहित थे । वे दूसरे तुलसीदास हैं जिनका विवाह कंचनपुर निवासी श्री दीनबन्धु पाठक की पुत्री रत्नावली के साथ हुआ था ।[१] 'मानस' रचयिता गोस्वामी तुलसीदास के निम्नांकित उद्धरणों से सिद्ध होता है कि वे अविवाहित थे –

(१) "मेरो कोऊ कहूँ न" – विनयपत्रिका ७६/३

---

१. "तुलसी–जन्म भूमि' – डॉ० सूर्य प्रसाद दीक्षित–पृष्ठ १५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२) "लोग कहैं पोच, सो न सोच न संकोच मेरे
ब्याह न बरेखी जाति पाँति न चहत हौं ।।" -"विनय पत्रिका" -७६/४

(३) "धूत कहौ अवधूत कहौ, रजपूत कहौ जुलहा कहौ कोऊ ।
काहू की बेटी से बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगार न सोऊ ।।"

-'कवितावली'-७/१०६

(४) "जाके जिये मुये सोच करिहैं न लरिकौ ।"

-'हनुमान बाहुक'-पद ४२

समीक्षा -'विनय पत्रिका' के उपर्युक्त ७६वें सम्पूर्ण पद के सम्यक समीक्षोपरान्त स्पष्ट है कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने इस पद में अपने ब्याह-बरेखी की बात न कहके यह कहा है कि "मेरे ब्याह न बरेखी जाति पाँति न चहत हौं ।" क्योंकि ब्याह-बरेखी के लिए 'मेरो कोऊ कहूँ न" -विनयपत्रिका -७६/३ इसलिये 'लोग कहैं पोच, सो न सोच न संकोच" -विनयपत्रिका७६/४ 'कवितावली' ७/१०६ में भी यही भाव व्यक्त करते हुये तुलसीदास जी ने कहा है -

"धूत कहौ अवधूत कहौ रजपूत कहौ जुलहा कहौ कोऊ ।
काहू की बेटी से बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगार न सोऊ ।।..."

पत्नी की मृत्यु होने और कोई संतान न होने से बाहु पीड़ादि व्याधि ग्रसित तुलसी का दुख, उलाहना में यह कथन -"जाके जिये मुये सोच करिहैं न लरिकौ ।" -'हनुमान बाहुक' -पद ४२ का कतई यह अर्थ नहीं है कि तुलसीदास जी आजन्म कुवाँरे थे । स्वामी भगवताचार्य तथा लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० सूर्य प्रसाद दीक्षित जैसे विद्वानों का यह कहना कितना हास्यास्पद है कि- "तुलसीदास आजीवन कुवाँरे रहे । रत्नावली दूसरे तुलसीदास की पत्नी थी मानस रचयिता तुलसीदास की नहीं ।"

किन्तु तुलसीदास जी ने स्वयं लिखा है -

(१) "जमुना ज्यों ज्यों लागी बाढ़न....." -विनयपत्रिका २१

(बढी यमुना पार कर पत्नी के पास ससुराल महेवा जाने की घटना की ओर संकेत)

(२) "लरकाईं बीती अचेत, चित चंचलता चौगुनी चाय
जोबन ज्वर जुबती कुपथ्य करि, भयो त्रिदोष भरि मदन बाय ।।"

-'विनय पत्रिका' ८३/२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(३) "जोबन जुवती संग रँग रात्यो । तब तू महामोह मद मात्यो ।।
ताते तजी धरम मरजादा । बिसरे तब सब प्रथम विषादा ।।"

– 'विनयपत्रिका' – १३६/७

(४) "खरिया खरी कपूर सब, उचित न पिय तिय त्याग ।
कै खरिया मोहि मेलिकै, बिमल विवेक बिराग ।।" – दोहावली, २५५

(५) "नाम निरूपम नाम जतन तें । सोऊ प्रगटत जिमि मोल रतन तें ।।"

– 'मानस' – बाल० २२।।४

(६) "करे एक रघुनाथ संग, बाँध जटा सिर केस ।
हम तो चाखा प्रेम रस, पतिनी के उपदेस ।।"

– 'तुलसीसतसई' ('मानस का हंस', पृष्ठ २४८ से उद्धरण)

(७) "बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो, रामनाम लेत माँगि खात टूक–टाक हौं ।
पर्‍यो लोकरीति में पुनीत प्रीति रामराय, मोह बस बैठो तोरि तरकि तराक हौं ।।"

– 'हनुमानबाहुक' – ४० (घनाक्षरी)

गोस्वामी तुलसीदास जी के निकटस्थ शिष्य पसका – शूकर क्षेत्र (गोंडा) के निवासी बाबा वेणीमाधव दास द्वारा संवत् १६८७ वि० में विरचित 'मूल गोसाईं चरित' में तुलसीदास जी के विवाहित होने का स्पष्ट उल्लेख है –

"पन्द्रह से पार तिरासि विषै । शुभ जेठ सुदी गुरु तेरस पै ।।
अधिराति लगै जु फिरी भँवरी । दुलहा दुलही की पड़ी पँवरी ।।१५।।३
दिनराति सदा रँग राते रहैं । सुख पाते रहैं ललचाते रहैं ।
नहिं जान दें आपु न जाँय कहीं । पल एक प्रिया बिनु चैन नहीं ।।

१६।।२, ३ पृष्ठ ३८

सह बन्धु गई चुपके सो सती । बरखासन ग्राम हते जु पती ।।"१६।।४

इसके अतिरिक्त सन् १९०९ ई० में प्रकाशित बाँदा जिले के 'गजेटियर' में भी तुलसीदास जी का विवाह राजापुर के पास यमुना के उस पार महेवा (जिला–इलाहाबाद) में उल्लिखित है –

"Local Traditions says that Tulsidas became acquainted with Rajapur through his having married into a Brahman family in mahewa, tahsil sirathu, district Allahabad".- "District Gazetters-Banda 1909" Page 285-286

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस प्रकार अन्तः साक्ष्यों, वाह्य साक्ष्यों एवं जनश्रुति से स्पष्ट है कि 'मानस' रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी विवाहित थे और उनका विवाह राजापुर (चित्रकूट) से यमुना उस पार किनारे महेवा (जिला इलाहाबाद, वर्तमान जिला-कौशाम्बी) में पंडित दीनबन्धु पाठक की सुपुत्री रत्नावली के साथ सम्वत् १५८३ वि० जेठ शुदी १३ को हुआ था।

(इस संदर्भ में और विशद विश्लेषण 'तुलसी जीवनवृत्त' शीर्षक में देखिये)

५. तर्क – गोस्वामी तुलसीदास जी के काव्यों की भाषा अवधी भाषा और ब्रजभाषा है। यदि तुलसीदास जी का जन्म बाँदा जिले के राजापुर में हुआ होता, तो उनके काव्यों में बुन्देली बोली के शब्दों का प्रयोग अवश्य होता, क्योंकि बाँदा जनपद बुन्देलखण्ड संभाग के अन्तर्गत ही उल्लिखित होता है। उनका विश्वविश्रुत महाकाव्य 'रामचरित मानस' तथा आधा दर्जन अन्य ग्रन्थ अवधी भाषा में रचित हैं जिससे स्पष्ट होता है कि तुलसीदास जी का जन्म अवध क्षेत्रान्तर्गत राजापुर (जनपद गोंडा) में हुआ था और उनकी गुरुभूमि शूकर क्षेत्र-पसका (गोंडा) है।

समीक्षा – गोस्वामी तुलसीदास जी ने अवधी और ब्रजभाषा इन दोनों ही भाषाओं में काव्य रचना की है। बाँदा जनपद तथा उसमें से नवसृजित जनपद चित्रकूट भौगोलिक और प्रशासनिक दृष्टि से बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत आते हैं, परन्तु भाषा की दृष्टि से बाँदा और चित्रकूट जनपद का तो सम्पूर्ण भूभाग बुन्देली बोली के भाषिक क्षेत्रान्तर्गत नहीं आता। बाँदा जनपद के केवल पश्चिमी क्षेत्र (मटौंध आदि) में ही बुन्देली बोली जाती है। बाँदा जनपद के उत्तरी तथा पूर्वी भाग में और चित्रकूट जनपद के सम्पूर्ण भाग में बघेली की उपशाखा गहोरा[१] बोली जाती है। बघेली अवधी की एक उपबोली[२] है और वह उसकी दक्षिणी शाखा है।[३] इस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास का जन्मस्थान राजापुर (जिला बाँदा, वर्तमान चित्रकूट जनपद) और गुरुद्वारा चित्रकूट धाम

---

१. "हिन्दी भाषा" -डॉ० भोलानाथ तिवारी, पृष्ठ २६९
२. "हिन्दी भाषा" -डॉ० हरदेव बाहरी, पृष्ठ १८९
३. "हिन्दी : उद्भव, विकास और रूप" -डॉ० हरदेव बाहरी, पृष्ठ ६९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थित 'सूकर खेत'–नरहरि आश्रम, भाषिक दृष्टि से अवधीभाषा के क्षेत्र में आते हैं । राजापुर (चित्रकूट जनपद) तथा 'सूकर खेत'–चित्रकूटधाम अवधी, बघेली, ब्रजी, बुन्देली, बैसवाड़ी आदि भाषाओं–बोलियों की संगमस्थली है और यहाँ की भाषा–बोली, संस्कृति, तुलसी की भाषा–संस्कृति का मूलाधार है । तुलसीदास ने चित्रकूट, अयोध्या, काशी में चिर निवास के अतिरिक्त जीवन के बयालिस वर्षों तक देश के विभिन्न अंचलों में घूम–घूमकर 'नानापुराण निगमागम' के साथ ही 'क्वचिदन्यतोऽपि' अर्थात् अन्य मत–मतान्तर भाषाओं में रचित कथाओं के अध्ययन और सत्संगति के बाद ही लोकभाषा में अपनी रचना प्रारम्भ की । इसी कारण उनकी रचनाओं में उस समय में प्रचलित काव्यभाषा अवधी एवं ब्रज दोनों भाषाओं में होने के साथ उनमें संस्कृत, बुन्देली, बघेली, बैसवाड़ी, भोजपुरी, अरबी–फारसी के शब्द भी बड़ी मात्रा में मिलते हैं, किन्तु उनमें काफी देशज शब्द, लोकरीति और लोकोक्तियों का प्रयोग है जो केवल राजापुर–चित्रकूट क्षेत्र में ही जनप्रचलित हैं । तुलसीदास जी की भाषा एवं भाषात्मक लिपि प्रवृत्ति का मूलाधार तुलसी जन्मभूमि राजापुर–चित्रकूट क्षेत्र की बघेली, बैसवाड़ी, बुन्देली, ब्रजी और अवधी मिश्रित आमबोलचाल की जनभाषा एवं भाषात्मक लिपि प्रवृत्ति तथा लोक संस्कृति है, अवधी क्षेत्र राजापुर (गोंडा) या ब्रजभाषी क्षेत्र सोरों (एटा) की नहीं ।

६. तर्क – तुलसीदास जी ने 'कवितावली' के "तुलसी तिहारो घर जायऊ है घर को"– कवितावली ७/१२२ में अपने को भगवान श्रीराम के घर का 'घर जाया' बतलाया है । हिन्दी में 'जाया' शब्द का तद्भव और तत्सम, दोनों रूपों में प्रयोग होता है । तद्भव शब्द 'जाय.' का अर्थ होता है–उत्पन्न हुआ और तत्सम शब्द 'जाया' विवाहित स्त्री का बोध कराता है ।[१] पति के साथ यज्ञ आदि धार्मिक कार्यों में समान अधिकार से सम्मिलित होने वाली विधवत् विवाहिता स्त्री को पत्नी कहते हैं ।[२] इसी प्रकार जनन–क्षम पत्नी को जाया कहते हैं । मनु–स्मृतिकार के मत से पत्नी को जाया इसलिये कहते हैं; क्योंकि

---

१. जाया (वि०) = उत्पन्न हुआ ।
जाया (सं० स्त्रीलिंग) विधिवत विवाहिता स्त्री ।
'वृहत् हिन्दी कोश' –सं० कालिका–प्रसाद, पृष्ठ ४२०

२. पत्युर्नो यज्ञ संयोगे । दम्पत्योः सहाधिकारात् । –अष्टाध्यायी ४/१/३३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust Funding IKS-MoE-Grant-2

उसका पति ही उसके गर्भ में प्रविष्ट होकर दशम मास में पुत्र के रूप में पुनः उत्पन्न होता है।[१]

गोंडा जनपद के राजापुर को गोस्वामी तुलसीदास का जन्म स्थान मानने वाले विद्वान तद्भव शब्द 'जाया' का उत्पन्न हुआ अर्थ ग्रहण करते हुये कहते हैं कि कवि ने कवितावली के उद्धृत पद –"तुलसी तिहारो घर जायऊ है घर को।" –कवितावली ७/१२२ में अपने को श्रीराम का 'घर जाया' कहा है। अतः कवि के इस आत्मोल्लेख के आधार पर उनका जन्म अयोध्या या उसके किसी अत्यन्त समीपवर्ती स्थान में हुआ था। गोंडा समर्थक विद्वानों का मत है कि सरयू और घाघरा के संगम पर स्थित शूकर क्षेत्र से छह किलोमीटर[२] की दूरी पर स्थित राजापुर जिला गोंडा ही तुलसीदास जी का जन्मस्थान था।[३]

समीक्षा – इस सम्बन्ध में मेरा यह मत है कि अयोध्या (जिला-फैजाबाद) से साठ किलोमीटर की दूरी पर स्थित राजापुर (जिला–गोंडा) को अवध या अवध के अत्यन्त समीपवर्ती स्थान के रूप में नहीं स्वीकार किया जा सकता है।

'वृहत हिन्दी कोश' में 'घर–जाया' का अर्थ गृह-दास या घर का गुलाम बताया गया है।[४] कवितावली के उपरोक्त पद ७/१२२ में 'गृह–दास' या 'घर के गुलाम' के अर्थ में ही 'घर–जाया' शब्द का प्रयोग हुआ है। यहाँ कवि ने अपनी दीनता का उल्लेख करते हुए कहा है कि हे श्री राम, जब मातृ तुल्य पूज्य अपने

---

१. पतिर्भार्या संप्रविश्य गर्भो भूत्वेह जायते।
जायायास्तद्धि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः॥ –'मनुस्मृति' –९/८
पतिर्जायां प्रविशति गर्भो भूत्वेह मातरम्।
तस्यां पुनर्नवो भूत्वा दशमे मासि जायते॥
तज्जाया जाया भवति यदस्यां जायते पुनः। –'मनुस्मृति' ९/८ की सुधा व्याख्या में उद्धृत बहूवृच ब्राह्मण का वचन।

२. "तुलसी जन्म भूमि" –डॉ० सूर्यप्रसाद दीक्षित, पृष्ठ १४

३. "अब विराम की जरूरत" (लेख) श्री बृजेश शुक्ल, दैनिक समाचार पत्र –'हिन्दुस्तान' दिनांक ०६–८–२०००–पृष्ठ १६ पर प्रकाशित।

४. घर–जाया=गृहदास, गुलाम। –'वृहत हिन्दी कोश'–सम्पादक कालिका प्रसाद, पृष्ठ ३४५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अग्रज पत्नियों क्रमशः तारा तथा मन्दोदरी को अपनी पत्नी बना लेने वाले आचार हीन तथा अत्यन्त दूरवर्ती किष्किन्धा एवं लंका निवासी क्रमशः बानर सुग्रीव और राक्षस विभीषण के प्रति आप अपने को कनावड़ा (ऋणी अथवा अनुग्रहीत) मानते हैं, तब मेरा अंग-अंग जलने लगता है। जब आप ऐसे अत्यन्त दूरवर्ती स्थानों पर निवास करने वाले अधम बानर और राक्षस पर कृपा कर चुके हैं,[१] तब आप भला मुझ दीन पर कृपा क्यों नहीं करते हैं? मैंने सुग्रीव और विभीषण की भाँति कोई अनुचित कर्म भी नहीं किया है। इसके अतिरिक्त मैं आपका जन्म-ज़न्म का दास हूँ। मैं आपके घर का सेवक (घर-जाया) हूँ अतएव आपको मुझ दीन पर अवश्य कृपा करनी चाहिए।[२]

भक्त भगवान के साथ अपना जन्म-जन्मान्तर का नित्य सम्बन्ध मानते हुये उनके प्रति अपना कैंकर्य भाव व्यक्त करता है। इसी भावना के वशीभूत होकर कबीरदास अपने को श्रीराम का आज्ञापालक कुत्ता[३], सूरदास अपने को भगवान श्रीकृष्ण का गुणगान करने वाला ढाढ़ी[४] तथा तुलसीदास अपने को भगवान श्री राम का अहर्निशि सेवा करने वाला उनका गृह-सेवक ('घर-जाया') कहते हैं।[५]

'गीता प्रेस गोरखपुर' से प्रकाशित एवं श्री इन्द्रदेव नारायण द्वारा अनूदित 'कवितावली' के उक्त पंक्ति का अनुवाद – "यह तुलसीदास तो आपके घर का

---

१. रहति न प्रभु चित चूक किए की। करति सुरति सयबार हिए की ॥
जेहिं अघ बधेउ ब्याध इव बाली। फिर सुकंठ सोइ कीन्हि कुचाली ॥
सोइ करतूति विभीषन केरी। सपनेहुँ सो न राम हिय हेरी ॥ –'रामचरित मानस'–१/२९/३–४

२. धर्म के सेतु, जग मंगल के हेतु, भूमि-भारू हरवे को अवतार लिये नर को।
नीति औ प्रीति-प्रीतिपाल चालि प्रभु, मानु लोक बेद राखिबे को पनु रघुबर को ॥
बानर-विभीषन की ओर के कनावड़े हैं, सो प्रसंगु सुने अंग जरै अनुचर को –
राखे रीति आपनी जो होइ सोई कीजै बलि, तुलसी तिहारो घर जायऊ है घर को ॥
–'कवितावली' ७/१२२

३. कबीर कूता राम का मुतिया मेरा नाउँ।
गले राम की जेवड़ी जित खैंचैं तित जाउँ ॥ –कबीर ग्रन्थावली। निहकर्मी पतिव्रता के अंग/साखी १५

४. मैं तो तेरे घर कौं ढाढ़ी सूरदास मोहि नाउँ। –सूरदास, दशम स्कन्ध–पद ६५३

५. राखे रीति आपनी जो होइ सोई कीजै बलि, तुलसी तिहारो घर जायऊ है घर को।
–'कवितावली ७/१२२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घर–जाया–"पुश्तैनी सेवक" किया है । –पृष्ठ १८१

इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि गोंडा समर्थकों का यह तर्क भी कपोल–कल्पित, मनगढ़न्त, अर्थ का अनर्थ और क्षेत्रीयता के दुराग्रही संकीर्ण मानसिकता का द्योतक है ।

७. तर्क – गोस्वामी तुलसीदास जी ने दोहावली के एक दोहे –

"लही आँखि कब आँधरे, बाँझ पूत कब ल्याइ ।

कब कोढ़ी काया लही, जग बहराइच जाइ ।।" –दोहावली–४९६ में बहराइच में स्थित सैयद सालार जंग मसऊद गाजी की दरगाह में जाने वाले अंध विश्वासी व्यक्तियों का व्यंग्यपूर्वक उल्लेख किया है । इससे सिद्ध होता है कि गोस्वामी जी का जन्म बहराइच के किसी समीपवर्ती जिले में ही हुआ था और वे बहराइच जिले में स्थित उपर्युक्त दरगाह के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी रखते थे । गोंडा जिला बहराइच जिले का समीपवर्ती जिला है । अतएव गोंडा जनपद का राजापुर ही गोस्वामी तुलसीदास का जन्मस्थान हो सकता है ।

समीक्षा – गोस्वामी तुलसीदास जी यावज्जीवन तीर्थाटन करते रहे । अतः उन्हें सम्पूर्ण भारतवर्ष के भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्वरूप की जानकारी थी । ऐसी स्थिति में उन्हें बहराइच में स्थित सैयद सालार जंग मसऊद गाजी की दरगाह के सम्बन्ध में जानकारी होना तथा उनके द्वारा दोहावली के उक्त दोहे ४९६ में उपर्युक्त दरगाह में जाने वाले अंधविश्वासी व्यक्तियों का व्यंग्यपूर्वक उल्लेख किया जाना गोंडापक्ष का उक्त तर्क असंगत एवं क्षेत्रीयता के पक्षपातपूर्ण संकीर्ण मानसिकता से ग्रस्त है ।

८. तर्क – 'विनयपत्रिका' में गोस्वामी तुलसीदास जी के कथन –

"आलसी अभागे मोसें तैं कृपालु पाले पोसे ।

राजा मेरे राजाराम, अवध सहरू ।।" –विनयपत्रिका २५०/१ से सिद्ध होता है कि गोस्वामी तुलसीदास अयोध्या के पास रहने वाले थे । इस दृष्टि से भी गोंडा जिले का राजापुर गोस्वामी तुलसीदास का जन्म स्थान सिद्ध होता है ।

समीक्षा – गोंडा समर्थक तुलसी जन्म स्थली के सम्बन्ध में राजापुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(बाँदा, वर्तमान जनपद चित्रकूट) के ऐतिहासिक दस्तावेजों, अन्तः साक्ष्यों और अन्य अकाट्य पुष्ट प्रमाणों को नकार कर शूकर क्षेत्र–पसका के पास राजापुर (जनपद–गोंडा) के पक्ष में जिन प्रमाणों को प्रस्तुत करते हैं, उनमें 'राजा मेरे राजाराम, अवध सहरू' –विनयपत्रिका, २५०/१ तथा 'तुलसी तिहारे घर जायेऊ है घर को' –कवितावली ७/१२२ तथा दोहावली के एक दोहे 'लही आँख कब आँधरे... जग बहराइच जाइ' –दोहा० ४९६ के उल्लेख की बातें करते हैं। वास्तव में ऐसे प्रमाण बड़े लचर हैं। इनको तोड़ मरोड़ कर क्षेत्रीयता के दुराग्रहपूर्ण संकीर्ण मानसिकता से ग्रस्त होकर मनोनुकूल अर्थ का अनर्थ करना तो बालू से तेल निकालने जैसा हास्यास्पद दुष्प्रयास है।

९. तर्क – गोस्वामी तुलसीदास जी ने विनयपत्रिका के एक पद "अब चित चेति चित्रकूटहिं चलु ।।" विनयपत्रिका २४/१ में चित्रकूट जाने की तीव्र लालसा व्यक्त की है। यदि वे बाँदा जिले और चित्रकूट के पास पैदा हुये होते, तो वे चित्रकूट जाने के लिये इतना अधिक अधीर न होते; क्योंकि चित्रकूट तो उनके पास ही स्थित है।

समीक्षा -- गोस्वामी तुलसीदास जी के हृदय में काशी, अयोध्या और चित्रकूट के प्रति अतिशय श्रद्धा का भाव था। मुक्तिधाम होने के कारण काशी सेवनीय है।[१] अयोध्या मं कवि के इष्टदेव भगवान श्रीराम का आविर्भाव हुआ था, अतएव कवि के लिए अयोध्या भी पूज्य है।[२] परन्तु उनके परम आराध्य भगवान श्री राम ने असुर संहार रूपी दुष्कर कार्य की सिद्धि के लिए चित्रकूट में निवास कर बारह वर्षों तक कठोर साधना की थी, इसलिये चित्रकूट के प्रति कवि के मन में विशेष पूज्यभाव था। नैसर्गिक सुषमा सम्पन्न चित्रकूट भारत का प्राचीनतम आध्यात्मिक तीर्थ एवं वीतराग महात्माओं की तपोभूमि है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है कि चित्रकूट हर समय अच्छा लगता है परन्तु वर्षा ऋतु में चित्रकूट की शोभा बहुत अधिक बढ़ जाती है। इसलिए

---

१. मुक्ति जन्म महि जानि, ग्यान खानि अघ हानिकर ।
जहँ बस संभु भवानि, सो कासी सेइअ कस न ।। –रामचरित मानस ४/१, सोरठा १

२. जद्यपि सब बैकुंठ बखाना । वेद पुरान विदित जगु जाना ।।
अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ । यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ ।।
जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि । उत्तर दिसि बह सरजू पावनि ।।
जा मज्जन ते विनहिं प्रयासा । मम समीप नर पावहिं बासा ।। –'रामचरित मानस ७/४/२, ३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि के हृदय में वर्षा ऋतु के आगमन पर चित्रकूट की शोभा देखने की तीव्र लालसा उत्पन्न हो जाती है ।[१]

कलिकाल के अत्याचारों से पीड़ित होने पर गोस्वामी जी अपने चित्त को सम्बोधित करते हुये कहते हैं कि हे चित्त ! अब तुम चेत जाओ और चित्रकूट में चलकर निवास करो ।[२] गोस्वामी तुलसीदास जी के समकालिक सुप्रसिद्ध कवि रहीम ने भी चित्रकूट की उसी महिमा का संकेत करते हुए कहा है–

"चित्रकूट में बसि रहे, रहिमन अवध नरेस ।
जापर विपदा परत है, सो आवत यहि देस ।।"

इसके अतिरिक्त गोस्वामी जी के हृदय में चित्रकूट के प्रति लगाव होने का एक विशेष कारण यह भी था कि चित्रकूट जैसा नैसर्गिक सुषमा सम्पन्न सुप्रसिद्ध रमणीक अनुपम तीर्थ उनके जन्मभूमि के पास स्थित है और चित्रकूटधाम स्थित 'सूकर खेत' नरहरिदास आश्रम उनकी गुरुभूमि भी है । दूसरा विशेष कारण – चित्रकूट ही में उन्हें अपने इष्टदेव भगवान श्री राम के दर्शन हुये थे । इस अलौकिक घटना की ओर संकेत करते हुए उन्होंने कहा है कि हे तुलसी ! भगवान श्री राम ने चित्रकूट में तुम्हारे ऊपर जो विशेष कृपा की है; तुम अपने चित्त में उसका स्मरण करो ।[३]

उपरोक्त कारणों से ही तुलसीदास जी बारम्बार चित्रकूट जाने की आकांक्षा व्यक्त करते हैं ।

१०. तर्क – गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'रामललानहछू' नामक काव्य में नहछू संस्कार के अवसर पर गाये जाने वाले सोहर गीत लिखे हैं । नहछू संस्कार के अवसर पर गाये जाने वाले सोहर गीतों का गोंडा, फैजाबाद तथा पूर्वांचल के अन्य जिलों में व्यापक प्रचार–प्रसार है; जबकि बाँदा जिले के राजापुर में इन गीतों का प्रचार–प्रसार नहीं है ।

---

१. सब दिन चित्रकूट नीको लागत ।
बरषा ऋतु प्रवेस विसेस गिरि देखन मन अनुरागत । –गीतावली–२/५०/१

२. अब चित चेति चित्रकूटहि चलु........।
कोपित कलि, लोपित मंगल मगु, बिलसत बढ़त मोह–माया मलु ।। –विनयपत्रिका २४।१

३. तुलसी ! तो को कृपालु जो कियो कोसलपालु
चित्रकूट को चरित्र चेतु चित करि सो ।। –विनय पत्रिका २६४/५

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समीक्षा – राजापुर (जिला बाँदा, सम्प्रति चित्रकूट जनपद) में आज भी घर–घर में यज्ञोपवीत और विवाह के अवसर पर 'रामलला नहछू' में वर्णित नहछू संस्कार होता है और इन दोनों ही अवसरों पर नहछू गीत गाये जाते हैं; वैसे ही पुत्र जन्म में घर–घर सोहर गीत गाये जाते हैं। इसलिये 'रामलला नहछू' नामक काव्य की रचना से यह नहीं सिद्ध होता है कि गोस्वामी तुलसीदास का जन्म गोंडा जिले के राजापुर में ही हुआ था।

११. तर्क – डॉ० सूर्यप्रसाद दीक्षित का मत है कि तुलसीदास जी का जन्म अवध में पसका के निकट किसी गाँव में हुआ था। सम्भव है कि वे यहाँ से बाँदा जिले के राजापुर में जाकर बस गये हों।[1]

समीक्षा– इस सम्बन्ध में मेरा मत है कि सोरों (जिला एटा) या राजापुर (जिला–गोंडा) को गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्मभूमि मानने वाले सभी विद्वानों के तर्क, तथ्य एवं प्रमाण क्षेत्रीयता की मानसिकता से ग्रस्त, मनगढंत, कपोल कल्पित हैं। यदि तुलसीदास जी का जन्म बाँदा जिले (वर्तमान चित्रकूट जनपद) के राजापुर में नहीं हुआ था तो उनके सोरों (जिला एटा) अथवा राजापुर (जिला गोंडा) से बाँदा जिले के राजापुर में जाकर बसने का क्या कारण था ? बाँदा जिले का राजापुर गाँव कोई तीर्थ स्थान नहीं था, जिससे आकर्षित होकर वे सोरों जिला एटा अथवा राजापुर जिला गोंडा से जाकर वहाँ बस गये हों। राजापुर (चित्रकूट) ही उनकी प्रामाणिक जन्मभूमि है तभी तो सम्राट अकबर ने राजापुर (चित्रकूट) में घाट–हाट आदि की माफी दी थी।

१२. तर्क – गोंडा समर्थकों का कथन है कि बाँदा जिला और चित्रकूट क्षेत्र में सरयूपारीण ब्राह्मणों की आबादी नहीं है। गोस्वामी तुलसीदास सरयूपारीण ब्राह्मण थे; अतः उनका जन्म स्थान सरयूपारीण ब्राह्मण बहुल क्षेत्र गोंडा जिले का राजापुर ही हो सकता है।

समीक्षा – गोंडा समर्थकों का यह तर्क भी मनगढ़न्त, मिथ्या और निराधार है। शायद उनको नहीं मालूम कि सरयूपारीण ब्राह्मणों की आबादी की लम्बी श्रृंखला हमीरपुर–बाँदा–चित्रकूट–इलाहाबाद से वाराणसी आदि तक विस्तारित है। उत्तर प्रदेश का पूर्वांचल तो सरयू पारीण ब्राह्मणों से भरा पड़ा है।

---

१. 'तुलसी जन्मभूमि' –डॉ० सूर्य प्रसाद दीक्षित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाँदा और चित्रकूट में सरयूपारीण ब्राह्मणों की आबादी नई नहीं है, यहाँ इन ब्राह्मणों की बहुत पुरानी परम्परा है। वैसे भी यह तर्क अतीव थोथा प्रतीत होता है। चित्रकूट क्षेत्र तो युगों से ऋषियों–मुनियों की साधना स्थली और सरयूपारीण ब्राह्मण बहुल क्षेत्र रहा है।

इस प्रकार उपरोक्त समीक्षात्मक विश्लेषण से स्पष्ट है कि राजापुर-पसका (जिला–गोंडा) पक्ष में कुछ भी सार गर्भित सामग्री उपलब्ध नहीं है। आजकल कतिपय क्षेत्रवादी संकीर्ण मानसिकता के दिग्भ्रमित दुराग्रही तथाकथित विद्वानों को अपना वर्चस्व स्थापित करने के विचार से शूकरक्षेत्र तथा अन्य संदिग्ध सम्भावनाओं के आधार पर नानाविधि विवाद प्रस्तुत कर थोथे पांडित्य प्रदर्शन करने का बौद्धिक व्यसन सा हो गया है।

⌘⌘⌘⌘

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निष्कर्ष

इस प्रकार प्रस्तुत पुस्तक 'तुलसी जन्मभूमिः शोध समीक्षा' में समीक्षित सबल साक्ष्यों, पुरातात्विक-ऐतिहासिक पुष्ट प्रमाणों, तथ्यपूर्ण अकाट्य तर्कों और शदियों से चली आ रही लोक मान्यताओं से पूर्णतया स्पष्ट है कि राजापुर (चित्रकूट) में तुलसीदास जी का जन्म गृह तथा उनके द्वारा राजापुर (चित्रकूट) में स्थापित संकटमोचन हनुमान जी की प्रतिमा, उनकी हस्तलिखित 'रामचरित मानस' पाण्डुलिपि की वहाँ उपलब्धता; चित्रकूट-'सूकर खेत' में गुरु नरहरिदास आश्रम, तुलसी की भाषा-बोली, तुलसी साहित्य में वर्णित लोकजीवन लोक-व्यवहार और लोकपरम्परा में स्थानीय छाप, 'मानस' का तापस-प्रसंग, 'गीतावली' का तापसी प्रसंग, अन्य पुरातात्विक साक्ष्यों के साथ यह ऐतिहासिक साक्ष्य विशेष विचारणीय है कि क्या कारण है कि सम्राट अकबर से लेकर पन्ना-नरेश और आंग्ल शासकों तक ने सोरों (जिला एटा) राजापुर (जिला-गोंडा), अयोध्या और काशी में गोस्वामी तुलसीदास और उनके वंशजों के नाम माफीनामा जमीन-जागीर न देकर राजापुर-चित्रकूट ही में क्यों दिया ? क्या सम्राट अकबर से लेकर आंग्ल शासकों के साम्राज्य से सोरों, काशी या अयोध्या आदि अलग थे ? जाहिर है कि इस प्रकार घाट-हाट एवं कृषि-भूमि किसी भी व्यक्ति को प्रायः उसके मूल निवास या जन्म स्थान पर ही दी जाती है ताकि वह उसकी उचित देख-रेख कर समुचित लाभ उठा सके । इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों से सुस्पष्ट है कि राजापुर (चित्रकूट) ही 'रामचरित मानस' रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी की प्रामाणिक विश्वमान्य एवं लोक मान्यता प्राप्त जन्मस्थली है और 'सूकर खेत'-चित्रकूट में नरहरि आश्रम ही तुलसीदास जी का वास्तविक एवं प्रामाणिक 'बालपन' का गुरुद्वारा है जहाँ उनके गुरु नरहरिदास जी के आश्रम के अवशिष्ट स्मारक आज भी विद्यमान हैं । चित्रकूट धाम ऐसा पावन, सुरम्य और महान श्रद्धा का केन्द्र तीर्थ स्थल है, जहाँ हर युग में संत-महात्मा रहते रहें हैं और तुलसीदास ऐसे 'बारे ते ललात बिललात द्वार-द्वार दीन' अनाथ-असहायों का आश्रय स्थल रहता रहा है ।

क्षेत्रवाद, आस्पदवाद तथा थोथे पाण्डित्य प्रदर्शन की संकीर्ण मानसिकता ग्रसित स्वार्थान्ध स्वेच्छाचारियों की सत्यादर्श एवं सन्मार्ग का परित्याग कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कपोल कल्पित संभावनाओं पर आधारित सोरों (एटा) या राजापुर-पसका (गोंडा) में तुलसी जन्मभूमि और गुरुद्वारा की कृत्रिम कल्पनाओं और सम्भावनाओं पर आधारित तोड़ मरोड़ कर बनाई बातें तो अन्तः साक्ष्य, वाह्य साक्ष्य तथा परम्परागत जनमान्यता विरुद्ध दुराग्रहपूर्ण, तथ्यहीन, निराधार, मनगढ़ंत, अविश्वसनीय, असंगत और अत्यन्त हास्यास्पद हैं। हाँ, यह हो सकता है कि तुलसीदास जी तीर्थाटन में सोरों (एटा) और पसका (गोंडा) के कथित सूकर खेत भी गये हों पर उनको जन्मभूमि और गुरुद्वारा मानना तो क्षेत्रीयता की विकृत मानसिकता, कुतर्क और थोथे पाण्डित्य प्रदर्शन का ही परिचायक है। उनके इस साहित्यिक, सांस्कृतिक, नैतिक, अक्षम्य आपराधिक दुष्कृत्य और मनगढ़ंत मायाजाल से जनमानस क्षुब्ध है तथा क्षेत्रवादी, दुराग्रही, थोथे पाण्डित्य प्रदर्शन के लोभी तथाकथित विद्वानों द्वारा इस संदर्भ में किये जा रहे नैतिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक घोर पाप को जनमानस कभी क्षमा न कर सकेगा।

वास्तव में शताब्दियों से गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्मभूमि राजापुर (चित्रकूट) ही लोकमान्य रही है और रहेगी। जन्मभूमि और गुरुभूमि सम्बन्धी कृत्रिम, कपोल कल्पित, निराधार, अविश्वसनीय, व्यर्थ विवादों के बादल अवश्य ही छटेंगे।

वस्तुतः बालू की दीवाल कभी खड़ी नहीं हो सकती है। सत्य का स्थान कभी कपोल कल्पित, मिथ्या, मनगढ़ंत बातें ले नहीं सकती हैं। यही सत्य और तथ्य है। सत्य की असत्य या वितण्डावाद पर अन्ततः विजय सुनिश्चित है –

"आलोचक कुछ भी कहैं, रहै साँच ही साँच।
'नारायण' प्रभु की कृपा, नहीं साँच को आँच।।"

–"गोस्वामी तुलसीदास" –नारायण भक्तमाली, पृष्ठ १९०

"सत्यमेव जयते नानृतम्"

*हे राजापुर के पूत ! संत कवि, तुम्हारा शत-शत वन्दन अभिनन्दन है।
हे विश्व रत्न, जनकर तुमको यह 'मारव माटी' बन गई विश्व का चन्दन है।।
तव 'मानस' विश्व अमानत बन सबको सदाचरण सिखलाता है।
दानवता दमन कर मानवता का परचम जग में फहराता है।।*

– रामगणेश पाण्डेय
कृतिकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन्दर्भ ग्रन्थ

गोस्वामी तुलसीदास कृत ग्रन्थ -

रामचरित मानस, विनयपत्रिका, कवितावली, गीतावली, दोहावली, श्रीकृष्ण गीतावली, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, बरवै रामायण, रामलला नहछू, रामाज्ञा प्रश्न, वैराग्य संदीपनी, हनुमान बाहुक एवं हनुमान चालीसा, तुलसी सतसई ।

रामचरित मानस (१) श्री सेतसागर यंत्रालय, कलकत्ता (सं० १९०१ वि०)
(२) लीथो प्रिंटिंग प्रेस (सं०१९३३ वि० से प्रकाशित)
(३) निर्णय सागर प्रेस, मुम्बई प्रेस (सं० १९४६ वि०)
(४) सेठ खेमराज द्वारा मुम्बई प्रेस (सं० १९५५ वि०)
(५) वेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई
(६) नवल किशोर प्रेस, लखनऊ
(७) गीताप्रेस, गोरखपुर (संवत् १९९६ वि० से प्रकाशित)

गोस्वामी तुलसीदास जी की हस्तलिखित 'रामचरित मानस' - 'अयोध्याकाण्ड' की राजापुर (चित्रकूट) में सुरक्षित पाण्डुलिपि

मूल गोसाईं चरित	बाबा वेणीमाधवदास
गोसाईं चरित	बाबा रघुबर दास
भक्ति विलास	संत कवि मूलकदास
आइने अकबरी	अबुल फजल अल्लामी (हिन्दी अनुवादक) हरिवंशराय शर्मा एवं फिदा हुसैन)
शर्तवाजबुल अर्ज	(हिन्दी अनुवाद)
स्कन्द पुराण	गीता प्रेस, गोरखपुर प्रकाशन
वाराह पुराण	गीता प्रेस, गोरखपुर
अग्नि पुराण	गीता प्रेस, गोरखपुर
सूर सागर-(दशम् स्कन्ध)	सूरदास
सूर रामचरितावली	सूरदास
आम्भ्युदयिक श्राद्ध-	गोसाईंराम द्विवेदी राजापुर (चित्रकूट) में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राप्त (पाण्डुलिपि सं० १६९९ वि०)

षष्ठी पूजन विधि — श्रीराम दुबे राजापुर (चित्रकूट) में प्राप्त (पाण्डुलिपि सं० १८१९ वि०)

पाण्डुलिपि (सं० १८३० विक्रमी) मदारीराम दुबे राजापुर (चित्रकूट) में प्राप्त

ऐतिहासिक साक्ष्य - अकबर बादशाह द्वारा प्रदत्त माफीनामा से सम्बन्धित मूल दस्तावेज, फरमान, सनदें आदि–राजापुर (चित्रकूट) से सूचना निदेशालय, लखनऊ में संरक्षित

घटरामायण — तुलसी साहिब

कानूनगो कायस्थ वंशावली — कवि बलदेवदास

रांजापुर–माहात्म — कवि बलदेवदास

'आर्क्योलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया' (भाग २) सन् १८९१ ई०

काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका (भाग ८) नागरी प्रचारिणी प्रकाशन, काशी

मानस मयंक (वि० संवत् १९५७) — पं० शिवलाल

मानस पीयूष — संपादक एवं टीकाकार–अंजनीनंदनशरण

तुलसीदास — सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

तुलसीचरितामृत — सरयू प्रसाद शर्मा

तुलसीदास और राजापुर — गोवर्द्धनदास त्रिपाठी

बाँदा वैभव — रमेशचन्द्र श्रीवास्तव

हिन्दी साहित्य का इतिहास — आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास — डॉ० नगेन्द्र

हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास — बाबू गुलाब राय

अवधी भाषा का स्वरूप — डॉ० दुर्गाशंकर मिश्र

अवधी का विकास — डॉ० बाबूराम सक्सेना

गोस्वामी तुलसीदास — डॉ० श्याम सुन्दरदास

तुलसीदास — डॉ० माताप्रसाद गुप्त

तुलसी काव्य मीमांसा — डॉ० उदयभान सिंह

दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता — हरिराय जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अष्ट सखामृत	प्राणेश कवि
तुलसीदास और उनका काव्य	पं० रामनरेश त्रिपाठी
गोस्वामी तुलसीदास	डॉ० रामदत्त भरद्वाज
तुलसी प्रकाश	अविनाश राय ब्रह्मभट्ट
गोसाईं चरित	डॉ० किशोरी लाल गुप्त
तुलसी चरित	पं० महादेव प्रसाद पाण्डेय
दोहा रत्नावली	(संकलन दोहा)
रत्नावली खण्डकाव्य	जयगोपाल मिश्र फतेहपुरी
रत्ना की बात	डॉ० रांगेयराघव
मानस का हंस	अमृत लाल नागर
युग पुरुष तुलसी	आचार्य सोहन लाल रामरंग
तुलसी सूर और केशवः अधुनातन आकलन	डॉ० राम प्रसाद मिश्र
तुलसी और तुलसी	डॉ० किशोरी लाल गुप्त
तुलसी स्मृति संदर्भः	स्वामी रामानन्द सरस्वती
रामकथा मंदाकिनी	पं० रामकिंकर उपाध्याय.
तुलसी जन्मभूमि	डॉ० सूर्य प्रसाद दीक्षित
'मानस में तापस प्रसंग'	तुलसी पीठाधीश्वर स्वामी रामभद्राचार्य जी महराज
राजापुर तुलसी कै गाथा	सम्पादक–प्रो० सियाराम शर्मा एवं डॉ० अयोध्या प्रसाद पाण्डेय (संकलनकर्ता–श्री गोपीनाथ अग्रवाल)
तुलसी जन्मभूमिः शोध परक समीक्षा	प्रेम नारायण गुप्त
'एक रात तुलसी की : एक बात रत्ना की'	श्री गोविन्द प्रकाश श्रीवास्तव
रत्नावली (उपन्यास)	रामगोपाल भावुक
तुलसी (प्रबन्धकाव्य)	दयानन्द जड़िया 'अबोध'
रामचरित मानस में महाकाव्यत्व, भक्ति और दर्शन	डॉ० विश्वम्भर दयाल अवस्थी
तुलसी विमर्श	डॉ० अयोध्या प्रसाद पाण्डेय
Goswami Tulsidas ji (A biography)	R. S. Pankhania
राजापुर की प्राचीनता एवं नियोजित नगर–संरचना	श्री गोविन्द प्रकाश श्रीवास्तव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गजटियर (शासकीय विवरण)

१. "स्टैटिस्टिकल डिस्क्रप्शन एण्ड हिस्टोरिकल एकाउंट ऑव द नार्थ वेस्टर्न प्राविन्सज ऑव इण्डिया' प्रथम जिल्द बुन्देल खण्ड।

सम्पादित - एडविन टी० एटकिंसन द्वारा सन् १८७४ ई० में प्रयाग से प्रकाशित। (राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली से प्रमाणित प्रति)

२. 'इम्पीरियल गजटियर ऑव इण्डिया' जिल्द ११, डब्लू-डब्लू हन्टर द्वारा अनुदित, ट्रबनर एण्ड कम्पनी लन्दन से सन् १८८६ ई० में प्रकाशित। (राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली से प्रमाणित प्रति।)

३. 'इम्पीरियल गजटियर ऑव इण्डिया' यू० पी० सैकिंड प्राविंशियल सीरीज (यूनाइटेड प्राविन्सीज ऑव आगरा एण्ड अवध) सन् १९०८ में कलकत्ता से प्रकाशित। (राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली से प्रमाणित प्रति)

४. 'बाँदा गजटियर' इक्कीसवीं जिल्द सम्पादन-डी० एल० ड्रेके ब्राक मैन, आई० सी० एस० द्वारा सन् १९०९ ई० में गवर्मेन्ट प्रेस, इलाहाबाद से प्रकाशित।

(राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली से प्रमाणित प्रति)

५. उत्तर प्रदेश डिस्ट्रिक गजटियर्स-एटा, गोंडा तथा बाराबंकी,
(सन् १९६४ई०)
स्टेट एडीटर-श्रीमती एशा बासंती जोशी
प्रकाशन-उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ
मुद्रक-गवर्मेन्ट प्रेस, इलाहाबाद (उ० प्र०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

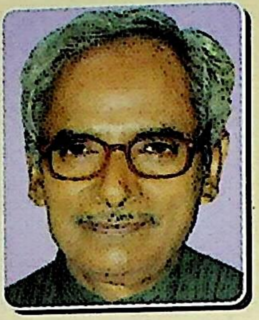

लेखक-रामगणेश

मंजिल पाने के लिये
'मंजिल' पढ़ें

समग्रविकास से जुड़ी संसार की सर्वश्रेष्ठ काव्यकलित समग्रक्रांति कथा 'मंजिल'

'तुलसी जन्मभूमिः शोध समीक्षा'

के लेखक की समग्रविकास से जुड़ी सुप्रसिद्ध संग्रहणीय समग्रक्रांति कथा 'मंजिल'

सहयोग राशि 100/- रु0 मात्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection